स्वर्गके रत्न

(गुजराती भाषासे अनुवादित ।)

अनुवादक और प्रकाशक—

महावीर प्रसाद गहमरी ।

"प्रेम स्वर्गका रत्न है; ज्ञान स्वर्गका रत्न है, कर्त्तव्य स्वर्गका रत्न है, भ्रातृभाव स्वर्गका रत्न है, समय स्वर्गका रत्न है; स्वगुणार स्वर्गका रत्न है; सत्य धर्म स्वर्गका रत्न है और महात्माओंके जीवनसे जीना सीखना स्वर्गका रत्न है।"

(स्वर्गकी जिन्दगी।)

स्वर्गमाला कार्यालय

काशी ।

वसन्त पंचमी सं० १९७० ।

पहली बार १०००

Published by Mahavir Prasad Gahmari,
Swargmala Karyalaya, Bhelupur, Benares City
and
Printed by B. L. Pawagi
at the Hitchintak Press, Ramghat, Benares City.

अर्पण ।

श्रीयुत बाबू गोपालराम गहमरनिवासी
'जासूस' सम्पादककी सेवामें ।

भ्रातृवर !

आपका 'वेशऊर' सहोदर अपने नये उद्योगका यह पहला फूल आपके करकमलोंमें अर्पण करता है ।

अनुज—
महावीर ।

परिचय।

बम्बईमें 'श्रीवेंकटेश्वर समाचार' की सेवा करते समय मुझे "स्वर्गनो खजानो" नामकी एक गुजराती भाषाकी पुस्तक पढ़नेको मिली। उसे पढ़ने पर मुझे बड़ा आनन्द मिला। मैंने देखा कि उस पुस्तकमें ज्ञान, धर्म्म, भक्ति, प्रेम और लोकव्यवहारके उपदेश बड़ी ही सरस और रोचक भाषामें दिये गये हैं; पुस्तक नये भाव और नये ढङ्गसे लिखी गयी है। उस ढङ्गकी लच्छेदार भाषावाली उपदेशभरी पुस्तक हिन्दीमें मेरे देखनेमें नहीं आयी थी। इससे मेरा विचार हुआ कि इसका अनुवाद हिन्दी पाठकोंकी सेवामें भेट करना चाहिये। परीक्षाके तौर पर मैंने श्रीवेंकटेश्वर समाचारमें उसका एक एक उपदेश "स्वर्गका खजाना" नामसे देना आरम्भ किया। हिन्दी पाठकोंने उसे बहुत पसन्द किया और वे चिट्ठियों द्वारा उसे पुस्तकाकार देखनेकी रुचि प्रगट करने लगे। इधर मुझे उस पुस्तकके लेखक पण्डित अमृतलाल सुन्दरजी पढ़ियार वैद्यसे मिलनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ जिनसे विदित हुआ कि इस ढङ्गकी उन्होंने वेदान्त की कई पुस्तकें लिखी हैं तथा लिखते जाते हैं। तब मैंने उनकी और कई पुस्तकें मँगाकर पढ़ीं जिनसे मेरा आनन्द

उत्तरोत्तर बढ़ता गया और इन पुस्तकोंका हिन्दी भाषान्तर करनेका विचार दृढ़ हुआ। इसी विचारके अनुसार "स्वर्गना रत्नो" नामक पुस्तकका अनुवाद "स्वर्गके रत्न" नामसे हिन्दी पाठकोंकी सेवामें पेश किया जाता है। इसमें क्या है यह बात मूल ग्रन्थकारकी नीचे लिखी भूमिकासे तथा पुस्तक पढ़नेसे विदित होगा। मैं पण्डित अमृतलाल सुन्दरजी पढ़ियारको धन्यवाद देता हूं जिन्होंने हर्षपूर्वक अपनी इस पुस्तकका तथा और पुस्तकोंका अनुवाद करनेकी मुझे अनुमति दी है।

ग्रन्थकारने इस पुस्तकका परिचय देते हुए लिखा है—

"महात्मा लोग कहते हैं कि सर्वशक्तिमान महान ईश्वरके जीवनमें जीना और अनन्त सामर्थ्यके साथ एकता अनुभव करना मनुष्य जिन्दगीका मूल उद्देश्य है और ऐसा होनेमें ही मनुष्य जीवनकी सार्थकता है, इसलिये हमें भी इस लक्ष्यबिन्दु पर ध्यान रखकर अपनी जिन्दगी बितानी चाहिये और इस बातका प्रयत्न करना चाहिये कि यह ऊँचेसे ऊँचा उद्देश्य पूरा हो। इसके लिये ऐसा योग साधना चाहिये कि प्रभुके साथ एकता हो—प्रभुके साथ जीव जुड़ जाय। क्योंकि प्रभुने श्रीमद्भगवद्गीतामें कहा है कि सब साधनोंमें योग श्रेष्ठ है। प्रभु कहता है—

तपस्विभ्योऽधिको योगी ज्ञानिभ्योऽपि मतोऽधिकः।
कर्मिभ्यश्चाधिको योगी तस्माद्योगी भवार्जुन॥

अ० ६ श्लो० ४६

हे अर्जुन! तप करनेवालोंसे भी योगी श्रेष्ठ है, ज्ञानियोंसे

भी योगी श्रेष्ठ है और कर्म करनेवालोंसे भी योगी श्रेष्ठ है। इसलिये तू योगी हो।

इस प्रकार अनन्त शक्तिके साथ जोड़ देनेवाले योगका प्रभु बखान करता है। ऐसा अनमोल योग साधनेके लिये पहले हमें योगका सच्चा स्वरूप जानना चाहिये। यह जाननेके लिये कुछ हठयोगियोंकी मदद लेने नहीं जाना पड़ता। इसके लिये भी गीतामें प्रभुने कहा है--

योगः कर्मसु कौशलम्।

अ० २ श्लो० ५०

'कर्म करनेमें कुशलता रखनेका नाम योग है।'

जिन्दगीका फर्ज पूरा करनेमें चतुराई रखने, कुदरतके नियमोंके अनुसार चलने और प्रभुके तालमें ताल, प्रभुके नादमें नाद तथा प्रभुके कदममें कदम मिलाकर प्रभुके प्रवाहमें पड जानेका नाम कर्ममें कुशलता है और उसीका दूसरा नाम योग है। इसलिये बुद्धि लगाकर, जिन्दगीके उद्देश्य समझ कर तथा तत्त्व समझ कर जिन्दगीके फर्ज बजाना योग ही है। यह योगका पहला लक्षण है।

अब योगका दूसरा लक्षण जानना चाहिये। इसके लिये भी गीतामें प्रभुने कहा है कि—

योगस्थः कुरु कर्माणि संगं त्यक्त्वा धनंजय।
सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते॥

अ० २ श्लो० ४८

'हे धनंजय अर्थात् हे धनको जीतनेवाले ! हे धनकी परवा न करनेवाले ! योगमें रह कर अर्थात प्रभुके साथ जुड़ कर विना आसक्ति रख कर्म्म कर और काम सिद्ध हो या न हो तो भी उसमें समता रख। इस प्रकार समता रखनेका नाम योग कहलाता है।'

भाइयो ! प्रभुके साथ एकता करनेकी यह दूसरी कुंजी है। पहली कुंजी है कर्म्म करनेमें कुशलता और दूसरी कुंजी है भले बुरे मौकों पर—सुख दुःखमें समता रखना। इन दो कुंजियों को पकड़नेकी युक्ति इस पुस्तकमें बहुत विस्तारसे दलील दृष्टान्तों सहित समझायी है। इसको समझनेमें अन्दरका बहुत कुछ संशय मिट जाता है, हृदयके बहुतसे सद्गुण खिल उठते हैं, हृदयकी तहमें पड़ी हुई बहुतेरी उत्तम वृत्तिया जाग जाती हैं और इस दुनियाका व्यवहार सुधरता है तथा अन्तरात्माको शान्ति मिलती है। क्योंकि इसमें प्रभुप्रेम है, इसमें सत्य ज्ञान है, इसमें अपने कर्त्तव्यकी समझ है, इसमें भ्रातृभावका रसायन है, इसमें अमूल्य समयकी महत्ता बतायी है, इसमें महात्मा बननेके लिये अपना सुधार करनेका मंत्र है और इसमें साधारण धर्म्म तथा गूढ तत्त्व है। इन सब बातोंको महात्मा लोग स्वर्गके रत्न समझते हैं, इस लिये इस पुस्तकका नाम 'स्वर्गके रत्न' रखा है।

एकके ऊपर एक चढ़ती हुई सीढ़ीवाले, क्रम क्रमसे बढ़ते हुए ज्ञानवाले भक्तिमार्गके एक हजार दृष्टान्तोंकी सात पुस्तकें लिखनेकी मेरी इच्छा है। उनमें यह चौथी पुस्तक है। पहली पुस्तक 'स्वर्गका

विमान' है। वह भक्तिमार्गकी पहली पुस्तक समान है; क्योंकि उसमें ऐसे छोटे छोटे मजेदार दृष्टान्त तथा सुन्दर भजन हैं जिनके पढ़नेमें बड़ा मन लगता है। उन दृष्टान्तोंको पढ़नेसे धर्म्म करनेकी जरूरत समझमें आती है तथा धर्म्म करनेका जी चाहता है और यह जाननेकी इच्छा होती है कि ईश्वर क्या है और ईश्वर कैसा होता है। यह इच्छा पूरी करनेके लिये 'स्वर्गकी कुंजी' दूसरी पुस्तक है। उसमें ईश्वरका स्वरूप बहुत विस्तारसे समझाया है तथा यह बात बहुत अच्छी तरह बतायी है कि प्रभुकी इच्छाके अधीन होनेकी कितनी बड़ी जरूरत है और धर्म्म पालनेसे क्या क्या लाभ होते हैं। इसके बाद 'स्वर्गका खजाना' भक्तिमार्गकी तीसरी पुस्तक है उसमें भक्तिकी जरूरत, संतके लक्षण, ईश्वरका स्वरूप, मनको वशमें रखनेके उपाय, प्रभुके लिये भक्तोंकी तड़फड़ाहट, भक्तिका सच्चा स्वरूप इत्यादि खुलासा करके समझाये हैं। इससे वह पुस्तक भक्तिमार्गकी तीसरी पोथी समान है। इसके बाद 'स्वर्गके रत्न' चौथी पुस्तक है। स्वर्गका विमान, स्वर्गकी कुंजी और स्वर्गका खजाना नामक तीनों पुस्तकोंसे स्वर्गके रत्नमें अधिक रहस्य है। इसके दृष्टान्त बड़े हैं, इसमें हर रोजके काममें आनेवाला धर्म्म बताया है और हर रोजके काम काजमें कुशलता रखने तथा अच्छे बुरे प्रसंगों पर समता रखनेकी कुंजियां बतायी है। इसलिये यह भक्तिमार्गकी चौथी पोथी है।

इन चारों पुस्तकोंकी लिखावटमें जैसे फर्क है और उतार

चढ़ाव है वैसे ही इनके नामोंमें फर्क है। जैसे, हर एक अच्छे आदमीकी इच्छा स्वर्ग पानेकी होती है और **'स्वर्ग' माने महात्माओंका स्वीकार किया हुआ ऊंचेसे ऊंचे दरजेका सुख, स्वर्ग माने उस स्थितिमें रहना जिससे अन्तरात्माकी तृप्ति हो और स्वर्ग माने प्रभुमय जीवन तथा स्वयं प्रभु। मेरे 'स्वर्ग' शब्दका यह अर्थ है।** स्वर्गको पानेके लिये छकडा वहली या घोडागाडी नहीं काम आती और इतनी कम तेजीसे चलनेपर वहां जल्द नहीं पहुँचा जा सकता। और स्वर्ग ऐसा अलौकिक विषय है कि वहां जल्दसे जल्द पहुंचना चाहिये। इससे वहां जानेके लिये 'स्वर्गका विमान' चाहिये। उस विमानमें बैठकर स्वर्गके द्वारतक पहुंच सकते हैं, परन्तु स्वर्गके अन्दर नहीं जा सकते। अंदर जानेके लिये ऐसी कुंजी चाहिये कि जिससे स्वर्गका द्वार खुले। इसलिये स्वर्गके विमानके बाद दूसरी पुस्तक 'स्वर्गकी कुंजी' है। स्वर्गके अन्दर दाखिल होने पर भी वहांका खजाना एकदम नहीं मिल जाता। जैसे किसीके घरमें जाइये तो वह सारा घर दिखाई दे सकता है पर वहांका खजाना नहीं दिखाई देता क्योंकि वह तो जमीन में गडा होता है, कुठलेमें मुंदा रहता है या सन्दूकमें बंद रहता है; वैसे ही स्वर्गकी कुंजी पाकर स्वर्गमें दाखिल होनेसे कुछ स्वर्गका खजाना नहीं मिल जाता। उसको पानेके लिये तो 'स्वर्गका खजाना' चाहिये। अब खजानेमें भी अनेक चीजें होती हैं जैसे तांबा, चांदी, सोना, हीरा, मोती, नोट, शेयर, पुराने दस्तावेज आदि। पर हमको इन सब चीजोंसे कुछ काम नहीं है। ऐसे तो इन सब चीजोंमेंसे खास चुने हुए

रत्न दरकार हैं । इसमें स्वर्गका खजाना मिलनेके बाद 'स्वर्गके रत्न' की जरूरत है । इसलिये स्वर्गके खजानेके बाद यह स्वर्गके रत्नोंकी पुस्तक मैं हरिजनोंकी सेवामें पेश करता हूं । इसके बादकी इसी किसमकी दूसरी पुस्तकोंमे अधिक ऊंचे दरजेके, अधिक खूबीवाले, अधिक रोचक तथा परम कृपालु परमात्माके अधिक निकट पहुचानेवाले दृष्टान्त आवें और यह काम शीघ्रतासे हो—इसके लिये ईश्वरसे प्रार्थना करता हूं ।"

इस किसमकी—भक्तिमार्गकी पुस्तकें गुजराती लोगोंको बहुत रुचती हैं । इसका सबूत यह है कि गुजराती में 'स्वर्गका विमान' के तीन संस्करण और 'स्वर्गकी कुंजी' के दो संस्करण निकलचुके हैं। मुझे आशा है कि हिन्दी में भी इस ढङ्गकी पुस्तकोंका आदर होगा ।

काशी
वसन्तपंचमी १९७०

निवेदक—
महावीर प्रसाद गहमरी ।

स्तुति

नमस्ते सते सर्वलोकाश्रयाय,
नमस्ते चिते विश्वरूपात्मकाय ।
नमोऽद्वैत तत्त्वाय मुक्तिप्रदाय,
नमो ब्रह्मणे व्यापिने निर्गुणाय ॥ १ ॥

त्वमेकं शरण्यं त्वमेकं वरेण्यं,
त्वमेकं जगत्कारणं विश्वरूपम् ।
त्वमेकं जगत्कर्तृ पातृ प्रहर्तृ,
त्वमेकं परं निश्चलं निर्विकल्पम् ॥ २ ॥

भयानां भयं भीषणं भीषणानां,
गतिः प्राणिनां पावनं पावनानाम् ।
महोच्चैः पदानां नियन्तृ त्वमेकं,
परेषां परं रक्षणं रक्षणानाम् ॥ ३ ॥

परेश प्रभो सर्वरूपाविनाशिन्,
अनिर्देश्य सर्वेन्द्रियागम्य सत्य ।
अचिन्त्याक्षर व्यापकाव्यक्त तत्त्व,
जगद्भासकाधीश पायादपायात् ॥ ४ ॥

त्वदेकं स्मरामस्त्वदेकं भजामः,
त्वदेकं जगत्साक्षिरूपं नमामः ।
त्वदेकं निधानं निरालम्बमीशं,
भवाम्भोधिपोतं शरण्यं व्रजामः ॥ ५ ॥

(स्तोत्र रत्नाकर ।)

सर्वेऽत्र सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखमाप्नुयात् ॥

॥ श्रीः ॥

स्वर्गके रत्न ।

१-अपने स्वभावको काबूमें रखनेके विषयमें ।

हमारी जिन्दगीका मुख्य उद्देश्य यह है कि हम अनन्त कालके मोक्षका सुख हासिल करें, हमेशाकी स्वतंत्रता हासिल करें, अपनी आत्माका अमरत्व प्राप्त करें और किसी तरहका दुःख, किसी तरहका पाप या किसी तरहका अफसोस हमारे मनमें न रहे। परम कृपालु परमात्माने यह सब करनेकी हमें पूरी पूरी शक्ति दी है। इस शक्तिको विकसित करनेका नाम धर्म है, इसका नाम कर्तव्य है, इसका नाम ड्यूटी है, इसका नाम फर्ज है और इसका नाम जिन्दगीकी सार्थकता है। इसलिये हमें यह जानना चाहिये कि ऐसी कौन सी कुंजी है जिससे यह सब हो सकता है। इसके लिये दुनिया भरके शास्त्र तथा महात्मा लोग कहते हैं कि—

अपने मनको काबूमें रखना धर्मका बड़ेसे बड़ा पाया है। पर मुश्किल यह है कि मन बहुत चंचल, बड़ा हठी और बहुत जोरावर होनेके कारण एकदम जीता नहीं जा सकता, इससे मनको जीतनेके लिये पहले हमें अपने स्वभावको काबूमें रखना सीखना चाहिये। क्योंकि स्वभाव मन नहीं है; बल्कि मनके अन्दर अनेक प्रकारका स्वभाव हो सकता है; इससे

स्वभाव मनके मुकाबले बहुत छोटी चीज है और वह हमारी पड़ी हुई टेवों का परिणाम है। इसलिये अगर हम उसको दबा देना चाहें तो सहजमें दबा सकते हैं। पर स्वभावको कैसे बदलना चाहिये यह बात बहुत आदमी नहीं जानते। इसलिये स्वभावको काबूमें रखनेकी कुछ सीधी सादी और सहज युक्तियां जाननी चाहियें।

जब अपनी मरजीके अनुसार कर सकनेवाले बादशाह भी अपने स्वभावको काबूमें रखते हैं तब हम उनके सामने किस गिनती में हैं कि मिजाज करें ?

महारानी विक्टोरिया लगभग दुनियाके तीसरे भाग पर राज्य करती थीं और इतनी बड़ी वैभववाली तथा अधिकारवाली थीं कि जो चाह सो कर सकती थीं। इतना होनेपर भी वह हमेशा अपने स्वभावको काबूमें रखती थीं। बहुत वैभव, पूरी हकूमत, भोग विलासका बेहद सामान और अनेक प्रकारके सुभीते-जिनके कारण मनुष्य मस्त होजाता है और आपेमें नहीं रहता वैसे सुभीते-रहने पर भी वह अपने स्वभावको बिगड़ने नहीं देती थीं। इससे सम्राज्ञीकी हैसियतसे सारी दुनियामें उनके नामकी जितनी इज्जत है उससे भी अधिक इज्जत एक आदर्श सद्गुणी महारानीकी हैसियतसे है। और यह क्यों है? स्वभावको जीतनेसे। वह अपने स्वभावको कहां तक काबूमें रखती थीं यह जाननेके लिये उनके जीवनचरित्रका एक उदाहरण देते हैं।

एक बार महारानी विक्टोरियाको कहीं बाहर जाना था। जानेका वक्त हो गया था और आप तय्यार भी थीं पर उनकी सेवामें रहनेवाली एक लेडी अबतक नहीं आयी थी; इससे वह उसकी बाट देखती थीं। बाट देखते देखते जब बहुत देर होगयी

ौर तोभी वह लेडी नहीं आयी तब महारानी गाड़ी में बैठीं
तनेमें वह लेडी आ पहुँची । महारानी विक्टोरियाने उससे
कहा कि तुम्हारी घड़ी जरा सुस्त है, इसलिये मैं अपनी घड़ी तुम्हें
नाम देती हूं। यह कह कर उन्होंने अपनी घड़ी उस लेडीके
हाथमें दी। इस वर्तावसे वह लेडी बहुत शरमायी और इसके बाद
उसने तुरत इस्तेफा दे दिया।

भाइयो और बहनो ! इस बातसे हमको विचार करना चाहिये कि महारानी विक्टोरियाके बदले अगर दूसरा कोई राजा, हाकिम या दिमागी अमीर होता तो क्या करता ? वह कैसा कड़ा वचन बोलता ? और अपने मिजाजको कितना गरम कर देता ? पर यह सब कुछ न करके महारानीने उलटे अपनी घड़ी इनाम दी। यह कितनी बड़ी लियाकतकी बात है जरा ख्याल तो कीजिये । क्या इससे हमको यह सोचनेका मौका नहीं मिलता कि जब महारानी विक्टोरिया जैसे आदमी भी अपने स्वभाव को जीतते हैं और अपना गुस्सा रोकते हैं तब हम उनके आगे किस गिनतीमें हैं ? और तिसपर भी हम कितना गुस्सा करते हैं, कितना मिजाज करते हैं और नाहक कितने हैरान होते हैं यह तो जरा सोचिये। महारानी विक्टोरिया उस समय गुस्सा करतीं तो उस लेडीको सजा दे सकतीं, मौकूफ कर सकतीं, उसका अपमान कर सकतीं और कई तरहसे उसको हैरान कर सकतीं। पर याद रखना कि हम जिन पर गुस्सा करते हैं उनका कुछ भी नहीं करसकते और तोभी नाहक त्योरी बदलते हैं । इसलिए यों त्योरी बदलना और बात बातमें गुस्से हो जाना तथा मन बिगाड़ना कितना खराब है इसका तो जरा ख्याल कीजिये । अगर ऐसे दृष्टान्त नजरके सामने रहेंगे तो धीरे धीरे हम अपने

स्वभावको कावूमें रखना सीख सकेंगे। इसलिये एक और दृष्टान्त सुनने की मेहरबानी कीजिये।

७—एक बादशाहने अपने गुलामसे कहा कि मैं जब तेरे जैसा होऊं तब न तुझे सजा दूं? पर इस वक्त तो मैं बादशाह हूं और तू गुलाम है।

बादशाह तैमूरलंग इतिहासमें बहुत प्रसिद्ध आदमी है। वह तातार मुल्कमें राज्य करता था और उसने कितने ही देश जीते थे। वह सन् १३९८ ईस्वीमें हिन्दुस्थान आया था और उसने दिल्लीको लूटा था। वह बादशाह एक पैरका लंगड़ा था, इससे लंगड़ाते लंगड़ाते चलता था। यह देखकर बादशाहके एक गुलामको हंसी आयी और वह एक दूसरे गुलामके सामने बादशाहकी चालकी नकल उतारने लगा। बादशाह तैमूरलंगने यह देख लिया और वह गुलाम भी जान गया कि बादशाह ने देखा है। इससे गुलामके होश उड़ गये और वह मनमें सोचने लगा कि न जाने अब मेरी क्या दशा होगी। क्योंकि उस समय गुलामोंको मार डालना कोई बड़ी बात नहीं थी और उस समयके राजा भी कुछ बहुत सोच विचार कर या कानूनके पाबन्द होकर काम नहीं करते थे, बल्कि उनकी मरजी ही कानून थी और उनका हुक्म ही कायदा था। इससे अगर तैमूरलंग चाहता तो उसी वक्त उस गुलामके टुकड़े टुकड़े करा सकता था या चाहे जैसी घातकी सजा कर सकता था। पर उसने अपने स्वभावको कायम रखकर और कुछ सजा न देकर उस गुलामसे कहा कि तू गुलाम है और मैं बादशाह हूं।

मै जब तेरे जैसा गुलाम बनूँ तब न तुझे सजा दूं ? पर नहीं, मै तेरे जैसा गुलाम नहीं बनूंगा । मैं बादशाह ही रहूंगा और तुझे माफ करूंगा ।

बन्धुओ ! तैमूर बादशाहका यह दृष्टान्त हमें यह सिखाता है कि जब हम दूसरे आदमी पर गुस्सा करते हैं तब हम भी उसीके देसे बन जाते है और इस तरह संठके सामने संठ बननेमें क्या कुछ चतुराई है ? या कुछ बहादुरी है ? इसलिये और किसीपर गुस्सा करनेसे पहले हमें अपनी पोजीशनका विचार करना चाहिये । हम किस जातिके हैं, हमारा देश कौन सा है, हमारा क्या धर्म है, हम किस माबापके लडके है, हम किन ऋषियोंके वंशमें उत्पन्न हुए है, हमारी क्या शिक्षा है, हमारा क्या दरजा है और हम जिस आदमी पर क्रोध कर रहे है वह कौन है और इस दुनियामें ऐसा क्या कसूर है कि जिसके लिये हम अपना मन बिगाड़ें इत्यादि बातें सोचनी चाहियें । क्योंकि मिजाज बिगाड़ने से मन बिगडता है और मनके बिगाडनेसे सर्वस्व बिगड़ता है, मन बिगाड़नेसे हमपर शैतानकी सवारी हो जाती है, मन बिगाड़नेसे हमारी आत्माका बल ढक जाता है, मन बिगाड़नेसे धर्म ढीला हो जाता है, मन बिगाड़नेसे कर्त्तव्यमें चूक होजाती है और मन बिगाड़नेसे हम ईश्वरसे विमुख होजाते है। इतना ही नहीं बल्कि मन बिगाड़नेसे नरकमें जाना पड़ता है और बारंबार जन्म लेना पडता है । याद रखना कि हम जो छोटी छोटी बातोंमें अपना स्वभाव बिगाड़ते हैं, अपना मिजाज बिगाड़ते है और अपनी भूलभरी टेवोंके अधीन रहते हैं इसीसे ऐसा खराबी होती है । ऐसा न होने देनेके लिये अपने स्वभावको काबूमें रखनेके लिये इन बातोंका ख्याल रखना सीखिये कि हम कौन हैं,

हमारी कितनी इज्जत है और हमारा क्या कर्त्तव्य है । अगर तैमूर बादशाहकी तरह यह समझें कि हम बादशाह हैं और कसूर करनेवाला गुलाम है तो स्वभावका काबूमें रखनेमें बड़ी मदद मिलगी । क्योंकि कसूर करने वाला आदमी चाहे जितना बड़ा हो पर जिस समय वह कसूर करता है उस समय वह अपने विकारोंका गुलाम ही होता है, इसलिये ऐसे गुलामके साथ हम भी गुलाम क्यों बनें ? हमें तो बादशाह ही रहना चाहिये । इसीमें खूबी है इसीका नाम धर्म है और इसीमें प्रभुकी प्रसन्नता है । इसवास्ते स्वभाव खोकर गुलामके साथ गुलाम न बनकर बादशाह रहना सीखिये । बादशाह रहना सीखिये ।

३–जो आदमी दूसरोंका मन रख सकता है वह दुनियाको जीत सकता है; पर जो आदमी अपने मनको वशमें कर सकता है वह परमेश्वरको जीत सकता है ।

स्वभावको काबूमें रखनेके विषयमें यह बात भी समझने लायक है कि जो दूसरोंका स्वभाव जीत सकता है वह दुनियामें बहुत बड़ी फतह पाता है और कितनी ही बातोंमें मन मानी कर लेता है । जैसे-जिस आदमीको राजा या सेठ साहूकारका मन रखना आता है उस आदमीकी उस राजा या सेठके यहां रसाई होजाती है, फिर वह जो चाहे सो फायदा उसकी मार्फत उठा लेता है । इसीतरह जिस विद्यार्थीको अपने मास्टरका मन रखने की टेव पड जाती है या जिसको यह हिकमत आजाती है वह दूसरे विद्यार्थियोंकी अपेक्षा

मास्टरका अधिक प्यारा होजाता है, इससे सैकड़ों विद्यार्थियों पर कई तरहसे हुकूमत चला सकता है। जो स्त्री अपने पतिका मन रख सकती है वह चाहे और बातों में मामूली हो तौभी पतिको प्यारी होजाती है और घरमें सबपर उसका अधिकार चलता है। इसीतरह जो चेला गुरुका स्वभाव जान लेता है और उसे उसके स्वभावके अधीन रहना आता है वह चेला गुरुके गुप्त भेद जान सकता है और इससे आगे जाकर नामी आदमी होसकता है। इस प्रकार दूसरोंका मन समझने और रखने-से दुनियामें आदमी बड़ा आदमी होसकता है और कितनी ही ऐसी कीमती चीजें हासिल कर सकता है जो और तरह नहीं मिल सकतीं। इसके सिवा प्रेम जैसी अनमोल वस्तु भी एक दूसरे-का मन रखनेसे धीरे धीरे बढ़ सकती है। याद रखना कि यह सब दूसरोंका मन रखनेवालोंको, दूसरोंका मन वशमें करनेवालोंको मिलता है। पर अगर अपना मन अपने वशमें रखा जाय तो इससे क्या लाभ होता है यह आप जानते हैं? इसके लिये सन्त लोग कहते हैं कि—

जो भक्त अपने मनको वशमें रख सकता है वह प्रभुको वश में कर सकता है। क्योंकि अपने स्वभावको काबूमें रखनेसे अपनी इन्द्रियाँ काबूमें आती जाती हैं; इन्द्रियोंके काबूमें आनेसे विषय भोगनेका लालच काबूमें आता जाता है; विषय भोगनेका लालच काबूमें आनेसे वासनाकी नयी नयी कोंपलें निकलनेमें रुकावट होती है; वासनाकी नयी नयी कोंपलोंका निकलना रुकनेसे मनमें संकल्प विकल्प होना रुकता है; मनमें संकल्प विकल्पका होना रुकनेसे मन वशमें होता जाता है; मनके वशमें होनेसे बुद्धि स्थिर होती जाती है; बुद्धिके स्थिर होनेसे एकाग्रता होती जाती है; एकाग्रता

होनेसे ध्यानकी दशा आती जाती है; ध्यानकी दशा मज-बूत होनेसे सहज समाधिका आनन्द मिलने लगता है, इसके बाद आत्मसाक्षात्कार होता है और अन्तमें परमात्माका दर्शन होता है। फिर उसके साथ अभेदभावका अनुभव होता है जिससे ईश्वर जीता जासकता है। और अच्छी तरह समझ लीजिये कि यह सब मनको काबूमें रखनेसे धीरे धीरे होता है। इसलिये अगर दुनिया में बड़ा होना हो तो दूसरों-का मन वशमें करना सीखिये और अगर ईश्वरके साथ ऐक्य अनुभव करना हो तो अपने स्वभावको काबूमें रखना सीखिये। अपने स्वभावको काबूमें रखना सीखिये। क्योंकि यही सहज, सीधी, सुन्दर और सुनहली कुंजी है।

४-हम जैसे दूसरों पर अपना मिजाज बिगाड़ते हैं वैसे अगर हमपर ईश्वर अपना मिजाज बिगाड़े तो हमारा क्या हाल हो? इसका विचार आपने किसी दिन किया है?

इस दुनियाका यह कायदा है कि हमारे हर एक कर्मका फल ईश्वरकी तरफसे मिलता है। हम जैसा करते हैं वैसा पाते हैं, जैसा बोते हैं वैसा काटते हैं और जैसी भावना रखते हैं वैसे हम बन जाते हैं। यह सब प्रत्यक्ष रीतिसे या परोक्ष रीतिसे ईश्वरके नियमानुसार होता है; क्योंकि अच्छे बुरे सब तरहके कर्मोंका फल देनेवाला परमात्मा है और पर-मात्मा सर्वज्ञ है तथा सर्वशक्तिमान है; इससे कोई छोटीसे

छोटी घटना या छिपीसे छिपी बात भी उसके ध्यानके बाहर नहीं होसकती। और कुदरत का ऐसा नियम है कि जगतमें किसी कर्मका फल मिले बिना नहीं रहता। कर्म चाहे कितना ही छोटा हो पर उसका कुछ न कुछ फल तो होता ही है। ऐसा बढिया नियम होनेसे हमें अपने हर एक कर्मका जवाब देना पड़ेगा। इसलिये याद रखना कि अगर हमने दूसरों पर अपना स्वभाव बिगाड़ा है, दूसरोंके सिर कलंक लगाया है या दूसरोंको सन्देहकी दृष्टिसे देखा है, दूसरों पर अपना मन बिगाड़ा है, दूसरोंके विषयमें बुरे विचार किये हैं, दूसरोंकी दिल्लगी उड़ायी है, दूसराको ताने तिश्ने मारे हैं या दूसरों पर अपनी आंखें बिगाड़ी हैं, कान बिगाड़े हैं, जीभ बिगाड़ी है और हाथ बिगाडे है तो इन सबके लिये योग्य अवसर पर हमें सजा मिलेगी, इसमें जरा भी शक नहीं है। और यह भी याद रखना कि सजा देनेवाला समर्थसे समर्थ, देवोंका देव, भयका भय और कालका भी काल स्वयं परमात्मा है। इससे उसकी सजा कैसी भयंकर होगी यह तो जरा ख्याल कीजिये! क्योंकि जितना अधिक अधिकार होता है, जितना सूक्ष्म बल होता है और जितनी ऊंची सत्ता होती है उतनी ही सख्त उसकी सजा भी होती है जैसे—

बीरबलने अकबर बादशाहसे कहा था कि अगर कभी मैं कोई कसूर करूं तो मेरा इन्साफ इस गांवके डोमोंसे कराइयेगा। यह सुन कर बादशाह हंसा कि बडे बड़े हाकिमों और सेठ साहूकारोंको छोडकर तुम्हारा इन्साफ डोमसे कराया जाय इसका क्या कारण? बीरबलने कहा कि डोमोंसे मेरा झगड़ा है इससे वे मुझपर बहुत नाराज हैं। वे मुझे कड़ी सजा देंगे जिससे मैं फिर कोई कसूर नहीं करूंगा। हाकिम और सेठ

साहूकार तो मुझ अच्छी तरह पहचानते हैं और मेरे गुण दोष जानते हैं तथा उन्हें यह भी मालूम है कि मैं आपका कृपापात्र हूँ इससे वे मुझे कड़ी सजा नहीं देंगे जिससे फिर कसूर करने को जी चाहेगा। इसलिये अगर मुझे सख्त सजा देनी हो तो डोमोंके पास मेरा इन्साफ करानेकी मेहरबानी करना। इसके बाद बीरबलसे कोई कसूर हुआ, तब बादशाह ने डोमोंको बुलाया और कहा कि बीरबल ने बहुत भारी कसूर किया है इसलिये तुम उसको सजा दो। यह सुनकर डोम बहुत खुश हुए और आपसमें कहने लगे कि आज यह हाथमें आया है! आज इसे खूब सजा देनी चाहिये। फिर एकने कहा कि इसपर तीन बीस कौड़ी दण्ड करो, दूसरेने कहा कि सात बीस कौड़ी दण्ड करो, तीसरा बोला कि नहीं इसपर ग्यारह बीस कौड़ी दण्ड करो। तब सब कहने लगे कि अरे भाई! यह क्या कहते हो? इतना दण्ड करोगे तो बेचारा मारा जायगा। अन्तमें सबने सलाह करके नौ बीस कौड़ी यानि १८० कौड़ी जुरमानेकी सजा दी और मन ही मन खुश होने लगे कि आज हमने बीरबलको पीस डाला है! अब फिर कभी यह हमलोगोंको नहीं छेड़ेगा। जुरमानेकी यह रकम सुनकर बादशाहको बड़ा ताज्जुब हुआ और वह बीरबलकी चतुराई पर खुश हुआ क्योंकि अगर किसी अमीर उमरा या सेठ साहूकारको इसका इन्साफ सौंपा गया होता तो वह हजारों मोहरें दण्ड करता।

बड़ोंकी नजर बड़ी होती है, इससे बड़ोंका इनाम भी बड़ा होता है और बड़ोंकी सजा भी बड़ी होती है। पर गरीबोंकी सजा थोड़ी होती है और उनकी तरफसे मिलनेवाला बदला भी बहुत थोड़ा होता है। इसलिये थोड़े बदलेकी आशा न

रखकर फलकी इच्छा विना कर्म करने और जिसकी तरफसे बहुत बड़ा बदला मिल सकता है उसको अपने कर्म अर्पण करनेके लिये शास्त्रका हुकम है। इससे समझ लेना कि यह हुकम हमें बड़ेसे बड़ा फल देनेके लिये ही है। क्योंकि अगर हम अपने कर्मोंके छोटे छोटे फल यहीं भोगलें तो फिर परमात्माकी तरफसे बड़ा इनाम नहीं मिल सकता। इसवास्ते परम दयालु परमात्माका बड़ा इनाम लेनेके लिये हमें निष्काम कर्म करना सीखना चाहिये। और जहां फलकी इच्छा ही नहीं रहेगी वहा फिर मिजाज बिगाड़नेकी जरूरत ही क्या होगी? दूसरे यह भी ध्यानमें रखना कि शक्ति जितनी कम है या मनुष्य जितना कमजोर है उतनी ही थोडी उसकी तरफसे होनेवाली सजा होती है और हम सब बहुत ही कमजोर हैं और बड़े ही बन्धनमें हैं। जैसे, हमें देश रोकता है, काल रोकता है, राज्यके कानून रोकते हैं, समाजके बंधन रोकते हैं, लोकलाज रोकती है, गांवके रिवाज रोकते हैं, जातिके बन्धन रोकते हैं, कुटुम्बकी रस्में रोकती हैं, नींद रोकती है, भूख रोकती है, जाड़ा, गरमी, बरसात वगैरह ऋतुओंके फेरफार रोकते हैं, मनकी टेव रोकती है, वहम रोकते हैं और इसीतरहके और कितनेही बन्धन रोकते हैं। किन्तु परम कृपालु परमात्माको इनमेंसे कोई भी नहीं रोक सकता। इससे जैसे एक बालक अपने कोमल हाथोंसे जितनी सजा दे सकता है उससे अधिक सख्त सजा पहलवान अपने मजबूत हाथोंसे दे सकता है वैसे ही आदमीकी सजासे समर्थ प्रभुकी सजा हजारगुनी बड़ी होसकती है। इसलिये अब विचार कीजिये कि दूसरोंके कसूरके लिये हम जैसे उनपर मिजाज बिगाड़ते हैं और धैर्य छोड़ देते हैं वैसे ही हमारे कसूरके लिये अगर सर्वशक्तिमान ईश्वर

हमपर अपना मिजाज बिगाडे तो हमारा क्या हाल हो। इस बात पर आपने किसी दिन विचार किया है ? और यह कभी सोचा है कि उसकी सजा कितनी बड़ी होगी ? ऐसा विचार करनेसे भी हम अपने स्वभावको काबूमें रखना सीख सकते हैं। इसलिये प्रभुके कोपका ख्याल करके दूसरों पर मिजाज बिगाड़ने से रुकना। मिजाज बिगाड़नेसे रुकना।

५-स्वभाव न बिगाड़नेका उपाय; किसीकी उलहनेकी चिट्ठी आयी हो तो उसको जवाब तुरत मत लिखिये।

स्वभावको काबूमें रखनेसे मन काबूमें रह सकता है और मनको काबूमें रखनेसे मोक्ष मिल सकता है यह दुनिया-के हर एक शास्त्र और हर एक महात्माका सिद्धान्त है। इस लिये हमें अपने स्वभावको काबूमें रखनेके कुछ मोटे मोटे उपाय जान रखना चाहिये। इसके लिये कितने ही उपाय हैं और उन्हें जुदे जुदे विद्वानोंने जुदे जुदे ढङ्गसे बताया है। उनमें एक यह उपाय भी ध्यानमें रखने योग्य है कि जब हमें किसीकी तरफसे मेहना मिले तब बनसके तो उसी वक्त, तुरत ही उसका जवाब न दिया जाय और जब किसीकी, उलहने की चिट्ठी आवे तब तुरतही उसका उत्तर न लिखा जाय, बल्कि विचार करनेके बाद और उलहनेकी गरमी उतर लेने पर उसका जवाब दिया या लिखा जाय। ऐसा करनेसे स्वभाव काबूमें रखा जा सकता है और इससे गुस्सा कम हो सकता है। क्योंकि जिस समय हमारे पास उलहने या मेहनेकी चिट्ठी

आती है उस समय वह चिट्ठी पढ़ कर उसके लिखनेवालेके गुस्सेका असर उस चिट्ठीकी मार्फत हममें आ जाता है। इससे उस समय हमारा मिजाज गरमा जाता है और हमारी विचारशक्ति एक तरफ झुक जाती है जिससे उस वक्त हम अच्छे बुरेका ठीक ठीक वजन नहीं कर सकते। और उस समय इस किस्मका एक जोश होता है कि उस जोशमें अपनी भूलें हमारी समझमें नहीं आतीं और विरुद्ध पक्षवालेका उद्देश्य हम नहीं समझ सकते। इसके सिवा उस समय गुस्सेकी गरमीमें उस चिट्ठी लिखनेवाले पर बहुत क्रोध आ जाता है इससे उसपर अन्याय करनेका हमारा जी चाहता है। क्योंकि उस समय हमारा मिजाज काबूमें नहीं रहता; इससे हमारी विचारशक्ति तथा विवेकबुद्धि दब जाती है। उस समय अगर हम उस व्यंगवाली चिट्ठीका जवाब देनेको तैय्यार हों तो उसमें अट्टका सट्ट लिखा जाता है जिससे परिणाममें हमारा नुकसान होता है तथा पश्चात्ताप होता है और कितनोंही बार जीमें ऐसा ख्याल होता है कि ऐसा जवाब न दिया होता या न लिखा होता तो अच्छा होता। पर हाथसे तीर निकल जाने पर फिर वह पकड़ा नहीं जा सकता। इसी तरह जो शब्द मुँह से निकल गया या लिख गया वह फट या मिट नहीं सकता और पीछे उसका असर मिटानेका यत्न करें तौभी दाग तो रह ही जाता है। इसलिये मिजाजको ठिकाने रखना हो तो जल्दीमें कोई काम न कर डालना और उसमें भी जहां गुस्सेकी बात हो वहां तो विशेष सम्हाल रखना। इस तरह गुस्सेकी चिट्ठीका जवाब लिखनेमें देर करना या सजा देनेमें ठहरना भी अपने स्वभावको काबूमें रखनेका एक मजबूत उपाय है। इसलिये जिसे अपना सुधार करना

हो और अपनी आत्माका कल्याण करना हो उसे ऐसी सीधी सीधी, छोटी छोटी परन्तु अतिशय उपयोगी बातोंको भी ध्यान रखना चाहिये।

६–जैसा हमारा स्वभाव है वैसा ही स्वभाव सबका नहीं है, इसमें मतभेद तो होगा ही। पर उसे बरदाश्त करना चाहिये।

स्वभावको काबूमें रखना सीखनेके लिये यह बात भी समझ लेना चाहिये कि जैसा हमारा स्वभाव है वैसा ही स्वभाव सब आदमियोंका नहीं होता। और हमें दुनियाके बहुत आदमियोंसे काम है। इस संसारकी रचना ही ऐसी है कि सब वस्तुएं तथा सब आदमी एक दूसरेके आधार पर हैं। किसीका जीवन एकदम जुदा नहीं होता तथा दूसरोंकी मदद बिना किसीका जीवन नहीं टिक सकता। यह महा नियम होनेसे ऐसा हो ही नहीं सकता कि कोई एकदम अकेला रह सके। हम सबको एक दूसरे की मदद लेनी ही पड़ेगी। इस लिये तरह तरहके कितने ही आदमियोंसे साथ होगा तथा काम पड़ेगा और वे सब आदमी हमारे विचारोंसे सहमत नहीं होंगे इससे मतभेद तो होगा ही। और उसमें यह भी स्पष्ट है कि हमारा विचार हमको जितना प्यारा लगता है, हर एक आदमीको अपना विचार उतना ही प्यारा लगता है, हमें जैसे अपनी चाल ढाल पसन्द है वैसे ही हर एक आदमीको अपनी चाल ढाल पसन्द है और जैसे हम अपने स्वभावको काबूमें नहीं

रख सकते वैसे ही दुनियाके दूसरे आदमी भी अपने स्वभावको कायूमें नहीं रख सकते ; इसमें मतभेदका मौका तो बार बार आवेगा ही। अगर हर मौकेपर हम अपना जी दुखाया करें तो फिर हमारा काम कैसे चलेगा ? यह भी याद रखना कि कुछ हमारे लिये मनुष्य जातिका स्वभाव नहीं बदल सकता हमारे लिये सब आदमियोंके संकल्प विकल्प नहीं मिट सकता, हमारे लिये सब आदमियोंकी बुद्धिकी विचित्रता नहीं मिट सकती और न हमारे लिये ऋतुओं या वस्तुओंके गुण दोष ही बदल सकते हैं। यह सब विभिन्नता तो यों की यों रहेगी ही। इस विभिन्नताको देखकर अगर हम अपना स्वभाव बिगाड़ा करें तो फिर इसका फल क्या होगा ? भाइयो! दुनिया बिना कांटे-की नहीं हो सकती। दुनियामें तो बबूल, बेर, नखदमन, गोखरू, सेंहुड़, सत्यानाशी आदिके कांटे रहेंगे ही । लेकिन हम अगर अपने पैरोंमें जूते पहन लें तो कांटे हमें नहीं गड़ेंगे । इसीतरह इस दुनियामें जुदी जुदी चीजोंके जुदे जुदे गुण दोष तो रहेंगे ही, जुदी जुदी ऋतुओंका जुदा जुदा असर तो होगा ही और जुदे जुदे आदमियोंका जुदा जुदा स्वभाव तो रहेगा ही ; ये सब हमारे लिये अभीके अभी बदलनेके नहीं । परन्तु हमको जरा अधिक पोढ़ होना चाहिये, जरा अधिक मजबूत होना चाहिये और हमें ऐसी मजबूती रखनी चाहिये कि ऐसे ऐसे कारणोंसे तथा ऐसे ऐसे मौकोंपर हमारा स्वभाव न बिगड़े। अगर इस प्रकार मनुष्यके स्वभावकी रचना तथा सृष्टिके क्रमकी रचना समझ ली जाय तो कितने ही तरहके दुःख और जोश आपसे आप घट जायं। क्योंकि ऐसा समझ लेनेसे हमको ऐसा लगता है कि यह सब चक्र हमसे बदलनेवाला नहीं है । कहां इतना बड़ा संसार और कहां हम ? कहां अनेक आदमियोंके

जुदे जुदे विचार और कहां हमारा मतभेद ? इन सबके सामने हम अकेले क्या कर सकते हैं ; जगतकी लाखों चीज हमारे सामने नहीं झुक सकतीं । क्योंकि हमने अभी इतना बल हासिल नहीं किया है । इसलिये हमें ही उनके पास झुक जाना चाहिये और तभी हम सुखी हो सकते हैं ; यह सोचकर अपने मन तथा स्वभावको काबूमें रखना सीखना चाहिये । अगर ऐसा विचार नजरके सामने रहे तो धीरे धीरे मिजाजका रोकना आजाता है । इसलिये ऐसे उत्तम विचारको नजरके सामने रखनेकी कोशिश कीजिये । कोशिश कीजिये ।

७–नये ढंगका तप ।

बहुतसे लोग यह समझते हैं कि बहुत उपवास करनेका नाम तप है ; कोई यह समझता है कि जाड़ेमें सरदी सहना, चौमासेकी वर्षामें भीगना और गरमीमें सूर्यकी कड़कड़ाती धूप खाना तप है ; कोई यह समझता है कि रेतीमें गड़ जाने या पेड़पर औंधे लटकनेका नाम तप है, कोई यह समझता है कि लोहेकी कीलोंपर सोने या रातको जागनेका नाम तप है ; कोई यह समझता है कि बालू फांकने, गोमूत्र पीने या राख घोलकर पीजाने अथवा गोबर खाकर रहनेका नाम तप है; कोई यह समझता है कि हजामत न बनवाने या नाखून न कटानेका नाम तप है; कोई यह समझता है कि पैदल चलने और तीर्थोंमें घूमा करनेका नाम तप है और कोई यह समझता है कि जिन्दगीके लिये जरूरी चीजें न लेने और बिना कारण दुःख भोगा करनेका नाम तप है । इस प्रकार तपके

अधूरे और बुरे अर्थ लोगोंके मगजमें घुस गये हैं । पर सच्चा तप क्या है ? इसके लिये महात्मा लोग कहते हैं कि—

अपने अन्दर जो जो भूलें हों उनपर गुस्सा करने और उन भूलोंको अपनेमेंसे निकाल डालनेके लिये भीतरसे हलचल मचानेका नाम तप है । ऊपर लिखे सब तरहके तप करनेपर भी अपनी भूलोंसे लापरवाही हो तो उसका अच्छा परिणाम नहीं उतर सकता क्योंकि ऐसे ऐसे कितने ही तप करनेपर भी अपने स्वभावके दोष तो रहही जाते हैं । जैसे कितने ही आदमी उपवास करते हैं पर क्रोधको नहीं रोक सकते ; कितने ही आदमी तीर्थव्रत करते हैं पर लोभको नहीं सम्हाल सकते, कितने ही आदमी मौनव्रत धारण करते हैं और दाढ़ी मूछ तथा नाखून बढ़ाते हैं पर अपने स्वभावको काबूमें नहीं रख सकते और कितने ही आदमी गोबर खाते तथा गोमूत्र पीते हैं पर अपनी बड़ी बड़ी भूलें भी नहीं देख सकते । और याद रखना कि जबतक अपनी भूलें न पकड़ी जायं औरवे निकाल न दी जायं तबतक कोरे तपसे कुछ बहुत फायदा नहीं होता। इसलिये हमें सच्चा और सहज तप सीखना चाहिये और जो तप तुरत फल देसके वह तप करना चाहिये। क्योंकि हम देखते हैं कि जो लोग पुराने ढङ्गके तप करनेवाले हैं उनका हाल बेहाल है । उनके खानेका ठिकाना नहीं होता, उनके स्वभावका ठिकाना नहीं होता, उनकी देह तन्दुरुस्त और सुन्दर नहीं होती और उनके विचारोंमें कुछ तत्त्व नहीं होता। उल्टे, तप करनेसे वे म्लानमुख, रोगी और चिड़चिड़े स्वभावके तथा सबके साथ झगड़ा करनेवाले बनजाते है । तप करनेसे मनुष्यमें जो तेज आना चाहिये, तप करनेसे तपस्वीमें जो शान्ति आनी चाहिये, तपके प्रभावसे जो सद्बुद्धि होनी चाहिये, तप करनेसे लोगोंका जो सात्विक

आकर्षण होना चाहिये और तप करनेसे तपस्वीके चेहरेपर जो एक प्रकारका दिव्य प्रकाश पड़ना चाहिये इनमसे कुछ भी हमारे आजकलके तपस्वियोंमें नहीं दिखाई देता, बल्कि इसके उल्टेही लक्षण दिखाई देते हैं। इसका कारण यह है कि तपके उपदेश या तपकी खूबी तथा तपकी विधिका वे ठीक ठीक नहीं जानते, इसमे अनुचित रीतिसे तप करनेवालोंकी उल्टे दुर्दशा होती है। इसलिये हालके बुद्धियलके जमानेमें ऐसे नकली तपमें न पड़े रहकर हमें अपना स्वभाव जीतनेका तप करना चाहिये और अपनेम जितनी तरहकी छोटी बड़ी भूलें हो उन्हें ढूंढ ढूंढ कर निकाल डालनेमें अपनी शक्ति लगानी चाहिये। क्योंकि भूलोंको दूर करनेके लिय उनस लड़नेका नाम सच्चा तप है और यह तप करने से तुरत ही बहुत बड़ा फायदा होता है। भूलोंसे लड़ने और उन्हें निकाल कर अन्तःकरणको स्वच्छ करनेमे आत्मिक शक्ति जाग उठती है। जब उत्तम ज्ञान मिला रहता है और जीव शुद्धतामें पहुंचा होता है तभी अपनी भूलें समझमें आती हैं और उन भूलोंको समझ लेनेके बाद निकालनेके लिये उन आसुरी वृत्तियोंके साथ दैवी वृत्तियोंको गहरी लड़ाई करनी पड़ती हैं। उस लड़ाईमें अगर फतह मिले तो उससे अनमोल लाभ होसकता है। इसलिये अपनी भूलें दूर करनेके लिये उनसे लड़नेका नाम सच्चा तप है। क्योंकि जो अपनी भूलोंपर गुस्सा करता है उसपर प्रभु गुस्सा नहीं करता। इसवास्ते भाइयो और बहनो! तुरत लाभ देनेवाला तप करना सीखिये। ऐसा तप करना सीखिये।

८—हम जैसे चोर और व्यभिचारी पर गुस्सा करते हैं वैसे ही अपनेमें उठनेवाले विकारों पर गुस्सा करनेका नाम तप है।

बन्धुओ! जमाना बदल गया है, लोगोंके आचार विचार बदल गये हैं, लोगोंके शरीरके गठनमें फेरबदल होगया है, हमारी खुराक तथा पोशाक बदल गयी है और हमारे धर्मसम्बन्धी विचार भी दिनदिन बदलते जाते हैं, इसलिये हमें तप करनेकी अपनी रीति भी सुधारनी चाहिये और उसमें भी जमानेके अनुसार फेर बदल करना चाहिये। क्योंकि ईश्वरकी कृपासे हालका जमाना अंधश्रद्धाका नहीं बल्कि बुद्धिबलका है, इसवास्ते अब नाहक देहको कष्ट देने और ऐसे कष्टको तप समझनेकी भूल करनेका वक्त नहीं है। विना कारण मनमें झीखने और शास्त्रविरुद्ध रीतिसे देहको दुःख दियाकरनेका नाम तप नहीं है बल्कि धर्मके नियम समझकर, शास्त्रके उद्देश्य समझकर तथा ईश्वरकी इच्छाएं और प्रेरणाएं जान कर उनके अनुसार चलने और उसमें कुछ भूल होती हो तो उस भूलको छोड़नेके लिये मनमें हलचल मचानेका नाम तप है। मतलब यह कि हम जैसे चोर पर गुस्सा करते हैं, जैसे व्यभिचारीपर गुस्सा करते हैं, जैसे हिंसा करनेवाले पर हमारे जीमें नफरत होती है, हम जैसे शराबियोंको फट-कारते हैं और जैसे जुआड़ियोंकी सोहबतसे हम अलग रहना चाहते हैं वैसे ही हमारे मनमें जो जो बुरी वासनाएं उठें या जो जो बुरे विचार आवें उन सबका सामना करने, उनपर गुस्सा करने और उन भूलोंको दूर भगानेके लिये अन्तःकरण-में एक तरह का हल्ला मचाने और उस हल्लेकी गरमीमें थोड़ी देर

तक मन और शरीरको तपने देनेका-इसप्रकार पश्चात्ताप करके पवित्र होनेका नाम तप है। जबतक इसप्रकारका तप करना न आवे समझ बूझकर तप करना न आवे, शास्त्रको सामने रखकर तप करना न आवे और अपनी उन्नति करने योग्य तप करना न आवे तबतक बाल उपवास करनेसे, गोमूत्र पीनेसे, धूनी तापनेसे या बाल रखनेसे तप नहीं बढ़ता और ऐसे तपसे मोक्षका आनन्द नहीं मिल सकता। इसलिये न इयों! और बहनो! अगर ऐसा तप करना हो तो मनमें जब किसी तरहका खराब विचार उठे या किसी तरहकी पापवासना जगे उस समय उसे दूर करनेके लिये खूब जोर शोरसे हुल्लड़ मचाना। ऐसा करनेसे पापवासना मिट जायगी, ऐसा करनेसे अन्तःकरण पवित्र होगा, ऐसा करनेसे आगे बढ़नेका रास्ता मिलेगा, ऐसा करनेसे अन्तःकरणकी गहराईमें उतरना आवेगा, ऐसा करनेसे इस किस्मके खराब विचारोंपर, बुरी वासनाओंपर धीरे धीरे अंकुश रखनेका बल आवेगा और ऐसा करनेसे कितने ही तरहके पाप बहुत आसानीसे आपसे आप घट जा सकेंगे। फिर स्वाभाविक तौरपर प्रभुके रास्तेमें चलना आजायगा। इससे अन्तमें कल्याण होगा। और जिस वक्त खराब विचारोंका सामना कीजियेगा उसी समयसे आपमें एक किस्मका बल आवेगा तथा एक तरहका कुदरती तेज आवेगा और याद रखना कि यह सब होनेका नाम ही तप है। इसलिये अब तो तुरत और प्रत्यक्ष फल देनेवाला पुरानेसे पुराना और नयेसे नया तप कीजिये। तप कीजिये।

९.—निर्दोष चीजें बर्तनेमें कुछ अड़चन नहीं है; सिर्फ इतनी सम्हाल रखना जरूरी है कि वे बुरे तौरसे काममें न लायी जायं।

परम कृपालु परमात्माने जगतके जीवोंपर दया करके उनके सुखके लिये ही अनेक प्रकारकी चीजें बनायी हैं तथा उन सब चीजोंसे फायदा उठानेके लिये ही मनुष्योंको अनेक प्रकारकी वृत्तियां, शक्तियां और इन्द्रियां दी हैं; इतना ही नहीं बल्कि जगतकी अनेक चीजोंका लाभ पूर्णरूपसे लेने देनेके लिये मनुष्यके स्वभावकी रचना ही ऐसी की है कि वह किसी एक चीजसे तृप्त होता ही नहीं; बल्कि तरह तरहकी नयी नयी चीजोंकी कुदरती इच्छा हुआ करती है। क्योंकि जुदी जुदी चीजों, जुदे जुदे विचारों, जुदी जुदी इन्द्रियों, जुदी जुदी वृत्तियों और जुदी जुदी शक्तियोंके उपयोगसे और इन सबके अनुभवसे ही जीव आगे बढ़ सकता है। इसलिये जीवका अनुभव विशाल बनानेके लिये तथा यह साबित कर देनेके लिये ही, कि वस्तुओं और इन्द्रियोंके मोहमें अन्ततक पड़े रहना ठीक नहीं, अनेक वस्तुएँ तथा जुदी जुदी इन्द्रियाँ और उनमें महान शक्तियां हैं। इसकारण हर एक जीवको अपनी हैसियतके अनुसार जगतकी चीजों तथा इन्द्रियोंके विषयोंका आनन्द लेना चाहिये। पर इसमें शर्त इतनी है कि धर्मको सामने रख कर, कुदरतके नियम समझ कर, समाजके नियम तथा राज्यके कानूनका मान रख कर और ईश्वरको हाजिर जान कर इन वस्तुओंसे लाभ उठाना चाहिये। अगर इस तरह लाभ उठाना आवे तो जगतमें ऐसी कोई चीज नहीं है जिससे आदमी अपवित्र हो। याद रखना कि वस्तुओंका

काममें लानेसे आदमीको पाप नहीं लगता बल्कि उसका बुरा उपयोग करने पर पाप लगता है। जैसे- प्रभुने हमें आंखें दी हैं तो इन आंखोंको बन्द रखनेकी कोई जरूरत नहीं है, आंखें मूदकर चलनेके लिये कोई महात्मा या शास्त्र नहीं कहता; शास्त्र इतना ही कहता है कि आंखोंका दुरुपयोग न करो, यानी किसीके सामने खराब दृष्टिसे न देखो। और अपने फायदेके लिये इतना अंकुश रखना तो अच्छा ही है। जगतमें जितनी देखने लायक चीजें हैं उतनी न देखने लायक नहीं हैं। जैसे—सृष्टिसौन्दर्य देखना और उससे प्रभुकी महिमा समझना कुछ पाप नहीं है, उमड़ते हुए समुद्रकी लहरें देखना और उसमेंसे कुछ नवीनता मालूम करना भाग्य शालिताकी निशानी है, दौड़ते हुए बादल देखना और उनमेंसे कुदरतका कुछ गुप्त भेद ढूंढ़ निकालना बड़े पुण्यका काम है, निर्दोष बालकोंको देखना और उनकी निर्दोषताका आनन्द अपनेमें लाना तथा उतनी देर बालकके समान अपने हृदय को निर्दोष बनाये रखना एक तरहकी खूबी है, उगतेहुए सूर्यको देखना और उसके साथ खेलना तथा उसका प्रकाश अपने भीतर भरना बड़े आनन्दकी बात है तरह तरहके अजायबघर देखना, तरह तरहके प्राणी देखना, किस्म किस्मके पेड़ पत्ते देखना, तरह तरहके आदमी देखना, आला दरजेके चित्र देखना और कुदरतकी विचित्रता देखना बड़े भाग्यकी बात है, क्योंकि इससे ईश्वरकी महिमा समझमें आती है, इससे हृदय विशाल होता है, इससे बुद्धि खिलती है, इससे अनुभव बढ़ता है और अन्तमें इन सबके पार जानेका मन करता है। इससे पीछे कल्याण होता है। और याद रखना कि यह सब देखनेकी इन्द्रियसे होता है तथा जगतकी चीजें

वर्तनेसे होता है। इसी प्रकार सब इन्द्रियों, सब शक्तियों तथा सब वृत्तियोंसे काम लेनेसे जीव जल्द जल्द आगे बढ़ सकता है। इसवास्ते याद रखना कि वस्तुओं तथा इन्द्रियोंका यथार्थ उपयोग करनेमें कुछ पाप नहीं है; परन्तु उनका दुरुपयोग करनेमें पाप है। इसलिये उनका उपयोग करनेसे मत डरिये परन्तु यह ख्याल रखिये कि उनका दुरुपयोग न हो।

१०—एक एक चीजके त्यागनेसे कुछ नहीं होता, मनके भीतरकी वासना त्यागनी चाहिये। तभी कल्याण होगा।

जिस आदमीको धर्मका जीवन बिताना हो और जिसको प्रभुका प्यारा होना हो उसे धर्मके मुख्य मुख्य सिद्धान्त खूब अच्छी तरह समझ लेना चाहिये; क्योंकि धर्मके सिद्धान्त अच्छी तरह समझलेनेसे श्रद्धाभक्ति बढ़ती है, हृदयमें नये ढङ्गका बल आता है और धर्म पालनेमें उत्साह तथा दृढ़ता आती है। पर आजकल हमारे यहांके लोग धर्मके सिद्धान्त तथा उनका रहस्य समझनेकी बहुत परवा नहीं करते; इससे वे अपने आचरणमें ढीलेढाले होते हैं, अपना फर्ज पूरा करनेमें सुस्त होते हैं और पोलमपोलमें रहजाते हैं। क्योंकि धर्मके सिद्धान्तोंको वे अच्छी तरह समझेहुए नहीं होते; इससे चल आये हुए रिवाजोंके अनुसार करते हैं। लेकिन ये रिवाज कुछ नया बल या नया जीवन नहीं देसकते; हां सिद्धान्त और रहस्य नया बल तथा नया जीवन देसकते हैं; इससे अधिक जोरसे धर्म पाला जासकता है। इसलिये यथार्थ रीतिसे धर्म

पालनेके लिये धर्मके मुख्य मुख्य सिद्धान्तोंका असली स्वरूप थोड़ेमें समझ लेना चाहिये। जैसे त्याग करना एक महान सिद्धान्त है क्योंकि त्याग बिना मोक्ष मिलता ही नहीं, यह दुनियाके हर एक शास्त्रका निर्विवाद मत है। इसलिये हमें त्याग करना सीखना चाहिये। त्यागके विषयमें यह बात है कि हम बाहरी चीजोंको त्याग करते हैं परन्तु मनके अन्दरसे त्याग करना हमें नहीं आता। जैसे- चौमासेमें देविप्रबोधिनी एकादशीके दिनसे कितनी ही (गुजराती) स्त्रियां नियम करती हैं कि हम चौमासेमें भाजी नहीं खायेंगी। बेशक वे अपना नियम पालती हैं और चार महीने भाजी नहीं खातीं। पर तौभी जब वे अच्छी भाजी आंखसे देखती हैं या हमारे "घर आज भाजी अच्छी बनी थी" यह बात किसीसे सुनती हैं तब भाजी खानेके लिये उनका मन चल जाता है; लेकिन सिर्फ नियमके कारण वे कुछ दिन नहीं खातीं। इसीतरह कोई सूरन आलू आदि कन्दका त्याग करती है; कोई सरसो मूली आदि सागका त्याग करती हैं, कोई नमक छोड़ देती हैं और तौभी वे रोज रोज शिकायत किया करती हैं कि नमक बिना भोजनमें स्वाद नहीं आता, कोई ईख चूसना छोड़देती हैं, कोई कुम्हड़ा नहीं खाती, कोई एक वक्त खाती है पर दूसरे वक्त खानेकी इच्छा हररोज मनमें रखती हैं, कोई हर रोज ब्राह्मणको सीधा देती हैं, पर इसतरह हर रोज सीधा देनेमें कितना अधिक आटा घी लगजाता है और कितना ज्यादा खर्च पड़ता है इसका हिसाब रोज रोज मनही मन किया करती हैं औरदूसरोंसे इसका जिक्र भी करती हैं; कोई कोई नदी या समुद्रमें नहानेका नियम रखती हैं परन्तु धर्मके लिये नहानेसे एक प्रकारका जो महा आनन्द होना चाहिये, उसके बदले वे कांखती

कराहती हैं कि आज दरियामें नहानेसे सिर दर्द करता है या आने जानेसे बहुत थक गयीं इसलिये आज जल्द खाकर जल्द सो जाना है। देखो भाइयो! त्यागका यह फल! इसी तरहके दूसरे बड़े बड़े त्यागी हैं जिनमें इससे बढ़कर पोल होती है। जैसे-बापका एक घर छोड़ देते हैं पर वे कई मन्दिर बनवानेकी इच्छा रखते हैं; अपनी एक स्त्री छोड़ते हैं पर दूसरी कितनी ही स्त्रियोंसे लासालूसी लगाया करते हैं, अपने घरका थोड़ा पैसा छोड़ते हैं पर सारी जिन्दगी "एक पैसे का सवाल" कहके पाई पाई उगाहा करते हैं; इसीप्रकार और कई तरहसे बाहरी त्याग करनेपर भी दूसरी तरहसे लसफस लगाये ही रहते हैं। इसका कारण यह है कि यह सब जो त्याग है वह बाहर का है, अन्तःकरणका त्याग नहीं है। और याद रखना कि बाहरके त्यागसे कल्याण नहीं होता; इतना ही नहीं बल्कि अन्दरसे त्याग किये बिना बाहरका त्याग मिथ्याचार है, दिखाऊ है और यह एक तरह का ढोंग है, यह बात श्रीकृष्ण भगवानने गीतामें कही है। अफसोस! हम सब अबतक इस बाहरके त्यागमें ही पड़े हैं। पर याद रखना कि इस बाहरके त्यागसे कुछ सच्चा लाभ नहीं होता, क्योंकि हम देखते हैं कि, कितने ही आदमी धन त्यागते हैं पर भजन कहां करते हैं? कितने ही आदमी बैंगन मूली या मरसा आलू त्यागते हैं पर अपना अहंकार कहां छोड़ते हैं? कितने ही आदमी व्रत उपवास करते हैं पर मनकी समता कहां रखते हैं? कितने ही आदमी धर्मकी कुछ बाहरी क्रियाएं करते हैं और इसके लिये थोड़ा बहुत समय तथा पैसा त्यागते हैं पर सबसे अभेदभाव कहां रखते हैं? इसप्रकार एक एक वस्तुके त्यागसे पूरा नहीं पड़नेका; क्योंकि किसी एक

वस्तुका त्याग करने पर भी और कितनी ही वस्तुएं त्यागने-को रह जाती हैं तथा जो वस्तु छोड़ी हो उसे भोगनेकी इच्छा भी मनमें रह जाती है। इसलिये बाहरके ऐसे ऊपरी त्यागसे कुछ असली फायदा नहीं होता। जब मनसे वासनाओंको छोड़ना आवे तब धीरे धीरे बाहरकी चीजोंका आपसे आप त्याग होता जाता है और यही सच्चा त्याग है। इसलिये मनके अन्दरसे वासनाओंको त्यागना सीखिये। वासनाओंको त्यागना सीखिये।

११-जो अपने अपराधको आप माफ नहीं करता उसका अपराध प्रभु माफ करता है।

हमारे हर एक कर्मका कुछ न कुछ फल होता है; क्योंकि इस जगतमें बिना फलका कोई कर्म ही नहीं है। ऐसा नियम होनेसे, अच्छे कर्मका अच्छा फल और बुरे कर्मका बुरा फल तुरत या धीरे धीरे मिलता है, पर मिलता है जरूर। इसी तरह यह भी एक नियम है कि कोई आदमी कर्म किये बिना रह नहीं सकता; इससे जान बेजाने, भावे कुभावे कुछ न कुछ अच्छा या बुरा काम सबसे हुआ ही करता है क्योंकि प्रकृतिका यह स्वभाव है कि वह बिना गतिके रह नहीं सकती। और इसमें यह बात भी समझने लायक है कि जीव अनेक जन्मोंसे मायाके जाल-में फंसा है और उसका इर्द गिर्द तथा संयोग अधिकतर बहुत कमजोर ही होते हैं; इतना ही नहीं बल्कि अच्छे संयोगको भी वह अपनी कल्पनासे कमजोर बना देता है; क्योंकि मनुष्यका मन नीचेकी तरफ झुकाहुआ है। ऊपरकी तरफ मन

बहुत खिलाहुआ नहीं होता, इससे जैसे पानीका प्रवाह नीचेको ढलता है वैसही मन भी खराब चीजोंकी तरफ बहुत जल्द दौड़जाता है। इसकारण आदमीसे जाने बेजाने कितनेही तरहके अपराध होजाते हैं। और अपराधकी सजा भोगनी पड़े इसमें तो कुछ आश्चर्य ही नहीं है। क्योंकि कर्मका कानून किसी-को छोड़नेवाला नहीं है। हम देखते हैं कि इस जगतमें हम किसी आदमीका कुछ बिगाड़ें तो उसकी सजा हमें भोगनी पड़ती है। तब अगर हम सर्वशक्तिमान परमदयालु पवित्र पिता प्रभुका अपराध करें तो उसकी सजा मिले बिना क्यों रहेगी? और फिर यह भी विचार करना चाहिये कि जब आदमीकी दीहुई सजा भी बड़ी होती है-जैसे कि बेंत मारनेकी, कैद करनेकी, कालकोठरीमें बन्द रखनेकी, घरबार लूटलेनेकी और फांसीपर लटका देनेकी सजा होती है—तब यमदूतोंकी सजा कितनी भयंकर होगी? जरा ख्याल तो कीजिये! क्या येह सजा भोगनी चाहिये? नहीं इस भयकर सजासे बचना चाहिये तब अब यह सवाल है कि इस भयानक सजासे कैसे बच सकते हैं? इसके लिये महात्मा लोग बहुत सहज रास्ता बताते हैं और वह यही है कि जो अपने अपराधके लिये आप अपनी सजा करता है उसको उसके अपराधके लिये प्रभु सजा नहीं करता। पर यह बात बहुत लोग नहीं जानते कि आप अपनी सजा कैसे करनी चाहिये। इसके लिये हरिजन कहते हैं कि जिस वक्त अपनेसे कोई भूल होजाय या मनमें जब किसी तरहका खराब विचार आजाय तो तुरत ही उसके लिये सच्चे दिलसे पश्चाताप करना और जीवको फटकार बताना कि अरे मूर्ख! अबतक तू इस किस्मकी भूल क्यों करता है? ऐसी भयंकर भूलसे तेरा क्या हाल होगा यह तो जरा विचार कर! इस तरह जीवको

जगाना और सच्चे दिलसे समझाना तथा पश्चात्तापकी आग सुलगाना और उसमें आंसुओंकी आहुति देना तथा अपने शरीरको उस आगमें थोड़ा जला देना। इसका नाम आप अपनी सजा करना है। और जो भक्त अपने अपराधके लिये इसतरह अपनी सजा आप करते हैं उनको फिर उनके अपराधके लिये प्रभु सजा नहीं देता। और याद रखना कि प्रभुके सजा देनेसे आप अपनेको सजा देलेना बहुत मुलायम सजा है; क्योंकि यमराजकी सजा बड़ी कड़ी है। इसलिये अगर नरककी सजासे बचना हो तो अपनी भूलोंके लिये इसतरह आप अपनी सजा करना सीखिये। इससे भूलोंका संकट सुईमें पट जायगा और आप अपने अपराधके लिये प्रभुकी भयंकर सजासे बच सकेंगे।

१०—बड़े बड़े हथियारोंसे और बुद्धिबलके अनेक उपायोंसे जो काम नहीं हो सकता वह काम प्रभुके नामका स्मरण करनेसे हो सकता है।

दुनियाके पुराने धर्मोंमें प्रभुके नामका स्मरण करनेपर बहुत जोर दिया है और उसमें भी हमारे देशमें तो इस विषय पर भिन्न भिन्न महात्माओंने बहुत ही ध्यान दिया है; क्योंकि श्रीकृष्ण भगवानने श्रीमद्भगवद्गीतामें कहा है—" यज्ञानां जप यज्ञोऽस्मि " अर्थात् सब तरहके यज्ञोंमें जपयज्ञ मैं हूं। प्रभुके इस प्रकार कबूल करनेसे अनेक भक्तों तथा लाखों ऋषियोंने प्रभुके नामका स्मरण करनेपर खास ध्यान दिया है और इसीमें

अपनी जिन्दगीका बड़ा भाग बिताया है। यह नहीं कि प्राचीन कालके भक्त ही जपयज्ञपर जोर देते थे बल्कि उनके बादके, हालके भक्तोंने भी प्रभुके नामस्मरणपर खास जोर दिया है और उसीके आधारपर अपनी जिन्दगी बितायी है। भक्तराज नरसिंह मेहता, तुकाराम, समर्थ रामदास स्वामी, महात्मा तुलसीदास, महात्मा नानक, कबीरदास, चैतन्यस्वामी, रामकृष्ण परमहंस तथा प्राचीन कालके ध्रुव, प्रल्हाद वगैरह महान भक्तोंने प्रभुके नामस्मरणमें ही अपनी जिन्दगी बितायी थी, इसीसे विजय पायी थी, इसीसे जगतको अपने पैरके सामने झुकाया था, इसीसे आत्माकी शान्ति हासिल की थी और इसीसे वे अन्तको प्रभुमें मिलगये थे। ये सब बातें नामस्मरणसे हो सकती हैं। नामस्मरणके बलसे तथा प्रभुके नामस्मरणमें मौजूद जादूकी शक्तिसे ये सब बातें बहुत आसानीसे और बहुत जल्द होसकती हैं। इसके सिवा नामस्मरण करनेमें बाहरी सामानकी कुछ विशेष मददकी जरूरत नहीं पड़ती। और यह सबसे हो सकता है; बूढ़ोंसे भी हो सकता है, स्त्रियोंसे भी हो सकता है, मूर्खोंसे भी हो सकता है, रोगियोंसे भी हो सकता है और हरदेशमें हर समय तथा हर दशामें नामस्मरण हो सकता है। ऐसा सहज धर्म या धर्मका ऐसा सहज साधन दुनियामें दूसरा कुछ नहीं है और उसमें भी आजकल कलियुगमें तो नामस्मरण बहुत ही जरूरी और मुख्य विषय है। क्योंकि आजकलके जमानेमें प्रजाके आचार विचार बदलगये हैं, लोगोंके शरीर कायम रखनेकी रीति भांति बदल गयी है, खुराक पोशाक बदल गयी है, राज्य बदल गया है, समृद्धि घट गयी है, और पेट भरनेके लिये सारा दिन तरह तरहकी झंझटोंमें बिताना पड़ता है तथा इसी तरह सारी जिन्दगी हाय हायमें ही गंवा देनीपड़ती है; इससे बाहरका धर्म,

बाहरका तप, बाहरका संन्यास, बाहरकी पूजाविधि, तीर्थ और इसी प्रकारके दूसरे बाहरी नियम आजकलके जमानेमें लोगोंसे नहीं होसकते और अगर कभी कोई यह सब पालनेके लिये मिहनत करे तोभी उसके लिये इर्दगिर्दकी जैसी चाहिये वैसी अनुकूलता न होनेसे यह काम ठीक ठीक नहीं होसकता उसमें कुछ न कुछ कसर रह जाती है। इससे पहलेके महात्माओंने यह खास निर्णय कर दिया है और इस निर्णयको जुदे जुदे शास्त्रों द्वारा ढिंढोरा पिटवाकर प्रगट कर दिया है कि कलियुगमें प्रभुके नामस्मरणके समान और कोई ऊंचा धर्म नहीं है। और इसके सिवा दूसरे धर्म कलियुगमें ठीक ठीक निभ नहीं सकेंगे। उन्होंने यों साफ साफ कह दिया है। इसलिये हमें परम कृपालु परमात्माके नामका स्मरण करना सीखना चाहिये और सबसे सहज धर्म तथा सबमें आसानीसे होने योग्य धर्म पालनेकी कोशिश करनी चाहिये। क्योंकि प्रभुका नामस्मरण बहुत ही ऊंचा धर्म है और बुद्धिबलकी हजारों युक्तियोंसे तथा बड़े बड़े हथियारोंसे भी जो काम नहीं हो सकता वह काम नामस्मरणसे आसानीसे हो जाता है। पर अफसोस यह है कि यह सीधी, सादी, सहज और बढ़िया बात भी आजकलके जमानेमें कितनेही जवानोंकी समझमें नहीं आवेगी और वे कहेंगे कि प्रभुका नाम जपनेसे इतना बड़ा फायदा कैसे होगा? पर हम जितना समझते हैं उससे कहीं अधिक फायदा प्रभुके नामस्मरणसे हो सकता है और इसके कारण तथा विवरण अनेक भक्तोंके चरित्रमें बहुत मशहूर हैं इससे सिर्फ श्रद्धाकी दृष्टिसे देखें तोभी यह समझमें आसकता है। पर अफसोस है कि बहुत लोग इसपर श्रद्धा भी नहीं रखते और बुद्धि भी नहीं लगाते और तिसपर भी सिर्फ अटकलपच्चू कहते हैं कि

प्रभुके नामस्मरणसे कुछ फायदा नहीं होता । इस किस्मके आदमी जो जीमें आवे सो कहें वे अपने मनके मालिक हैं । पर भावुक मनुष्योंको खूब समझ लेना चाहिये और अपने मनमें विश्वास जमा लेना चाहिये कि बडे बड़े हथियारोंसे और बहुत बुद्धि दौडानेसे भी जो काम नहीं हो सकता वह काम माला फेरनेसे हो जाता है । इसलिये प्रभुके नामका स्मरण करना सीखिये । *प्रभुके नामका स्मरण करना सीखिये ।*

१३–प्रभुका नाम स्मरण करनेके लिये माला फेरनेमें कुछ दिक्कत नहीं है ; पर तुम्हारे मनमें पाप भरा है इससे तुमको माला फेरनेमें दिक्कत मालूम देती है ।

प्रभुका नाम स्मरण करना आजकलके जमानेमें मुख्य धर्म है, इसपर बहुत लोगोंका विश्वास जमता जाता है; इससे वे माला फेरनेको सोचते हैं और कितने ही पूजा पाठके वक्त या रातको सोते समय माला लेकर बैठते भी हैं; पर उनको मुश्किल यह है कि नामस्मरणमें उनका जी नहीं लगता; बल्कि उल्टे माला फेरनेमें उनको दिक्कत मालूम देती है । इससे वे झुंझलाते हैं और तरद्दुदके मारे माला छोड़ देते हैं; पर तौभी उनके मनमें हमेशा यह सवाल खड़ा रहता है कि महात्मा लोग मालाका इतना बखान करते हैं और विश्वास दिलाते हैं कि प्रभुके नामस्मरणमें ही सर्वस्व है तब उसमें हमें दिक्कत क्यों मालूम देती है? इस सवालका जवाब महात्मा लोग यह देते हैं

कि-मालाम तरद्दुद नहीं है बल्कि तुम्हारे हृदयमें पाप भरा है इससे तुमको मालाम दिक्कत मालूम देती है। जरा विचार तो करो कि परम कृपालु परमात्माके महान पवित्र नाममें कुछ दिक्कत हो सकती है? इस नाममें तो अजब तरहकी मिठास है, इस नाममें एक तरहका मीठा नशा है, इस नाममें एक तरहकी खासी खुमारी है, इस नाममें पापको जला देनेवाला जादू है, इस नाममें मनुष्यको देवता बनानेवाली कीमिया है, इस नाममें नयी जिन्दगी देनेवाला रसायन है, इस नाममें नयी रोशनी देनेवाला प्रकाश है, इस नाममें अनेक प्रकारकी ऋद्धि सिद्धि देनेवाली दैवी शक्ति है इस नाममें जिन्दगी सुधार देनेवाली सुधा है, इस नाममें मायाका लात मारनेवाला बल है, इस नाममें देवताओंको वश करने और अद्भुत शक्तियोंका खींच लानेका तेज है, इस नाममें महात्मा बननेका उपाय है और इस नाममें शान्तिका समुद्र है। ये सब बातें कल्पित नहीं हैं और न सिर फिरेके जीके उद्गार हैं बल्कि ऐसी हैं जो अनेक भक्तोंके जीवनमें आज भी दिखाई देती हैं। इसलिये खूब समझ लो कि परम कृपालु परमात्माके पवित्र नाममें दिक्कत होती ही नहीं। लेकिन तुम्हारे मनमें पाप भरा है इसी कारणसे प्रभुके नाममें दिक्कत मालूम देती है। याद रखना कि तुम्हारे भीतर जो पाप भरा है और जिसके कारण माला फेरनेमें दिक्कत मालूम देती है उस पापको भी प्रभुका नामस्मरण भस्म कर देगा। इसलिये शुरूमें जरा दिक्कत मालूम दे तोभी निराश न होकर या हिम्मत न हारकर नामस्मरणमें लगे रहो। इससे तुम्हारा पाप घटता जायगा और इस घड़ी जो माला तुम्हें दिक्कत मालूम देती है वही माला आगे चलकर तुम्हें अतिशय आनन्द और अतिशय

शान्ति देगी। इसलिये उत्साहपूर्वक और प्रेमपूर्वक नाम-स्मरण किया करो। नामस्मरण किया करो।

१४–नामस्मरणका बल। वह मायाके राज्यके बदले, हममें प्रभुका राज्य स्थापित करता है।

भाइयो ! धर्मका एक महान सिद्धान्त यह है कि हम जब मायाको जीतें तभी हमें मोक्ष मिलेगा। मुसलमान और ईसाई धर्ममें मायाको शैतान कहते हैं और उनधर्मोंके लोग भी यह मानते हैं कि शैतानको जीतनेसे ही स्वर्ग मिल सकता है। इस प्रकार दुनियाका हर एक धर्मवाला मायाको जीतनेके लिये कहताहै। माया एक प्रकारकी भूलभुलैयां है। उसके मोहमें आदमीसे अनेक प्रकारके अधर्म होजाते हैं, क्योंकि मायाका जाल ऐसा मजबूत है कि वह मामूली आदमीसे नहीं टूट सकता ; मायाका जाल ऐसा अदृश्य है कि सीधे तौरपर साफ साफ नहीं दिखाई देता, मायाका जाल ऐसा अस्पष्ट है कि उसमें कुछ पता ही नहीं मिलता और मायाका जाल ऐसा मुश्किलों से भरा है कि उसमें बड़े बड़े महात्मा भी कितनी ही बार गोता खागयेहैं। ऐसी मुश्किल मायाका इस समय हमपर राज्य चलता है ; इससे इस घड़ी हम मायाके गुलाम हैं और माया जैसे नचाती है वैसे हम नाचतेहैं। और आश्चर्य तो यह है कि ऐसा होनेपर भी हमको मालूम नहीं होता कि हम मायाके इशारेसे नाचते हैं! उलटे हम यह समझते हैं कि हम जो कुछ करते हैं वह सब वाजिब ही है और विचार विचार कर ही

करते हैं। ऐसा मालूम होनेसे मायाके पंजेसे छूटनेकी पूरी पूरी कोशिश भी हम नहीं करते। और शास्त्रका सिद्धान्त यह है कि जबतक माया न जीती जाय तबतक मोक्ष मिल ही नहीं सकता। इसलिये अब हमें विचार करना चाहिये कि माया कैसे जीती जा सकती है। इसका सहज रास्ता कौन सा है? इसके जवाबमें हरिजन तथा भक्त कहते हैं कि—

प्रभुके नामका स्मरण करनेसे माया जीती जा सकती है; इतना ही नहीं बल्कि इस वक्त हमारे मनमें जो मायाका राज्य है उसके बदले प्रभुका नाम स्मरण करनेसे हममें प्रभुका राज्य हो सकता है। और विचार करो कि अपनेमें प्रभुका राज्य होना कितनी बड़ी बात है? कोई आदमी खराब राजाके राज्यमें नहीं रहना चाहता। पुरानी मुगलई, पुरानी गायकवाड़ी और पुरानी नवाबीमें रहना किसको पसन्द है? उसमें तो हर तरहकी खराबी ही है, उसमें तो हर घड़ी जिन्दगीको खतरा ही है और उसमें हरदम कुछ न कुछ आफतकी दहशत ही है। पर याद रखना कि इन सबसे भी मायाका राज्य-शैतानका राज्य बहुत खराब है। मुगलईमें तो किसी किसी आदमीपर अन्याय होता रहा होगा पर शैतानके राज्यमें-मायाके राज्यमें हर एक आदमीको बहुत कुछ झेलना पड़ता है और फिर भी उसे यह मालूम नहीं पड़ता कि हमारा इतना बड़ा नुकसान होता है। ऐसी विचित्र चालवाली और अजीब शक्तिवाली मायाका राज्य है इसलिये उससे छूटनेका उपदेश दुनियाके सब महात्मा देते हैं। एक ओर जहां मायाका राज्य ऐसा खराब है वहां दूसरी ओर रामका राज्य-ईश्वरका राज्य कैसा अच्छा है यह तुम जानते हो? ईश्वरका राज्य! अहा! उसकी खूबीका क्या कहना है? ईश्वरके राज्यमें हर जगह आनन्द है, आनन्द ही आनन्द है, ईश्वरके

राज्यमें सदा शान्ति ही शान्ति रहती है ; ईश्वरके राज्यमें हजारों सूर्यके समान ज्ञानका प्रकाश ही होता है ; ईश्वरके राज्यमें प्रेमका महासागर ही उमड़ा करता है ; ईश्वरके राज्यमें सर्वत्र सदा अभेद ही रहता है ; ईश्वरके राज्यमें हर तरफ सब बातोंमें फतेह ही फतेह होती है ; ईश्वरके राज्यमें दया, परोपकार, क्षमा, न्याय, सत्य और सद्गुणोंके ही झरने बहा करते हैं और ईश्वरके राज्यमें आत्मा परमात्माका सम्बन्ध बहुत स्नेहवाला-बाप बेटेके सम्बन्ध जैसा होता है। और इससे भी आगे बढ़ाजाय तो ईश्वरके राज्यमें सबके साथ तथा ईश्वरके साथ भी एकाकारका अनुभव होता है। ऐसा अलौकिक आनन्दवाला ईश्वरका राज्य है और हर घड़ी कोई न कोई भारी खराबी करनेवाला मायाका राज्य है। इसलिये मायाके राज्यसे निकलकर अब हमें ईश्वरके राज्यमें आना चाहिये और ईश्वरके राज्यमें जाने तथा अपनेमें ईश्वरका राज्य स्थापित करनेका सबसे सहज उपाय यह है कि हमें परम कृपालु परमात्माके महा मंगलकारी नामका जप करना सीखना चाहिये। अगर वह आ जाय, इसकी चाट लगजाय और इसमें आनन्द आ जाय तो इससे ईश्वरका राज्य हो सकता है। इसलिये प्रभुके नामका स्मरण करके ईश्वरके राज्यमें आइये। ईश्वरके राज्यमें आइये।

१८—भगवान पापियोंकी प्रार्थना नहीं सुनता ; इसका कारण।

दुनियाके हर एक धर्मशास्त्रमें साफ साफ तौरपर बहुत जोर देकर यह कहा है कि अगर तुम्हें अपनी प्रार्थना मंजूर करानी हो

तो पहले पवित्र होकर पीछे प्रार्थना करो । क्योंकि पापी जबतक पापी रहकर प्रार्थना करते हैं तबतक प्रभु उनकी प्रार्थना नहीं सुनता । इसका कारण यह है कि प्रार्थनामें हमेशा विशेष करके अपने स्वार्थकी बातें होती हैं और पापियोंका स्वार्थ बहुत खराब होता है, इससे अगर उनकी प्रार्थना मजूर हो तो उल्टे पापमें उनका हौसला बढ़े और वे अधिक पाप करें । ऐसा न होने देनेके लिये प्रभु पापियोंकी प्रार्थना मजूर नहीं करता । पवित्र मनुष्योंकी प्रार्थना प्रभु तुरत मजूर करता है, क्योंकि जिस आदमीमें पवित्रता आजाती है उसकी इच्छाएं उसके अंकुशमें आजाती हैं, जिस आदमीमें पवित्रता आजाती है उसमें हृदयकी वृत्तियां बहुत ऊंची होजाती हैं, जिस आदमीमें पवित्रता आजाती है उसकी रहन सहन बदल जाती है, जिसमें पवित्रता आती है उसका मोह घट जाता है। जिसमें पवित्रता आती है उसके बहुतसे दुर्गुण नष्ट होजाते हैं और जिसमें पवित्रता आती है उसको ईश्वरका आशीर्वाद मिल जाता है। इससे उसमें अलौकिक बल आ जाता है जिससे उसमें अन्तःकरणकी गहराईमें उतरनेकी शक्ति आ जाती है। फिर वह अपनी वृत्तियोंको बहुत जल्द एकाग्र कर सकता है और पवित्र आदमी हृदयके तलभागसे प्रार्थना कर सकता है । उसकी प्रार्थना परमार्थ दृष्टिवाली होती है, उसकी प्रार्थना खलिस होती है, उसकी प्रार्थना प्रेमभाववाली होती है, उसकी प्रार्थना योग्य समयकी तथा योग्य स्थानकी होती है और उसकी प्रार्थना उसका तथा जगतका भला करनेवाली तथा प्रभुको प्यारी लगनेवाली होती है। इसलिये ऐसे पवित्र मनुष्योंकी प्रार्थना बहुत जल्द मजूर होती है। पर जो आदमी पापी होते हैं उनमें ऐसी कोई बात नहीं होती, बल्कि सब उल्टा ही होता है । जैसे-पापियोंको अपने

अंतःकरणकी गहराईमें उतरना नहीं आता; पापियोंका प्रभुपर पूरा पूरा प्रेम नहीं होता और पापियोंकी प्रार्थनामें कोई ऊंचा उद्देश्य नहीं होता। पापियोंकी प्रार्थना सफल होनेसे दुनियाको कुछ लाभ नहीं होता बल्कि उलटे कितने ही जीवोंको कष्ट होता है। पापियोंका मन स्थिर नहीं रह सकता, पापियोंकी प्रार्थना प्रभुके पसन्द लायक नहीं होती और पापियोंके मनमें पापकी वासनायें भरी होती हैं; इससे उनकी प्रार्थना मंजूर होनेसे उलटे उनको पाप करनेकी उत्तेजना मिलती है। पर न्यायी प्रभु ऐसा नहीं होने देना चाहता, इसीसे उनकी प्रार्थना मंजूर नहीं करता। इसलिये अगर आपको अपनी प्रार्थना परम कृपालु परमात्मासे मंजूर करानी हो तो पहले जैसे बने वैसे अधिकसे अधिक पवित्र बनिये, तब आपकी प्रार्थना तुरत मंजूर होगी। इसवास्ते अपनी प्रार्थना मंजूर करानेके लिये पवित्र बनिये। पवित्र बनिये।

१६—याद रखना कि दुःखके अन्दर भी कुछ न कुछ सुख रहता है।

हम सब दुःखका नाम सुनकर भड़का करते हैं और समझते हैं कि दुःख मानो भारीसे भारी खराबी है, इससे दुःखके समय तथा दुःख आनेकी बात जानकर पहलेसे ही हम बहुत ढीले पड़ जाते हैं जिससे हमारी बहुत कुछ शक्ति इस भयके मारे बिना कारण ही गुम हो जाती है। कुछ शक्ति उस समय दब जाती है; कुछ उस समय भोथर हो जाती है और कुछ उस समय स्तब्ध हो जाती है। इससे हमारी योग्यता दब जाती है, हमारी होशियारीपर पानी फिर जाता है, हमारा अनुभव काममें नहीं

आ सकता और हमारा कुदरती बल टूट जाता है। इस कारण ऐन मौकेपर अधिक जोशसे, अधिक रुचिसे, अधिक बलसे तथा अधिक बुद्धि लड़ाकर काम करनेके बदले, दुःखके वक्त उलटे हम एकदम निकम्मे होजाते हैं और रही सही शक्ति भी गवा देते हैं। ऐसा न होने देनेके लिये हमें दुःखका असली स्वरूप समझना चाहिये। इसके लिये महात्मा लोग कहते हैं कि-

दुःखके अन्दर भी बहुत कुछ सुख रहता है। पर दुःखके नामपर हमारे मनमें जो दहशत समा जाती है उसके कारण हमारी दृष्टिपर एक किस्मका परदा पड़ जाता है जिससे दुःखमें मिलेहुए सुखको हम नहीं देख सकते। पर याद रखना कि कोई दुःख बिना सुखके होता ही नहीं इतनाही नहीं बल्कि दुःख जितना बड़ा होता है उसके अन्दरका सुख भी उतना ही बड़ा होता है। परन्तु दुःखमेंसे सुखको अलग करना और दुःखको छोड़ कर सुखपर दृष्टि जमाना हमें नहीं आता, क्योंकि अभी हममें मलिनता है। इससे हम कव्वेकी तरह अच्छी चीज छोड़कर खराब चीजमें ही मन दौड़ाया करते हैं। परन्तु जो आदमी चतुर होते हैं, जो हरिजन होते हैं जो अनुभवी होते हैं और जो महात्माओंका सत्संग किये हुए होते हैं उनकी दृष्टि हंसकी सी होती है। दूधमें पानी मिला हो तो उसमेंसे, हंस जैसे पानी छोड़ देता है और दूधको पी लेता है, वैसे ही चतुर आदमी मिलेहुए दुःख और सुखमेंसे दुःखको छोड़ देते हैं और सुखको पकड़ लेते हैं। इससे वे दुःखके वक्त भी धीरज रख सकते हैं, दुःखके समय भी ईश्वरका उपकार मान सकते हैं दुःखके समय भी शान्तिमें रह सकते हैं और दुःखके समय भी अपना फर्ज पूरा कर सकते हैं। क्योंकि उनकी आखोंमें सुखको देखनेकी शक्ति मौजूद रहती है

और उनके हृदयमें दुःखका सामना करनेका बल आया रहता है तथा उनकी वृत्तियोंमें दुःख भोग लेनेकी सहन शक्ति आयी रहती है। इससे वे दुःखमें भी ईश्वरकी कृपा समझ लेते हैं और उसमेंसे भी ईश्वरका आशीर्वाद ले सकते हैं। उनके हृदयमें यह पक्का विश्वास रहता है कि इस घड़ी हमपर जो दुःख आ पड़ा है उस दुःखमें सुख जरूर मिला हुआ है; यह कुदरतका नियम है। इसलिये हमपर पड़े हुए दुःखमें भी किसी तरह का सुख है। तब उस सुखको छोड़कर दुःखमें क्यों पड़े रहें? यह ख्याल होनेसे वे अपने ऊपर पड़े हुए दुःखमें सुखको ढूँढ़ने लगते हैं और इस प्रकार बहुत समय तक सुखको ढूंढ़नेपर भी अगर अपनी समझमें कुछ नहीं आता तो वे किसी अनुभवी सन्तकी मदद लेते हैं। अनुभवी सन्त उनको समझा देते हैं। परन्तु उसमें भी कितनी ही बार ऐसा होता है कि सन्तकी बतायी हुई कितनी ही बातें उस समय उन्हें नहीं भातीं, सच्ची बातें होनेपर भी उस समय नहीं रुचतीं। क्योंकि लोग बड़े मोहवादी बन गये हैं और मायाके प्रदेशमें रमनेवाले हैं; इससे ईश्वरीतत्त्वकी खूबी तथा उसकी गूढ़ता उनकी समझमें नहीं आती। इस कारण दुःखमें मिले हुए सुखका जो अर्थ सन्त समझाते हैं वह अर्थ उस समय वे नहीं मान सकते। दूसरे जबतक सन्तोंसे उनका मन मिला हुआ न हो, उनपर उनकी पूरी श्रद्धा न हो और उनमें कोई खास अधिकार सन्तोंको न दिखाई दे तबतक वे कितनी ही गूढ़ बातें नहीं कहते। क्योंकि वे कहें तो उस समय उल्टे लोगोंको बुरा लग जाय या उनका कहना वे मानें ही नहीं। लोगोंकी उस समय ऐसी दशा होती है। इससे सन्तजन साफ नहीं कहते, बल्कि इशारेसे कहते हैं। परन्तु दुःख के

वस लोगोंकी बुद्धि बिगड़ी हुई होती है इससे लोग उनके इशारेसे उनके कहनेका उद्देश्य नहीं समझ सकते।

जैसे—किसी लोभी परन्तु मालदार बूढ़े गृहस्थका जवान लड़का मर गया हो तो उस समय उससे कोई यह नहीं कहता कि बहुत अच्छा हुआ और वह भी यह नहीं समझ सकता कि इस दुःखमें भी कुछ सुख होगा। पर लड़का मर जानेसे उस गृहस्थका मोह दब जाता है और उसको ऐसा ख्याल होता है कि अब ये लाखों रुपये मेरे किस काम आवेंगे ? मरे पीछे दूसरे लोग लूट खायंगे। इससे अपने ही हाथोंसे इसका लाभ उठा लेना चाहिये। यह सोच कर वह अपना धन परमार्थके काममें खर्चने लगता है, इससे उसकी कीर्त्ति बढ़ती है, उसको अच्छे साथी मिलते हैं और उसे गरीबोंका आशीर्वाद मिलता है, जिससे उसकी जिन्दगीका रूप बदल जाता है, उसके चेहरेका तेज बदल जाता है और दस वर्षमें वह बिलकुल नया आदमी बन जाता है तथा उसकी देखादेखी दूसरे कितने ही मनुष्य परमार्थ करना सीखते हैं। इन सबके पुण्यमें उसका कुछ कुछ हिस्सा होता है इससे आगे जाकर वह बहुत शान्ति पाता है। उसकी मौत भी सुधरती है और मरने पर वह उत्तम गति पाता है। अब विचार कीजिये कि अगर उसका लड़का जीता रहता तो क्या उस लोभीदासका इतना कल्याण हो सकता ? कभी नहीं। पर जब उसके सिर पुत्रमरणका दुःख पड़ा तभी वह सुधर सका।

अब दूसरा दृष्टान्त लीजिये। एक कम उमरकी स्त्री विधवा हुई, यह देखकर उस समय सब लोग बहुत अफसोस करने लगे, उसके माबाप कल्पान्त करने लगे और उस स्त्रीको जो दुःख हुआ उसका तो कहना ही क्या ? प्रेममदमाती जवान

स्त्रीका प्यारा पति मर जाय तो उसे कितना दुःख मालूम होता है यह और कौन कह सकता है? यह तो जिसपर बीता हो वही जाने। उस समय अगर कोई उस स्त्रीसे कहे कि ठीक हुआ तो क्या यह बात उसे रुचेगी? और ऐसा कहनेकी क्या साधारण लोगोंको हिम्मत होगी ? पर कुछ दिन बाद उस स्त्रीकी वृत्तियां बदल जाती हैं। पतिका शोक करते करते थकजानेके बाद अन्तको उसके जीमें यह बात उठती है कि मौत तो किसीके इख्तियारकी बात नहीं है। जिन्दगी जैसी अनमोल चीजको दुःख ही दुःखमें गंवानेसे बढ़कर दूसरा कोई पाप नहीं है। इसलिये अब हमें अच्छी तरह चेतना चाहिये और कुछ शुभ काम करनेमें लग जाना चाहिये। यह सोचकर पहले वह अपना ज्ञान बढ़ाने लगती है। फिर वह अपनी सहेलियोंके लिये ज्ञान हासिल करनेका सुबीता कर देती है। पीछे कुछ छोटी सेवाके छोटे छोटे काम करने लगती है। इसके बाद उसकी पहुंच बढ़ती है, उसके मित्र बढ़ते हैं, उसके उत्तम चरित्रपर लोगोंका विश्वास जमता है; इससे उसके हाथसे बड़े बड़े परमार्थके काम होने लगते हैं और फिर वह अपनी बहनोंको सुधारनेके लिये सेवासदन जैसे आश्रम या अनाथालय चलाने लगती है और उसकी अधिष्ठात्री बनकर उसका सब इन्तजाम करती है। इतना ही नहीं बल्कि उसके ऐसे अच्छे कामोंके असरसे आगे जाकर इस तरहके और कितने ही आश्रम जगह जगह खुलने लगते हैं। अब विचार कीजिये कि वह स्त्री अगर अपने पतिके मोहमें ही पड़ी रहती तो क्या इतना बड़ा परमार्थ कर सकती? इतना बड़ा नाम तथा मान पा सकती? और इतनी अच्छी या ईश्वरकी प्यारी हो सकती? कहिये कि नहीं। पर ये सब बातें जब दुःख पड़ता है उस घड़ी नहीं सूझतीं। इससे हम लोग दुःखमें जरूरतसे

ज्यादा दब जाते हैं। ऐसा न होने देनेके लिये यह समझना सीखिये कि दुखमें भी सुख है।

अब तीसरा उदाहरण लीजिये। एक गरीब आदमीपर दूसरोंकी खटपटसे कुछ अन्याय हुआ। उसको उसके मालिकने नौकरीसे छुड़ा दिया। उस समय उसे बड़ा अफसोस हुआ और वह निराश हो गया कि अब मेरा कैसे चलेगा? ऐसी महर्गीमें मैं अपना गुजारा कैसे करूंगा? यह सोचकर वह बहुत अफसोस करने लगा। पर इसके बाद नौकरी ढूंढनेपर देशमें कहीं ठिकाना नहीं लगा, इससे वह बम्बई पहुंचा और वहांसे अफरीका जानेका मौका मिलनेपर उसने वहांकी नौकरी कबूल कर ली। पहली नौकरीमें २०) तलब थी इसमें ६०) हुई। तीन वर्ष बाद उसने खुद दुकान की। उसने पांच वर्षके अन्दर लाखों रुपये कमाये और वह बहुत बड़ा आदमी बन गया। अब देखिये कि वह अगर सिर्फ बीस रुपयेमें जहांका तहां पड़ा रहता तो उससे कुछ न होता। वह बेचारा जिन्दगी भर कंगालका कंगाल बना रहता और जबतक उसकी बीस रुपयेकी नौकरी बनी रहती तबतक वह अफरीका जानेका विचार न करता. लेकिन जब उसकी नौकरी छूटी तभी उसका वहां जानेका मन हुआ। इस प्रकार उसे बड़ा बनानेकी प्रभुकी इच्छा थी इसीसे उसने उसकी थोड़ी तलबकी छोटी नौकरी ले ली। पर उस समय भगवानका यह मतलब उसकी समझमें नहीं आया, इससे वह अफसोस करता था।

इसी प्रकार हर किस्मके दुःखमें कुछ ऊंचा उद्देश्य तथा सुख भरा होता है। पर उसमें लाभ उठाना हमें नहीं आता इससे हम अफसोस किया करते हैं। इसलिये अब कृपा करके यह सिद्धान्त समझ लीजिये कि दुःखमें भी कुछ सुख मिला रहता

। और दुःखको छोड़कर उसमें सुख ढूंढना सीखिये। सुख ढूंढना सीखिये।

१७-लोभियोंके बारेमें त्यागियोंके विचार।

दुनियाके हर एक धर्मका मुख्य सिद्धान्त यह है कि त्याग बिना मोक्ष नहीं हो सकता। इसलिये अगर मोक्ष लेना है तो जगतकी मायिक वस्तुओंका त्याग किये बिना नहीं बनेगा। इसके लिये बहुत जोर देकर प्राचीन ऋषियोंने शास्त्रोंमें यह कहा है कि संन्यास लिये बिना मोक्ष नहीं मिल सकता; बौद्धधर्ममें भी कहा है कि त्याग बिना निर्वाण नहीं प्राप्त हो सकता; ईसाई धर्ममें भी कहा है कि सुईके छेदसे शायद ऊंट निकल जाय पर धनवान रहकर कोई स्वर्गमें नहीं जा सकेगा और मुसलमान धर्ममें भी कहा है कि खूब खैरात किये बिना कोई खुदाकी खिदमतमें नहीं पहुँच सकेगा। इस प्रकार दुनियाके हर एक धर्ममें त्याग करनेको मुख्य बताया है। क्योंकि इस जगतमें जितने तरहके मोह हैं उनमें धनका मोह आदमीको बहुत बड़ा है और जबतक किसी तरहके मोहमें जीव फंसा रहे तबतक उसका उद्धार नहीं होता; यह जानी हुई बात है तथा समझमें आने योग्य बात है। इसलिये जो सच्चे हरिजन होते हैं वे त्यागपर बहुत ज्यादा जोर देते हैं। क्योंकि धनका त्याग करना या उसका मोह न रखना तथा थोड़ेमें चला लेना एक प्रकारकी करारी कसौटी है और अपनी खुशीसे तथा सच्ची समझसे ऐसा करना तो बहुत थोड़े ही आदमियोंसे हो सकता है। जहां अनेक

भक्त भी धनके मोहमें ही रह जाते हैं वहां बेचारे मोहवादी संसारियोंकी बात ही क्या कहना ?

अब विचार कीजिये कि जिस धनमें इतना बड़ा मोह है उस धनके लिये रातदिन तड़फड़ाने तथा अनेक प्रकारका ऊंच नीच करनेवाले धनवानोंकी कैसी नाजुक दशा होगी। क्योंकि जैसी मोहबत होती है वैसा असर होता है और जैसी भावना होती है वैसा फल होता है। इसलिये त्यागी जन कहते हैं कि जो लोग टकेके लिये रात दिन रोते हैं और समझते हैं कि "टका ही हमारा परमेश्वर है" तथा टकेका पेन मौकेपर भी सद्व्यवहार नहीं करते उनका हृदय, जैसे टका जड़ होता है, वैसे ही जड़ बन जाता है, टका जैसे ठंढा होता है वैसे ही उनका धर्म भी ठढा हो जाता है, टका जैसे कठोर होता है उनका मन भी वैसे ही कठोर बन जाता है, टका जैसे कड़ा होता है उनकी वृत्तियां भी वैसी ही कड़ी हो जाती है, टका जैसे जल्द जल्द ढगराता है वैसे ही उनके विचार भी जल्द जल्द बदल जाते हैं; टकेकी धातमें जैसे खाद मिला होता है वैसे ही टकका बहुत मोह रखनेवाले आदमियोंके आचार विचार तथा रीति भांतिमें भी सदा खाद होता है, टका जैसे गोलमडोल होता है वैसे ही टकेवालोंके वचन तथा वादे भी गोलमठोल होते हैं और टका जैसे बहुत हाथोंमें फिरा करता है वैसे ही टकवालोंके सकल्प विकल्प भी अनेक विषयोंमें फिरा करते हैं। अब विचार कीजिये कि इस किस्मके आदमियोंका कल्याण कैसे हो सकता है और वैसे मोह-वादी लोभी आदमी सच्चा धर्म कैसे पाल सकते हैं ?

भाइयो ! यह बात बताकर हम आपसे यह नहीं कहना चाहते कि टका न कमाइये या टकेकी परवा मत कीजिये या टकेको कीमत मत समझिये और बिना कारण टका फेंक देनेके लिये

भी हम नहीं कहते। आजकलके जमानेमें टकेके ऊपर ही सारा कारोबार है और टकेकी मददसे ही जिन्दगीकी जरूरी चीजें मिल सकती हैं। इसलिये टका बहुत जरूरी चीज है। तोभी उसके साथ यह बात भी समझ रखने योग्य है कि हमारे मर जानेपर यहीं रह जानेवाला टका हमारे किसी काम नहीं आता और अगर दूसरे धनवानोंसे कुछ कम टका अपने पास हो यानी जिन्दगीकी मुख्य जरूरत लायक टका हो तो उससे भी चल सकता है तथा टकेसे कई गुनी श्रेष्ठ कितनी ही कल्याणकारक चीजें इस दुनियामें हैं। उन सबकी बलि सिर्फ टकेके लिये न दी जाय इस बातका ख्याल रखना जरूरी है। दूसरी ओरसे यह भी स्मरण रखने योग्य है कि अगर टकेका सदुपयोग हो यानी उचित समयपर उचित परिमाणमें अगर टकेका त्याग हो तो उससे बहुत बड़ा पुण्य मिल सकता है। इसलिये जिस बातकी सम्हाल रखना है वह यह है कि ऐसे ऐसे अनमोल काम रह न जाय और हम केवल टकेके मोहमें ही न पड़े रहें। अगर जरूरतसे अधिक रकम पासमें हो तो ऐसा करना कि वह अच्छेसे अच्छे काममें खर्च हो। क्योंकि ऐसा करना कल्याणका रास्ता है और इससे प्रभु प्रसन्न होता है।

१८–जो आदमी सिर्फ पैसेके गुलाम होते हैं वे हृदयके सद्गुणोंके दरिद्र होते हैं।

मनुष्यको प्रभुकी तरफ ढालनेके लिये जो सबसे पहले जरूरी बात है वह यह कि उसका जगतकी मायिक वस्तु ओंपर से मोह घटाया जाय, क्योंकि जब यह मोह घटता है तब मन

उनमें भटकनेसे रुकता है और फिर किसी ऊंची वस्तुकी खोज करना चाहता है। पर जबतक जगतकी जड़ वस्तुओंमें उसको बहुत आनन्द मिला करता है तबतक वह ऊंची वस्तुओंकी तरफ नहीं जाना चाहता। इसलिये ऐसा करना चाहिये कि दुनियाकी बहुत मोहवाली चीजोंपर से उसका मोह घटे। पर यह बात कुछ सहज नहीं है। अगर आदमीके मनसे मोह घट जाय तो वह जो चाहे सो कर सकता है और थोड़े समयमें महात्मा बन सकता है। इसस हर एक कथा बांचनेवाला, कितने ही ग्रंथकार तथा सभी धर्मगुरु नाश होनेवाली चीजों- परसे मोह घटानेवाली बातें कहते हैं और आगे आनेवाले जमानेमें भी ये ही बातें लोग हेरफेर करके नये ढङ्गसे कहेंगे। पर तोभी हम देखते हैं कि आदमियोंका, धनके ऊपरसे, मोह नहीं घटता। और यह मोह जबतक न घटे तबतक उत्तम वस्तुओंकी तरफ बहुत जोरसे वे नहीं जा सकते। क्योंकि बाहरकी, दुनियादारीकी दौलत जिनके पास ज्यादा होती है वे हृदयके सद्गुणोंमें बहुत पीछे रह जाते हैं। जैसे दया, कोमलता, उदारता, क्षमा, सत्य, न्याय, इन्द्रियनिग्रह, तप, भजन, ध्यान, सत्सङ्ग, जप शांति, सन्तोष, शास्त्रोंका अभ्यास, वाणीकी मिठास वगैरह अनेक विषयोंमें धनवान कंगाल रह जाते हैं। इसका कारण यह है कि उनकी दृष्टि सिर्फ पैसा पैदा करने और उसे जमा करनेकी तरफ ही रहती है और फिर पैसेसे जो जो खराबियां बेवकूफी तथा कमजोरियां पैदा होती हैं उन्हींमें उनका ध्यान रहता है। इससे बाहरी दौलत होनेपर भी वे हृदयके सद्गुणोंके कंगाल रह जाते हैं। और यह नहीं कि कहीं कहीं यह बात होती है, बल्कि जो जो आदमी सिर्फ धनके गुलाम होते हैं वे सभी बहुत करके ऐसे ही होते हैं। इसीलिये बड़े बड़े

महात्मा धनकी कुछ कीमत नहीं समझते। क्योंकि सद्गुणोंको बढ़ानेमें द्रव्यका उपयोग करना चाहिये; उसके बदले सद्गुणोंको उल्टे दबानेमें धनका उपयोग होता है। इसलिये सच्चे भक्त धनसे डर कर चलते हैं और इसीसे धनका मोह कम करनेको कहते हैं। धन तरनेके लिये है न कि डूबनेके लिये। इसलिये इस बातका ख्याल रखना कि बाहरी दौलत बढ़ाकर उपाये रहतेहुए भी भीतरसे दरिद्र मत रह जाओ।

१९–दुनियामें जितने तरहके दुःख हैं उन सबको दूर करनेका सबसे सहज उपाय।

इस जगतमें अनेक तरहके दुःख हैं। जैसे–किसीको धनका दुःख है, किसीको अपमानका दुःख है, किसीको छोटे कुलका दुःख है, किसीको डाहका दुःख है, किसीको लड़का बाला न होनेका दुःख है, किसीको लड़केके बदचलन होनेका दुःख है, किसीको मायापके मर जानेका दुःख है, किसीको रोजगार धंधा न होनेका दुःख है, किसीको दुश्मनका दुःख है, किसीको हित मित्रके मरनेका दुःख है, किसीको अज्ञानताका दुःख है, किसीको शरीर तन्दुरुस्त न रहनेका दुःख है, किसीको बेमेल ब्याहका दुःख है और कितनी ही बातोंमें किसीको अपने मनमुताबिक न होनेका दुःख है। इस प्रकार जगतमें हर एक आदमीको किसी न किसी तरहका दुःख होता है और सब तरहके दुःखोंके लिये व्यावहारिक तौरपर अलग अलग उपाय होते हैं। जैसे–बीमारीका दुःख हो तो वैद्य या डाक्टरसे दवा करानेपर आराम होता है; अगर किसीसे तकरार हो गयी हो और अदालतमें जाना पड़ा हो

तो वकीलकी मददकी जरुरत पड़ती है; अगर गरीबीका दुःख हो तो परदेश जानेसे फायदा होता है; कुटुम्ब कलहका दुःख हो तो किसी चतुर आदमीको मध्यस्थ बनाकर थोड़ा बहुत गम खा जानेसे फायदा होता है और अगर दुश्मनका दुःख हो तो झुक जानेसे या माफी मांग लेनेसे फायदा होता है। इस प्रकार जुदे जुदे ढङ्गके दुःखोंके लिये जुदे जुदे उपाय करना कितने ही महात्माओंको पसन्द नहीं है। क्योंकि यह सब करनेका उनमें अभ्यास नहीं होता और न इतनी फुर्सत ही उनको होती है। इससे वे यह सोचते हैं कि ऐसी कुंजी हासिल करना चाहिये कि किसी एक ही उपायसे दुनियाके सब तरहके दुःख मिट जायं।

क्या यह बात सम्भव है कि दुनियाके सब तरहके दुःख एक ही उपायसे मिट जायं? इसके जवाबमें महात्मा तथा आगे बढ़ेहुए हरिजन और भक्त कहते हैं कि हां, ऐसा हो सकता है। हो सकता है क्या हर एक देशमें हर समय हर कौममें तथा हर एक धर्ममें ऐसा हुआ है, होता है और होता ही रहेगा। और याद रखना कि यह भी बहुत दूरकी बात नहीं है, बल्कि जरा गहराईमें उतरकर जांच करें तो अपने जीवनमें तथा अपने आस पासके बन्धुओंमें भी ऐसे कितने ही दृष्टान्त निकल आवेंगे जिनमें एक ही किसमकी मुख्य शक्तिसे अनेक प्रकारके दुःख मिट गये हैं। यह सुनकर कितने ही भाई बहनोंको आश्चर्य होगा और यह पूछनेका मन करेगा कि क्या ऐसा हो सकता है? क्या यह सच है? अगर यह बात सच हो तो उसकी कुंजी बतानेकी मेहरबानी करो।

इसके जवाबमें सन्त लोग कहते हैं कि इसमें छिपानेकी कोई बात नहीं है और न इसमें कुछ अजीब या कठिनाई है। बल्कि यह बिलकुल सीधी सादी बात है, दुनियाके हर एक

धर्मकी मानी हुई बात है और सैकड़ों आदमियोंकी सैकड़ों बार आजमायी हुई बात है। और वह बात यह है कि परम कृपालु परमात्माके शान्तिदायक पवित्र नाममें दुनियाके सब दु ख मिटा देनेका बल है। प्रभुके नामसे दुखियोंको ढारस मिलता है, निराश बने हुओंके मनमें नयी आशा होती है, हारे हुओंको नया बल मिलता है, रास्ता भूले हुओंको प्रभुके नामके बलसे रास्ता मिलता है, जिनके रोग न मिटते हों उनके असाध्य रोग भी प्रभुके नामके बलसे मिट जाते हैं, जो खान्दानी वैर न मिटता हो वह भी प्रभुके शान्तिदायक नामसे मिट जाता है, जो छोटी कहलाने वाली जातिमें पैदा हुए हों वे भी प्रभुके नामके बलसे पूजनीय हो जाते हैं, जो दरिद्रीसे दरिद्री हों उनके पैरोंमें भी प्रभुके पवित्र नामसे लक्ष्मी लोटने लगती है और जो अधमसे अधम हों वे भी प्रभुके पवित्र नामसे पवित्रसे पवित्र हो जाते हैं और गरीब आदमियोंके और किसी तरह न हो सकने लायक लौकिक तो क्या अलौकिक काम भी प्रभुके पवित्र नामके बलसे बन जाते हैं। इसलिये सब तरह के दु.ख दूर करना हो तो परम कृपालु पिता परमात्माके पवित्र नामकी महिमा समझ कर उसका सदा स्मरण कीजिये। इससे जो दु ख किसी तरह नहीं मिटता वह दु ख भी आसानीसे मिट जायगा। इसलिये प्रभुका नाम स्मरण कीजिये। स्मरण कीजिये।

२०—फतेह तथा शान्ति हासिल करनेकी सहज कुंजी।

एक भक्तराज महाराज सत्संगमण्डलीमें हमेशा बहुत

नयी नयी बातें करते और सुन्दर ढबसे कथा कहते थे। इससे उनकी कथा सुननेके लिये सैकड़ों आदमी आते थे और हर एक आदमी नया बल, नयी रोशनी, नयी फुर्ती, नया आनन्द तथा नयी शान्ति हासिल कर ले जाता था। क्योंकि वह भक्तराज हमेशा नयी नयी कुंजियाँ बताया करते थे। एक दिन किसी हरिजनने उनसे कहा कि महाराज! हमको इस दुनियामें फतेह भी चाहिये और शान्ति भी चाहिये। हम अगर फतेह लेने जाते हैं तो शान्ति नहीं मिलती और शान्ति लेने जाते हैं तो इस दुनियामें फतेह नहीं मिलती। तब हमें क्या करना चाहिये? भक्तराजने उत्तर दिया कि मरना नहीं है हमेशा जीना ही है, यह समझ कर काम करो; बस तुम्हारी फतेह है।

यह सुनकर उस जिज्ञासुने कहा कि अगर काम करनेमें इतनी आसक्ति रखें तो फिर शान्ति कहांसे मिले? महाराज! हमें सिर्फ फतेह नहीं चाहिये बल्कि फतेहके साथ शान्ति भी चाहिये, इसलिये शान्ति मिलनेका रास्ता भी बतानेकी कृपा कीजिये।

तब भक्तराजने कहा कि तुम जरा उतावले हो। अभी मैंने एक तरफकी बात कही थी इतनेमें तुम बीचमें ही बोल उठे। पर अब दूसरी तरफकी सुनो तो तुम्हारे मनका समाधान हो जायगा। हमेशा जीना है मरना नहीं, यह समझ कर काम करना जैसे फतेह पानेकी कुंजी है वैसे ही आज ही मरना है और अभी मरना है, यह समझ कर भक्ति करना शान्ति पानेका उपाय है। इसलिये भाई! अगर सच्ची शान्ति दरकार हो तो दुनियादारीमें फतेह पानेके लिये जितने बलसे काम करते हो उतने ही बलसे प्रभुकी भक्ति करो। फिर तो शान्ति कुछ भी दूर नहीं है। पर हम लोगोंसे जो भूल होती है वह यही कि हम या तो व्यवहारमें इतना अधिक ध्यान लगाते हैं और इतनी

अधिक आसक्ति रखते हैं कि प्रभुके सामने आंख उठाकर देखते ही नहीं या बाहरके दिखाऊ वैराग्यमें पड़े रह कर ऐसे झूठे झूठे आडम्बरों और ढोंगढकोसलोंमें समय गंवाते हैं कि दुनियाकी कुछ भी परवा नहीं रखते। इस प्रकार सिर्फ एक तरफ कोई एक गट्ठड़ लाद देते हैं पर व्यवहार तथा परमार्थके दोनों पलड़े एक समान रखना हमें नहीं आता। इससे हमें फतेह भी नहीं मिलती और शान्ति भी नहीं मिलती। इसलिये अगर दोनों विषय सुधारना हो तो हमेशा अमर रहना है कभी मरना ही नहीं है, यह समझकर जगतमें काम करो और आज ही मर जाना है यह समझकर ईश्वरकी भक्ति करो। फिर तो फतेह तथा शान्ति तुम्हारी ही है। इसमें शर्त इतनी ही है कि दोनों पलड़े बराबर रखना आवेगा तभी असली लज्जत पा सकोगे। अगर इस तरफ या उस तरफ झुक गये तो समतूलपन खो बैठोगे। और ऐसा होनेपर या तो फतेह नहीं पाओगे या शान्ति नहीं पाओगे। इसलिये ख्याल रखो कि ऐसा न हो। फतेह तथा शान्ति पानेके लिये व्यवहार तथा परमार्थके पलड़े बराबर रखनेकी कोशिश करना। तब फतेह तथा शान्ति पा सकोगे।

२१-प्रार्थना सफल करनेके उपाय।

इस जगतमें जो व्यवहारचतुर आदमी हैं वे अपने कामकी फतेहके लिये जगतकी चीजोंपर तथा आसपासके आदमियों पर मुख्य भरोसा रखते हैं। पर जो भक्त होते हैं वे अपनी फतेहका बड़ा भरोसा भगवानकी कृपापर रखते हैं और उसकी कृपा

पानेके लिये प्रार्थना करते हैं। प्रार्थना करनेकी कितनी ही रीतियां हैं। जैसे—

(१) कोई भक्त पुराने समयकी प्रार्थना करता है, उसमें भाषा भी पुरानी ही बर्तता है तथा छन्द भी पुराने ही बर्तता है।

(२) कोई भक्त नये नये छन्दोंमें खड़ी बोलीमें प्रार्थना करता है।

(३) भगवानकी, पहलेके भक्तोंको दी हुई, मददकी नजीर देकर उसी तरह इस समय अपनी मददके लिये कोई भक्त प्रार्थना करता है।

(४) कोई भक्त अपनी दीनता तथा अपने अपराध बताकर याचना करता है।

(५) कोई भक्त अपना दुःख तथा खराब आदमियोंका सुख बताकर जरा उलहना देकर याचना करता है।

(६) कोई भक्त पुत्रके तौरपर अपना दावा पेश कर तथा यह कहकर कि "पूत कपूत होता है पर माता कुमाता नहीं होती" अपनी याचना सफल करनेकी प्रार्थना करता है।

(७) कोई भक्त भगवानको मेहना मारकर तथा तू बड़ा कठोर है, तू बड़ी कड़ी परीक्षा लेता है, तू निर्दयी है इत्यादि पुष्पाञ्जलि देकर फिर अपनी अर्जी सुनाता है।

(८) कोई भक्त प्रसाद चढ़ाकर तथा किसी किस्मका होम हवन करके फिर प्रभुसे कहता है कि मैंने तुम्हारे लिये यह काम किया अब तू मेरा फलाना काम कर दे। उसकी प्रार्थना इस किस्मकी होती है।

(९) और कोई कोई भक्त यह कहते हैं कि तूने हमसे वादा किया है इसलिये अपना वचन पूरा कर। तू हमारी नहीं सुनेगा तो फिर दूसरा कौन सुनेगा? वे इस प्रकार वादे तथा

हकके रूसे मांगते हैं।

ऐसी ऐसी अनेक रीतियोंसे भिन्न भिन्न भक्त प्रार्थना करते हैं; पर अकसर कितने ही भक्तोंकी प्रार्थना जैसी चाहिये वैसी सफल नहीं होती। क्योंकि महात्मा लोग कहते हैं कि प्रार्थना अग्नि है। पर खाली अग्नि काफी नहीं है। अग्निपर जब धूप डाली जाती है तभी उसकी सच्ची सुगन्ध फैलती है और तभी अग्निका पराक्रम दिखाई देता है। परन्तु जबतक अग्निपर धूप न हो तबतक अग्निकी खूबी नहीं दिखाई देती और अग्नि बिना धूपकी खूबी भी नहीं समझ पड़ती। इसलिये प्रार्थनाकी अग्निके साथ एक प्रकारकी कुदरती धूप चाहिये और वह हो तभी प्रार्थना सफल होती है। अब हमें यह जानना चाहिये कि प्रार्थनाकी अग्निमें डालनेके लिये उत्तम धूप क्या है। इसके लिये महात्मा लोग कहते हैं कि—

"परम कृपालु परमात्माका मानपूर्वक शुद्ध अन्तःकरणसे उपकार मानना" प्रार्थनाकी अग्निमें डालने योग्य उत्तम सुगन्धित धूप है। इसलिये अगर प्रार्थना सफल करानेकी इच्छा हो तो उसमें कृतज्ञता की धूप डालनी चाहिये; इससे तुरत ही उसकी सुगन्ध परमात्मातक पहुंच जाती है जिससे प्रार्थना जल्द फलीभूत होती है। क्योंकि ईश्वरका उपकार मानना कुछ छोटी मोटी बात नहीं है; बल्कि जब हृदयमें सन्तोष आ जाता है, जब अपनी कमजोरी ठीक ठीक समझमें आ जाती है, जब प्रभुपर पूरा भरोसा हो जाता है, जब यह विश्वास हो जाता है कि प्रभु जो करता है वह वाजिब ही है, जब संकल्प विकल्प काबूमें आ जाते हैं, जब मौज शौक घट जाते हैं, जब जिन्दगीमें पवित्रता आने लगती है और जब प्रभुके रास्तेमें चलनेकी दृढ़ता आ जाती है तथा कोई छोटा मोटा चमत्कार

जाने बेजाने दिख आता है तभी उपकार माननेका मन करता है। और जब ये सब बातें होती हैं उसी घड़ी या उसी क्षण शुद्ध अन्तःकरणसे उपकार माना जा सकता है। नहीं तो सिर्फ ऊपरी शब्दोंसे मानेहुए उपकारका कुछ बहुत माल नहीं है। पर जब ऐसी ऐसी बातोंके साथ अन्तःकरणकी तह-हटीसे स्वाभाविक रीतिपर उपकार माना जाय और एकाध बार नहीं बल्कि बारंबार प्रसंगपर तथा बिना प्रसंग भी उपकार माना जाय तभी प्रार्थना सफल होती है। इसलिये मारयो! अगर आपको अपनी प्रार्थना सफल करानी हो तो प्रार्थनाकी अग्निमें कृतज्ञताकी धूप डालना सीखिये। उपकार माननेकी धूप डालना सीखिये।

२२—खुले खजाने परमार्थ करनेका बल हासिल करनेका उपाय। आपके हाथमें अगर थोड़ा हो तो उसके सामने मत देखिये, बल्कि प्रभुकी पूर्णताके सामने देखिये; फिर तो आप जी खोल कर परमार्थ कर सकेंगे।

कितने ही हरिजनोंका दान धर्म करनेका बड़ा मन करता है, क्योंकि जो सच्चे भक्त होते हैं उनका स्वभाव बड़ा लहरी होता है। इसका कारण यह है कि जगतकी वस्तुओंका मोह उन्हें बहुत थोड़ा होता है, इसस ऐसी चीजोंको व बेफिकरीसे फेंक सकते हैं। दूसरे उनको इस बातका भी भरोसा रहता है कि हम जो देते हैं वह प्रभुके लिये देते हैं और प्रभुके लिये दिया हुआ कभी व्यर्थ नहीं जाता। इसके सिवा वे शास्त्रके इस सिद्धान्तको भी मानते हैं कि सन्यास लिये

बिना मोक्ष नहीं मिलता अर्थात् मनसे सब वस्तुओंका पूरा पूरा त्याग किये बिना मुक्ति नहीं मिलती। इससे वे मामूली व्यवहारी आदमियोंसे अधिक दान पुण्य कर सकते हैं। तिसपर भी कितने ही भक्तोंके मनमें यह असन्तोष रहता है कि हम अभी कुछ नहीं कर सकते और सचमुच ऐसा ही होता है। उनके हाथमें जो थोड़ा बहुत होता है उसके सामने नजर रखकर वे दान करते हैं, इससे अपने मनके सन्तोष लायक नहीं दे सकते। क्योंकि थोड़ेमेंसे थोड़ा ही दिया जा सकता है। अगर कुएंमें ही जल न हो तो फिर डोलमें कहांसे आ सकता है? वैसे ही जिसके हाथमें थोड़ा ही हो वह दूसरोंको ज्यादा कहांसे दे सकता है? और जबतक ज्यादा न दे तबतक हृदयका सन्तोष तथा सच्चा आनन्द कहांसे मिल सकता है? नहीं मिल सकता। तब करना क्या चाहिये? अपने पास बहुत थोड़ा है और देना है बहुत; यह कैसे हो सकता है? और अगर ऐसा न हो तो फिर भक्तोंकी भक्ति क्या? और प्रभुकी महिमा क्या? क्योंकि प्रभुका कौल है कि भक्तोंको उनके कल्याणके लिये जिन चीजोंकी जरूरत पड़े उन्हें देनेको मैं बाध्य हूं। इससे परमार्थके काम करनेके लिये भक्तोंको जिस सामग्रीकी जरूरत होती है उसे प्रभु जुटा देता है। तौभी कितने ही भक्तोंको कितनी ही चीजोंकी तंगी पड़ती है; इसका क्या कारण है? इसके जवाबमें आगे बढ़ेहुए भक्त कहते हैं कि हम अपने हाथमें, घरमें या गांवमें जो थोड़ा सा होता है उसके सामने देखा करते हैं इससे अधिक नहीं दे सकते। अगर हम अपने सामने देखनेके बदले अपने प्रभुकी पूर्णताके सामने देखना सीखें तो हम खूब जी खोलकर दे सकते हैं। क्योंकि प्रभुकी पूर्णताके सामने देखनेसे हमें विश्वास हो जाता है कि उसके यहां किसी

बातकी कमी नहीं है। वह सर्वशक्तिमान है, वह जो चाहे सो कर सकता है, वह थोड़ेसे बहुत बना सकता है, वह तृणसे पहाड़ कर सकता है, वह धूलसे सोना बना सकता है और जहां कुछ भी नहीं है वहां भी वह जो चाहे सो कर सकता है। उसके यहां असम्भव शब्द ही नहीं है। इसके सिवा वह सब तरहकी अपूर्णताको पूर्ण करनेवाला है। इसलिये अगर उसकी पूर्णताकी तरफ देखना आवे तो ऐसा देखनेवाले भक्तको किसी तरहका अभाव कभी नहीं होता। पर जो अपने हाथमें है उसके सामने देखनेवालेको जरूर अभाव होगा। इसलिये अगर खूब आगे बढ़ना हो और ठीक ठीक परमार्थ करना हो तो आपके हाथमें या आपके घरमें जो थोड़ा बहुत हो उसकी तरफ मत देखिये, बल्कि परम कृपालु परमात्माकी पूर्णताके सामने देखिये। इससे आपमें नया बल आ जायगा और दूसरे व्यवहारी आदमियों से आप कहीं अधिक परमार्थ कर सकेंगे।

२३-हम धर्मसम्बन्धी अपनी कितनी ही प्रतिज्ञाओंको नहीं पाल सकते ; इसका कारण।

जिन आदमियोंको भक्त बनना है उन्हें अपने भीतरका बहुत थोड़ा बहुत बदलना पड़ता है। क्योंकि जीव जबतक मायावादी संसारी रहते हैं तबतक उनके आचार विचार और रहन सहन और तरहके होते हैं पर जब भक्त बनने लगते हैं तब उनको अपनी रीति भाँति और रहन सहन बदलनी पड़ती है। लेकिन आदमीका स्वभाव ऐसा है कि उसको जो लत पड़ जाती है वह तुरत नहीं छूटती, उसके मनमें जो पुरानी लकीर पड़ जाती है वह क्षणभरमें नहीं मिटती और अच्छी या बुरी जैसी उसकी प्रकृति बन जाती है वह एकदम नहीं बदलती, परन्तु धीरे धीरे उसका परिवर्तन होता है। एक एक करके

होता है और बहुत कुछ शारीरिक तथा मानसिक लड़ाई करनेके बाद होता है। ऐसी लड़ाईके वक्त एक रास्तेसे दूसरे रास्तेपर जानेके लिये कितनी ही बार मनमें कितनी ही प्रतिज्ञाएं करनी पड़ती हैं। पर कितने ही हरिजनोंपर बारबार ऐसी बीतती है कि वे अपनी की हुई प्रतिज्ञाको अन्ततक कायम नहीं रख सकते; बीच बीचमें उनकी प्रतिज्ञा टूट जाती है। यह देखकर उनके मित्र दिल्लगी उड़ाते हैं और उन हरिजनोंमें कुछ अधिक दया हो तो उन्हें भी अपनी इस कमजोरीके लिये अफसोस होता है और यह विचार उठता है कि हम जो अपनी प्रतिज्ञा नहीं पाल सकते इसका क्या कारण है?

'इसके जवाबमें महात्मा लोग कहते हैं कि ऐसे नौसिख भक्त-कच्चे भक्त जो प्रतिज्ञा करते हैं वह प्रभुकी इच्छानुसार नहीं करते, बल्कि और ही तरहसे करते हैं। जैसे—

(१) अपने जोशमें आकर प्रतिज्ञा करते हैं।

(२) जरूरी फेरबदल करनेके लिये जो धीरज रखना चाहिये वह धीरज रखे बिना उतावले होकर प्रतिज्ञा करते हैं।

(३) देश कालको सोच बिना तथा अपनी हालत और शक्तिका विचार किये बिना प्रतिज्ञा करते हैं।

(४) अपने इर्द गिर्दका संयोग जांचे बिना प्रतिज्ञा करते हैं।

(५) अपनेसे जितना हो सकता है उससे कहीं अधिक कर डालनेकी आशा रखकर प्रतिज्ञा करते हैं।

(६) मान मर्यादाकी इच्छासे, दूसरोंसे आगे बढ़ जानेके लिये तथा जल्द जल्द बड़े बड़े फल पा जानेके लिये प्रतिज्ञा करते हैं।

(७) प्रेमसे नहीं, ज्ञानसे नहीं, कर्त्तव्यके लिये नहीं और प्रभुकी महिमा समझकर नहीं, बल्कि सिर्फ बाहरकी जड़ जिदके लिये प्रतिज्ञा करते हैं। इससे वह प्रतिज्ञा अकसर नहीं निभती।

भाइयो ! इस किस्मकी प्रतिज्ञा न निभे तो क्या कुछ आश्चर्य-की बात है ? नहीं । इसवास्ते अगर आगे बढ़नेके लिये प्रतिज्ञा करनी हो तो परम कृपालु परमात्माको हाजिर नाजिर जानकर उसकी इच्छानुसार प्रतिज्ञा करनी चाहिये। इस तरह प्रतिज्ञा करना आवे तो यह प्रतिज्ञा अन्ततक निभ सकती है। इसलिये भाइयो । ऊपर लिखे मुताबिक बहुत सोच विचारकर क्रम क्रमसे पालने योग्य प्रतिज्ञा कीजिये, आत्माका बल समझकर प्रतिज्ञा कीजिये और यही प्रार्थना कीजिये कि प्रतिज्ञा पालनेके लिये परम कृपालु परमात्मा बल दे। इससे धीरे धीरे धर्मका शुभ प्रतिज्ञा आसानीसे पाली जा सकेगी।

७४—थोड़े समयतक प्रभुकी इच्छानुसार चलना काफी नहीं है, बल्कि हमेशा उसकी इच्छानुसार चलना चाहिये।

कुछ भक्त यह कहते हैं कि पहले हम बहुत काम कर चुके हैं परन्तु अब हमसे नहीं होता, इससे तुम समझते हो कि हम कुछ नहीं करते, परन्तु हमने अपनी जवानीमें जैसा धर्म पाला है वैसा आज कोई पाल तो ले ! उस समय हम कितने व्रत उपवास करते थे तीर्थ करनेके लिये कितने कोस पैदल चलते थे और कैसे निस्पृह भावसे रहते थे यह तुम सुनो तो तुम्हें आश्चर्य हुए बिना न रहे। और तो क्या उस समय लगोटीकी भी परवा न थी। यह सब जंजाल तो अब हुआ है नहीं तो पहले कितने ही सेठ साहूकार तथा कोई कोई राजा भी हमारे पास आ कर रुपयों की थैली रखते पर हम आंख उठाकर उनके सामने देखते भी नहीं थे। आज तुम्हारे सामने कुआ खुदवाने या गायके चारेके लिये चन्देकी सूची रखते हैं तो तुम मुंह बनाते हो और

कहते हो कि " महाराज लालची है " पर बेटा ! हमारे समान निर्लोभी दूसरा कौन है ?

हमें फलानी जगह बड़े महन्तकी गद्दी मिलती थी पर हमने नहीं ली। क्योंकि उस समय यही रंग था और आज आटेकी गठरी बांधे फिरते हैं इससे तुम समझते हो कि महाराजमें कुछ तत्व नहीं है। पर बच्चा ! महाराज तो पहले ही बहुत कर चुके हैं। अब इस मन्दिरकी उपाधि लगी है इससे और कुछ नहीं बनता। पर पहले धर्म ध्यान करनेमें हमने कुछ उठा नहीं रखा।

भाइयो ! कितने ही साधु, भक्त तथा हरिजन ऐसी ऐसी बातें किया करते हैं और प्रभुकी कृपासे कुछ समय जो कोई सद्गुण चमक गया हो उसीके बलपर रहा करते हैं तथा कुछ खास अनुकूलताके कारण कुछ समय भगवदिच्छाके अनुसार चले हों तो उसपर जोर दिया करते हैं। पर ईश्वरी रास्तेमें आगे बढ़ेहुए ज्ञानी कहते हैं कि इतना ही कर देना बस नहीं है, कुछ देर भगवदिच्छाके अनुसार चलना या कुछ समय प्रभुकी रस्सी पकड़कर जाना ही बस नहीं है। अनुकूल संयोगोंके कारण किसी समय किसी आदमीमें दया, परमार्थ, दान, त्याग, तप या ऐसे ही किसी दूसरे गुणका बढ़ जाना और पीछे संयोगोंके बदलनेसे उस सद्गुणका घट जाना सम्भव है। परन्तु इस थोड़ी देरके सद्गुणके लिये पीछेसे अभिमान करना वाजिब नहीं है। फिर यह बात भी समझ लेने योग्य है कि हमने कल भोजन किया है तो उससे आज नहीं चल सकता। कल भोजन करचुके होनेपर भी आज फिर जीमना पड़ता है।

वैसे ही पहले धर्म कर चुकना ही बस नहीं है, बल्कि अब भी, आजकलके संयोगोंके अनुसार धर्मके शुभ काम करना चाहिये। इसी प्रकार कुछ समय प्रभुकी इच्छानुसार चल देना ही बस नहीं

है बल्कि जिन्दगीके आखिरी दमतक प्रभुकी इच्छानुसार चलना चाहिये। तभी सच्चा धर्म पालन समझा जाता है और तभी प्रभु प्रसन्न होता है। इसलिये पहले कुछ समयतक किये हुए शुभ कर्मके अभिमानमें मत रहिये। बल्कि अगर सच्चा भक्त बनना हो और मोक्ष पाना हो तो जिन्दगीकी आखिरी सांसतक प्रभुकी रस्सी पकड़कर चलिये और उसीकी इच्छानुसार चलाकी कीजिये।

२५—बहुत करके हमेशा दुःखके बाद सुख ही होता है; पर हम उस सुखको पहलेसे देख नहीं सकते और दुःखको नजरके सामने देखते हैं, इससे दुःखके वक्त हमें अधिक अफसोस होता है।

भाइयो! कुदरतका यह एक बड़ा कानून समझ रखना कि जब दुःख आता है तब उसके बाद कुछ न कुछ सुख आनेवाला होता है। पर उस सुखके आनेमें थोड़ा समय लगता है; दूसरे दुःख हमारे सामने ही खड़ा दिखाई देता है और उसका कुछ असर भोगना भी पड़ता है। और सुख भविष्यके भीतर होता है और उसके सामने समयका परदा रहता है। इससे उस समय सुखको हम नहीं देख सकते। सिर्फ दुःख हमारे सामने दिखाई देता है जिससे हमको अफसोस होता है। परन्तु ज्ञानी लोग कहते हैं कि ऐसे झूठे अफसोसमें हमें नहीं पड़ रहना चाहिये, क्योंकि भविष्यमें अधिक सुख मिले इसके लिये ही दुःख दिया जाता है। इसके लिये एक भक्तराज कहते थे कि—

एक बड़े पुराने बटवृक्षके नीचे एक आमका छोटा सा पौधा उगा था। उस पौधेको देखकर एक आदमी यह समझता था कि उस बड़की छायासे ही आमके पौधेकी रक्षा होती है। अगर इस

आमके पौधे पर ऐसी छायावाला बड़ न होता तो यह पौधा धूप पालेसे कभीको सूख गया होता या इसको कोई पशु चर गया होता। परन्तु बड़के आश्रयमें ही वह आजतक बचा हुआ है। यह सोच कर वह बड़का एहसान माना करता था। इसके बाद एक बार चौमासेमें बड़ा भारी तूफान आया जिससे वह बड़का पेड़ उखड़ गया। यह देख कर वह आदमी बहुत अफसोस करने लगा कि हाय! हाय! अब आमके पौधेकी क्या दशा होगी! अब वह थोड़े दिनमें सूख जायगा। इस खटकेसे उसको खेद होने लगा। परन्तु कुछ दिनमें उसने देखा कि बड़के उखड़ जानेसे आमका पौधा तेजीसे बढ़ता और फैलता जाता है और उसमें शाखपत्ते अधिक निकलते जाते हैं तथा उसमें एक प्रकारकी तेजी आगयी है। यह देख कर उस आदमीने अपने एक चतुर मित्रसे इसका जिक्र किया कि मैं समझता था कि बड़के उखड़ जानेसे और उसकी छाया मिट जानेसे आमका पौधा सूख जायगा, पर यह तो और अधिक खिलता जाता है। इसका क्या कारण है?

यह सुनकर उस चतुर मित्रने कहा कि भाई! जब तक यह पौधा छोटा था और इसे छायाकी जरूरत थी तबतक कुदरतने इस पर बड़की छाया रहने दी; पर जब यह पौधा बड़ा हुआ और इसे अधिक हवा तथा रोशनीकी जरूरत पड़ी तब इसको यह खुराक देनेके लिये कुदरतने बड़को वहांसे हटा दिया। इस कारण बड़को उखाड़ कर कुदरतने आमके पौधेका नुकसान नहीं किया बल्कि और उसका भला ही किया है। अब अगर वहां बड़का पेड़ रहता तो यह आमका पौधा बढ़ न सकता; क्योंकि इसे जिस हवाकी जरूरत थी, जिस रोशनीकी जरूरत थी, सूर्यकी जिस धूपकी जरूरत थी और

चन्द्रमाकी जिस चान्दनीकी जरूरत थी वह उस बड़की छायामें उसे नहीं मिल सकती थी और जब तक ये सब तत्व न मिलते यह सब सामान न मिलता तब तक आमका पौधा अपनी तेजीसे न बढ़ सकता और न पूरा पूरा फल दे सकता था। सो आमको बढ़ानेके लिये ही कुदरतने बड़को हटा दिया है। इसलिये याद रखना कि आमके पौधको दु:ख देनेके लिये नहीं, बल्कि सुखी करनेके लिये ही कुदरत ने बड़को गिरा दिया है। इसी तरह देखो कि जबतक नानकचन्दजी दीवान थे तबतक हमारे देवीदयाल उनको पान लगा लगा कर खिलानेमें ही रह गये थे। पर जब वह दीवान गये और उनकी जगह नये दीवान आये और राज्यमें सब फेर बदल हुआ तब देवीदयालकी कदर हुई। आज कल वह अच्छे दरजे पर हैं और भविष्यमें उन्हींके दीवान होनेकी आशा की जाती है। अब विचार करो कि अगर पहलेके दीवान ही आजतक रहते तो क्या देवीदयालको ऐसा चान्स मिलता ? लेकिन जब वह दीवान गये तब देवीदयालको कितना अफसोस हुआ था, यह तुम जानते ही हो, भाई ! सब ऐसा ही है। दु:खके पीछे सुख होता ही है और सुखके लिये ही दु:ख होता है। इसलिये हमें दु:खसे दब नहीं जाना चाहिये या न हिम्मत हारनी चाहिये। हीरालाल वकीलकी बात याद है कि नहीं ? उनका भी ऐसा ही हुआ था।

हीरालाल पहले मास्टरी करते थे, पर जरा अक्खड़ मिजाजके थे। इससे बाला अफसरसे छोटी सी बातपर अटक गयी। मामला बढ़ गया। बाला अफसर भी तीसमारखां था उसने रजस गज करके हीरालालको स्कूलकी नौकरी से छुड़ा दिया। इसके बाद हीरालाल वकालत पढ़ने लगे और दो वर्षमें वह स्टटकी वकालतकी परीक्षामें पास हो गये।

स समय और कोई अच्छा वकील न था और हीरालाल जरा वाचाल, सिफारिश वाले, और जहां तहां घुस जानेवाले थे। इससे उनकी चल गयी और उन्होंने खूब धन पैदा किया। आज उनके पास दो लाख रुपये हैं। अब वह कहते हैं कि अगर मैं मास्टरीकी नौकरीमें बारह रुपयेकी तलब पर पड़ा रहता तो आज क्या इतने रुपयेवाला हो सकता? मास्टरीमें बढ़ते बढ़ते बहुत होता तो तीस चालीस रुपये वेतन मिलता और कभी इंस्पेक्टर होता तो पचास, साठ या सत्तर रुपये मिलते, उसमें कुछ हजारों रुपये न मिलते। मास्टरीकी नौकरी गयी तभी मुझे वकालत सीखनेकी सूझी। अगर वह नौकरी कायम रहती तो उसे छोड़ देनेका मेरा कभी इरादा न होता। क्योंकि उस समय मैं यह समझता था कि मास्टरीकी नौकरीमें बड़ी बादशाही है। किसीकी परवा नहीं, सब लड़के ताबेदार और सालमें दो तीन दिन बाला अफसरको मुंह दिखा आना, फिर सालभर मौज करना और गांवमें सबसे चतुर कहलाना: इससे बढ़कर मजा क्या है? इस प्रकारका विचार होनेके कारण मैं कभी अपनी खुशीसे मास्टरीकी नौकरी न छोड़ता। पर जब छुड़ा दिया गया तब लाचारीसे नौकरी छोड़नी पड़ी। तो भी मुझे वह नौकरी छोड़ते वक्त बड़ा अफसोस हुआ था और मैं समझता था कि मौकूफ होनेसे मेरी इज्जत गयी। परन्तु उससे आज मेरा नसीब कैसा फिर गया है यह जब देखता हूं तब मुझे आश्चर्य होता है और यह ख्याल होता है कि परम कृपालु परमात्मा हम लोगोंपर किस तरह दया करता है यह हम नहीं जान सकते इसीसे बड़बड़ाया करते हैं। पर अगर यह समझें कि दुःखमें उसकी दया ही होती है तो फिर हमें दुःखके वक्त आज कलके बराबर अफसोस न हो। हीरालालके मुंहसे उनकी

यह बात सुननेमें मुझे बड़ा आनन्द मिलता है।

भाई! ऐसे कितने ही मामले दुनियामें हुआ करते हैं। नरसिंह मेहताका ही उदाहरण लो। उनको उनकी भाभीने मेहना मार मार कर तथा दुःख देकर घरसे निकाल दिया था इससे उनको भक्ति करनेकी सूझी और आगे जाकर वह महान भक्त हुए। अगर उनकी भाजाई महना मार कर उनको घरसे न निकाल देती तो उनकी क्या हालत होती यह एक विचारने योग्य मुश्किल सवाल है। भौजाईने जब घर छुड़ाया उस समय उनको कितना क्लेश हुआ होगा यह विचारना कुछ मुश्किल नहीं है और जब उनको भगवानका दर्शन हुए होंगे तब उनको कैसा अलौकिक आनन्द हुआ होगा यह विचारना भी कुछ मुश्किल नहीं है। बन्धु! दुःखमें आगे जाकर एस प्रसङ्ग निकल आते हैं पर अगर अकेला सुख ही हो तो मनुष्य आगे न बढ़ सके।

मेरे काकाका दृष्टान्त भी जानने योग्य है। उनको व्यापारमें धाटा लगा और रोजगार टूट गया तो उन्होंने अपने एक दोस्तकी मददसे झाड़ू बनानेका एक कारखाना खोला। यह कारखाना पहले छोटी हैसियतमें था पर आजकल उसमें हजारों टन झाड़ू बनती है और वह लाखों रुपये कमाते हैं। अगर वह उस छोटीसी दुकानमें आजतक लगे रहते और खा पीकर दो चार सौ रुपये साल बचा लेनके बराबर और कोई सुख न समझ कर उसी दशामें पड़ रहते तो आज क्या ऐसी ऊंची दशामें होते? तिसपर भी जिस वक्त रोजगारमें घाटा लगा और दुकान तोड़नी पड़ी उस समयकी उनकी हालत जिसने देखी था और उनकी हाय हाय जिसने सुनी थी उसे अफसोस हुए बिना न रहा। परन्तु आज जब वह अपनी दशाकी और देखते हैं तथा झाड़ूका नया कारबार दूरमें बढ़ानेके लिए चारों ओरसे

अपनी इज्जत होते देखते हैं तब वह ईश्वरका उपकार मानते हैं और कहते हैं कि उसने अच्छा किया जो मेरी दुकानमें घाटा लगाया। अगर मेरी दुकानमें घाटा न लगाया होता तो आज मेरी ऐसी अच्छी दशा न होती। इसलिये अब मेरी समझमें आया है कि दुःखमें भी आनन्द है, पर उसे समझना और आनन्द लेना जाना चाहिये।

सूबेदार रामप्रसादको जानतेहो? वह सोनेके तीन तमगे लटकाये फिरते हैं और घर बैठे चालीस रुपये पेंशन खाते हैं। वह कहते हैं कि मैं पहले, जवानीके वक्त दूध बेचनेका रोजगार करता था। मेरे पास चार भैंसें थीं उन्हींसे मेरे गुजारा होता था। पर एक साल भैंसोंमें रोग फैला जिससे मेरी सब भैंसें मर गयीं। उस समय मेरे पास कुछ भी न था। थोड़े बहुत रुपये जमा किये थे वे जवानीके जोशमें दूसरा ब्याह करने तथा एक मित्रसे तकरार हो जानेपर मुकद्दमा लड़नेमें खर्च होगये। इससे मेरे पास फूटी कौड़ी भी न थी। लाचारी दरजे ग्वालेका रोजगार छूटनेपर एक मित्रकी मददसे मैं पलटनमें रंगरूटके तौरपर भरती हुआ। कुछ दिन बाद बारह रुपये तलबपर पलटनमें नौकरी मिली। इसके बाद लड़ाई छिड़ी जहां मेरी टुकड़ीको जाना पड़ा। उसमें बहादुरी दिखानेका मौका मिलनेपर मेरी तलब बढ़ी और मुझे हवलदारकी जगह मिली। इसतरह मौके मौकेपर बहादुरी और फरमाबरदारी दिखानेसे मैं जमादार और फिर सूबेदार हो गया। अब घरपर बैठकर पेंशन खाता हूं। अगर मेरी भैंसें न मर जातीं तो मैं आजतक दूध बेचनेवाला ही रहजाता, सिरपर दूधका मटका लेकर गली गली घूमा करता और भैंसोंका गोबर उठाया करता तथा गोहालमें झाड़ू दिया करता। पर इसके बदले आज जगह

जगह मेरी इज्जत होती है, सरकारी जलसोंमें मुझे बुलावा आता है तथा मैं सोनेके तमगे पहनता हूं और बैठे बैठे पेंशन खाता हूं। यह सब भैंसोंके रोगसे मर जानेका प्रताप है। इसके लिये मुझे उस समय इतना अफसोस हुआ था कि जिसका ठिकाना नहीं। पर आज उस दुःखके लिये मैं ईश्वरका उपकार मानता हूं। क्योंकि अगर यह दुःख मुझपर न पड़ता तो मुझे पलटनमें नौकरी करनेकी न सूझती। लेकिन कुदरतको यह पसन्द नहीं था कि मेरे जैसा पलटनिया आदमी दूध बेचनेके रोजगारमें पड़ा रहे। इससे उसने मुझे आगे ढेलनेके लिये तथा मुझसे यह रोजगार छुड़ानेके लिये ही भैंसोंका नाश किया। मुझे तो ऐसा ही जान पड़ता है। इस प्रकार दुःखसे भी सुख हो आता है, इसलिये यह सिद्धान्त समझने लायक है।

हमारे डाक्टर मामा कहते थे कि मैं अपनी जवानीमें बड़ी खराब चालका आदमी था। उससमय मुझे एक लुच्चा मित्र मिल गया था इससे मैंने बहुत कुछ शोहदापन किया था। इसके बाद किसी छोटी सी बालके लिये विरुद्ध पक्षके बहकाने तथा घूस देनेसे वह यार फूट गया और उसने मेरा सारा भंडाफोड़ कर दिया। इससे उस समय मैं बहुत बेइज्जत हुआ और मेरी चारों ओरसे थुक्का फजीहती हुई। उस समय उस दुश्मन बने हुए मित्रपर मुझे बड़ा गुस्सा आया और जीमें यह आता था कि इसका भर्ता निकाल डालूं। चार छ महीने जेलकी मिट्टी काटनी पड़े तोभी कुछ चिन्ता नहीं पर इसको दुनियामें निकम्मा ही बना दूं तो ठीक। ऐसे ऐसे बुरे विचार जीमें आते थे। परन्तु इसके बाद एक नेक मित्रके उद्योगसे मुझे दूसरे स्थानकी नौकरी मिल गयी जिसमें मैं तुरत वहां चला गया। यह बात ठंढी पड़ गयी। वहां आकर मैं अपने काममें चित्त लगाने लगा और

फुर्सतके वक्त डाक्टरीका अभ्यास करने लगा। इससे मेरे विचार सुधरते गये। इस प्रकार विचार सुधरने और काममें जी लगनेका एक यह कारण भी था कि अपने गांवमें लुच्चे मित्रकी सोहबतसे मैंने बड़ी भारी बदनामी उठायी थी और सब जगहसे मैं छी छी थू थू हुआ था; यह बात मुझे बहुत अखरी थी और यह भी विश्वास होगया था कि लुच्चपनमें कुछ तत्त्व नहीं है, सुचालमें ही बरकत है। यह समझ हो जानेसे मैं अपने काममें तथा अध्ययनमें लगा रहा। इससे आज मैंने दस रुपये भी पैदा किये हैं, इज्जत आबरू भी हासिल की है और परिवारका भी सुख है। इस प्रकार सब तरफसे चैन है। अगर उस गुंडे मित्रने मेरा भंडा न फोड़ा होता और मुझे हैरान न किया होता तो मैं गुंडईमें ही पड़ा रह जाता और कभी इतना सुधर न सकता; परन्तु जब मेरे ऊपर दुःखके कोड़े लगे तभी मैं सुधरा हूं। इसलिये मेरा तो यह ख्याल है कि हमें चेतानेके लिये तथा सुधारनेके लिये हमपर जो दुःख आपड़े उस दुःखका भी हमें उपकार मानना चाहिये और उस दुःखमें भी प्रभुकी दया समझनी चाहिये। ऐसा करना आवे तो बड़ेसे बड़े दुःख भी आशीर्वाद समान हो जाते हैं।

राधेश्याम कहते थे कि मैं बड़ा शौकीन आदमी था और बड़ा अहंकारी तथा व्यभिचारी था। ये सब दुर्गुण मुझमें इस तरह जड़ पकड़ बैठे थे कि किसी तरह उनके दूर होनेकी आशा न थी। मैं अच्छे अच्छे आदमियोंमें बैठता उठता था और मेरी आमदनी भी अच्छी थी तथा मेरा ज्ञान भी अच्छा था। इससे मैं समझता था कि व्यभिचार, अभिमान, आडम्बर और बेहद मौजशौक बहुत खराब हैं और मुझे अपने इन सब दुर्गुणोंको घटाना चाहिये। किन्तु हजार चेष्टा करनेपर भी मैं उनको घटा नहीं सकता था।

इस विषयमें मुझपर सत्सङ्गका असर भी कुछ नहीं होता था और कोई हितमित्र प्रसङ्गवश मुझे कुछ कह सुन देते थे तो उसका असर भी नहीं पड़ता था। मेरी नेक स्त्री मुझे कुछ समझाती तो मैं मिजाजमें आकर उसको भी दुतकार देता था। इस कारण मेरे सुधरनेकी उस समय कुछ भी आशा न थी। परन्तु इस बीचमें मेरी इकलौती लड़की विधवा हो गयी। इस समय मेरे मनपर ऐसा भारी धक्का लगा कि मेरी सारी शौकीनी उड़ गयी, मेरा अभिमान जाता रहा और मेरी व्यभिचारकी इच्छाएं मिट गयीं। जबसे लड़की वेवा हुई तबसे मैं घरपर ही रहने लगा और उसीका विचार करने लगा कि कैसे इसका भला हो और यह कैसे ज्ञानके रास्तेमें पहुंचायी जाय। विचारके साथ मैं वैसाही उद्योग भी करने लगा। इससे मेरी लड़की बहुत पवित्र तथा अनुकरण करने योग्य जिन्दगी बिताने लगी और मैं भी धीरे धीरे सच्चा भक्त हो गया। इस प्रकार मैं अपनी लड़कीके विधवा होनेसे भक्त हुआ। अगर यह चोट मेरे न लगती तो और किसी तरह मैं कभी सुधर न सकता। प्रभु किस रास्ते हमको सुधारता है तथा किस रास्ते हमारी मदद करता है यह हम नहीं जानते; इससे हम अपने ऊपर दुःख पड़ते देखकर झींखा करते हैं; पर अगर दुःखका उद्देश्य समझें तो हमें यही ज्ञान पड़ेगा कि हमपर पड़नेवाला दुःख भी एक प्रकारका ईश्वरका महान उपकार है। क्योंकि जो काम और किसी तरह नहीं हो सकता वह काम दुःखकी मददसे हो जाता है। इस लिये मुझे तो यही मालूम होता है कि दुःखमें भी ईश्वरका आशीर्वाद है। सो भाइयो और बहनो! दुःखमें भी कुछ खूबी समझना सीखिये। दुःखमें भी कुछ खूबी समझना सीखिये।

" स्वर्गमाला " नाम रखनेका क्या कारण है। इसके लिये यह कहना है कि एक तो स्वर्ग सबका प्यारा है, दूसरे जिन पुस्तकों-को हिन्दीमें प्रकाशित करनेके इरादेसे यह कार्यालय खोलनेका विचार उठा उनके नामोंमें स्वर्ग शब्द है, जैसे स्वर्गका सन्देशा, स्वर्गके रत्न, स्वर्गकी सुन्दरियां, स्वर्गकी जिन्दगी, स्वर्गकी सीढ़ी, सच्चा स्वर्ग इत्यादि, तीसरे कोषोंमें स्वर्ग शब्दका एक अर्थ है सुखका आधार और स्वर्गकी पुस्तकें लिखनेवाले गुजराती विद्वान पण्डित अमृतलाल सुन्दरजी पढ़ियारने स्वर्ग शब्दका अर्थ किया है महात्माओंका स्वीकार किया हुआ ऊंचे दरजेका सुख, अन्तरात्माको तृप्ति देनेवाली स्थिति और प्रभुमय जीवन तथा स्वयं प्रभु और चौथे स्वामी रामतीर्थ महाराजके अमेरिकामें दिये हुए एक व्याख्यानसे स्वर्ग शब्दका अर्थ ज्ञान भी सिद्ध होता है। इन सब बातोंका विचार करके स्वर्गमाला नाम रखा गया है।

स्वर्गमाला कार्यालय द्वारा देश, काल और लोगोंके उपयोगी अनेक प्रकारके ग्रंथ लिख लिखाकर तथा संस्कृत, अङ्गरेजी, बंगला, मराठी, गुजराती आदि भाषाओंसे अनुवाद कर कराकर हिन्दी भाषामें प्रकाशित किये जायगे। स्वर्गमाला ग्रंथावलीकी भाषा यथासम्भव सहज रखी जायगी कि जिससे सब लोग सुगमतासे समझ सकें। स्त्री पुरुष और बालक वृद्ध सबके उपयोगी ग्रंथ प्रकाशित किये जायगे। सुलभ वेदान्तसे स्वर्गमालाका श्रीगणेश किया गया है। " स्वर्गके रत्न " में कर्म करने और चित्तको स्थिर रखनेके विषय में १०१ उपदेश हैं। इसलिये यह पुस्तक और कई खण्डोंमें समाप्त होगी। पीछे और और पुस्तक निकलेंगी। धीरे धीरे स्वामी विवेकानन्द तथा स्वामी रामतीर्थ के व्याख्यान

और लेख आदि भी स्वर्गमाला द्वारा प्रकाशित किये जायंगे। सारांश, यह कि प्रबन्ध, निबन्ध, जीवनचरित, इतिहास, उपन्यास व्याख्यान आदि साहित्य के विविध विषयोंके ग्रंथ प्रकाशित करनेमें और ध्यान रखा जायगा।

स्वर्गमाला कार्यालयका एक उद्देश्य यह भी है कि सस्ते दाम पर अच्छी अच्छी पुस्तकें हिन्दी पाठकोंकी सेवामें पहुंचायी जायँ। इस उद्देश्यसे स्वर्गमाला प्रकाशकोंके लिये यह नियम रखा गया है कि जिस आकारमें जैसे कागजपर यह पुस्तक छपी है उसी आकारमें गोमर्स कागजपर अर्थात्

डबल क्राउन सोलह पेजी फार्म के १,००० पृष्ठों की पुस्तकें 'स्वर्गमाला'में हर साल प्रकाशित की जायगी। सालभर में बारह पुस्तकें या पुस्तकोंके बारह खण्ड निकलेंगे। जो लोग दो रुपये पेशगी भेजकर स्वर्गमालाकी ग्राहकश्रेणीमें नाम लिखावेंगे उनको एक वर्षमें प्रकाशित होनेवाली एक हजार पृष्ठोंकी पुस्तकें दी जायंगी। डाक महसूल कुछ नहीं लिया जायगा। फुटकर तौरपर स्वर्गमालाके अलग अलग खण्ड खरीदनेमें दो रुपयेके बदले तीन रुपये पड़ जायगे। क्योंकि स्वर्गमालाके हर एक खण्डका दाम चार आने होगा। नमूनेका एक खण्ड चार आनेका टिकट भेजनेसे मिलेगा।

स्वर्गमालाके सम्बन्धकी चिट्ठीपत्री मनीआर्डर आदि सब कुछ नीचे लिखे पते पर भेजना चाहिये।

महावीर प्रसाद गहमरी

प्रबन्धक स्वर्गमाला कार्यालय

बनारस सिटी

स्वर्गमाला—पुष्प २

यतोऽभ्युदय श्रेय सिद्धि स धर्म ।

स्वर्गके रत्न

दूसरा खण्ड ।

प्रकाशक
महावीरप्रसाद गहमरी
स्वर्गमाला कार्यालय
बनारस सिटी ।

मूल्य एक खण्डका ।)

Printed by [illegible]

२६—हमारे किसी काममें हमारी इच्छा क्या है और प्रभुकी इच्छा क्या है यह समझनेकी कुंजी।

सदा सब महात्मा कहते हैं कि प्रभुकी इच्छाके अधीन होओ और अपनी इच्छाओंको अलग रखो। दुनियाके हर एक धर्ममें इस बातपर विशेष जोर दिया जाता है। वैष्णव कहते हैं कि हमारी डोरी प्रभुके हाथमें है; मुसलमान कहते हैं कि मालिककी जो मरजी; ईसाई भी कहते हैं कि पिताकी जो इच्छा; पारसियोंके धर्ममें भी मुख्य करके यही बात कही है कि अहूरमजदकी जो मरजी हो वह हो और यहूदियोंके धर्ममें भी खास करके यही बात कही है कि सर्वशक्तिमानकी इच्छाके अधीन होओ। यहांतक कि जो लोग ईश्वरको सीधे तौरसे नहीं मानते पर कहते हैं कि "ऐसा तत्त्व है जो कुछ जाना नहीं जा सकता" वे लोग भी अन्तमें जा कर यह कबूल करते हैं कि ऐसी किसी गुप्त शक्तिके मजबूरन अधीन होना पड़ता है जो शब्दोंसे नहीं कही जा सकती तथा किसी तरहसे प्रत्यक्ष नहीं देखी जा सकती। इस प्रकार दुनियाका हर एक आदमी किसी न किसी रूपमें भगवदिच्छाके अधीन होनेकी बात कबूल करता है। और हरिजनोंको तो यह बात माननेमें जरा भी मुश्किल नहीं पड़ती। परन्तु उन्हें जो मुश्किल पड़ती है वह यह कि हमारी इच्छा क्या है और प्रभुकी इच्छा क्या है यह कैसे जानें? यहां बड़ा उलझन है; यह कसौटीके समान है; यह जगह असली परीक्षाकी है और यह जगह भक्तोंकी स्थिति तथा दरजा समझानेवाली है। इसलिये यहां भक्तोंको मुश्किल मालूम दे तो कुछ नयी बात नहीं है। व्यवहारी लोगोंको तो ईश्वरकी इच्छा समझनी ही नहीं है इसलिये उनको कुछ मुश्किल नहीं

है। और जो भक्त बहुत आगे बढ़ गये हैं और महात्मा बन गये हैं उनको भी कुछ मुश्किल नहीं है, क्योंकि व अपनी इच्छाको तथा प्रभुकी इच्छाको मिला सकते हैं। पर जो भक्त बन रहे हैं, जो सत्यको ढूंढा करते हैं और व्यवहारके मोहसे जिनका मन जरा पीछे हटा है पर परमार्थमें जिनका चित्त ठीक ठीक लग नहीं गया है उन अधकचरे भक्तोंको ऐसी जगह बहुत मुश्किल मालूम होती है। क्योंकि वे भलीभाँति समझ नहीं सकते कि हमारी इच्छा क्या है और प्रभुकी इच्छा क्या है। और जब तक यह ठीक ठीक समझमें न आवे तबतक उनके मनका पूरा पूरा समाधान भी नहीं होता। इसलिये अपनी इच्छा क्या है और ईश्वरकी इच्छा क्या है इसका भेद समझना चाहिये। इसके बारेमें ईश्वरकी इच्छा पहचाननेवाले हालैंड एक महान भक्तने कहा है कि—

अगर मेरी अपनी इच्छा है और वह इच्छा जबरदस्त है तो जब उसके मुकाबले कठिनाइयाँ पड़ती हैं तब मैं उन कठिनाइयोंसे कायर हो जाता हूँ। उन कठिनाइयोंको दूर करनेके लिये मिहनत करता हूँ और चाहता हूँ कि मेरे काममें ऐसी कठिनाइयाँ न पड़ें। पर इसके बदले प्रभुकी इच्छा होती है तो उस कामके लिये मुझे भीतरसे सन्तोष होता है, इतना ही नहीं बल्कि उस काममें कठिनाइयोंको आते देखकर मैं उछले और खुश होता हूँ। क्योंकि उस समय कठिनाइयोंको देखकर मुझे ऐसा मालूम होता है कि प्रभुके प्रगट होनेका यह समय है। इससे मैं अधिक खुशीमें आकर और उत्साहसे काम करता हूँ।

भाइयो! अपनी इच्छा क्या है और प्रभुकी इच्छा क्या है यह समझनेके लिये योग्य अधिकारीकी बतायी ऊपरकी कसौटी बड़े कामकी है। क्योंकि हम जरा गहराईमें उतरकर जावें तो

अपनी इच्छा तथा प्रभुकी इच्छा हमारी समझमें आ सकती है। यह समझ जाने पर हम अपनी इच्छाको अंकुशमें रख सकते हैं तथा प्रभुकी इच्छाको चमका सकते हैं। इसलिये हर एक हरिजनको अपने अन्दर धर्म बढ़ानेके लिये धर्मके ऐसे सूक्ष्म और गूढ़ तत्त्व जाननेकी कोशिश करनी चाहिये। ऐसा करनेसे बहुत जल्द धर्मका बड़ा फल मिल सकता है। इसवास्ते अपनी इच्छा तथा प्रभुकी इच्छाको समझकर प्रभुकी इच्छाके अनुसार चलनेकी कोशिश कीजिये। प्रभुकी इच्छाके अनुसार चलनेकी कोशिश कीजिये।

२७--मुर्दोंपर कौए बैठते हैं, जीतोंपर नहीं; वैसे ही जिनमें प्रभुप्रेम नहीं होता उन्हींके पास विकार जाते हैं; प्रभुप्रेमवाले भक्तोंके पास विकार नहीं फटक सकते।

दुनियामें जितने तरहके धर्म हैं वे सब पापसे बचनेके लिये आदमियोंको सलाह देते हैं। हर एक महात्मा भी विकारोंसे बचनेकी उपदेश देता है। हर एक उपदेशक तथा धर्मगुरू भी पापसे बचनेके लिये कहता है। क्योंकि पापसे बचने पर ही शान्ति मिल सकती है, पापसे बचनेपर ही प्रभु प्रसन्न होता है और पापसे बचनेपर ही मोक्ष मिल सकता है। इसलिये पापसे बचना बहुत जरूरी बात है। अब यह विचारना चाहिये कि पाप कहांसे पैदा होता है। इसके जवाबमें महात्मा लोग कहते हैं कि हमारे मनमें जो इच्छाएं हैं, हमारे मनमें जो वासनाएं हैं

और हमारे मनमें पहलेके जो संस्कार हैं उनके कारण जगतके भिन्न भिन्न विषय भोगनेको जी चाहता है और इस विषयभोगमें हद न रहे, मर्यादा न रहे और धर्मका अंकुश न रहे तब जरूरतसे अधिक विषय भोगनेकी इच्छा होती है। उसमें पाप पैदा होता है। इसलिये अगर पापको पैदा होने देनेसे रोकना हो तो पहले अपने विकारोंको वशमें रखना चाहिये। पर बहुत आदमी कहते हैं कि हम बहुत मिहनत करते हैं तोभी मनके वेगको रोक नहीं सकते। तब हमें क्या करना चाहिये? इसके जवाबमें महात्मा जन कहते हैं कि मुर्दोंपर कौए लगते हैं जीते आदमियोंपर नहीं। वैसे ही तुम मुर्दे समान हो या जीतेहुए मर गये हो इसीसे तुमपर विकार रूपी कौए बैठते हैं। अगर तुम जीवित हो तो तुमपर वैसे कौए बैठ नहीं सकते। यह सुनकर कोई कोई आदमी कहते हैं कि क्या हम मुर्दे हैं? कभी नहीं। हम तो जीते जागते चलते फिरते पढ़े हैं, हमें मुर्दा क्यों कहते हो? इसके उत्तरमें सन्त कहते हैं कि जिनमें प्रभुप्रेम है वे ही जीवित हैं। इससे उनके पास विकार रूपी कौए नहीं जा सकते। पर जिनमें प्रभुप्रेम नहीं है वे मरे सरीखे हैं। इससे उनके पास विकार रूपी कौए जाते हैं और उनको खोद खाते हैं। इसलिये मरा जीवन छोड़कर अगर सच्ची जिन्दगीमें जीना सीखना हो तो प्रभुप्रेममें आओ, प्रभुप्रेमका लाभ लो और प्रभुप्रेममें हृदयको शराबोर करो। तब तुम्हारे पास विकार रूपी कौए नहीं आ सकेंगे। क्योंकि प्रभुप्रेम सबसे बढ़कर अमृत है, इससे मरे आदमी भी जी जाते हैं अर्थात् उनमें नया जीवन आ जाता है। उनकी जिन्दगी ऐसी बदल जाती है मानो उनका नया जन्म हुआ। जैसे, जो नास्तिक हैं वे प्रभुप्रेमके कारण आस्तिक बन जाते हैं, जो पापी

हैं वे प्रभुप्रेमके कारण पवित्र बन जाते हैं, जो नीच हैं वे प्रभुप्रेमके कारण ऊंच बन जाते हैं, जिनका सर्वत्र तिरस्कार होता है उनका, प्रभुप्रेमके कारण, सर्वत्र आदर होने लगता है, जो लोभी हैं वे प्रभुप्रेमके कारण बड़े उदार बन जाते हैं, जो मूर्ख हैं वे प्रभुप्रेमसे बड़े ज्ञानी बन जाते हैं और जगतमें जिनकी कोई गिनती नहीं है वे आदमी भी प्रभुप्रेमके बलसे बड़े भारी महात्मा बन जाते हैं। इस प्रकार प्रभुप्रेमसे जिन्दगी बदल जाती है और ऐसी हो जाती है मानो नया जन्म हुआ। इसीलिये, प्रभुप्रेमके कारण जिनको ऐसी नयी जिन्दगी मिली है वे जीवित कहलाते हैं और बाकी मुर्दे कहे जाते हैं। क्योंकि जो जीते हैं उनपर कौए नहीं बैठ सकते; पर जो मर गये हैं उन्हींके ऊपर कौए बैठते हैं। इसलिये बन्धुओ! मरी सी जिन्दगी न बिताकर प्रभुप्रेमसे जीवित होजाइये, जीवित होजाइये और विकार रूपी कौओंको अपने पास मत आने दीजिये तब शान्ति मिलेगी।

२८–प्रभुको प्रसन्न करनेके, मनुष्योंके, उपाय तो देखिये !

दुनियाके हर एक धर्मका मुख्य सिद्धान्त यही होता है कि हमें प्रभुको प्रसन्न करना चाहिये। क्योंकि जब परम कृपालु परमात्मा प्रसन्न होता है तभी सच्चा धर्मपालन समझा जाता है, प्रभु प्रसन्न हो तभी जन्म मरणके फेरेसे छुटकारा मिल सकता है, प्रभु प्रसन्न हो तभी जीवनकी सार्थकता होती है और प्रभु प्रसन्न हो तभी मोक्ष मिल सकता है। इसीलिये प्रभुको

प्रसन्न रखना इस दुनियाके सब धर्मोका मुख्य सिद्धान्त है। इससे प्रभुको प्रसन्न करनेके लिये जुदे जुदे आदमी जुदे जुदे उपाय करते हैं। जैसे—

कोई आदमी मूर्त्तिपर तुलसीदल चढ़ाकर प्रभुको प्रसन्न करना चाहता है; कोई आदमी महादेवपर जल चढ़ाकर प्रभुको प्रसन्न करना चाहता है; कोई आदमी हनुमानकी मूर्त्तिमें घी सेन्दुर लपेटकर अपना पाप दूर करना चाहता है, कोई आदमी अपने देवताके सामने पशुओंकी हत्या करके उसको प्रसन्न करना चाहता है, कोई आदमी प्रसाद चढ़ाकर भगवानको खुश करना चाहता है; कोई चरणामृत लेकर अपना कल्याण कर डालना चाहता है, कोई आदमी माला या कंठी पहनकर यमराजको भगाना चाहता है, कोई आदमी गणपति या दुर्गाको समुद्र या नदीमें पधराकर प्रसन्न करना चाहता है; कोई आदमी मुर्देकी कबरपर चिराग जलाकर प्रभुको प्रसन्न करना चाहता है; कोई आदमी ध्वजा चढ़ाकर प्रभुको खुश करना चाहता है; कोई आदमी कुंड या नदीमें नहाकर प्रभुको प्रसन्न करना चाहता है; कोई आदमी पैदल तीर्थयात्रा करके प्रभुको प्रसन्न करना चाहता है; कोई आदमी पत्तलमें जीमकर प्रभुको प्रसन्न करना चाहता है, कोई आदमी उपवास करके प्रभुको प्रसन्न करना चाहता है; कोई आदमी शरीरमें सूआ वगैरह गढ़ाकर प्रभुको प्रसन्न करना चाहता है, कोई आदमी कपड़ा रंगाकर प्रभुको प्रसन्न करना चाहता है; कोई आदमी मूंड मुड़ाकर प्रभुको प्रसन्न करना चाहता है; कोई राख लपेटकर प्रभुको प्रसन्न करना चाहता है; कोई फलाहार करके या एक जून खाकर प्रभुको प्रसन्न करना चाहता है; कोई, जटा या दाढ़ी बढ़ाकर प्रभुको प्रसन्न करना चाहता है, कोई ब्राह्मणभोजन

कराके प्रभुको प्रसन्न करना चाहता है; कोई आकाशदत्ती जलाकर प्रभुको प्रसन्न करना चाहता है और कोई गांजा भांग या दारू पीकर प्रभुको प्रसन्न करना चाहता है। इसी प्रकार सब लोग छोटे छोटे बाहरी काम करके प्रभुको प्रसन्न करना चाहते हैं; पर दिल्लगी देखिये कि कोई आदमी अपना आचरण सुधारकर प्रभुको प्रसन्न करना नहीं चाहता। अब विचार कीजिये कि क्या सिर्फ बाहरकी ऐसी दिखाऊ बातोंसे ईश्वर सचमुच प्रसन्न हो सकेगा? याद रखना कि ऊपर लिखी बातोंमें कुछ तत्व हो तोभी अपना आचरण सुधारे बिना सिर्फ ऐसी बातोंसे प्रभु प्रसन्न नहीं किया जा सकता। इसलिये अगर सच्चा धर्म पालना हो और जिन्दगी सार्थक करना हो तो धर्मकी बाहरी क्रियाओंपर जितना जोर देते हैं उससे अधिक जोर अपने आचरण सुधारनेपर दीजिये। तब बहुत सहजमें और जल्द प्रभु प्रसन्न हो सकेगा। क्योंकि बाहरके सब साधन कौड़ीके बराबर हैं और अपना आचरण सुधारना रुपयेके बराबर है। इसलिये अगर आपके पास रुपया होगा तो उससे बहुतसी कौड़ियां आपको मिल जायंगी। और हजार कौड़ियां जमा कर लेंगे तोभी रुपया नहीं हो सकेगा। अर्थात् दूसरे अनेक साधनोंसे भी आचरण सुधारनेके बराबर फायदा नहीं होता। इसलिये अगर सच्चा धर्म पालना हो और प्रभुको प्रसन्न करना हो तो अपना आचरण सुधारनेपर खूब ध्यान दीजिये। खूब ध्यान दीजिये।

२९--संस्कारी नया जन्म हुए बिना मोक्ष नहीं मिल सकता; पर यह जन्म क्या है इसकी आपको खबर है ?

आर्यधर्मशास्त्रोंमें कहा है कि द्विज हुए बिना अर्थात् फिरसे दूसरी बार जन्म हुए बिना मोक्ष नहीं मिल सकता। इसीसे द्विज होनेकेलिये यानी नया संस्कारी जन्म पानेके लिये कुछ धर्म-क्रियाएं की जाती हैं और उन क्रियाओंके होनेपर ही आदमीको धर्मके कुछ अधिकार मिलते हैं। यहांतक कि जबतक ये क्रियाएं नहीं होतीं तबतक आदमी शूद्र समझा जाता है अर्थात् छोटा माना जाता है, नीच गिना जाता है, धर्म न समझने योग्य गिना जाता है और धर्म समझनेका अधिकार न रखने योग्य गिना जाता है। पर जब उसपर धर्मकी कुछ क्रियाएं की जाती हैं तथा उसके मनमें कुछ धर्मके संस्कार डाले जाते हैं तब वह द्विज कहलाता है। क्योंकि उस समयसे उसका नया जन्म हुआ समझा जाता है।

यह नहीं कि यह बात सिर्फ पुराने जमानेके हिन्दू धर्ममें थी, बल्कि दुनियाके हर एक धर्ममें इसीसे मिलती जुलती कुछ न कुछ बात होती है। जैसे, ब्राह्मणोंमें जनेऊकी विधि है, इससे जबतक ब्राह्मणके लड़केको जनेऊ न दे दिया जाय तब तक वह ब्राह्मण नहीं गिना जाता और दान दक्षिणा आदि लेनेमें उसका अधिकार नहीं माना जाता। इसके सिवा वह धर्मकी क्रियाएं भी नहीं करा सकता, क्योंकि वह जबतक बिना जनेऊके रहता है तबतक शूद्र समान समझा जाता है। जब जनेऊ दिया जाता है तब वह द्विज कहलाता है। इसी प्रकार वैष्णवोंमेंभी गुरुके पास ब्रह्मसम्बन्ध करानेकी रीति है; क्रिस्तानोंमें बपतिस्मा

लेनेकी विधि है, पारसियोंमें 'सदर कस्ती' पहननेकी रीति है, मुसलमानोंमें सुन्नत करानेकी रीति है और ऐसी ही कुछ रीतियां यहूदियों तथा बौद्धोंमें भी हैं। सिखधर्ममें भी किसीको शामिल करनेके लिये अमृत छकाने (पिलाने) की रीति है। ये सब विधियां नये जन्मके लिये की जाती हैं। दुनियाके हर एक धर्ममें किसी न किसी रूपमें इन विधियोंका पालन होता है। तौ भी हम देखते हैं कि इस तरहके चलते हुए रिवाजके अनुसार कहलानेवाले नये जन्मसे आदमियोंका कुछ जीवन नहीं बदल जाता, धर्मी क्रियाओंसे कुछ उनमें भीतरकी शान्ति या मोक्ष पानेकी योग्यता नहीं आ जाती। तब क्या करना चाहिये? क्यों कि फिरसे संस्कारी जन्म हुए बिना मोक्ष नहीं मिल सकता और फिरसे संस्कारी जन्म होनेके लिये जुदे जुदे धर्मोंके लोग जो जुदी जुदी किस्मकी धर्मक्रियाएं करते हैं उनसे मनुष्योंकी जिन्दगी नहीं बदल जाती और मोक्ष पानेके लिये जो मुख्य जरूरी विषय है वह यह है कि फिरसे संस्कारी नया जन्म हो तब जिन्दगी बदल जानी चाहिये। इसलिये अब विचार करना चाहिये कि नये जन्मके लिये चलती आयी हुई रीतिके अनुसार कुछ क्रियाएं करनेपर भी जो हमारी जिन्दगी नहीं बदलती और उसमें मोक्ष पानेकी योग्यता नहीं आती इसका कारण क्या है। हमें जांचना चाहिये कि हमारे संस्कारी नये जन्ममें किस चीजकी कसर रह जाती है।

इसको समझानेके लिये आगे बढ़े हुए भक्त कहते हैं कि हम सिर्फ पुराने रिवाजके अनुसार द्विज हुए हैं या संस्कारी हुए हैं या नये जीवनवाले हुए हैं; कुछ प्रेमसे द्विज नहीं हुए हैं और प्रेम बिना जीवन नहीं बदलता। इसलिये अगर मोक्षका

सुख पाना हो तो प्रेमसे द्विज होना चाहिये। क्योंकि चलतू रिवाज के मुताबिक भेड़िया धसान जैसी होती आयी हुई क्रियाओंसे मनुष्योंकी जिन्दगी नहीं बदलती बल्कि जब प्रेम आता है तभी अमलमें फायदा होता है। द्विज होना या फिरसे जन्म होना सिर्फ मुर्दसे फह देनेकी बात नहीं है, बल्कि सची दशामें तो इसके अनुसार प्रत्यक्ष ही होता है। जैसे—किसी भक्तमें जब पूरा पूरा प्रभुप्रेम आता है तब उसका नया जन्म होता है और उसकी जिन्दगी बदल जाती है। इससे जो लोभी होता है वह उदार बन जाता है, जो कायर होता है वह शूर वीर बन जाता है, जो शौकीन होता है वह तपस्वी बन जाता है, जो व्यभिचारी होता है वह ब्रह्मचारी बन जाता है, जो हिंसा करनेवाला होता है वह दयालु बन जाता है; जो भोग विलासका नवाब होता है वह तितिक्षा सहन करनेवाला बन जाता है, जो पैसेका गुलाम होता है वह पैसेको लात मार देता है, जिसे अपनी देहका बड़ा अभिमान होता है तथा जो देहके सुखके लिये मरा जाता है वह देहकी परवा छोड़ देता है, जो दूसरोंको दुःख देनेवाला है वह सबको सुख देनेवाला बन जाता है, जो सबसे सिर झुकवाकर खुश होनेवाला होता है वह दूसरोंको सिर झुकाकर खुश होता है, जो साधु सन्तोंकी ओरसे बेपरवा रहता है वह साधु सन्तोंका गुलाम बन जाता है; जो शास्त्रका नहीं मानता वह शास्त्रका उपासक बन जाता है और जिसका आचरण हलका होता है उसका आचरण ऊंचेसे ऊंचा हो जाता है इस प्रकारके फेर बदलसे जो जिन्दगी बदले उसका नाम नया जन्म है और वह जन्म प्रभु-प्रेम से होता है। इसलिये चलतू रिवाजों तथा क्रियाओंसे नहीं, बल्कि मोक्ष पाना हो तो, प्रेमसे द्विज होओ। प्रेमसे द्विज होओ।

३०–कसौटीपर लोहा नहीं कसा जाता, सोना ही कसा जाता है। भक्त सोनेके समान हैं इससे उन्हें तो दुःख होगा ही।

दुनियाके हर एक देशमें हर समय हर एक बड़े भक्तको किसी न किसी तरहका दुःख होता है। जैसे–महात्मा तुकारामको ब्राह्मण दुःख देते थे कि तू छोटी जातिका होकर उपदेश क्यों देता है? उनको इस कसूरके लिये गांवसे निकाल देनेका हुक्म कराया था और उनकी बनायी पुस्तकें पत्थरसे बांधकर नदीमें डबो दी थीं। नरसिंह मेहताको उनकी जातिवालोंने हैरान किया था। मीराबाईको उनके पतिने जहर पीनेको दिया था। शंकराचार्यको बौद्धोंसे लड़ना पड़ा था। सिखोंके गुरु गोविन्द सिंहको दिल्लीके बादशाहका सामना करना पड़ा था। इसी प्रकार दूसरे देशोंमें और दूसरे धर्मोंमें भी बड़े बड़े भक्तों पर बड़े बड़े संकट पड़े हैं। जैसे–महात्मा बुद्ध राजगद्दी छोड़कर जंगलमें चले गये थे इससे उनके मांबाप उनसे बिगड़ गये थे और उन्हें पकड़ मंगानेके लिये सिपाही भेजे थे। क्रस्तान धर्मके स्थापक ईसाको बिना मौत और बिना कसूर मरना पड़ा। पैगम्बर महम्मदको भी लोगोंके जुल्मसे मक्केसे भाग जाना पड़ा था। यहूदियोंके पैगम्बर मूसापर कितने ही तरहके दुःख पड़े थे। यद्यपि इन सब दुःखोंमें अन्तको सब भक्तोंकी प्रभु मदद करता है पर तो भी शुरूमें दुःख तो जरूर ही पड़ता है। इससे कितने ही आदमी सोचते हैं कि भक्त तो प्रभुके बहुत प्यारे होते हैं फिर उनपर दुःख क्यों पड़ता है? इसके जवाबमें दूसरे भक्त कहते हैं कि हर एक छोटीसे छोटी चीजकी भी परीक्षा की जाती है। जो परीक्षामें पास होती है वह चीज उत्तम

समझी जाती है और उसको लोग पसन्द करते हैं। यह मनुष्यका स्वभाव है और यह कुदरतका कायदा है; इतना ही नहीं बल्कि यह नियम है कि जो चीज जितनी ही ज्यादा कीमती होती है उसकी परीक्षा भी उतनी ही कड़ी होती है। और इस दुनियामें जितने तरह के बड़े बड़े और इज्जतवाले दरजे हैं उनमें भक्तोंका दरजा सबसे बड़ा और अधिक इज्जतका है। क्योंकि और सब बातोंमें तो इज्जत करनेवाले आदमी होते हैं पर भक्तोंको ऊंचे चढ़ानेवाला और उनकी इज्जत करनेवाला खुद भगवान होता है। दूसरे, दुनियाकी जो मान मर्यादा या बड़ाई है उसकी आयु बहुत थोड़ी होती है परन्तु भक्तोंको ईश्वरकी तरफसे जो मान और खिताब मिलता है उसकी आयु बहुत लम्बी होती है। तीसरे, व्यवहारी लोगोंको जगतके और और विषयोंसे जो आनन्द मिलता है वह तुच्छ तथा अधूरा होता है, परन्तु भक्तोंको भक्तिसे तथा धर्मके बलसे जो आनन्द मिलता है वह आनन्द इस दुनियाके आनन्दके समान तुच्छ नहीं होता बल्कि अलौकिक होता है। इस प्रकार भक्तोंकी महिमा, बहुत जबरदस्त है और उनका आनन्द भी अलौकिक है। इसलिये उनकी कसौटी भी बड़ी करारी होती है। जैसे-बाजारमें हम दतवन लेने जाते हैं तो उसे भी देख भाल कर लेते हैं, उसकी भी पहले परीक्षा कर लेते हैं कि यह ताजा है कि नहीं, सीधी है कि नहीं लम्बाई में पूरी है कि नहीं, बहुत पतली या बहुत मोटी तो नहीं है। यह सब जांच कर तथा दतवनको जरा लचका कर तब जो पसन्द आती है उसे लेते हैं। पर जब सोना लेने निकलते हैं तब दतवनकी सी परीक्षा करनेसे नहीं बनता बल्कि सोना अग्निपर तपाया जाता है और कसौटीपर कसा जाता है। क्योंकि सोना कीमती है। इसलिये वह आग या तेजाबमें डाला जाता है।

लेकिन दतवनकी परीक्षा करनेके लिये उसे आगमें नहीं डालते। इसी प्रकार जो भक्त हैं उनका दरजा बड़ा है, उनकी कीमत बड़ी है और उनका आनन्द अलौकिक है। इससे उनकी परीक्षा भी करारी है और करारी परीक्षामें तो दुःख दिखाई देगा ही, क्योंकि दुःख बिना मनुष्यकी परीक्षा नहीं हो सकती। पहले दुःखकी परीक्षा देनी पड़ती है और फिर सुखकी परीक्षा देनी पड़ती है। परन्तु दुःखकी परीक्षा देनेकी बात व्यवहारी आदमियोंके पसन्द नहीं आती। क्योंकि किसी दुःखमें असलमें जितना दुःख है उससे सैकड़ों गुना अधिक दुःख आदमी मान लेते हैं। इससे दुःखकी परीक्षामें बैठना उन्हें नहीं रुचता और बहुत ऊंचे दरजे पर चढ़नेकी उनकी भावना भी नहीं होती। इससे वे अपने आस पासकी दुनियासे आचार या विचारमें अधिक आगे नहीं जा सकते, जिससे उनका कुछ बहुत नहीं सहना पड़ता। परन्तु उच्च श्रेणीके भक्तोंके आचार विचार तो बहुत ही बदल जाते हैं और उन आचार विचारोंको उनके आसपासके लोग देख नहीं सकते; इससे उन भक्तोंपर आफत आ पड़ती है और प्रभुके लिये, धर्मके लिये तथा अपना फर्ज अदा करनेके लिये ऐसी आफतें सहनेको वे अपनी कसौटी समझते हैं। इससे व ऐसी आफतोंके वक्त उल्टे खुश होते हैं। सो जो दतवन सवेरे चार कर फेंक दी जाती है उसकी परीक्षा करनेके लिये उसे आगमें नहीं डालना पड़ता बल्कि दतवनकी छड़ीको जरा टटोल या मरोड़ लेना ही बस समझा जाता है। परन्तु जिसका गहना बनवाना है और जिसके गहनेको छाती या मस्तकपर रखना है उसको तो आगमें तपाना ही चाहिये। इसी तरह जिन मोहवादी संसारियोंको आगे बढ़नेकी बहुत परवा नहीं है, जिन्हें अपना फर्ज पूरा करनेकी इच्छा नहीं है और जिन्हें अपनी आत्माके कल्याणकी स्पृहा नहीं है वे

भेड़िया धसानकी तरह एक एक लकीरपर धीरे धीरे चले जाते हैं और सबकी हां में हां मिलाया करते हैं तथा ऊंची भावनाएं या लम्बी इच्छाएं नहीं रखते। इससे उनकी परीक्षा न हो और थोड़ेमें निपट जाय तो यह सम्भव है और ऐसी हालतमें उन्हें बहुत दुःख न भोगना पड़े तो कुछ आश्चर्य नहीं है। परन्तु सब भक्त ऐसे कमजोर जीवनमें नहीं जी सकते। क्योंकि उनकी बुद्धि खिली हुई होती है, उनका हृदय विशाल होता है, उनकी कल्पना दूरतक पहुंच सकती है और जहां व्यवहारकुशल आदमियोंको कुछ भी नहीं दिखाई देता वहां उनका पड़ाव होता है। तब अपने आसपासके लोगोंके साथ उनका मतभेद तो होगा ही और ऐसे मतभेदसे दुःख तो होगा ही; इसमें कुछ सन्देह नहीं है। इसलिये बड़े बड़े भक्तोंपर दुःख पड़ता ही है, परन्तु उस दुःखको वे अपनी कसौटी समझते हैं। क्योंकि यह दुःख कुछ उनकी मूर्खतासे नहीं होता बल्कि उनके अपना फर्ज पूरा करनेसे होता है और लोगोंकी अज्ञानताके कारण होता है। इससे ऐसे दुःखमें दृढ़ रहनेको वे अपनी खूबी समझते हैं और यह समझते हैं कि लोहेकी कसौटी नहीं होती सोनेकी ही कसौटी होती है। इसलिये दुःखरूपी आगमें तपा तपा कर प्रभु हमें शुद्ध करता है और पवित्र बनाता है। यह सोच कर सच्चे भक्त दुःखमें भी ढारस बांधते हैं और दुःखके समय और उत्साहसे काम करते हैं। इसलिये भाइयो और बहनो! अगर भक्त होना हो तो दुःखकी कसौटीमें पास होना चाहिये। इसके बिना कामना पूरी नहीं होनेकी। इसवास्ते दुःखकी परीक्षामें पास होनेकी चेष्टा कीजिये और तय्यार रहिये।

३१-हमारे दीयेसे कोई दीया जला ले जाय तो हमसे हमारा कुछ चला नहीं जाता, वल्कि उसके घरमें भी उजेला हो जाता है। वैसे ही हम दूसरोंको ज्ञान दें तो हमारा ज्ञान कुछ घट नहीं जाता, बल्कि दूसरोंको भी उससे बहुत फायदा होता है।

इस जगतमें जो बड़ेसे बड़े आदमी हुए हैं वे कैसे बड़े हुए हैं यह आप जानते हैं ? वे क्या काम करनेसे बड़े हुए और दूसरे लोगोंसे उनमें क्या विशेषता थी जिससे वे बड़े बन सके यह हमें जानना चाहिये। क्योंकि हमारी जिन्दगीका मुख्य उद्देश्य यही है कि मनुष्य अधिकसे अधिक जितना आगे बढ़ सके बढ़े, जितनी अधिक इज्जत हासिल कर सके करे और जितनी अधिक शान्ति प्राप्त कर सके करे तथा कुदरतके जितने निकट जात बने जाय। यह मनुष्यजीवनका मुख्य उद्देश्य है और इन सब विषयोंमें जो आदमी अधिकसे अधिक आगे बढ़ता है वह इस जगतमें सबसे महान् आदमी कहलाता है और उसे हम लोग महात्मा कहते हैं।

अब विचार कीजिये कि यह महात्मापन क्या काम करनेसे आता है। मजदूरी करनेसे महात्मापन नहीं आता ; व्यापार करनेसे महात्मापन नहीं आता ; सिपाही होनेसे महात्मा नहीं बना जाता ; यात्री होनेसे महात्मा नहीं बना जाता ; आविष्कार करनेसे महात्मा नहीं बना जाता, जानवरोंको सिखाने पढानेसे महात्मा नहीं बना जाता ; शूर वीर सरदार होनेसे महात्मा नहीं बना जाता ; भगवा वस्त्र लपेटकर साधु हो जानेसे महात्मा नहीं बना जाता ; जहाजों या रेलगाड़ियोंके मालिक होकर भाड़ा

खानेसे महात्मा नहीं बना जाता; बाबाकारनी झोल कर आगका, जिन्दगी का और किसी तरहका बीमा लेकर पैसा कमानेसे महात्मा नहीं बना जाता; एकाध मन्दिर बनाकर उसमें घंटा बजाने और प्रसाद चढ़ाया करनेसे महात्मा नहीं बना जाता; उदरपोषण करनेके लिये कुछ पुस्तकें पढ़ लें और पीछे पढ़ाये हुए तोतेकी तरह यहांका यहीं घोका करें और दूसरोंसे कहा करें तो इससे महात्मा नहीं बना जा सकता; एक खाल कर लोगोंको कर्ज देनेसे महात्मा नहीं बना जाता, जाति बिरादरीकी सभामें सभापति बनकर तालियां पिटवानेसे महात्मा नहीं बना जा सकता, बरञ्च जब सच्चा ज्ञान मिले और यह ज्ञान अपना जीवन सुधारनेके काममें आवे तथा दूसरोंको खूब जी खोलकर दिया जाय तभी महात्मा बना जा सकता है।

सच्चा ज्ञान हो तो ऊपर कहे सब कामोंमें तथा रोजगारों में भी आगे बढ़ा जा सकता है और महात्मा बना जा सकता है। तो भी यह याद रखना कि महात्मा बननेके लिये ये सब साधन गौण हैं और ज्ञान लेना तथा ज्ञान देना सबसे मुख्य साधन है। जगतकी हर एक चीज देनेसे घटती है पर ज्ञान ऐसा अलौकिक पदार्थ है कि यह देनेसे उलटे बढ़ता है। इसलिये अन्न, पानी, कपड़ा, पशु, जमीन, धन आदि जितना दिये जा सकते हैं उनसे ज्ञान कहीं अधिक दिया जा सकता है। पर लोगोंकी प्रकृति ऐसी है कि उन्हें स्थूल वस्तुएं लेना जितना पसन्द है उतना ज्ञान जैसी सूक्ष्म वस्तु लेना पसन्द नहीं है और जिनको ज्ञान लेना पसन्द है वे उसे सम्हाल नहीं सकते, उसे हजम नहीं कर सकते और उसको अपनी जिन्दगीकी तह तहमें पहुंचा नहीं सकते। इससे ज्ञानसे जो लाभ मिलना चाहिये वह लाभ उनको नहीं मिल सकता।

बन्धुओ! ज्ञान अलौकिक वस्तु है, ज्ञान ईश्वरकी प्यारी वस्तु है तथा ज्ञान परमात्मा का स्वरूप है। इसलिये ज्ञानका लाभ बहुत बड़ा है। अजी, इसकी क्या बात कहें? ज्ञानकी महिमा गाना सहज नहीं है। ज्ञानसे हृदयका दरवाजा खुल जाता है, ज्ञानसे अन्दरकी गांठें फट जाती हैं, ज्ञानसे अनेक जन्मके पाप भस्म हो जाते हैं, ज्ञानसे जीवात्मा नाचने लगती है, ज्ञानसे हृदयमें प्रकाश हो जाता है, ज्ञानसे दुर्गुण दब जाते हैं, ज्ञानसे नया जीवन मिलता है, ज्ञानसे स्वर्गका प्रकाश दुनियामें लाया जा सकता है, ज्ञानसे जिन्दगी बदल सकती है और नया जीवन मिल सकता है, ज्ञानसे आत्मिक शान्ति मिल सकती है और ज्ञानसे परम कृपालु परमात्माके साथ, ज्ञानके अन्दाजसे, एकताका अनुभव किया जा सकता है तथा ज्ञानसे कुदरतके गुप्त भेद जाने जा सकते हैं। इसलिये इस जगतमें ज्ञान अलौकिक वस्तु है। जो आदमी ऐसे अनमोल ज्ञानको पकड़ सकता है और जगतमें उसको फैला सकता है वह महात्मा बन जाता है। इसवास्ते भाइयो और बहनो! जैसे बने वैसे सत्य ज्ञान हासिल कीजिये और उसे अपने भाई बहनोंमें फैलाइये। क्योंकि ऐसा करनेसे आपका ज्ञान कुछ घटेगा नहीं, और उन लोगोंको बहुत फायदा होगा। इसलिये ज्ञान हासिल कीजिये, ज्ञान हासिल कीजिये और उसे सबको देनेकी कृपा कीजिये

३२—दुनियासे डरिये मत, बल्कि मोह तज कर काम कीजिये तब माया आपको हैरान नहीं कर सकेगी।

बम्बई और कलकत्तेके बड़े बड़े व्यापारी अफीमका व्यवसाय करते हैं, हर महीने अफीम की हजारों पेटियां खरीदते

हैं और चीनको चालान करते हैं। अवश्य ही अब उनका यह व्यापार घट रहा है क्योंकि चीनी अफीम खाना छोड़ रहे हैं। जो हो; एक बार नारायण स्वामी नामके एक साधुने अफीमके किसी व्यापारीसे पूछा कि सेठजी! तुम लोग अफीमसे डरते क्यों नहीं? और उसकी हजारों पेटियां कैसे लेते हो? मैं तो अफीमसे बहुत डरता हूं।

यह सुनकर उस व्यापारीने कहा कि अफीमसे डरनेकी कुछ बात नहीं है। हम बार बार लाखों रुपयोंकी अफीम खरीदते हैं और उससे बखार भर रखते हैं पर किसी दिन हमें उसका जहर नहीं चढ़ता। क्योंकि अफीम रखनेसे कुछ नुकसान नहीं होता, खानेसे नुकसान होता है। इसलिये सम्हाल इसी बातकी रखनी है कि अफीम खायी न जाय।

यह दृष्टान्त दे कर एक भक्तराज महाराज यों समझाते हैं कि घरमें चाहे जितनी अफीम भरी हो उससे कुछ भी नुकसान नहीं होता, पर उसमेंसे जरा सी भी खा ली जाय तो नुकसान होता है। वैसे ही यह दुनिया मोहसे भरी हुई है और रहेगी, हमारे लिये कुछ उसमेंसे मायाके पदार्थ घट नहीं जायंगे। इसके साथ ही मनुष्योंकी स्वाभाविक चाल भी नहीं बदल जायगी। ये सब चीजें तो ज्योंकी त्यों रहेंगी ही। उनको हम अपने बलसे दूर नहीं कर सकते और उनको दूर करनेकी कोई जरूरत भी नहीं है। हमें जिस बातका ख्याल रखना है वह यह कि जगतके मोहकी जो जो चीजें हैं वे सब जहरके समान हैं, जहर होनेपर भी अगर हम उनको न खायं तो वे चीजें हमारी जान नहीं ले सकतीं। इसलिये दुनियासे डरनेका कुछ काम नहीं है। क्योंकि दुनियामें तो अच्छी बुरी सब तरहकी चीजें रहेंगी ही। अगर माया न हो तो फिर जगतकी जरूरत ही क्या है?

इसलिये जब तक माया है तबतकमोह है और जब तक मोह है तब तक जगत है। यह सिलसिला होनेके कारण ये सब चीजें तो जगतमें रहेंगी ही। जैसे—मौज शौककी चीजें जगतसे उठ नहीं जानेकी; खराब खुराक और नशेकी चीजें जगतसे जाती नहीं रहनेकी; सुन्दर और कुटिल स्त्रियां कुछ इस दुनियासे दूसरी दुनियामें भाग नहीं जानेकी; क्रोध और लोभ कुछ अपना स्थान छोड़कर देशनिकाला नहीं पानेके और मनकी चंचलता कुछ एकदम मिट नहीं जानेकी। ये सब बातें तो सब जगह अपने अपने ठिकाने अपने अपने परिमाणमें रहेंगी ही। यह जहरीला माल भी गोदाममें रहेगा ही। इसलिये जब तक यह नापसन्द माल गोदाममें पड़ा रहे तबतक इससे हमें डरनेकी कुछ बात नहीं है। क्योंकि हम इस तरह डरा करेंगे तो फिर ठिकाना न लगेगा। जैसे दियासलाईकी डिबिया हमारे घरमें रहती है और उसमें जल उठनेकी शक्ति है, उसमें आग है यह हम जानते हैं तौभी उससे कुछ दिनभर डरा नहीं करते। बल्कि उसको यतनसे रखते हैं और जरूरत पड़नेपर काममें लाते हैं। इसी तरह इस दुनियामें भी मायाके मोहकी चीजें रहेंगी ही। इसलिये उनसे बहुत डरनेकी कोई जरूरत नहीं है। परन्तु इतनी खबरदारी रखना है कि उस मोहमें हम फंस न जायं। इतनी ही सम्हाल रखना है कि वह जहर हम खा न जायं। इतनी खबरदारी रखना आ जाय तो बहुत बड़ा काम हो जाय। इसीलिये बखार में जहर हो तो कुछ फिकर नहीं परन्तु उसे खा न लें इतना खयाल रखना।

३३–ज्ञानीकी इच्छाओंमें तथा अज्ञानीकी इच्छाओंमें जो फर्क है उसका खुलासा।

ज्ञान होनेसे कुछ तुरत ही ज्ञानीकी सब इच्छाएं मर नहीं जातीं, परन्तु धीरे धीरे व इच्छाएं दबती जाती हैं। फिर जो याहाकी बड़ी बड़ी इच्छाएं होतीं हैं वे ही रहती हैं, छोटी छोटी इच्छाएं नहीं रहतीं।

दूसरे, ज्ञानीकी इच्छाएं सेंके हुए बीजकी तरह हो जाती हैं, इसमें जैसे सेंके हुए बीजसे नया अंकुर नहीं निकल सकता वैसे ही ज्ञानीकी इच्छासे नये नये प्रपञ्च नहीं पैदा हो सकते। क्योंकि ज्ञानीको ज्ञान होजाता है इससे यह खूब समझ जाता है कि इस जगतका हर एक भोग नाशमान है, क्षणभरके लिये है और उसमें जो सुख दिखाई देता है उस सुखके भीतर भी दुःख है। एक ओर जहां मायाके पदार्थोंकी यह गति दिखाई देती है वहां दूसरी ओर ईश्वरकी सत्यता तथा प्रत्यक्षता उसकी समझमें आ जाती है और यह दिखाई देता है कि उसीसे सारा बल मिलता है, उसीके हुक्मके मुताबिक सब होता है, उसीकी प्रेरणाके अनुसार चलना जरूरी है, वह प्रेमस्वरूप है और वह आप हममें मौजूद है; इसलिये हमें भी प्रेमस्वरूप बनना चाहिये वह ज्ञानस्वरूप है इसलिये हमें भी ज्ञानस्वरूप बनना चाहिये; वह अविनाशी है इसलिये हमें भी मौतका डर छोड़ देना चाहिये; वह शान्तिरूप है इसलिये हमें भी उसकी शान्तिसे शान्ति हासिल करना चाहिये और वह स्वयं आनन्दरूप है इसलिये हमें भी सदा आनन्दमें रहना सीखना चाहिये। इस प्रकारके विचार, इस किस्मकी भावनाएं तथा इस तरहकी रहन सहन होनेसे ज्ञानी मनुष्योंकी इच्छाएं सेंके हुए बीजके समान

हो जाती हैं, इससे उनसे नयी नयी उपाधियां उत्पन्न नहीं होतीं। परन्तु जो बहुत ही जरूरी होती हैं वे आत्मकल्याणकी इच्छाएं ही अन्ततक रहती हैं। बाकी सब इच्छाएं दबती तथा मरती जाती हैं। इसलिये ज्ञानी मनुष्योंकी इच्छाएं उनको बन्धन रूप नहीं हो सकतीं।

अब अज्ञानीकी इच्छाएं कैसी होती हैं सो देखिये। अज्ञानियोंकी इच्छाएं उगनेको तय्यार तथा अंकुर निकले हुए बीज सी होती हैं। इससे उनकी इच्छाओंसे नये नये कितने ही प्रपंच पैदा होते रहते हैं। क्योंकि वे लोग जगतको सत्य मानते हैं, विषयोंको सुख देने वाला समझते हैं तथा भोग करनेमें बहुत आनन्द मानते हैं और दूसरे विलास कैसे भोगें इसका हिसाब लगाया करते हैं और इसीमें जीवको डाले रहते हैं, इससे उनकी यह शक्ति बढ़ती जाती है। जहां एक ओर जगतका मोह इतना बड़ा होता है वहां दूसरी ओर उनमें आत्मज्ञानके नामपर खाली शून्य होता है। इससे आत्माका बल कितना बड़ा है, आत्मा कैसी अलौकिक है, आत्मा कैसी अजर और अमर है और आत्मा किस तरह हर चीजसे बेपरवा है ये बातें वे नहीं जानते और कदा॰ ये बातें सुनी हों तो भी उनमें उनको विश्वास नहीं होता। इससे वे इन जरूरी बातोंसे लापरवा होते हैं और जो क्षणिक चीजें हैं तथा जो दुःख देनेवाले विषय हैं उनकी इच्छाओंमें ही वे अपनी जिन्दगी गंवा देते हैं। इससे उनकी इच्छाएं तुरत उगनेवाले बीजके समान बन जाती हैं। और ज्ञानियोंकी इच्छाएं उस बीजके समान बन जाती हैं जो फिर उग नहीं सकता। ज्ञानी और अज्ञानीकी इच्छाओंमें इतना फर्क है। इसलिये अगर जन्ममरणके बन्धनसे छूटना हो और शान्ति तथा आनन्दकी जिन्दगी भोगनी हो तो ज्ञानी बनिये और छोटी

छोटी इच्छाओंके बीजको सेंक डालिये। तब वे इच्छाएं आपको दुःख नहीं दे सकेंगी।

३४-अब तो दवाखानोंमें, कैदखानोंमें, पाठशालाओंमें, अनाथालयोंमें, सेवासदनोंमें और ऐसे ही दूसरे परमार्थके कामोंमें मन्दिरकी भावनाएं आनी चाहियें।

बन्धुओ! अब जमाना बदलता जाता है। इससे उसके अनुकूल होनेके लिये हमें अपनी भावनाएं भी कुछ कुछ बदलनी चाहियें। अगर जमानेके अनुसार न चलें तो हम आगे नहीं बढ़ सकते; अगर जमानेका अनुसरण न करें तो दूसरे सुधरे हुए देशवासियोंके साथ व्यापार धंधेकी चढ़ाऊपरीमें हम टिक नहीं सकते, अगर जमानेके अनुसार न चलें तो हम मनमाना सुख नहीं भोग सकते और जमानेके अनुसार न बनें तो हमारा बड़ा पार नहीं लग सकता क्योंकि जिधर हवाका रुख हो उधर पाल न घुमावें तो बेड़ा चल नहीं सकता। इसलिये अगर आगे बढ़ना हो तो समय विचार लेना चाहिये और देश काल समझ कर उसके अनुसार चलना चाहिये।

आजकलका जमाना भ्रातृभावका है। यह जमाना आपसमें मदद करनेका है। आजकलके जमानेमें किसी देशका आधार सिर्फ अपने ऊपर नहीं है बल्कि सारी दुनियापर उसका आधार है। सारी दुनियाका अच्छा बुरा असर सबके पास सहजमें पहुंच सकता है। रेलगाड़ी, स्टीमर, तार, टेलीफोन, ग्रामोफोन, बायस्कोप, छापाखाने आदि सामग्रीने दुनियाके अलग अलग देशोंको

अड़ोस पड़ोसके शहर समान बना दिया है और दूर दूरके भागोंमें बहुत निकट सम्बन्ध कर दिया है। इससे अब हम अपनी रीति भांति और आचार विचार दूसरोंसे अलग थलग नहीं रख सकते और " तीन लोकसे मथुरा न्यारी" की तरह आजकलके जमानेमें नहीं रहा जा सकता। अब तो वह समय है कि या तो ऐसा कीजिये कि आपकी रीति भाति, आपके रिवाज, आपके आचरण और आपके विचार सारी दुनियाके लोग कबूल करें या नहीं तो दुनियाका बड़ा भाग जिन आचार विचारोंको मानता हो और जिनसे उनकी उन्नति होती हो उन आचार विचारोंको आप ग्रहण कीजिये। दोमेंसे एक करना पडेगा। इसके बिना आजकलके चढ़ाऊपरीके जमानेमें, प्रत्यक्ष विश्वास दिला करके पीछे काम करनेवालोंके जमानेमें टिक नहीं हो सकेंगे। इसलिये हमें अपने आचार विचार दूसरोंको सिखाना चाहिये और जमानेके अनुसार जिन आचार विचारोंकी जरूरत हो उन्हें दूसरे देशवालोंसे सीख लेना चाहिये। ऐसा किये बिना आजकलके जमानेमें हमारी नाव आगे नहीं बढ़ सकती।

पहलेके किसी जमानेसे आजकलके जमानेमें भ्रातृभावकी बहुत ज्यादा जरूरत है। इसके कारण ये हैं—

(१) आज कलके जमानेमें जिन्दगीकी जरूरतकी सामग्री सारी दुनियामें बहुत महंगी हो गयी है और महंगी ही होती जायगी। इससे गरीब आदमियोंको जिन्दगीकी खुराक हासिल करनेमें बहुत मुश्किल पड़ती है।

(२) आजकलके जमानेमें आदमीका निजका स्वार्थ बहुत बढ़ गया है, इससे कुटुम्बस्नेहकी प्रवृत्ति ढीली होती जाती है। लड़के मा बापकी आज्ञा माननेमें ढीले होते जाते हैं और मा बाप लड़कोंकी तरफसे लापरवा होते जाते हैं। ऐसा विचार

करनेवाली श्रेणी भी बढ़ती जाती है कि लड़के न हों तो अच्छा, जंजाल घटे ! भाई भाईमें भी द्वेष बढ़ता जाता है। एक भाई सोचता है कि मैं अधिक कमाता हूं तो भी हम दो ही जन हैं और दूसरा भाई कमाता नहीं तो भी उसके ६ आदमियोंका बोझ मुझे उठाना पड़ता है, इसलिये मैं अलग हो जाऊं तो अच्छा। ऐसे ऐसे विचार लोगोंमें बढ़ते जाते हैं। एक ओर स्त्रियां अपना हक मांग रही हैं और दूसरी ओर पुरुषोंमें यह ख्याल जोर पकड़ता जाता है कि जिन्दगी भरके लिये ब्याहका बन्धन क्यों हो ? और सिर्फ एक स्त्रीके कारण कितनी झंझट बढ़ती जाती है ? अगर यह न हो तो किस अमन चैनसे रह सकते हैं। इस प्रकारके स्वार्थके विचारोंके कारण कुटुम्ब-स्नेह घटता जाता है । इससे कुटुम्बी एक दूसरेको, जितनी चाहिये उतनी, मदद नहीं देते।

(३) पहलेके जमानेमें मालिक और नौकरमें जैसी इज्जतका सम्बन्ध था वैसा सम्बन्ध आजकलके जमानेमें नहीं है और दिनपर दिन यह सम्बन्ध बिगड़ता ही जायगा । क्योंकि मालिक यह चाहते हैं कि नौकरसे क्योंकर ज्यादासे ज्यादा काम लें और कमसे कम तलब दें तथा हमारे पास सबसे अधिक रुपया कैसे होजाय। दूसरी ओर मजदूर तथा नौकर लोग ऐसा कानून चाहते हैं कि कमसे कम काम करना पड़े और मालिकसे ज्यादासे ज्यादा तलब मिले । ऐसी लड़ाई दुनियाके हर एक देशमें मालिक और नौकरके बीच चल रही है जो पहले नहीं थी।

(४) हालके जमानेमें दुनियाके हर एक भागमें राजा और रय्यतमें भी कुछ बहुत अच्छा सम्बन्ध नहीं होता ; क्योंकि फौजी खर्च बढ़ता जाता है इससे राजाको कर बढ़ाना पड़ता है।

और कर बढ़े यह बात लोगोंको पसन्द नहीं। इससे राजा उनको कड़ुए जहर समान लगते जाते हैं। क्योंकि जमाना ही स्वार्थका है। इससे दूसरी देशवालोंसे लोगोंको इस किस्मके विचार मिलते जाते हैं कि हमें राजाकी जरूरत क्या है? प्रजाके बहुमतसे राजकाज चलना चाहिये। यह विचार दुनियाके हर एक भागमें तेजीसे फैलता जाता है। इससे राजा और प्रजाका सम्बन्ध भी आजकलके जमानेमें कुछ बड़ी प्रतिष्ठाका नहीं रह सकता।

(५) भोग विलासकी सामग्री हालके जमानेमें बहुत बढ़ गयी है परन्तु उसे लेने लायक काफी पैसा लोगोंके पास नहीं है। इससे लोगोंका बड़ा भाग मानसिक चिन्ता तथा असन्तोषमें रहता है।

(६) धर्मकी भावनाए पहलेसे हालके जमानेमें बहुत खोखली हो गयी हैं। इससे धर्मके बलका आधार भी नहीं रहा। पुराने जमानेमें जब धर्म सजीवन था तब लोगोंको धर्मका बल भी बहुत मदद करता था। परन्तु हालके जमानेमें दुनियाके सब धर्म बीमार से होगये हैं जिससे उनका बल भी लोगोंके काम नहीं आ सकता। इस कारण गुरु शिष्यका सम्बन्ध भी जरा जरा बिगुडता जाता है। शिष्य समझते हैं कि गुरुओंमें कुछ तत्व नहीं है वे खाली हरामके खानेवाले हैं और गुरु सोचते हैं कि सब शिष्य नास्तिक बनते जाते हैं और हमें कुछ देते नहीं। इस प्रकार गुरु शिष्यका सम्बन्ध भी ढीला सीला हो गया है। अगर यही ढंग रहा तो इस सम्बन्धके बहुत दिन तक टिकनेका लक्षण नहीं दिखाई देता। इससे गुरुओंकी ओरसे शिष्योंको जो मदद मिलनी चाहिये और शिष्योंकी तरफसे गुरुओंको जो मदद मिलनी चाहिये वह मदद भी हालके जमानेमें ठीक ठीक नहीं मिल सकती।

(७) कलें बननेसे भी बहुत आदमियोंका रोजगार टूटता जाता है। जैसे कपड़ा बुननेकी मिलें होनेसे हाथके करघों और रुई कातनेके चरखोंका काम नष्ट हो गया। दूसरे, कलोंसे कुछ कारखानेवाले लाखों रुपये पैदा कर लेते हैं जिससे परिणाममें दूसरे हजारों कुटुम्ब गरीब बन जाते हैं। इसी प्रकार कलोंसे माल बहुत जल्द तय्यार होता है और बहुत माल तैय्यार हो जाता है। इससे बाजारमें माल बढ़ जाता है और पूरा दाम भी नहीं आता। इसके सिवा कलोंके जरिये थोड़े आदमी बहुत काम कर सकते हैं इससे बहुत आदमियोंको मजदूरी नहीं मिल सकती जिससे वे दुखी होते हैं। एक ओर कलोंकी ईजादसे इस तरहका नुकसान होता है तो दूसरी ओर कलोंकी मददसे अनेक तरहके फायदे भी होते हैं; बल्कि अब तो दुनियामें और भी तरह तरह की कलें बढ़ेंगी और उनके बढ़नेमें ही फायदा है।

ऐसे ऐसे कितने ही कारणोंसे पहलेके जमानेसे हालके जमानेमें लोगोंकी हालत कुछ और ही तरहकी हो गयी है। इसलिये उनकी मददकी जरूरत है और इसीलिये यह भ्रातृभावका जमाना कहलाता है। क्योंकि हालके जमानेमें आपसकी मदद बिना कोई टिक नहीं सकता। इसलिये जगतकी भलाई चाहने-वाले महात्मा लोग कहते हैं कि मन्दिरों पर धार्मिक लोगोंकी जैसी पूज्य बुद्धि है वैसी पूज्य बुद्धि हालके जमानेमें परमार्थके आश्रमोंपर होनी चाहिये। जैसे हर रोज मन्दिरमें जाना फर्ज है वैसे ही पाठशाला, अस्पताल, कैदखाना, गुरुकुल, ऋषिकुल, अनाथालय, विधवासदन, बोर्डिङ्ग हाउस, धर्मशाला, कन्याशाला, व्यायामशाला, लायब्रेरी, औषध्या फण्ड, विरद फण्ड, शिल्प शिक्षालय, विद्यालय और ऐसे ही ऐसे परमार्थके दूसरे आश्रमोंमें रोज जानेकी जरूरत है और जैसे पर्व त्योहारपर मन्दिरोंकी

मदद की जाती है वैसे ही मौके मौकेपर ऐसे आश्रमोंकी मदद करनी चाहिये।

जैसे हम मन्दिरोंमें राजभोग, छप्पनभोग, घेट, हिंडोला, छत्र और ध्वजा चढ़ाने और होम आरती करने आदिके कामोंमें मदद करते हैं वैसे ही ऊपर लिखे परमार्थके आश्रमोंमें यथाशक्ति मदद करनी चाहिये। मन्दिरमें जाकर हम जैसे कुछ शान्ति पाते हैं वैसे ही ऐसे परमार्थके आश्रमोंमें जाकर भी शान्ति हासिल करना सीखना चाहिये और जैसे हम यह समझते हैं कि मन्दिरोंमें जानेसे पुण्य होता है और प्रभु प्रसन्न होता है वैसे ही ऐसे ऐसे परमार्थके आश्रमोंके बारेमें समझना चाहियेकि उनमें जानेसे, उनमें हिस्सा लेनेसे और तन, मन या धनसे यथाशक्ति मदद करनेसे प्रभु प्रसन्न हो सकता है। क्योंकि आजकलके जमानेमें ये सब हमारे मन्दिर हैं। इसलिये परमार्थकी भावना चमकानेके लिये और उस रास्ते उन्नति पानेके लिये परमार्थके आश्रमोंमें मन्दिरोंकी भावना रखना सीखिये, उनको मन्दिर समझिये। क्योंकि मनुष्योंकी मदद करना प्रभुका सबसे प्यारा काम है और आजके जमानेमें भ्रातृभाव बढ़ानेके लिये तथा मनुष्योंकी सेवा करनेके लिये इस किस्मके विचारोंकी जरूरत है। इसलिये ऐसी भावना रखनेकी कोशिश कीजिये।

३८—आप अपनी जिन्दगीमें कितने अधिक व्रत करते हैं? लेकिन बातें कैसी करते हैं? मनमें विचार कैसे करते हैं और काम कैसे करते हैं? यह तो जरा विचारिये।

कितने ही आदमी कितने ही तरहके व्रत करते हैं। जैसे

कोई एकादशी भूखता है, कोई सोमप्रदोष व्रत करता है, कोई तीज करता है, कोई चौथ मनाता है, कोई शनिवारका एक वक्त खाता है, कोई रविवारको नमक छोड़ता है, कोई पूर्णिमाको फलाहार करता है, कोई रामनवमीको उपवास करता है तो कोई जन्माष्टमीका दिनभर निर्जल रहता है, कोई सतुआन मनाता है, कोई खिचड़ी मनाता है, कोई सावनके महीनेमें एक ही बार खाता है, कोई पुरुषोत्तम मास (मलमास) में फलाहार करके रहता है और कोई चौमासेमें कई तरहके नियम पालता है। इस प्रकार प्राय हर एक आदमी कुछ कुछ धर्मकी क्रिया तथा व्रत किया करता है। पर तो भी हम देखते हैं कि ऐसे ऐसे व्रत करनेवालोंके जीवनमें कुछ न खास उच्चता नहीं प्रगट होती। क्योंकि एक ओर तो ऐसे ऐसे व्रत होते हैं पर दूसरी ओर उनकी बातें सुनिये तो उनमें कुछ दम नहीं मालूम होता। उनकी बातोंसे अश्रद्धा प्रगट होती है, ऊपरी पन दिखाई देता है, कुछ स्वार्थ दिखाई पड़ता है, लोकलाज प्रगट होती है और ऐसा आभास हो जाता है कि मानो लाचारी दरज या रिवाज हो जानेके कारण ही मनको दबा दबा कर यह सब कर रहे हैं। उनकी बातोंसे जिस प्रकार ऐसी पोल दिखाई देती है उसी प्रकार उनके विचारोंमें भी बहुत बड़ा गड़बड़ाध्याय होता है। वे बाहरसे व्रत उपवास करते हैं पर मनके विचार किसी और ही तरंगमें और ही तरफको जाया करते हैं। इसी तरह काममें भी वैसा ही अन्धकार होता है। जो करना चाहिये उससे उलटा ही वे करते दिखाई देते हैं। इससे वे अपनी हैसियतके अनुसार तथा देशकालके अनुसार अच्छे काम नहीं कर सकते।

अब विचार कीजिये कि जिनकी बातोंमें पोल हो, जिनके

विचारोंका ठिकाना न हो और जिनके काम केवल उल्टे ढङ्गके हों उन आदमियोंकी खाली एकादशी उन्हें कितना बल दे सकती है ? और कितना आगे बढ़ा सकती है ?

भाइयो ! हम सब अधिकतर ऐसा ही करनेवाले हैं; इसीसे हमारी धर्मकी क्रियाएं, जैसा चाहिये वैसा फल नहीं देतीं । क्योंकि धर्मकी बाहरकी जड़ क्रियाएं सहजमें हो सकती हैं, इससे उन्हें तो हम करने लगते हैं पर भीतरका जो चक्र बदलनेकी जरूरत है, जो भावना फेरनेकी जरूरत है, जो सद्गुण विकसानेकी जरूरत है और धर्मके बाहरकी क्रियाएं करते समय जमानेको देखने तथा देशकी दशा समझने की जो जरूरत है उसे हम नहीं देखते । इन सब बातोंमें हम लापरवा रहते हैं और सिर्फ कंठी बांधलेनेमें, तिलक लगा लेनेमें, दर्शन करने जानेमें, नहाने धोनेमें , किसीसे छूआछूत न करनेमें या पहले खूब खाकर पीछे कुछ देर भूखे रहनेमें ही हम धर्म मान लेते हैं । पर जो असलमें करनेकी बातें हैं और जो पूरी पूरी माननेकी बातें हैं उनसे हम एकदम लापरवा रहते हैं। इससे हमारी भक्ति फलीभूत नहीं होती। हमको धर्मका बड़ा फल नहीं मिलता । इसलिये अगर सच्चा धर्म पालना हो तो धर्मकी बाहरी क्रियाओंपर जितना जोर देते हैं उससे अधिक जोर मनके सुधारनेपर दीजिये और सिर्फ एकादशी पर न पडे रह कर ऐसा कीजिये कि काम सुधरे । इससे बाहरी क्रियाएं भी उपयोगी हो जायंगी। ऐसा किये बिना खाली बाहरी क्रियाओंसे पूरा नहीं पड़नेका, यह बात खूब याद रखना ।

३६-अगर अच्छे दलालको साथ रखेंगे तो वह अच्छा माल दिलावेगा। इसलिये धर्मके बाजारमें सौदा खरीदनेके लिये उत्तम सन्तको दलालके तौर पर साथ रखिये।

इस दुनियाका व्यवहार चलानेमें अनेक चीजोंकी जरूरत है और सब चीजोंकी परख सब आदमियोंसे नहीं होती न सब चीजोंके भाव तावकी ही खबर सब को होती। यह भी सब लोग नहीं जानते कि किस किस्मका माल किस जगह मिलता है तथा उसमें क्या नफा नुकसान है और उसमें क्या कमीशन मिलता है तथा कितने दिनपर दाम चुकाना पड़ता है, मुद्दत पर रुपया न चुकानेसे क्या ब्याज देना पड़ता है और नगद खरीदनेसे क्या किफायत पड़ती है तथा बाजारमें कौन व्यापारी ईमानदार है और कौन व्यापारी दगाबाज है तथा उनसे सस्ती दरमें माल लेनेके लिये किस तरह बात चीत करनी चाहिये। लेकिन उन व्यापारियोंके साथ जिनको बार बार काम पड़ता है वे बाजारके होशियार दलाल यह सब जानते हैं। इससे जिस किस्मका माल खरीदना हो उसके दलालको साथ रखनेसे बड़ा फायदा होता है। अगर अनुभवी दलाल साथ न हो तो ठगा जानेका भय रहता है। अगर बदमाश दलाल मिल जाय तो वह भी हमें धोखा दे देता है और अपनेसे मिले हुए दुकानदारसे खराब माल दिलाकर आप उससे मोटी रकम हड़प लेता है। ऐसा न होने देनेके लिये विश्वास योग्य होशियार दलाल रखनेकी जरूरत है।

अब विचार कीजिये कि जब जगत्‌की छोटी छोटी चीजें खरीदनेके लिये भी दलालकी जरूरत होती है तब धर्मकी

अलौकिक चीजें खरीदनेमें दलालकी जरूरत हो तो आश्चर्य ही क्या है? क्योंकि धर्मकी बहुत बातें बड़ी अटपट होती हैं, कितनी ही बातें अड़चलभरी मालूम देती हैं, कितनी ही बातोंमें अच्छा लाभ नहीं दिखाई देता, कितनी ही चीजें खरीदने योग्य होनेपर भी हमारी समझमें नहीं आतीं और कितनी ही चीजें अच्छी लगने तथा बहुत लोगोंके लेनेसे हमारा भी लेनेको जी चाहता है पर असलमें उनमें कुछ तत्व नहीं होता। इस प्रकार अनेक विषयोंमें हमारी अज्ञानता होती है; इससे उनको खरीदने जानेमें कितनी ही बार हम भूल कर बैठते हैं और एकके बदले दूसरी चीज ले लेते हैं या जिस दुकानसे खरीद करना चाहिये उसके बदले दूसरी दुकानसे खरीद लेते हैं। इससे बचनेके निमित्त, धर्मका सौदा खरीदनेके लिये सन्त रूपी दलाल साथ रखनेकी जरूरत है। क्योंकि जमानेका अनुसरण करनेवाले होशियार संत साथ होंगे तो इन विषयोंमें इस किस्मकी भूलें नहीं होंगी। इसलिये निष्कपट सन्तोंको अपनी मददमें रखना चाहिये और उनके समागममें रहना चाहिये। क्योंकि जो निष्कपट संत होते हैं वे अपनी जिन्दगी धर्ममें अर्पण किये हुए रहते हैं। इससे वे दुनियादारीकी छोटी छोटी उपाधियोंसे डिगते नहीं। वे देशके तथा दुनियाके अनेक भागोंमें फिर सकते हैं, अनेक सन्तोंसे मिल सकते हैं, धर्मके भिन्न भिन्न अड़चलभरे तथा कठिन सवालोंपर वाद विवाद कर सकते हैं और रात दिन इसीमें लगे रहते हैं। इससे उनको इस विषयकी कितनी ही सहज सहज तरकीबें मालूम होजाती हैं तथा उनसे काम लेनेकी युक्ति, ढङ्ग और बल भी उनमें आ जाता है। इससे वे प्रभुके निकट ले जा सकते हैं। इसलिये वे दूसरोंपर बहुत अच्छा प्रभाव डाल सकते हैं और विश्वासदायक चोखा

माल दिला सकते हैं। जिन्दगीको सार्थक करनेके लिये बढ़ियासे बढ़िया सौदा खरीदनेकी जरूरत है। यह सौदा धर्म है, और कर्त्तव्य है। और उसके पेटेमें दया, क्षमा, शान्ति, मनोनिग्रह, परोपकार, सत्य, ब्रह्मचर्य, तितिक्षा (दुःख सह लेना) तथा सद्विचार वगैरह अनेक विषय हैं। इनको खरीदनेके लिये सन्त रूपी दलालको साथ रखना चाहिये। क्योंकि सन्तोंके सिवा दूसरे दलाल इस मालके बहुत जानकार नहीं होते; इसमे वे एक तरफ झुक जाते हैं और उनके भरोसे रहनेसे हम भी फँस जाते हैं। ऐसी भूलसे बचते सीधे सीधे प्रभुके मार्गमें चलने तथा उत्तमसे उत्तम वस्तुएं खरीद सकनेके लिये निष्कपट तथा अनुभवी सन्तको साथ रखना और उनके समागममें रहना। तब आप सहजसे सहज रीतिसे अच्छेसे अच्छे धर्मको खरीद कर सकेंगे।

३७-जिनको अपना लोकव्यवहार सुधारना भी नहीं आता वे अपना परमार्थ कैसे सुधार सकेंगे?

हमारे देशके बहुतसे लोगोंके मनमें एक किस्मकी औंधी समझ घुस गयी है। व समझते हैं कि लोकव्यवहार दूसरी चीज है और परमार्थ दूसरी चीज है। ऐसी समझ होनेके कारण उनका विश्वास है कि अच्छी तरह व्यवहार चलाना आवे तो भी परमार्थमें आगे बढ़ा जा सकता है। व यहांतक मानते हैं कि परमार्थमें आगे बढ़नेके लिए व्यवहारकी कुछ जरूरत नहीं है। ऐसी भारी भूलके कारण हमारे देशके लाखों आदमी

दुनियाका व्यवहार सम्हालनेमें लापरवाही दिखाते हैं। क्योंकि वे समझते हैं कि व्यवहारके जंजालमें पड़े रहना परमार्थके काममें अड़चल डालनेके बराबर है। इस समझके कारण वे व्यवहारको लात मारनेमें बहादुरी मानते हैं, इससे वे जगतके प्रति अपना कर्त्तव्य भूल जाते हैं। इसका फल यह होता है कि वे एकअंगी भक्तिवाले हो जाते हैं। परन्तु महात्मा लोग कहते हैं कि ऐसी एकअंगी भक्तिसे कुछ कल्याण नहीं होता। क्योंकि जिनको इस दुनियाका व्यवहार सुधारना भी नहीं आता वे परमार्थ कैसे सुधार सकेंगे?

बन्धुओ! शास्त्रोंका तथा महात्माओंका यह सिद्धान्त है कि इसी संसारमें हमें स्वर्ग प्राप्त करना चाहिये और इसी दुनियामें रह कर हमें स्वर्गकी जिन्दगी भोगनी चाहिये। तभी हमें मरने-पर सुखी जिन्दगी-स्वर्गकी जिन्दगी मिल सकती है। क्योंकि जैसी भावना होती है वैसा फल होता है। इसलिये इस जिन्दगीमें अगर मलिन भावनाएं रखी हों तो मरनेपर कुछ एकाएक अच्छी भावनाएं नहीं हो सकतीं, इस जिन्दगीमें अगर दुःखके ही विचार किये हों तो मरनेपर कुछ एकदम सुख नहीं आ जा सकता और अनेक प्रकारके भोगविलास करनेकी इच्छाएं मनमें दबा रखी हों पर सिर्फ लोकलाजसे या सामानकी कमीके कारण त्याग-वृत्ति दिखायी हो तो इससे मरनेपर मोक्ष नहीं मिल जाता। अन्तःकरणकी भावनाओंके अनुसार फल मिलता है। इसलिये पहले अपनी यहांकी भावनाएं सुधारनी चाहियें और भावनाएं सुधारनेके लिये पहले अपना लोकव्यवहार सुधारना चाहिये। क्योंकि जब सबके साथ अच्छा व्यवहार होता है तभी भावनाएं शुद्ध रह सकती हैं। पर अगर व्यवहारमें घालमेल हो, व्यवहारमें गपड़ चौथ हो, व्यवहारमें ढीलपोल हो, व्यवहारमें लापरवाही

हो और व्यवहारमें पोल हो तो भावनाएं शुद्ध नहीं रह सकतीं और भावनाएं अच्छी न हों तो मरनेपर अच्छा फल नहीं मिल सकता। इसवास्ते परमार्थ सुधारनेके लिये पहले हमें अपनी भावनाएं सुधारनी चाहिये और भावनाएं सुधारनेके लिये पहले अपना व्यवहार सुधारना चाहिये। इसके बदले हम यह समझते हैं कि व्यवहार तो तुच्छ बात है उसमें कौन ध्यान रखे! इसमें तो जो अज्ञानी हो वह पड़ा रहे, ज्ञानी क्यों व्यवहारकी झंझटमें पड़न जाय? इस प्रकार कितने ही साधु तथा भक्त कहा करते हैं। उनको एक अनुभवी भक्त जवाब देता है कि—

इस दुनियाकी जो बातें प्रत्यक्ष हैं, जो बातें सहजमें होने योग्य हैं, जिन बातोंको करनेके लिये शास्त्रका हुक्म है और जिनके किये बिना जिन्दगी नहीं टिक सकती वे सहज बातें भी जब तुमसे नहीं हो सकतीं तब परमार्थ की—परजीवनकी अदृश्य बातें तुमसे क्योंकर हो सकती हैं? परमार्थकी बातें तो अदृश्य हैं, सूक्ष्म हैं, आसानीसे समझमें आनेवाली नहीं हैं, गुप्त असरवाली हैं और तुरत फल देती हैं तथा अनेक प्रकारके रहस्यके परदोंके भीतर छिपी हुई हैं। ऐसी बातें एकदम कैसे समझमें आ सकती हैं? वे तो सातवीं सीढ़ीकी बातें हैं। वहां एकबारगी कैसे पहुंचा जा सकता है? ये कुछ ऐसी खेलवाड़की बातें नहीं हैं कि आसानीसे मिल जाय, बल्कि वहां क्रम क्रमसे पहुंच सकते हैं वहां तो सीढ़ी सीढ़ी जा सकते हैं, वहां तो धीरे धीरे पहुंच सकते हैं और वहां तो बहुत विचार करनेके बाद तथा बहुत कुछ अनुभव हासिल कर लेनेपर जा सकते हैं। और यह सारा अनुभव व्यवहारसे लेना पड़ता है। परमार्थ के सूक्ष्म प्रदेशमें व्यवहारदशाका स्थूल अनुभव नहीं होता, यह स्थूल अनुभव तो पहले इसी दुनियामें करना पड़ता है। इससे ऋषिलोग

यही समझते थे कि अपना व्यवहार जैसे बने वैसे अच्छा रखना चाहिये। क्योंकि व्यवहार सुधरनेसे ही परमार्थ सुधर सकता है, व्यवहार सुधरनेसे ही जिन्दगी सुधर सकती है, व्यवहार सुधरनेसे ही धर्म पालनेका बल आ सकता है और व्यवहार सुधरनेसे ही इस संसारमें स्वर्ग पाया जा सकता है तथा व्यवहार सुधरनेसे ही इस जिन्दगीमें स्वर्गका अनुभव किया जा सकता है। इससे व्यवहार सुधरने पर ही परमार्थका सुधरना मुनहसर है। इसलिये व्यवहार और परमार्थ दो अलग अलग चीजें हैं तथा एकका दूसरेसे विरोध है यह न मानकर और ऐसी भूलमें न पड़े रहकर पहले व्यवहार सुधारनेकी कोशिश कीजिये। तब उससे परमार्थ भी आपसे आप सुधर सकेगा। इसवास्ते पहले व्यवहार अच्छा रखना सीखिये। व्यवहारमें उत्तमता रखना सीखिये।

३८–आमदनीके मुताबिक इनकम टैक्स देना चाहिये; न देनेसे सजा होती है। वैसे ही आमदनीके मुताबिक प्रभुका कर भी चुकाना चाहिये, अर्थात् प्राप्तिके अनुसार धर्मार्थ भी पैसा खर्चना चाहिये।

जो राजा रय्यतकी रक्षा करता है, रय्यतको शिक्षा देता है, रय्यतके आरामके लिये सड़कें निकालता है, पुल बंधवाता है, दवाखाने खोलता है और दूसरे कई तरहके सुबीते करता है तथा रय्यतकी रक्षाके लिये पल्टन और पुलिसका प्रबन्ध करता है

उस राजाकी मदद करनेके लिये रय्यतको अपनी आमदनीके अनुसार राज्यका कर देना चाहिये। जो यह कर नहीं देता वह कसूरवार समझा जाता है और उसको सजा होती है। क्योंकि जिस राजाके कानूनसे हमारी रक्षा होती है तथा हमें सुभीता होता है उस राजाको योग्यतानुसार कर देना ही चाहिये। इसी तरह जिस सर्वशक्तिमान परमात्माने हमें उत्तम मनुष्यजन्म दिया है, जिसने हमें बहुत सुभीतेवाले देशमें जन्म दिया है, जिसने हमें अच्छी जाति दी है, जिसने हमें अच्छे मा-बाप दिये हैं, जिसने हमें उत्तम इन्द्रियां दी हैं, जिसने हमें सद्बुद्धि दी है, जिसने हमें आगे बढ़नेके लिये बहुत कुछ सामग्री दी है और जिसने हमें तन्दुरुस्ती तथा आयु दी है उसके नामपर और उसकी खातिर, अपने भाइयोंके कल्याणके लिये अपनी आमदनीके अनुसार खर्च करना हमारा मुख्य कर्त्तव्य है।

अपने भाइयोंकी भलाईके लिये परमार्थके काम करनेमें प्रभुके नामपर जो पैसा खर्चा जाता है वह दान कहलाता है और दानकी महिमा बहुत बड़ी है। क्योंकि दान करनेसे मन बड़ा होता है, दान करनेसे जी खुश होता है, दान करनेसे अन्तःकरणमें एक प्रकारका बहुत बड़ा सन्तोष होता है, दान करनेसे भ्रातृभाव बढ़ता है, दान करनेसे हृदय कोमल होता जाता है, दान करनेसे ईश्वरकी महिमा समझमें आती जाती है, दान करनेसे पाप कटता जाता है, दान करनेसे ज्ञान बढ़ता जाता है, दान करनेसे शान्ति आती जाती है दान करनेसे चेहरे पर एक प्रकारका कुदरती नूर खिलता जाता है, दान करनेसे रहन सहन सुधरती जाती है, दान करनेसे कीर्त्ति बढ़ती जाती है, दान करनेसे ईश्वरी मार्ग मिलता जाता है, दान करनेसे गरीबों-का आशीर्वाद मिल सकता है, दान करनेसे तरह तरहके

जानने योग्य नये नये तजरबे हासिल होते हैं, दान करनेसे धर्मका रास्ता खुलता जाता है और ज्यों ज्यों दान किया जाता है त्यों त्यों प्रभुकी अधिक अधिक कृपा उतरती जाती है। इसलिये दान करना बड़े ही महत्वका विषय समझा जाता है और इसीसे दुनियाके हर एक धर्मने दानकी महिमा स्वीकार की है तथा दान करनेकी खास आज्ञा दी है और वारंवार जोर देकर तथा समझा समझा कर और डरा डरा कर कहा है कि दान करो, दान करो, दान करो। इसलिये हमें प्रभुके लिये अपने भाइयोंकी सेवामें अपनी आमदनीके अनुसार खर्च करना चाहिये।

दूसरे यह भी याद रखना कि जब लोगोंका कर चुकाये बिना नहीं बनता और राज्यका कर न देने से कैदखाने जाना पड़ता है तब जो आदमी पासमें काफी सामान होने पर भी प्रभुका कर नहीं देता उसका क्या हाल होगा यह विचारने योग्य बात है। इसलिये इस बातकी सम्हाल रखना कि सामग्री होते हुए भी ऐसी भूलमें न रह जाओ और स्वर्गके बदले नरकमें न चले जाओ; यह विचार करना कि जो धन साथ नहीं जाता, जिस धनको यहीं छोड़ कर मर जाना पड़ता है, जिस धनको पीछेसे दूसरा कोई खा जाता है और जिस धनको छोड़कर मरजानेसे मरते वक्त बहुत अफसोस होता है उस धनके उपयोगसे आत्माको आनन्द तथा ईश्वरी कृपा मिल सकती है। तब ऐसा अनमोल अवसर क्यों चूकना ! ऐसा लाभ जैसे बने वैसे खूब अधिक लेना चाहिये और जी खोल कर दान करना सीखना चाहिये।

तीसरे यह भी ध्यानमें रखना कि जब राजाका कर चुकाये बिना पिण्ड नहीं छूटता तब प्रभुका कर चुकाये बिना कैसे पिण्ड छूटेगा ? जो अपनी खुशीसे यह कर नहीं चुकावेंगे

उनकी लक्ष्मीका नाश और कई तरहसे हो जायगा। याद रखना कि जो अपने भाइयोंके लिये प्रभुके नामपर धन नहीं खर्चेंगे और परमार्थ नहीं करेंगे उनके धनमेंसे अधिक हिस्सा चोर चुरा ले जायगा या आग खा जायगी या अदालतमें खर्च होजायगा या ऐसी भारी बीमारी पकड़ेगी कि वे उस धनसे खुद फायदा नहीं उठा सकेंगे या कुटुम्बमें ऐसी भारी कलह मचेगी कि धनके होते हुए भी हृदय चिन्तारूपी चितामें जला करेगा या कञ्जूसीके कारण बुद्धिमें ऐसी जड़ता आ जायगी कि जिससे सब प्रकारकी मौज मारी जायगी और एकदम सूखी मुर्दैसी जिन्दगी हो जायगी। अगर दान नहीं कीजियेगा तो इनमेंसे कुछ न कुछ हुए बिना बाकी नहीं रहेगा। इसलिये खुशीसे, बुद्धिमानीसे और प्रेमसे प्रभुका कर चुका कर परमार्थके काम कीजिये। परमार्थके काम कीजिये।

३९-भक्तोंका हृदय मजबूत पत्थरकी दीवार सा होता है, इससे उसपर अगर पत्थर मारा जाय तो वह उनको न लगकर टकराते हुए पीछे लौटता है और वह मारनेवालेको ही आ लगता है। इसलिये ऐसी भूल करनेसे पहले खूब सम्हलना।

श्रीमद्भगवद्गीतामें यह कहा है कि सब जीवोंकी जो रात है वह भक्तोंका दिन है और जो सब जीवोंका दिन है वह भक्तोंकी रात है, अर्थात् जगतके जिन जिन कामोंमें साधारण जीव लगे रहते

है उन कामोंमें भक्तोंको अंधेरा मालूम देता है और विश्वास तथा आत्मिक प्रकाशके विषयमें जहां भक्तोंको उजाला मालूम देता है वहां अज्ञानियोंको उस विषयकी खबर न होनेसे अंधेरा मालूम देता है। इस कारण जगतकी रात भक्तोंका दिन है और जगतका दिन भक्तोंकी रात है। इस प्रकार व्यवहारी लोगोंके आचार विचारमें तथा भक्तोंके आचार विचारमें बहुत फर्क होनेसे दुनियाके अनेक मोहवादी लोगोंसे भक्तोंकी नहीं पटती। क्योंकि वे भक्तोंका उद्देश्य नहीं समझते, वे हृदयकी विशालता नहीं समझते वे अन्तःकरणका आनन्द नहीं समझते और भक्त किसके लिये काम करते हैं तथा कितने अधिक यत्नसे काम करते हैं और कितने बड़े स्वार्थका त्याग करते हैं यह बात वे नहीं जानते। इससे भक्तोंके कामोंकी कीमत वे नहीं समझ सकते और न कदर कर सकते। अजी, कीमत और कदर तो दूर रही, उलटे उनको भक्तोंके कामोंमें बहुत विरोध दिखाई देता है, इससे वे भक्तोंका सामना करते हैं। क्योंकि व्यवहारी लोगोंका स्वभाव ऐसा होता है कि वे जिस ढङ्गसे आप रहते हैं, खाते हैं तथा वर्तते हैं उसी ढङ्गसे सब कोई रहे तभी वे उचित समझते हैं और अपनी ही रीतिके अनुसार दूसरोंको भी चलानेका हठ करते हैं। कोई आदमी उनके नियमसे जरा भी पीछे रह जाय या जरा भी आगे बढ़ जाय तो उसको वे सह नहीं सकते। इससे वे पीछे रहनेवाले आदमीकी निन्दा करते हैं और आगे बढ़ जानेवाले आदमीको पागल समझ कर दबावमें रखना चाहते हैं। परन्तु भक्तोंकी दशा तो ऐसी हो जाती है कि वे व्यवहारी आदमियोंके साथ कभी चल ही नहीं सकते। व कितने ही विषयोंमें हमेशा उनसे आगे रहते हैं और कितने ही विषयोंमें हमेशा पीछे रहते हैं।

और यह बात व्यवहारचतुर आदमियोंको नहीं रुचती। इससे उनमें कलह होनेमें शक ही क्या है? ऐसे मामले पहले जमानेमें भी जगह जगह हुए दिखाई देते हैं। परन्तु इन सब मामलोंका परिणाम अन्तमें एक ही होता है और वह यही कि सब मामलोंमें भक्तको भक्त ही जीत जाते हैं। क्योंकि उनके हृदयमें प्रभुप्रेम होता है। इससे वे प्रभुके लिये बहुत कष्ट उठा सकते हैं, प्रभुप्रेमके कारण उनका मन मजबूत बन जाता है, प्रभुप्रेमके कारण उनको विकारों का धक्का कम लगता है, प्रभुप्रेमके कारण वे बहुत छोटी २ बातोंमें मन नहीं बिगाड़ते और प्रभुप्रेमके कारण वे अपने ख्यालोंमें तथा कामोंमें इतने मस्त रहते हैं कि उनको अपने खास पासकी छोटी छोटी बातोंकी परवा नहीं होती। इससे दूसरोंके विरोधसे उलटे उनमें एक तरहका कुदरती बल आता जाता है जिससे भक्तोंका हृदय पत्थरकी दीवार सा मजबूत बन जाता है। उसपर दूसरा कोई ढेला मारे तो उनको नहीं लगता वरंच वह ढेला उस दीवारसे पीछेको छटकता है और वह फेंकनेवालेको ही लगता है। मतलब यह कि जो भक्तका अनभल करते जाते हैं उन्हींका अनभल हो जाता है और अन्तको उन्हें पछताना पड़ता है कि हम भक्तके साथ झगड़ा न करते तो अच्छा था। झगड़ा करनेसे उल्टे उनको तो लाभ हुआ पर हमारी ही खराबी हुई। इस प्रकार कितने ही आदमियोंको पीछेसे पछताना पड़ता है। इसलिये जो असलमें भक्त हो वह चाहे जिस देशका और चाहे जिस धर्मका हो परन्तु उसमें प्रभुप्रेम हो तो उसके साथ टंटा मत करना, उससे विरोध मत करना और उसके पीछे पड़कर उसमें छेड़छाड़ मत करना। क्योंकि किसी तरह उससे आप पार नहीं पावेंगे। उसके हृदयमें जो बल है वह बल आपके हृदयमें

नहीं है और उसकी मददपर जो महान् शक्ति है वह आपकी मददपर नहीं है। इसका कारण यह है कि आपमें उसके बराबर प्रभुप्रेम नहीं है। इसलिये सच्चे भक्तके सामने हमेशा झुक ही जाना और उसको खुश रखना। अगर ऐसा नहीं कीजियेगा और उसका सामना कीजियेगा तो अन्तमें आपको ही पछताना पड़ेगा। क्योंकि उसकी दीवारमें आपके ढेले घुस नहीं सकते, यह याद रखना।

४०-इन्द्रियोंकी जो स्वाभाविक इच्छाएं हैं उनको महात्मा लोग नहीं दबाते या न तोड़ते; बल्कि जो सच्ची और अच्छी हैं उनकी तरफ इन्द्रियोंको झुका देते हैं।

दुनियाके हर एक धर्ममें त्यागके विचारोंपर बहुत जोर दिया है और उसमें भी आजकलके धर्ममें तो इस बातपर खास करके जोर डाला जाता है। इससे कितने ही योग्य आदमी बिना कारण बनावटी साधु बन जाते हैं और देश पर बोझरूप हो जाते हैं। यह सब त्यागका असली स्वरूप न समझनेके कारण होता है। बेशक धर्मके विषयमें त्याग बहुत जरूरी बात है और मनुष्यजीवनमें शान्ति पानेके लिये सात्विक त्याग बहुत उत्तम है परन्तु हालके जमानेमें त्यागका स्वरूप, वैराग्यका स्वरूप और सन्तका स्वरूप बदल गया है। इससे लोग झूठे त्यागकी तरफ ढल जाते हैं। तिसपर भी कुदरतके नियमविरुद्ध त्याग वे नहीं कर सकते, इससे परिणाममें

उनकी दवटे खराबी होती है। एक ओरसे त्यागकी आज्ञा न माननेवाले तथा उसकी कीमत न समझनेवाले और भोग-विलासमें पड़े हुए लोग कहते हैं कि क्या इस जगतकी भोगने लायक चीजें मागनेके लिये नहीं हैं? क्या इन्द्रिया सुख भोगनेके लिये नहीं है? क्या भूखों मरनेके लिये और दुखी होनेके लिये यह जिन्दगी दी गयी है? क्या मौनव्रत लेनेके लिये जिन्दगी दी गयी है? क्या कपड़ा फाड़ा, लकड़ोकी खिल्ली या उंगली घुसेड़ रखनेके लिये कान दिये गये हैं? और क्या अंधेरी कोठरीमें बन्द रहनेके लिये आंखें दी गयी हैं? क्या ये सब चीजें दबा देने लायक हैं? या उनकी शक्तिया नष्ट करदेने लायक हैं? इस प्रकारके सवाल वे लोग पूछते हैं। दूसरी ओरसे शठ त्यागमें बहुत आगे बढ़े हुए मनुष्य कहते हैं कि यह जिन्दगी कुछ भोगविलासके लिये नहीं है, यह जिन्दगी ऐश आराम करनेके लिये नहीं है, यह जिन्दगी विषयोंमें गवा देनेके लिये नहीं है और यह जिन्दगी मायामें पड़े रहनेके लिये नहीं है। इसलिये जैसे बने वैसे अधिक अधिक उपवास करना चाहिये, जैसे बन वैसे बोलनेमें जीभसे बहुत कम काम लेना चाहिये, जैसे बने वैसे बहुत कम देखना चाहिये, जैसे बन वैसे बहुत कम सुनना चाहिये और जैसे बने वैसे दसों इन्द्रियोंको अच्छी तरह वशमें रखना चाहिये। इतना ही नहीं बल्कि ऐसा करना चाहिये कि जिससे सब इन्द्रियोंकी शक्तियां घटे। क्योंकि इन्द्रियोंमें बहुत जोर होनेसे उसका दुरुपयोग हुए बिना नहीं रहता। इसलिये जैसे बने वैसे इन्द्रियोंको आर तोड़ डालना चाहिये। ये लोग ऐसा कहते हैं कहते ही नहीं बल्कि कितने ही साधु तो ऐसा ही करते भी हैं। ऐसोंकी संख्या कम नहीं, बहुत अधिक है।

अब हमें क्या करना चाहिये ? क्योंकि ये दोनों बातें एक दूसरेसे विरुद्ध हैं मगर दोनोंमें कुछ कुछ सचाई भी जान पड़ती है। तब हमारा कर्त्तव्य क्या है ? इसके जवाबमें महात्मा लोग तथा शास्त्र कहते हैं कि इन्द्रियोंकी जो स्वाभाविक इच्छाएं हैं वे दबा देने या तोड़ डालने लायक होतीं तो उनमें इतना बड़ा बल नहीं होता, अगर वे इच्छाएं तोड़ डालने लायक होतीं तो वे बहुत समय तक टिक नहीं सकतीं और अगर वे इच्छाएं बिना जरूरत की होतीं तो प्रभु उनको पैदा नहीं करता। आजकल अधूरे और अज्ञान त्यागी जैसी समझते हैं वैसी इन्द्रियोंकी स्वाभाविक इच्छाएं कमजोर नहीं हैं और न जैसा वे समझते हैं वैसी खराब हैं। इसी प्रकार, जैसा कि शौकीन लोग समझते हैं, सिर्फ दुःखभरे हुए थोड़ी देरके सुखके लिये ही इन्द्रियोंकी कुदरती शक्ति नहीं है। बीच इन दोनों किनारोंके बीचका जो तत्त्व है वह समझने योग्य है। और वह यह है कि जो सच्चे ज्ञानी महात्मा हैं वे इन्द्रियोंकी इच्छाओंको दबाते नहीं और न तोड़ते बल्कि जो सच्ची हैं और अच्छी हैं उनकी तरफ इन्द्रियोंको झुका देते हैं। जैसे—

सच्चे ज्ञानी हठ करके बाहरी मौनव्रत नहीं लेते, बल्कि वे जहांतक बनता है अपनी वाणीका अच्छा उपयोग करते हैं, अपने शब्दोंको व्यर्थ न जाने देनेका ख्याल रखते हैं। जहां दूसरे लोग सौ शब्द कह देते हैं वहां वे दस शब्दोंमें अपना सब विचार कह डालते हैं और दूसरे लोग सौ शब्द कहकर भी जितना असर नहीं डाल सकते वे उतना दस शब्दोंसे डाल सकते हैं। दूसरे अपनी वाणीको काममें लाते समय वे इस बातका भी ख्याल रखते हैं कि अपने अभिमानके लिये नहीं बोलना चाहिये, अपने मतलबके

लिये ही नहीं बोलना चाहिये, किसीको दुखी करनेके इरादेसे नहीं बोलना चाहिये और जहां चीनी दी जा सकती हो वहां मिर्चे देनेकी बात न करनी चाहिये। इतना ही नहीं बल्कि जो शब्द बोलना पड़े उसे भी प्रभुके लिये ही बोलना चाहिये, अपने भाइयोंका भला हो तथा किसी आदमीको आगे बढ़नेका रास्ता मिले इसके लिये ही बोलना चाहिये, अपने अनुभवका लाभ दूसरोंके देनेके लिये ही बोलना चाहिये और अपना फर्ज पूरा करने तथा उन्नतिके रास्तेमें आगे बढ़नेके लिये ही बोलना चाहिये ऐसा समझकर वे बोलते हैं और इन सब नियमोंको अपने हृदयमें ठहराकर उनपर लक्ष्य रखते हुए वे भीतरसे बाहरको शब्द निकालते हैं। इससे उनके शब्द हृदयको छूमने वाले होते हैं, उनके शब्द रसभरे होते हैं, उनके शब्द मिठासभरे होते हैं और उनके शब्दोंमें कुछ ऐसा जादू होता है कि वे हंसते हंसते, खेलते खेलते, नाचते नाचते, कूदते कूदते और खूबसूरतीके साथ सुनने वाले आदमीके दिलपर बैठ जाते हैं। इससे उनको वे शब्द भारी नहीं लगते, अखरते नहीं, न होने लायक नहीं मालूम देते और सिर्फ पण्डिताई दिखाने वाले फर्कदा नहीं लगते बल्कि वे पसन्द आते हैं, समझमें आते हैं और उनको गांठमें बांध रखनेकी स्वाभाविक इच्छा होती है। इससे ज्ञानियोंकी वाणी उनका, अपना तथा दूसरोंका भी कल्याण करती है और ऐसे योग्य समय पर तथा योग्य स्थानपर योग्य शब्दमें घरती हुई वाणी प्रभुको भी प्यारी लगती है। इस किस्मकी वाणीसे भी महात्मा अपना तथा दूसरोंका बहुत कुछ भला कर सकते हैं। इसलिये महात्मा लोग समझते हैं कि प्रभुकी कृपा करके दी हुई अमूल्य वाणी फेंक देने या नष्ट

कर देने लायक नहीं है और न उसको एकदम दबा देने या कुचल डालनेकी जरूरत है बल्कि उसका सदुपयोग करनेकी जरूरत है और उसे अच्छे रास्ते चलानेकी जरूरत है। ऐसा करना आवे तो वाणीसे भी कल्याण किया जा सकता है।

महात्मा लोग जहां वाणीका इस प्रकार सदुपयोग करते हैं वहां ऊपरसे बने हुए अधूरे त्यागी तथा अंध श्रद्धावाले त्यागी वाणीको कुचल डालनेकी कोशिश करते हैं। पर कुदरती वाणीमें ऐसा अलौकिक बल होता है कि वे उसको कुचल नहीं सकते या नाबूद नहीं कर सकते। इससे वे दुराग्रह करके बाहरी मौनव्रत लेते हैं और जो बात कहनेकी जरूरत है उसे भी नहीं कहते। अपने हृदयमें जो उत्तम भाव आता है तथा जो कुदरती प्रेरणा होती है उसको भी वे दबा देते हैं और जहांपर वे अच्छी तरह यह समझते हैं कि इस आदमीको इस तरह समझानेसे इसके हकमें फायदा हो सकता है वहां भी वे गूंगे बने रहते हैं। इससे आदमीका नुकसान होता है और यह नुकसान वे बैठे बैठे देखा करते हैं तथा दूसरोंको इशारेसे समझाते हैं कि "मैं यह बात जानता था पर मौनव्रतके कारण मैं बोल नहीं सकता इससे लाचारी है।" इस प्रकार सिर्फ झूठे हठके लिये, झूठे त्यागके लिये वाणीसे भला करनेका हाथमें आया हुआ मौका वे गंवा देते हैं और तो भी अपने मनमें यह समझा करते हैं कि हमने जो वाणीका त्याग किया है यह बहुत बड़ा काम किया है। ऐसा त्याग सबसे नहीं होता पर हमपर प्रभुकी कृपा है इससे हमसे ही ऐसा त्याग हो सकता है। इस प्रकार वे एक तरफ कुदरतकी अनुपम वाणी रूपी भक्तिको दबाते हैं और दूसरी तरफ उसको सदुपयोगसे रोकते हैं और तो भी मनमें फूला करते हैं कि हमने बहुत बड़ा त्याग किया है। परन्तु यहांपर विचार

करना चाहिये कि वन्य त्याग करना क्या प्रभुकी इच्छा है ? ऐसा त्याग करनेमें क्या कल्याण है ? और क्या ऐसा व्यर्थ त्याग करनेके लिये हमें अनुपम वाणी तथा कीमती जिन्दगी दी गयी है ? नहीं, कभी नहीं। तिसपर भी अफसोस है कि दुनियाके बहुतेरे आदमी बाहरके अधूरे तथा खोटे त्यागमें ही रह जाते हैं। इससे वचनोंका ख्याल रखना।

अब यह देखना चाहिये व्यवहारी साधारण आदमी वाणीका किस तरह उपयोग करते हैं। वे जहां एक शब्द बोलनेकी जरूरत है वहां दस शब्द बोल जाते हैं जहां नरम शब्दोंसे चल सकता है वहां भी वे कड़े शब्द बोल देते हैं, जहां प्रेमके शब्दोंकी जरूरत होती है वहां शोषक शब्द बोल देते हैं, जहां शान्ति देनेकी जरूरत होती है वहां अफसोस बढ़ानेवाले वचन बोल देते हैं, जहां पासीसे चल सकता है वहां दूध ढरका देते हैं, जहां जरा सी तारीफ कर देनेकी जरूरत होती है वहां भी तिरस्कारक वचन बोल देते हैं, जहां जरा चार शब्दोंकी जरूरत होती है वहां भी चापलूसीके शब्द बोलते हैं और खुशामद किया करते हैं जहां कुछ भी कहनेकी जरूरत नहीं होती वहां भी वाद विवाद कर बैठते हैं, जहां अपने शब्दोंका वजन नहीं पड़ता वहां भी बोल देते हैं, जहां बोलनेकी खास जरूरत होती है वहां भी शरमके मारे या डरके मारे नहीं बोल सकते, जहां दो एक बूंद आँसू गिरा देनेका मौका है वहां बेहद विलाप करके रोया करते हैं; जहां नरम उलहनेसे चल सकता है वहां भी वे भारी तकरार कर बैठते हैं और जहां कोमल शब्दोंकी तथा सहानुभूति दिखानेकी जरूरत होती है वहाँ भी वे ऊटपटांग बक देते हैं। इससे वे लोगोंके मनसे उतर जाते हैं इससे उनकी वाणी उनको बन्धनमें डालनेवाली बन जाती है

और इससे उनकी वाणी उनको हैरान करनेवाली तथा अपयश दिलाने वाली हो जाती है। फिर वह वाणीकी शिकायत किया करते हैं और जीभसे कितनी बड़ी खराबी होती है इसका रोना रोते हैं! परन्तु अपनी भूलके कारण सारी खराबी होती है अपनी अज्ञानताके कारण खराबी होती है और वे अपनी महत्ता नहीं समझते तथा सामनेके आदमीकी दशा नहीं समझते इसके कारण नुकसान होता है। कुछ परमात्माकी दी हुई निर्दोष वाणीमें खराबी नहीं है और न वाणी उनका नुकसान करती है, बल्कि वाणीका उपयोग करना उन्हें नहीं आता इससे खराबी होती है। इसलिये इसमें वाणीका कुछ दोष नहीं है बल्कि वाणीसे काम लेनेका दोष है। तिसपर भी मनुष्य इतने नादान हैं कि आप अपना दोष नहीं समझते और न यह समझते कि हममें कम ज्ञान है, हम वाणीका बल नहीं जानते और हमें वाणीसे काम लेना नहीं आता। यह कहने तथा यह समझनेके बदले वे बेचारी निर्दोष वाणीका दोष निकाला करते हैं। परन्तु आजसे अच्छी तरह समझ लीजिये कि प्रभुने जो जो इन्द्रियां तथा उनकी शक्तियां दी हैं उन्हें हमको दुःख देने या पीछे हटानेके लिये नहीं दिया है, बल्कि आगे बढ़ानेके लिये तथा हमारे कल्याणके लिये ही दिया है। इसलिये किसी इन्द्रियकी स्वाभाविक शक्तिको दबा देना या कुचाल डालना नहीं चाहिये, बल्कि ऐसा करना चाहिये कि उसका सदुपयोग हो और वह सच्चे रास्ते चले।

जैसे वाणीके विषयमें जान लिया वैसे ही सब इन्द्रियोंके बारेमें समझ लेना और उनका सदुपयोग करना। यही हमारी सब भाई बहनोंसे प्रार्थना है। क्योंकि हम प्रभुकी दी हुई कुदरती इन्द्रियोंकी कुदरती शक्तियोंका नाश नहीं कर सकते। चाहे कुछ समय जोर जुल्म करके हम उनके बाहरी रूपको भले ही

दबा दें पर उनकी जो स्वभाविक इच्छाएं हैं उनको तथा उनकी वासनाओंको निकाल नहीं सकते। इसलिये ईश्वरकी दी हुई इंद्रियों-की शक्तियोंका नाश करने या उन्हें दबादेने, तोड़देने या कुचल डालनेका विचार नहीं रखना चाहिये, बल्कि उनके अन्दर अपनी अज्ञानताके कारण हमारी कल्पनाओंकी जो सृष्टि घुस गयी है उसका नाश करना चाहिये, उनके अन्दर जो हमारी अज्ञानता भर गयी है उसको निकाल डालनेकी मिहनत करनी चाहिये और हमारी इन्द्रियोंके अन्दर हमारे मनकी जो कम जोरियां घुस गयी है उन्हें दूर करनेकी यथा शक्ति चेष्टा करनी चाहिये। ऐसा करना कुछ बुरा नहीं, बल्कि ऐसा करनेकी खास जरूरत है और यह शास्त्रोंकी आज्ञा है। प्रभु की दी हुई इन्द्रियोंके स्वाभाविक बलको दबाना या तोड़ना हमारा काम नहीं है और ऐसा करनेकी कुछ जरूरत भी नहीं है और न हजार हट करने पर भी ऐसा हो सकता है। बहुत हो तो आखें फोड़ दी जा सकती है पर अन्त करणमें देखनेकी जो इच्छा है वह नष्ट नहीं की जा सकती। इसी प्रकार बहुत बहुत उपवास किया जा सकता है पर हृदयमें जो रस भोगनेकी इच्छा मौजूद है वह मारी नहीं जा सकती, मारनेसे मर नहीं सकती। क्योंकि वह जीवके साथ जड़ी, हुई जीवका भाग बढ़ाने वाली कुदरती इच्छा है। इसलिये इन्द्रियोंका नाश करने या उनका एकदम रोक देनेका उपाय मत कीजिये बल्कि ऐसा कीजिये कि इन्द्रियोंकी कुदरती शक्तिका सदुपयोग हो। उसे अच्छे मार्ग पर लेजाइये और उसमें जो अपनी कल्पना मिल गयी है तथा अपने मनकी कमजोरी जम गयी है उसको निकालिये। इससे इन्द्रियोंकी मदद से और आगे बढ़ सकेंगे और बहुत आसानीसे कल्याणके रास्तेमें आ सकेंगे। इसलिये इन्द्रियोंको सच्चे रास्तेमें चलानेकी कोशिश कीजिये।

४१–धर्ममें आगे बढ़नेके तीन साधन हैं; समय, पैसा और बुद्धि। ये तीनों चीजें अगर सोच विचार कर काममें लायी जायं तो धर्मके रास्तेमें तेजीसे आगे बढ़ सकते हैं।

बहुत आदमियोंकी यह इच्छा होती है कि धर्मके रास्तेमें आगे बढ़ें। इसके लिये वे कितने ही उपाय करते हैं। पर तो भी हम देखते हैं कि बहुत थोड़े आदमी सच्चे भक्त हो सकते हैं, बाकी सब टीमटाममें, आडम्बरमें, दिखावेमें और पोलमें ही रह जाते हैं। क्योंकि धर्मकी जिन्दगी बितानेके लिये और हरिजन होनेके लिये क्या क्या करना चाहिये इसकी असली कुंजियोंको बहुत आदमी नहीं जानते और कितने ही आदमी ऐसे भी होते हैं जो धर्मकी कुंजियां जानते तो हैं पर उनसे काम नहीं लेते इससे उनका ज्ञान सिर्फ शब्दोंमें रह जाता है। तीसरी श्रेणीके बहुत आदमी ऐसे हैं जो थोड़ा बहुत समझते हैं, कुछ कुछ करते भी हैं, पर सब नहीं करते। वे एकाध अंगमें मजबूत होते हैं पर दूसरे अंगोंमें पोल होती है इससे उनका बहुत फायदा नहीं होता। अब हमें यह जानना चाहिये कि हरिजन होनेके लिये और प्रभुके रास्तेमें तेजीसे आगे बढ़नेके लिये क्या क्या करना चाहिये। क्योंकि अगर हमें लेना आवे तो महात्माओंकी तथा शास्त्रोंकी मदद हमेशा तय्यार ही रहती है। पर अपनी तरफसे जो चीज चाहिये उसीमें कचाई होती है। जैसे-वक्त, पैसा और बुद्धि इन तीन चीजोंकी जरूरत है। ये तीन चीजें ठीक ठीक हों और उनसे ठीक ठीक काम लेना आवे तो धर्मके रास्तेमें

बहुत तेजीसे आगे बढ़ा जा सकता है। परन्तु बहुत आदमी ऐसे होते हैं जो धर्मकी क्रियाओंमें वक्त खर्चते हैं मगर पैसा खर्चने तथा बुद्धि बल लगानेके विषयमें ढीले होते हैं। इस श्रेणीमें साधु, धर्मगुरु, विधवा स्त्रियां तथा कुछ धर्मान्ध दिलदार आदमी होते हैं। कुछ आदमी ऐसे होते हैं जो धर्मके काममें खूब पैसा खर्च सकते हैं पर वक्त नहीं लगा सकते। इस श्रेणीमें कुछ धनवान, राजा, हाकिम तथा सद्‌गृहस्थ होते हैं। और बहुत आदमी ऐसे होते हैं जिनमें बुद्धि बहुत होती है इससे वे धर्मके हर एक विषयका रहस्य और उसका मर्म समझ सकते हैं पर तो भी उसमें अपना वक्त नहीं लगाते और न पैसा खर्चते हैं। ऐसी पोलवाले बहुतसे पण्डित, कथा बाचनेवाले, पौराणिक और विद्वान होते हैं। वे धर्मकी बारीकियों और खूबियोंको समझते हैं तो भी आप अपना पैसा या वक्त उसमें नहीं लगाते।

इस प्रकार हर एक आदमी धर्मके मुख्य तीन फर्जोंमेंसे एकाध फर्ज लेकर बैठ जाता है और उसीमें सन्तोष कर लेता है तथा यह समझता है कि हमसे इतना होता है यह भी बहुत है। दूसरे इतना भी कहां करते हैं? ऐसे विचारोंमें रहनेके कारण बहुत आदमी धर्मके विषयमें आगे नहीं बढ़ सकते, बल्कि वहीं जहांके तहां पड़े रहते हैं और तो भी अपने मनमें फूला करते हैं कि हम बहुत करते हैं। ऐसी भूलके कारण ही आदमी पीछे रह जाते हैं।

कितनी ही बार और कितनी ही जगह ऐसा भी होता है कि वक्त, पैसा तथा बुद्धि—इन तीन चीजोंकी बखशिश एक साथ नहीं मिली रहती। जैसे—बहुत आदमी बुद्धिमान होते हैं और वक्त भी लगा सकते हैं पर उनके पास काफी पैसा नहीं होता। इसी तरह कितने ही आदमी ऐसे होते हैं जिनमें बुद्धि

होती है और पैसा भी होता है परन्तु उनके कुदरती संयोग ऐसे होते हैं कि उनको वक्त नहीं मिलता। इस प्रकार जुदे जुदे आदमियोंको जुदे जुदे ढङ्गकी सची अड़चल होती है। इससे उन्हें जिस बातकी अड़चल होती है उसमें वे पीछे रह जाते हैं। पर इसमें उनका बहुत दोष नहीं होता। क्योंकि उनके आस-पासके सयोग ही ऐसे होते हैं; इससे जिनके पास कुदरती तौरपर कम सामान हो और वे आदमी अधिक सामानवालोंके बराबर धर्म न कर सकें तो इसमें कुछ आश्चर्य नहीं है। इतना ही नहीं बल्कि वे थोड़ा करें तो भी प्रभु उसको बहुत मान लेता है। क्योंकि इसमें खास उनका कुछ दोष नहीं होता। इससे वक्त, पैसा और बुद्धिमेंसे जो बात अपनेमें कुदरती तौर पर कम हो और वह कम खर्ची जाय तो भी चल सकता है। परन्तु इन तीनोंमें से जो चीज अपने पास अधिक हो उससे खूब अधिक काम लेना चाहिये। यह फर्ज है और यह फर्ज पूरा करनेसे ही आगे बढा जा सकता है।

इस हिसाबसे दो तरहके आदमी हैं। एक तरहके आदमी ऐसे हैं जो अपने पास सामान होने पर भी उससे काम नहीं लेते और दूसरी तरहके आदमी ऐसे हैं जिनके पास पूरा सामान नहीं होता इससे वे उससे ठीक ठीक फायदा नहीं उठा सकते। इन दोनों तरहके आदमियोंमें जो सामग्री कम होनेसे उस विषयमें कुछ नहीं कर सकते वे दयाके पात्र हैं। इसलिये उनका कसूर आसानीसे माफ हो सकेगा। पर जिनके पास काफी सामान है और फिर भी वे उससे लाभ नहीं उठाते उनको सख्त सजा भोगनी पड़ेगी। इसलिये अगर मानसिक सजा तथा कुदरतकी अदृश्य सजासे बचना हो तो प्रभुके लिये परमार्थ करनेमें जैसे बने वैसे उस सामग्रीका सदुपयोग कीजिये और

उससे लाभ उठाइये। इससे धर्मके रास्तेमें बहुत तेजीसे आगे बढ़ सकेंगे।

भाइयो और बहनो! इस दृष्टान्तके साथ ही साथ यह बात भी समझ लेना कि प्रभुके रास्तेमें आगे बढ़नेके लिये हमें अपनी तरफसे भी तीन चीजें दरकार हैं वक्त, पैसा और बुद्धि। इनकी मदद बिना हम आगे नहीं बढ़ सकते। इससे इन तीनोंको हासिल करना भी धर्मका बड़ेसे बड़ा तथा बहुत जरूरी फर्ज है। यह बात ध्यानमें रखना। क्योंकि हममेंसे बहुतेरे आदमी वक्त बचाने तथा लम्बी जिन्दगी भोगनेकी तरफसे बहुत ही बेपरवा होते हैं, इसको वे धर्मका काम नहीं समझते। पर महात्मा कहते हैं कि समय धर्मका अंग है, जो आदमी हमेशा रोगी रहते हैं, कमजोर रहते हैं तथा थोड़ी उमर पा कर बहुत जल्द मर जाते हैं वे धर्म क्योंकर पाल सकते हैं? इसलिये धर्म पालनेमें वक्तकी भी विशेष जरूरत है और वक्त जिन्दगी है। इसलिये जिन्दगी बढ़ाना तथा शरीरको आरोग्य रखना भी धर्मका काम है।

दूसरे, यह बात भी ध्यानमें रखने लायक है कि "पैसेसे नरकमें जाना पड़ता है, पैसेसे मोह पैदा होता है, पैसेको तो त्याग ही करना चाहिये और पैसे पैदा करनेकी भी जरूरत नहीं है" इस प्रकारके विचार त्यागके नामपर लोगोंमें फैल गये हैं और घर कर गये हैं। इससे हम धर्मके रास्तेमें या लोकव्यवहारमें आगे नहीं बढ़ सकते। हर एक आदमीको यह समझना चाहिये कि पैसा पैदा करना और उसको प्रभुके लिये अच्छे कामोंमें खर्चना भी धर्मका एक बड़ेसे बड़ा काम है। इसलिये पैसा पैदा करनेके लिये जहां तक बने उचित प्रयत्न करना चाहिये। क्योंकि पैसेकी मददसे भी धर्मके रास्तेमें बहुत तेजीसे आगे बढ़ा जा सकता

है। इसलिये हर एक आदमीको पैसा कमानेका खास ख्याल रखना चाहिये। क्योंकि खुद पैसा कुछ खराब चीज नहीं है, बल्कि यह तो लक्ष्मी है, भगवानका आधा अङ्ग है। जब ऐश्वर्य बिना खुद ईश्वर भी नहीं रह सकता तब मनुष्यकी क्या बिसात है कि लक्ष्मीकी मदद बिना जी सके? किसी न किसी रूपमें आदमीको लक्ष्मीकी मददकी तो जरूरत है ही; इसलिये उसे हासिल करनेकी वाजिब कोशिश हर एकको करनी चाहिये। क्योंकि यह भी भगवानका अंग है और धर्मके रास्तेमें आगे बढ़ानेवाला है। इसलिये पैसा पैदा करना भी धर्मका काम है यह समझ कर पैसा कमाना चाहिये। इसमें सम्हाल इतनी ही रखनी चाहिये कि उसका मोह न हो जाय तथा उसके मोहमें दूसरी चीजोंका होश न भूल जाय। इतना ही ख्याल रखना है।

धर्मके लिये वक्त और पैसा हासिल करनेकी जितनी जरूरत है उससे कहीं अधिक जरूरत ज्ञान हासिल करनेकी है। क्योंकि अगर बुद्धि हो तो वक्त भी मिल सकता है और पैसा भी मिल सकता है। तथा इन दोनोंका सदुपयोग भी बुद्धिके बलसे हो सकता है। इसलिये बुद्धिकी सबसे अधिक जरूरत है। इसीसे पहलेके पवित्र ऋषि प्रातःकाल उठ कर गायत्री मंत्र द्वारा पहले यही प्रार्थना करते थे कि "हे प्रभु! तू हमें सद्बुद्धि दे।" इसके बदले आजकल हम ज्ञान प्राप्त करनेके विषयमें एकदम बेपरवा बन गये हैं और बहुत आदमी तो यह समझते हैं कि धर्म करनेके लिये पढ़नेकी क्या जरूरत है! ऐसे ही विचारोंके कारण हमारे देशके अनेक पवित्र मन्दिरोंमें काला अक्षर भैंस बराबर समझनेवाले मूर्ख भरती हो गये हैं जिनके आचरण देख कर अच्छे लोगोंको अफसोस होता है। और अंगरेजीदां जवानोंका धर्मप्रेम घटता जाता है। ऐसा न होने देनेके लिये धर्मके

हर एक काममें और खास करके मन्दिरोंमें बुद्धिमान मनुष्योंकी जरूरत है। जैसे धर्मके मन्दिरोंमें अज्ञानी घुस गये हैं वैसे ही जो भीख मांगनेवाले साधु होते हैं और अपनेको धर्मात्मा समझते हैं उनका बहुत बड़ा भाग भी धर्मके रहस्य समझनेके विषयमें बिल्कुल बेखबर होता है। इससे वे धर्मको और प्रभुको धोखा देते हैं तथा वक्त और पैसेका उचित उपयोग नहीं कर सकते या न ठीक ठीक ये दोनों चीजें हासिल ही कर सकते हैं। सो व्यवहारके लिये न सही पर धर्मके लिये भी हर एक आदमीको खास कर ज्ञान प्राप्त करना ही चाहिये। क्योंकि प्रभुके रास्तेमें आगे बढ़नेका यह एक मुख्य साधन है।

सारांश यह कि आदमी वक्त, पैसा और बुद्धि इन तीनों चीजोंका उपयोग विचार विचारकर करे तभी वह सच्चा भक्त हो सकता है और तभी ईश्वरी रास्तेमें आगे बढ़ सकता है। ऐसा कीजिये कि जिससे ये तीनों चीजें न्यायके रास्तेमें मिलें तथा उनका परम कृपालु परमात्माके लिये सदुपयोग हो।

४२–अपनी प्रार्थनाएं सफल करनेके उपाय।

मनुष्यकी जिन्दगी अपूर्णतावाली है। इससे उसको पूर्ण करनेके लिये बहुतसे साधनोंकी मददगारीकी जरूरत पड़ती है। क्योंकि मनुष्य जब पूर्ण होता है तभी उसका मोक्ष होता है। जबतक पूर्ण न हो तब तक उसका मोक्ष नहीं हो सकता। इसलिये पूर्णता प्राप्त करनेकी जरूरत है और पूर्णता पानेकेलिये आस पासके अच्छे साधनोंकी मदद दरकार है।

ऐसे साधनोंमें प्रभुकी प्रार्थना करना और उसकी मदद मांगना बहुत उत्तम है। क्योंकि जिसको इस तरह मदद मांगना आता है और जिसको इस तरह कुदरती मदद मिलती है उसका बल बहुत बढ़ जाता है, उसका विश्वास बहुत बढ़ जाता है, उसका ज्ञान बहुत बढ़ जाता है और उसका स्नेह बहुत बढ़ जाता है। वह समझता है कि मेरे ऊपर प्रभुकी कृपा है। इस विश्वासके कारण उसमें नया बल आ जाता है। इस बलके कारण दूसरे हजारों आदमियोंसे वह कुछ निराला हो जाता है। क्योंकि उसकी मस्ती कुछ और ही तरहकी होती है और वह एक अजब किस्मकी खुमारीमें रहता है। इतना ही नहीं बल्कि बाहरसे देखनेवालोंको ऐसा मालूम होता है कि यह कुछ नहीं करता तिसपरभी इसकेपास यह सब कैसे चला आता है! यह देखकर उनको आश्चर्य होता है। और जिस भक्तकी प्रार्थना मंज़ूर होती है वह भक्त भी खुद आश्चर्य करता है कि प्रभुकी दया देखो! ऐसा होनेसे उसमें धर्मका जोर बढ़ जाता है तथा उसकेआस पासके लोगोंमें भी उसके असरसे बल बढ़ जाता है। यह देखकर दूसरे कितने ही आदमियोंपर उसका बहुत अच्छा असर होता है। इसलिये हमें ऐसा उपाय करना चाहिये कि जिससे हमारी प्रार्थनाएं मंज़ूर हों।

आगे बढ़नेके लिये अनेक चीजोंकी जरूरत पड़ती है। इससे उन्हें पानेके लिये आदमी प्रार्थना किया करते हैं। परन्तु उनमेंसे बहुत थोड़े आदमियोंकी प्रार्थना सफल होती है; बाकी सब निराश ही रहते हैं। क्योंकि वे प्रार्थना सफल करनेके उपाय नहीं जानते, इससे वे अधिक फायदा नहीं उठा सकते। इसलिये प्रार्थना सफल होनेके सहजसे सहज उपाय जान लेना चाहिये। इसके लिये जिनकी प्रार्थनाएं बारंबार सफल हुई हैं

वे अनुभवी भक्त कहते हैं कि—

(१) हर एक किस्मके बड़े पापोंसे बचाना चाहिये । चोरी, व्यभिचार, झूठ बोलना, हिंसा करना, विश्वासघात करना इत्यादि बड़े पापोंसे बचना चाहिये । छोटे छोटे पापोंसे बच सकें तो और भी उत्तम बात है । परन्तु शुरूमें इतना अधिक नहीं हो सकता, इसलिये पहले बड़े बड़े पापोंसे बचें तो भी बहुत अच्छा है और इतनेसे भी प्रभु तुरत प्रसन्न होता है । इसलिये अगर प्रार्थना मंजूर करानी हो तो पहले बड़े बड़े पापोंसे बचना चाहिये ।

(२) प्रभुके गुणोंपर पूरा पूरा विश्वास रखना । जैसे-यह भरोसा रखना चाहिये कि प्रभु दयालु है इसलिये वह हमपर दया करेगा ही; प्रभु माफ करनेवाला है इसलिये वह हमारे पापकी माफी देगा ही; प्रभु पालन कर्त्ता है, इसलिये वह हमारा पालन करेगा ही; प्रभु रक्षाकर्त्ता है इस लिये वह हमारी रक्षा करेगा ही; प्रभु अनाथका नाथ है और हम अनाथ हैं इसलिये वह हमारा नाथ होगा ही; प्रभु सर्वव्यापक है, इसलिये वह यहां भी है, हमारे हृदयमें भी है और हमारी प्रार्थनामें है, है और है; प्रभु सर्वज्ञ है, इससे वह हमारी जरूरतोंको जानता है; प्रभु भक्तोंका कल्पतरु है और हम भी भक्त होना चाहते हैं इसलिये वह हमारी मदद करेगा ही और प्रभु सर्वशक्तिमान है इससे जहां किसी तरहका कुछ भी साधन न दिखाई देता हो वहां भी वह मदद पहुंचा सकता है इसलिये वह हमारी मदद करेगा ही । इस प्रकार प्रभुके गुणोंका विचार करने और उसमें विश्वास रखनेसे प्रार्थना मंजूर होती है ।

(३) प्रभुकी इच्छानुसार मांगना अर्थात् निःस्वार्थभाव रखना, अपनी इच्छानुसार न मांगना । क्योंकि हमारी इच्छाएं

मइचल भरी होती हैं, हमारी इच्छाएं बहुत छोटी छोटी होती हैं, हमारी इच्छाएं अधूरी होती हैं, हमारी इच्छाएं दूसरी इच्छाओंके साथ संडमंड हुई रहती हैं, हमारी इच्छाएं क्षण भरमें बदल जानेवाली होती हैं, हमारी इच्छाएं मोहभरी होती हैं और हमारी इच्छाएं कभी कभी हमारी ही बुराई करनेवाली होती हैं। इसलिये अपनी इच्छानुसार न मांगना। बल्कि ऐसी प्रार्थना करनी चाहिये कि अगर हमारी यह प्रार्थना तुझे वाजिब लगे तो उसे मंजूर कर; हमारी प्रार्थना अगर तेरी इच्छानुसार हो तो उसे तू मंजूर कर और हमारी प्रार्थना हमारा कल्याण करनेवाली हो तब तो तू उसे स्वीकार कर। पर अगर हमसे कुछ भूल होती हो तो ऐसी भूलभरी प्रार्थना तू स्वीकार मत करना। इस तरहकी भावना रख कर प्रार्थना करनी चाहिये और उसमें खासकर यह बात आनी चाहिये कि तेरी इच्छानुसार हो। क्योंकि प्रभु जैसा महान है वैसी ही बड़ी उसकी इच्छाएं भी हैं, प्रभु जैसा दयाका सागर है वैसी ही उसकी इच्छाएं भी बड़ी दयावाली हैं, प्रभु जैसा आनन्दस्वरूप है, वैसी ही उसकी इच्छाएं भी आनन्द देनेवाली हैं, प्रभु जैसा पवित्र है उसकी इच्छाएं भी वैसी ही पवित्र होती हैं, प्रभु जैसा प्रेमस्वरूप है उसकी इच्छाएं भी वैसी ही प्रेममें पगी हुई होती हैं, प्रभु जैसा उदार है उसकी इच्छाएं भी वैसी ही उदार होती हैं, प्रभु जैसा अभेद भाववाला है उसकी इच्छाएं भी वैसी ही अभेद भाववाली होती हैं और प्रभु जैसा ज्ञानस्वरूप है उसकी इच्छाएं भी वैसी ही ऊंची श्रेणीकी ज्ञानवाली हैं। इसलिये प्रभुकी इच्छापर लगाम छोड़ देनेमें और उसकी इच्छामें अपनी इच्छा मिला देनेमें ही हमारा कल्याण है। अगर ऐसी निस्पृहता रखना आवे और उसकी इच्छानुसार ही मांगें तो वे प्रार्थनाएं बहुत

आसानीसे और तुरत ही मंजूर होती है।

(४) शास्त्रकी मार्फत परम कृपालु परमात्माने जो जो वचन दिये हैं उनपर विश्वास रखना। ऐसा विश्वास रखना आवे तो हमारी प्रार्थनाएं तुरत ही मंजूर होती हैं। जैसे श्रीमद्भगवद्गीतामें प्रभुने कहा है कि

न मे भक्तःप्रणश्यति।

मेरे भक्तका नाश नहीं होता। दूसरे उसने यह कौल किया है कि मेरे भक्तोंको जिन चीजोंकी जरूरत होती है मैं उनको वे चीजें जुटा देता हूं और उनकी जो चीज रक्षा करने लायक होती है उसकी रक्षा करता हूं। तीसरा कौल उसका यह है कि अगर तू मुझे भक्तिपूर्वक पत्ता, फल, फूल या पानी देगा तो उसे भी मैं प्रेमसे स्वीकार करूंगा। चौथा कौल उसने यह किया है कि मैं जाति पांति नहीं देखता। कोई स्त्री, वैश्या, शूद्र या पापी भी मेरा आसरा रखे तो वह उत्तम गति पाता है। पांचवें उसने यह कहा है कि दुराचारी आदमी भी मुझे भजे तो वह तुरत ही पवित्र हो जाता है। छठा कौल उसका यह है कि तू मुझे प्यारा है इस लिये प्रतिज्ञा पूर्वक सत्य कहता हूं कि अगर तू मेरा भक्त होगा और मेरा कहना मानेगा तो तू मुझे ही पावेगा। उसने सातवां कौल यह किया है कि अगर तू सब कर्म त्यागकर केवल मेरी शरण लेगा तो मैं तुझे सब पापोंसे मुक्त कर दूंगा; तू शोक मत कर। इस प्रकार सैकड़ों वादे उसने हम लोगोंसे दया करके किये हैं। अगर इन वादोंपर पूरा पूरा विश्वास रखा जाय तो इससे भी हमारी जिन्दगी सुधर जाती है और ऐसी बदल जाती है मानो हमारा नया जन्म हुआ। विचार तो कीजिये कि जहां इतना हो सकता है वहां फिर प्रार्थना मंजूर होनेमें क्या देर है? देखो, इसमें

तो तुरत ही प्रार्थना मंजूर होती है । इसलिये प्रभुके वचनोंपर विश्वास रखिये। यह भी प्रार्थना सफल करनेका मुख्य उपाय है।

(५) अपनी जो जो प्रार्थनाएं हों उनको वारंवार करना, उनमें हृदयसे, प्रेमसे तथा उत्साहसे लगे रहना और फिर प्रार्थनाओंके सफल होनेके लिये धीरजसे वाट देखना। इससे सफलता मिलती है। परन्तु बहुतेरे भक्त धीरज नहीं रख सकते और कितने ही भक्त वारंवार अपनी अर्ज नहीं सुनाया करते, इससे उनकी प्रार्थना सफल नहीं होती। क्योंकि जब अपनी अर्ज के लिये अपने ही जीमें ध्यान न हो तो यह लापरवाही कहलाती है और जिस विषयमें अपनी ही लापरवाही है उसपर प्रभु क्यों ध्यान दे? इसलिये अपनी प्रार्थनाएं वारंवार करनेमें हमें ढिलाई न करनी चाहिये। बल्कि जैसे बने वैसे उत्साहपूर्वक वारंवार जरूरतकी प्रार्थनाएं करते रहना चाहिये।

प्रार्थनाका जवाब मिलनेमें देर लगे तो धीरज मत खो देना। क्योंकि अक्सर ऐसा होता है कि जो काम करनेको हमारी इच्छा होती है उसका समय आया नहीं होता, इससे उस प्रार्थनाके मंजूर होनेमें देर लगती है। दूसरे, प्रार्थनाके जवाबके लिये उतावला बननेसे मन चंचल हो जाता है और तर्क वितर्कके प्रदेशमें दौड़ने लगता है, इससे उल्टे नीचेको लुढ़कना होता है। इसलिये प्रार्थना मंजूर करानेमें उतावला मत होना बल्कि खूब धीरज धर कर तथा सच्ची शान्ति रख कर उसका रास्ता देखना। तब समय आने पर आपसे आप प्रार्थनाएं मंजूर होती हैं।

भाइयो! ऊपर लिखे पांच अंगोंमेंसे अगर एक भी अंग ठीक ठीक पाला जाय तो तुरत ही प्रार्थना मंजूर होती है। जो भाग्यशाली भक्त इन पांचों विषयोंका ध्यान रखे उसकी प्रार्थना मंजूर होनेमें आश्चर्य ही क्या है? इसलिये अगर प्रार्थना

सफल करानेकी इच्छा हो तो अनुभवी भक्तोंकी इन सब हिक-
मतोंको समझ कर उनके अनुसार बर्ताव करने लगिये। परम
कृपालु परमात्मा आपकी प्रार्थना सफल करेगा। और जिसकी
प्रार्थना सफल हो उसके सुखी होनेमें आश्चर्य ही क्या है? सो
अगर सुख तथा कल्याण पाना हो तो प्रभुकी महिमा समझ कर
उसकी इच्छानुसार प्रार्थना कीजिये और धीरजसे बाट देखिये।
इससे समय आनेपर वह जरूर मंजूर होगी, इसमें कुछ भी
सन्देह नहीं है। इसलिये जिन्दगी सुधारनेवाली और आगे
बढ़ानेवाली प्रार्थना कीजिये। प्रार्थना कीजिये।

४३–जो आदमी चतुर होते हैं वे अपना दोष देखते हैं और जो अज्ञानी होते हैं वे दूसरोंका अवगुण ढूंढनेमें ही रह जाते हैं।

इस जगतमें मनुष्यका जो मुख्य कर्तव्य है वह यह है कि
उसे स्वयं ज्ञान हासिल करना चाहिये और जीवात्माके आगे
बढ़नेके उपयोगी अनेक प्रकारके अनुभव हासिल करके सम्पूर्ण
ताको पहुंचना चाहिये। ऐसा करनेके लिये सबके साथ
अच्छा बर्ताव रखना चाहिये तथा सबकी यथाशक्ति मदद
करनी चाहिये। यह सब कैसे होता है इसकी आपको खबर है?
ज्ञानी लोग कहते हैं कि इन सब विषयोंके दो मुख्य मूल हैं। एक
अपने अवगुण देखना और दूसरे दूसरोंकी भूलें देखनेमें ही न रह
जाना बल्कि उनके दोष माफ करना और उनकी तरफ शुभ
दृष्टिसे देखना। आगे बढ़नेके ये मुख्य उपाय हैं।

आप अपनी भूल देखते रहनेसे अपनेसे होनेवाली भूलें सुधारनेका मौका हमें मिलता है । अगर हम अपनी भूलें न देखें तो हममें अभिमान आ जाता है; हम अपनी भूलें न देखें तो हममें वे भूलें बहुत दिनोंतक रह जाती हैं, हम अपनी भूलें न देखें तो हममें उतनी अपूर्णता रहजाती है; हम अपनी भूलें न देखें तो आगे बढ़नेके कितने ही रास्तोंके द्वार हमारे लिये बन्द रह जाते हैं: हम अपनी भूलें न देखें तो आगे बढ़नेका मौका खो देते हैं और हम अपनी भूलें न देखें तो हमारी आत्मा भीतरसे प्रसन्न नहीं होती । क्योंकि जबतक अन्दर कूड़ा भरा हो तबतक हमें कल नहीं पड़ती । इसलिये अगर जिन्दगी सुधारना हो और प्रभुका प्यार। बढ़ाना हो तो पहले अपनी भूलें जांचना सीखना चाहिये और उन्हें दूर करनेका उपाय करना चाहिये । अपनेमें रही हुई भूलें क्या हैं यह आप जानते हैं ? महात्मा कहते हैं कि जो भूलें हैं वे नोकदार कांटे हैं। वे कांटे कलेजेमें गड़ते हैं तो बड़ी तकलीफ होती है , जो भूलें हैं वे जहरसे बुझे हुए तीर समान हैं; इस तीरके आसपासकी जगह सड़ने लगती है और फिर वह सारे शरीरको बिगाड़ देता है । हमारे भीतर जो भूलें मौजूद हैं वे क्लोरोफार्मकी तरह कुछ देर जीवको बेहोश कर-देनेवाली हैं । जो भूलें हैं वे देवताके अंगारे समान हैं, जिस चीजपर अंगारे पड़ते हैं उसको जलादेते हैं और जिससे उनका काम पड़ता है उसे भी जलादेते हैं। जो भूलें हैं वे जहरीली हवा हैं इससे वे मामूली आंखोंसे नहीं दिखाई देतीं मगर भयानक नुकसान पहुंचाया करती हैं। जो भूलें हैं वे छूतवाले रोगके समान हैं, इससे हमारी भूलोंकी छूत दूसरोंको भी लगती है। जो भूलें हैं वे शराबके व्यसनके समान हैं क्योंकि जब आदमी इस व्यसनके

वश हो जाता है तब इन भूलोंसे बुरी तरहका नशा उसपर चढ़ता है और आदमी बेसुध बुचका हो जाता है। जो भूलें हैं वे किरासन तेलके समान हैं, इससे उनकी खराब बू फैलती है और वे जल्द जल उठती हैं। हमारे अन्दर जो भूलें हैं वे प्लेग या हैजेके कीड़ोंके समान हैं, ये कीड़े थोड़ी देरमें बहुत बढ़ जाते हैं और छोटी छोटी मामूली दवाओंसे नहीं मरते। वैसे ही भूलें भी जल्द जल्द बढ़ती हैं और फिर सीधे सादे उपाय करनेसे नहीं निकलतीं। इसलिये भाइयो! अपने अन्दर मौजूद या नयी होनेवाली भूलोंसे बहुत बचना।

हमें अपनी भूलें सुधारनेके लिये शास्त्र बारंबार ताकीद करते हैं और महात्मा लोग भी हेर फेर कर यही बात कहते हैं। क्योंकि भूलोंके अन्दर कितनी बड़ी खराबी है यह वे लोग समझते हैं। परन्तु हम भूलसे होनेवाली खराबीका सारा हाल नहीं जानते इससे हम इस विषयमें बेपरवा होते हैं। लेकिन अब ऐसी बेपरवाही रखनेका समय नहीं है। क्योंकि अब हमारा ज्ञान बढ़ा है, हमारे आस पासके साधन बढ़े हैं और हमारी शक्तियां भी खिलती जाती हैं। इसलिये अब हमें अपनी पुरानी भूलोंमें पड़े रहना नहीं चाहिये।

जो भक्त तथा जो सज्जन अपनी भूलें समझते हैं वे सोचते हैं। क्या अबतक हममें ऐसे दोष मौजूद हैं? क्या हम अबतक ऐसे अंधेरेमें पड़े हुए हैं? क्या अबतक ये कलेजेको कुतर कुतर कर खानेवाले कीड़े हमारे हृदयमें पड़े हुए हैं? क्या अबतक यह ज्वाला हमें झुलस रही है? क्या अबतक हमारे मनकी हालत ऐसी कमजोर है? और क्या अबतक हममें इतनी अधिक नालायकी है कि जिसके कारण अपनी भूलें भी हमें नहीं सूझतीं? क्या हम उन्हें दूर नहीं कर सकते? ऐसा सोचनेसे उनके हृदयमें

तड़फड़ाहट होती है, उनको पश्चात्ताप होता है और फिर उनका जीव जाग उठता है जिससे वे सच्चे दिलसे तथा सच्ची समझसे अपनी भूलें मिटाने लगते हैं और धीरे धीरे उनकी जिन्दगी बदलती जाती है।

इस प्रकार हमने यह देखा कि अपनी भूलें सुधारनेसे क्या फायदा है; अब यह देखना चाहिये कि जो लोग दूसरोंके अवगुण देखनेमें ही रह जाते हैं उनका क्या हाल होता है।

जो लोग दूसरोंके ऐब ढूंढ़ा करते हैं उनमें रागद्वेष बढ़ता जाता है और दूसरोंकी जो जो भूलें उन्हें दिखाई देती हैं वे भूलें उनमें आती जाती हैं। क्योंकि जैसी भावना होती है वैसा फल मिलता है। मनकी विद्या जाननेवाले विद्वान कहते हैं कि मनुष्य जैसा विचार रखता है वैसा ही हो जाता है। इसलिये जो आदमी दूसरेका दोष देखा करता है, उसीमें ध्यान रखता है और उसीकी बातें किया करता है, उसीपर नमक मिर्च लगाया करता है, उसीके चित्र अपनी नजरके सामने रखा करता है, उसीकी कल्पना किया करता है, उसीके सम्बन्धकी विशेष बातें जाननेके लिये उसी तरफको बुद्धि दौड़ाया करता है और उसी किस्मके संकल्प विकल्प किया करता है उस आदमीको आगे जा कर वे सब बातें उल्टे पसन्द आ जाती हैं, इससे धीरे धीरे उसमें वह दोष आ जाता है। फिर तो "पूतके लिये गयी और खसम खो आयी" का हाल हो जाता है। क्योंकि जो आदमी इस तरह दूसरोंकी भूलोंका मनन किया करता है और उसे सुधारनेकी इच्छा नहीं रखता वह आदमी उल्टे आप ही उस किस्मकी भूलोंका शिकार बन जाता है। इसलिये खबरदार! किसी आदमीकी भूलें निकालनेमें बहुत गहरे मत उतर जाना और ऐसी लत मत डालना। नहीं

तो इससे हैरान हो जायेगा।

अपने हित परिचितकी बाहर दिखाई देने योग्य बड़ी बड़ी भूलोंके लिये उन्हें उचित सूचना दे देना कुछ बुरा नहीं है, परन्तु दूसरोंकी भूलोंका अभ्यास नहीं करना चाहिये और न इसकी दूरतक उन भूलोंके पीछे पड़ना चाहिये कि वे हमारे हृदयमें घुस जाय। जरूरत पड़े तो जैसे डाक्टर रोगियोंके साथ रहते हैं, उनके रोग देखते हैं तथा दवाएं देते हैं मगर तौ भी इस बात की सम्हाल रखते हैं कि उन रोगोंकी छूत हमें न लगने पावे उसी तरह, अलग रह कर, जवाबदारी रख कर और चतुराईसे काम ले कर दूसरोंकी भूलें ढूंढकर उनका उपाय करना दूसरी बात है और दूसरोंकी भूलें ढूंढनेमें गर्क हो जाना तथा इस तरह भूलें देखनेकी आदत डाल लेना और उसीमें घुल मिल जाना तथा ऐसी निकम्मी बातोंमें ही जिन्दगी गवां देना दूसरी बात है, ऐसा नहीं होना चाहिये।

दूसरोंका अवगुण देखते रहनेसे तथा उसी किस्मके विचार किया करनेसे और उसीका खोदविनोद करते रहनसे अवगुण वाला आदमी बेशरम बन जाता है तथा जो बात हमें नहीं रुचती वह बात सामने कर दिखानेमें उसको एक तरहका मजा मालूम होता है। क्योंकि वह समझता है कि ऐसा करके मैं उनको चिढ़ाता हूं। इससे उल्टे हमारा गुस्सा बढ़ता है और उसकी बुरी लत या भूल बढ़ती है। दूसरे हमारे मनमें दूसरेके लिये जो कमजोर विचार होते हैं उनका धक्का उसको पहुंचता है। इससे वह अधिक अधिक भूल करता जाता है और इस दोषके मालिक हम खुद होते हैं। क्योंकि हमारे विचारोंका उसे धक्का लगता है, इससे वह खराब होता है। इस प्रकार अपने खराब विचारोंका धक्का किसीको मारना कुछ अच्छी बात

नहीं है। इसलिये हमें दूसरोंके दोष देखते रहनेकी भूलोंमें ही न रह जाना चाहिये।

खुलासा यह कि अगर हमें आगे बढ़ना हो तो दूसरोंके अवगुण न देखें, गुण देखें और उन गुणोंका मनन करें तथा अपनेमें जो दोष हों उनको देखें, इससे दोष सुधर सकते हैं और हम आगे बढ़ सकते हैं तथा हमारा कल्याण हो सकता है। इसलिये दोषदृष्टि छोड़ कर सारग्राही बनिये और अगर दोष देखना हो तो दूसरोंका नहीं बल्कि पहले अपना ही दोष देखिये। यह भी आगे बढ़नेका एक बहुत बड़ा और सच्चा उपाय है। इससे लाभ उठानेकी कोशिश कीजिये।

४४—कुदरतके भेद, नियम और उद्देश्य मनुष्यकी समझमें आने योग्य हैं और उनके समझनेसे जगतका सुख बढ़ सकता है। इसलिये उन्हें समझनेकी कोशिश करनी चाहिये।

बन्धुओ! अब बुद्धिबलका जमाना आता जाता है। इससे अबके जमानेमें विद्या हुनरमें बहुत बड़ा सुधार होगा। भोग विलासकी सामग्री बहुत बढ़ जायगी, अनेक कलाएं खिल जायगी और रसायन शास्त्रकी मददसे तथा बिजलीकी सहायतासे इस जगतमें बहुत बड़ा उथल पुथल हो जायगा। अब बुद्धिका जमाना आ चला है। इससे पचास वर्ष पहले मनुष्योंको जिन दृश्योंकी कल्पना भी नहीं हो सकती थी वे दृश्य हम अपनी नजरके सामने गुजरते देख सकेंगे। और सो भी

किसी एक ही लाइनमें या एक ही विषयमें नहीं, बल्कि गृहस्थी, राजनीति, धर्म, शिल्पकला, नीतिके नियम, वैद्यकशास्त्र और दूसरी अनेक चीजोंमें दिनपर दिन बड़े बड़े सुधार होते जायँगे, उन सब विषयोंमें बदलेके साथ फेर बदल होता जायगा और उन सब विषयोंमें कुछ वर्षोंके अन्दर भारी उथल पुथल हो जायगा। और कुछ इसी देशमें नहीं बल्कि सारी पृथ्वीपर बहुत फेर बदल हो जायगा। क्योंकि अब विद्या हुनरका, कला कौशलका और आविष्कार ईजादका जमाना आता जाता है। इससे थोड़े वर्षोंके अन्दर सब बहुत बदल जायगा और इस फेर बदलमें कितनी ही जातियोंके आचार विचार बदल जायगे, धर्मके नियम बदल जायगे, गुजारेके साधनोंका ढङ्ग पलट जायगा और पुराने समयकी सुस्ती, हिन्दुस्थानी मलमनसत, खुशामद, ऊँचपन बड़प्पनका अभिमान और इस किस्मकी दूसरी बातें नहीं टिक सकेंगी। उस समय तो जिनमें ज्ञान होगा, बल होगा, उत्साह होगा, हिम्मत होगी और समय समझ कर काम करनेका शऊर होगा वे ही आदमी टिक सकेंगे और जो इन सब बातोंमें कमजोर होंगे वे बहुत दुखी होंगे। इसलिये अब चेतनेका वक्त आया है। क्योंकि पहले जमानेमें जैसे ज्यों त्यों करके लोग अपना छकड़ा ठेल ले जाते थे वैसे अब नहीं चल सकेगा, पहले जैसे थोड़ी आमदनीमें भी गुजर हो जाती थी वैसे अब नहीं हो सकेगी; पहले जैसे भीख पर जिन्दगी निबाह ले सकते थे और साधु बन जानेसे गुजारेकी फिकर मिट जाती थी वैसे अबके जमानेमें नहीं चल सकेगा; पहले जैसे सगे सम्बन्धी मदद करते थे वैसे अब वे मदद नहीं कर सकेंगे और पहले जैसे बहुत थोड़ी चीजोंसे भी जिन्दगीका

व्यवहार चल सकता था वैसे अबके जमानेमें नहीं चल सकेगा। इसलिये अब इस बुद्धि बलके जमानेमें ज्ञान हासिल करनेकी खास जरूरत है। जो आदमी अच्छी शिक्षा लेंगे और उसका सदुपयोग करके कुदरतके भेद समझेंगे वे ही आदमी आगे बढ़ सकेंगे और वे ही आदमी जगतके साथ रह सकेंगे। इसलिये अब कुदरतके छिपे भेद जाननेकी, कुदरतके नियम समझनेकी तथा कुदरतके उद्देश्य समझनेकी कोशिश करनी चाहिये। क्योंकि इस बुद्धिबलके जमानेमें ये सब बातें अब बहुत आसानीसे हो सकती हैं। अब लोगोंके पास इतनी अधिक कलें हो गयी हैं, इतनी ज्यादा पुस्तकें हो गयी हैं, इतने ज्यादा नियम मालूम हो गये हैं और इतने अधिक विद्वान इन विषयों पर आटा चावल बांधकर पड गये हैं कि जो कुछ हो, वह आश्चर्य नहीं है, बल्कि जो न हो वह थोड़ा है। ऐसे अनुकूल समयमें भी अगर हम कुछ न कर सकें, ऐसी शान्तिके समय भी अगर हम कुछ न कर सकें और ऐसे बुद्धिबलके जमानेमें भी अगर हम कुछ न कर सकें तो हमारी कितनी बड़ी नालायकी है? इसलिये अब तो हमें समझना चाहिये और ज्ञान हासिल करनेकी कोशिश करनी चाहिये।

भाइयो! अब यह बुद्धिबलका जमाना आता जाता है। इसमें हर एक चीजमें बहुत कुछ उथल पुथल हो जायगा। इसी तरह ईश्वरकी भक्ति करनेके नियमोंमें भी बहुत कुछ फेर बदल हो जायगा और आज जैसे हम समझते हैं कि प्रभुका नाम लेना आगे बढ़नेका उपाय है, संन्यास लेना या त्यागी होना प्रभुको प्रसन्न करनेका उपाय है, दर्शन करना, तीर्थ करना, माला पहनना, तिलक लगाना और छूआछूतके नियम पालना कल्याणके साधन हैं-ऐसी ऐसी बातोंको जैसे हम धर्मके अंग समझते हैं

वैसे भयसे यादके जमानेमें बहुत लोग ऐसी बातोंपर ओर नहीं देंगे और उनको जरूरी नहीं समझेंगे। इसके बदल वे यह समझेंगे कि कुदरतके छिपे भेद ढूंढ निकालनेका नाम धर्म है, मनुष्योंके दु ख कम करनेका नाम धर्म है, अपनी दुनियादारीके सुख बढ़ाने, अपनी तन्दुरस्ती सम्हालने और अपनी आयु बढ़ानेका नाम धर्म है, जगतकी चीजोंकी सुघराई बढ़ाने, उनका उपयोग बढ़ाने तथा उनकी कीमत बढानेका नाम धर्म है और नयी खोज करनेमें जिन्दगी बिताने तथा कुदरतके उद्देश समझनेमें जिन्दगी लगानेका नाम धर्म है। इस प्रकार धर्मका स्वरूप तथा धर्मके अग आगे जाकर बदल जायँगे। इसका बीज अभी पड़ गया है और कितनी ही जगह वह उग गया है। इसलिये बुद्धिबलके जमानेमें आनेवाले इस नये धर्मका रहस्य समझनेकी कोशिश कीजिये। क्योंकि हमारे बालकोंको और उन बालकोंके बालकोंको यह नया धर्म मिलनेवाला है। सर्वशक्तिमान ईश्वरकी महिमा समझनेके लिये, ज्ञानका आनन्द भोगनेके लिये और सुख बढानेके लिय इस नय धर्मका रहस्य समझनेकी कोशिश कीजिय। कोशिश कीजिये।

४५–याद रखना कि दुःखमें भी कुछ खूबी होती है; पर दुःख आनेके वक्त हम उसकी खूबीको नहीं समझते, इससे अफसोस किया करते हैं।

हमारे मित्र बागला बहादुर दुःखके बड़े कायर हैं और जरा सी भी भड़चल पड़ जाय तो ऐसा दिखाते हैं कि मानों

दुःखका पहाड़ टूट पड़ा। जरा सी तकलीफ पड़ जानेपर भी वह बहुत उदास हो जाते हैं और सब मित्रोंसे वारंवार दुःखकी शिकायत किया करते हैं। तिसपर भी हम देखते हैं कि हर एक दुःखमें पीछेसे उनका कुछ न कुछ फायदा होता है। परन्तु वह फायदा उनके खयालमें नहीं आता। वह इस फायदेकी तरफ नहीं देखते और दुःखकी ही गिनती किया करते हैं। जैसे—जब वह छोटी उमरके थे तब उनकी मा मर गयी। इससे वह मामाके घर चले। वहां मामीकी बातें सुननी पड़ती थीं। क्योंकि बागला भाई बड़े ऊधमी थे और मामी जरा कड़े मिजाजकी थी। इससे दोनोंमें पटती नहीं थी जिससे कभी कभी खूब जम जाती थी। वह मामीका रोना रोया करते हैं। परन्तु अपने घर अपनी माको बहुत दुःख दिया करते थे तथा माका कहना न मानकर उल्टे उसे चिढ़ाते थे। इसके बदले मामी जैसे कड़क मिजाजके कड़े गुरूके हाथमें रहनेसे उनका चाल चलन सुधरने लगा। मामीके मेहने सुननेसे उनकी सुस्ती उड़ी। उन मेहनोंके कारण उन्होंने कई तरहका काम करना सीखा तथा वह पढ़ने लिखनेमें मन लगाने लगे जिससे आगे जाकर उनको बहुत फायदा हुआ। अगर उनकी मा जीती रहती तो उस बेचारी का कहना वह कभी न मानते। उस बुढ़ियाको आप उल्टे हैरान ही किया करते और वह नेक बुढ़िया उनको लाड़ प्यार ही किया करती। इससे उनके जैसे ऊधमी लड़केका भविष्य बिगड़ जाता। पर ऐसा करना कुदरतकी इच्छा न थी। उसने बुढ़ियाको खींच लिया और कड़क मिजाज मामीके हाथमें बागलाजीको सौंप दिया। इससे उनको लाचार होकर जबरन सुधरना पड़ा। इस प्रकार बुढ़ियाके मरनेसे तथा मामीके मेहने सुननेसे उनको फायदा हुआ। परन्तु इस फायदेकी कीमत वह नहीं समझते और

जब तब यही कहा करते हैं कि मा मर गयी और मामी पाजी स्वभावकी थी इससे उसने मुझ दुःख देनेमें कुछ उठा नहीं रखा। ऐसी बातें कहते हैं पर मामीके दुःख देनेसे उनकी वृत्तियां कैसी जगीं और उससे आगे जा कर कितनी होशियारी बढ़ गयी तथा कितना बड़ा फायदा हुआ इसकी कुछ गिनती ही वह नहीं करते। इससे माके मरनेका और मामीके मेहना देनेका दुःख लगा करता है पर उससे जो अच्छा परिणाम निकला उसकी ओर वह नहीं देखते। अगर उसकी तरफ देखें तो उनको इसका दुःख न हो। पर दुःखमें भी सुख देखनेकी नजर तो भाग्यशालियोंको ही मिलती है। इस नजरसे देखनेपर मालूम हो जाता है कि जो जो दुःख आते हैं वे सब किसी न किसी तरहके सुखके लिये ही होते हैं। इसके लिये हमारे मित्रका दृष्टान्त नमूना बना हुआ है।

इसके बाद बागला भाई जब बाईस वर्षके हुए तब उनके पिताजी स्वर्गवासी हुए। उस समय वह कालेजमें पढ़ते थे दुनियादारीका कुछ भी अनुभव उन्हें न था। परन्तु घरमें और कोई बड़ा न होनेसे घरका सारा भार उनपर आ पड़ा, इससे वह उस समय बहुत घबराने लगे। क्योंकि गृहस्थीका भार सम्हालनेका शऊर उनमें नहीं था और न इसमें उन्होंने कुछ ध्यान ही दिया था। इससे बापके मरनेपर वह बड़ी चिन्तामें पड़े। परन्तु और कोई करने धरनेवाला न होनेसे उन्हें सब आप करना पड़ा जिससे घर गृहस्थीका बहुत अच्छा अनुभव हो गया। अनेक बातोंमें बहुत होशियारी आ गयी। अगर उनके बाप जीते रहते तो उनमें इतनी होशियारी न आ सकती। क्योंकि बागला भाईका जी घरके काममें जरा भी नहीं लगता था और उनके बापका स्वभाव ऐसा था कि वह

अपने किसी काममें न तो लड़केसे कुछ पूछते थे और न लड़केको बीचमें पड़ने देते थे; वह अपने सब काम अपनी ही मुनसफीसे करते थे। परन्तु कुदरतकी मरजी वागला भाईको आगे बढ़ानेकी तथा आगे बढ़नेके लिये सब तरहके सुखे दुःखका ऐसा अनुभव देनेकी थी जो आगे जा कर उनके बड़े आदमी होनेमें मदद दे। कुदरतका यह उद्देश्य वागला भाई जानते नहीं, इससे जब उनके सिर इस किस्मके छोटे या बड़े दुःख आ पड़ते हैं तब वह बहुत अफसोस करने लगते हैं। इस बातको वह अच्छी तरह समझते ही नहीं कि हरएक दुःख अपने साथ कुछ सुख ले आता है और हरएक दुःखका कुछ गहरा मतलब होता है। यह समझ न होनेसे वह अफसोसमें पड़ जाते हैं। पर असल में देखा जाय तो छोटे छोटे दुःखोंमें अफसोस लायक बहुत थोड़े ही दुःख होते हैं और उनमें भी असली दुःख तो इस दुनियामें बहुत ही थोड़ा होता है। लेकिन मनुष्य आप अपने मनकी कमज़ोरीके कारण छोटे छोटे दुःखोंको भी बढ़ा चढ़ाकर बड़ा बना लेते हैं और बहुत अच्छे अच्छे आदमी भी यह नहीं समझते कि "दुःखका बढ़ाना एक तरहका पाप बढ़ानेके बराबर है।" अगर यह सिद्धान्त सब लोगोंकी समझमें आ जाय तो इस समय जितने दुःख हैं उनके दस हिस्से किये जानेसे नौ हिस्सोंके दुःख आपसे आप बहुत आसानीसे घट जायं। परन्तु दुःखके उद्देश्योंको लोग नहीं समझते यही मुश्किल है।

इसके बाद वागला भाईने पढ़ना छोड़कर नौकरी की। उस नौकरीको वह बहुत बढ़िया समझते थे। क्योंकि समय बहुत बचता था; इससे उनको यह नौकरी बहुत पसन्द थी। परन्तु इतनेमें कुछ विघ्न पड़ा। दो हिस्सेदारोंमें लड़ाई हुई, वे अदालतमें पहुंचे और सारी जायदाद जब्तीमें आ गयी। इससे

बागला भाईको विदा होना पड़ा। इसपर वह बहुत अफसोस करने लगे कि ऐसी बढ़िया आरामकी नौकरी चली गयी अब ऐसी नौकरी और कहां मिलेगी? बैठे बैठे अस्सी रुपय मुझको कौन देगा? इस चिन्तामें वह दूबर होने लगे। इतनेमें उनके एक दोस्तने कहा कि मेरा हिस्सेदार मर गया और तुम्हारे जैसे होशियार आदमीकी मुझे जरूरत है। इसलिये अगर तुम कल कत्ते जाओ तो मैं तुम्हें अपनी दुकानमें चार आने हिस्सा दूंगा। यह बात उन्होंने कबूल की। इससे अस्सी रुपयेके बदले हर महीने उन्हें चार सौ रुपये मिलने लगे और व्यापारका अच्छा अनुभव होने लगा। यह निश्चय जानिये कि अगर उनकी नौकरी बनी रहती तो वह व्यापारमें न जुट सकते और अस्सी रुपयके बदले चार सौ रुपये महीने न पा सकते। तिसपर भी बागला भाई अबतक रोते हैं कि मेरी नौकरी बड़ी अच्छी थी और फलाना हिस्सेदार इकरार न करता तो मेरी नौकरी न जाती। परन्तु नौकरी जानेसे वह व्यापारी लाइनमें गये और इससे अधिक रुपया मिलने लगा, इसका खयाल उन्हें नहीं होता। इससे वह नौकरी जानेका अफसोस किया करते हैं। हमारे भी सौमें पचानवे दुःख इसी किस्मके होते हैं अर्थात् हमें आगे बढ़नेका मौका देनेके लिये किसी न किसी तरहका दुःख आता है। जैसे—

बागला भाईकी एक जगह सगाई हुई थी। वह लड़की पढ़ी लिखी और खूबसूरत थी, इससे बागला भाईको यह सगाई बहुत पसन्द आ गयी थी और वह चाहते थे कि उसी लड़कीसे मेरा ब्याह हो। इसके लिये उन्होंने कोशिश भी की और उसमें उनको सफलता होनेको थी कि इतनेमें एक धनी गृहस्थकी स्त्री गुजर गयी। इससे बागला भाईकी पसन्द की हुई लड़कीका ब्याह

उससे हो गया। इसपर बागला भाईको बड़ा गुस्सा आया और बहुत अफसोस होने लगा। वह यह मनसूबा बांधने लगे कि अब मैं व्याह नहीं करूंगा। परन्तु धीरे धीरे उनका वह विचार ठंढा पड़ा और हित मित्रोंके कहने सुननेसे और एक जगह उन्होंने व्याह किया। इस स्त्रीके साथ पहले उन्हें कुछ बहुत आनन्द नहीं मिलता था। परन्तु चार पांच वर्षके बाद उन्होंने देखा कि जिस लड़कीको उन्होंने खुद पसन्द किया था और जो दूसरे सेठके साथ व्याह दी गयी थी वह पीछेसे खराब चालकी निकली। उसकी निन्दा घर घर होती थी और उसके पतिने भी उसकी खराब चाल देखकर उसे त्याग दिया था। उसने अपने पति पर खुराककी नालिश की और उसके पतिने अदालतमें उस आदमीकी चिट्ठियां पेश कीं जिससे वह फंस गयी थी। यह सब देख सुनकर बागला भाईने सोचा कि ऐसी खराब चालकी स्त्रीकी सगाई टूटी तो अच्छा ही हुआ। परन्तु जिस समय उसकी सगाई दूसरी जगह लगी उस समय उनको जैसा अफसोस हुआ था उसका हाल वे ही जानते हैं जिन्होंने उस समय उनका चेहरा देखा था। कुदरतकी इच्छा बागला भाईको ऐसी खराब स्त्रीसे सम्बन्ध करने देनेकी नहीं थी इससे उसका व्याह दूसरी जगह हो गया। तौ भी बागला भाईको अफसोस हुआ करता था। क्योंकि कुदरतके इस भेदको वह नहीं जानते थे और इतना सिरपर बीतने पर भी उनको इस बातका विश्वास नहीं हुआ था कि सुखके लिये दुःख आता है। इससे वह अफसोस किया करते।

इसके बाद वह अपनी स्त्रीपर बहुत प्रेम रखने लगे। ज्यों ही उनका प्रेम जमा त्यों ही प्रसूतके रोगमें उनकी प्यारी स्त्री जाती

रही। इससे वह हमेशाकी तरह बहुत हाय हाय और अफसोस करने लगे। परन्तु इस समय उनकी मान मर्यादा बढ़ गयी थी और उनकी दुकानमें भी अच्छी आमदनी होती थी, इसस उनको एक लखपतीकी लड़की मिली। इस ब्याहमें उनकी जिन्दगीका नया दौर शुरू हुआ। इस दूसरी स्त्रीका बाप बहुत मालदार था और वह अपने दामाद यागला माईके विषयमें अच्छा ख्याल रखता था। इससे वे दोनों मिलकर कोई कारखाना खोलनेका विचार करने लगे। अन्तमें गरम कपड़ेकी मिल चलानेकी सलाह ठहरी। उन्होंने मिल खोली और उसमें बहुत नफा होने लगा। हर साल पौन लाख रुपये यागला माईको इस मिलके नफेसे मिलने लगा। सोचिये अगर उनकी पहली स्त्री न मर जाती और दूसरी लखपतीकी लड़की न मिलती तो वह मिल खोलने न जाते। उनको तो अपनी दुकानसे जो चार सौ रुपये महीने मिलते थे उसीमें सन्तोष था। परन्तु उन्हें आगे बढ़ाना और उनके हाथसे परमार्थके काम कराना कुदरतकी इच्छा थी, इसस् ऐसे वैसे दुःख उनपर आ पड़ते थे और दुःखके बाद कुछ खास सुबीता भी होता जाता था। परन्तु यह सुबीता पहले दिखाई नहीं देता, वह बहुत धीरे धीरे बहुत दूरसे बाद दिखाई देता है और दुःख तो पहले ही प्रत्यक्ष दिखाई दे जाता है। इसके सिवा रुचि तथा वृत्तिया किसी खास तरफको झुकी रहती हैं और उसमें अचानक कुछ फेरफार होजाय तो उससे दुःखका धक्का स्वभावतः लगता है। इसीसे आदमी दुःखसे डरा करते हैं। परन्तु ठीक तौरपर देखनेसे ज्ञानियोंको ऐसा मालूम देता है कि दुःखमें भी कुछ खूबी है; इतना ही नहीं बल्कि सुखके लिये ही दुःख आता है और हमारे हृदयको कोमल बनानेके लिये तथा हमें आगे बढ़ानेके

लिये ही दुःख आता है। इसलिये चतुर आदमी तो यही समझते हैं कि जैसे सुखमें ईश्वरकी कृपा है वैसे ही दुःखमें भी ईश्वरका आशीर्वाद है।

इसके बाद बागला भाईकी समृद्धि जब फुदक फुदककर बढ़ने लगी तब उनका मन अपनी स्वर्गवासी प्यारी स्त्रीकी यादगार बनानेका हुआ; इससे उन्होंने जवान उमरकी ब्याही नया विधवा स्त्रियोंको शिक्षा देनेके आश्रम खोलनेके लिये दो लाख रुपयेकी रकम निकाली। उससे जगह जगह इस विषयके परमार्थी आश्रम चलने लगे।

विचार देखिये कि अगर वह स्त्री न मर गयी होती तो उन्हें इतना बड़ा परमार्थ करनेकी न सूझती। और जिस स्त्रीको वह आप पसन्द करते थे उसकी बदचलनी प्रगट न होती तो उनको अपनी नेक स्त्रीपर अतिशय प्रेम न होता। फिर उनकी पहली स्त्री स्वर्गवासी न होती तो नये ससुरके साथ उनका इतना बड़ा सम्बन्ध न हो सकता और वह इतने बड़े धनी न हो सकते। ऐसी ऐसी दुःखदायक घटनायें होनेसे ही आगे जाकर बहुत फायदा हुआ। तिसपर भी बागला भाई आजतक हमेशा यही रोना रोया करते हैं कि मैं तो जन्मका दुखिया हूं। बचपनमें मा मर गयी। मामीकी ताड़ना सहनी पड़ी। फिर चढ़ती जवानीमें बाप मर गया और घरका सारा बोझ मेरे सिर आ पड़ा। फिर जिससे ब्याह होनेको था वह दूसरी जगह ब्याह दी गयी। अगर वह कन्या मुझे मिली होती तो वह ऐसी खराब न होती। पीछे अच्छी नौकरी मिली थी वह भी चली गयी। इसके बाद ब्याह हुआ परन्तु वह स्त्री मेरे पसन्दकी न थी। और जब उसका और मेरा जी मिला तब वह गुजर गयी। इस तरह मेरे ऊपर तो दुःख ही दुःख पड़ा करते हैं। और अभी क्या क्या होगा सो कौन जानता

है ? इस प्रकार दुःखोंकी गिनती किया करते हैं परन्तु दुःखोंसे जो सुख उत्पन्न हुए उनकी गिनती नहीं करते । इसी प्रकार हर एक आदमी करता है और यह भाव दिखाता है कि "मानो दुःख कोई गले लगाता है और सुख तो हमारी बपौती है।" इससे लोग नाहक दुखी हुआ करते हैं। परन्तु इस तरह बिना कारण दुखी होना या छोटे दुःखको बड़ा मान लेना एक प्रकारका बड़ा भारी ईश्वरी अपराध है। इसलिये हमने तो यही निश्चय किया है कि दुःखके समय भी प्रभुका उपकार मानना और हमेशा मनमें यह भावना रखना सोचना कि दुःखमें भी कुछ खुशी होती है। इस भावनाको बढ़ानेसे बड़े बड़े दुःख भी छोटे हो जाते हैं और छोटे छोटे दुःखोंकी बहुत परवा नहीं रहती। इसलिये भाइयो ! आप ऐसा ही करनेकी कोशिश कीजिये।

हमारी यह बात सुनकर हमारे मित्रने कहा कि दुःखके समय कैसे उपकार माना जा सकता है ? हमने कहा कि हमने एक महात्माकी बात सुनी है वह तुमसे कहते हैं। उससे तुम समझ जाओगे कि दुःखके समय भी ईश्वरका उपकार कैसे माना जा सकता है।

एक महात्मा किसी शहरकी गलीसे चले जाते थे। उस समय एक फूहड़ स्त्रीने ऊपरकी खिड़कीसे नीचे बिना देखे ही राखका ढेर फेंक दिया। वह राख महात्माके सिर पर पड़ी। महात्मा वहां खड़े हो गये और ईश्वरका उपकार मानने लगे। यह देखकर उनके साथके दूसरे भाई मित्रोंने पूछा कि महाराज ! आप यहां हाथ जोड़ कर क्यों प्रार्थना कर रहे हैं ? यहां कोई तीर्थ नहीं है, कोई मन्दिर नहीं है, कोई देवी देवता नहीं है और न कोई साधु महात्मा ही हैं; बल्कि यहां तो गटर है। उसमेंसे बदबू आती है। यहां खड़े हो कर

किसलिये प्रार्थना करते हैं ? महात्माने कहा कि भाई ! मुझपर यह जो राखका ढेर पड़ा उसके लिये मैं प्रभुका उपकार मानता हूं। यह सुनकर साथके आदमी बड़े अचम्भेमें आ गये और कहने लगे कि यह क्या उपकार माननेका वक्त है ? या उपकार माननेकी जगह है ? किसी फूहड़ रांड़ने विना देखे आपके सिर-पर राख गिरा दी इसमें उपकार क्या है ? इसमें क्या ऐसा अच्छा काम हुआ कि उपकार मानना चाहिये ?

महात्माने जवाब दिया कि भाई ! यहां राख पड़ी और इतनेसे ही छुट्टी मिली यह क्या उपकार नहीं है ? कहीं घर गिर पड़ा होता और मैं उसके नीचे दब जाता तो मैं क्या करता ? कहीं ऊपरसे बिजली आ गिरती तो मैं क्या करता ? कहीं भूकम्प होकर यह जमीन फट जाती और मैं उसके अन्दर घुस जाता तो क्या करता ? ऊपरसे जैसे राख गिरी वैसे ही अगर कहीं ऊपरसे गेहुमन सांप गिरता और काट लेता तो मैं क्या करता ? इन सब आफतोंसे परम कृपालु परमात्माने मुझे बचाया और सिर्फ थोड़ी राख डाल कर मेरा छुटकारा किया यह क्या उसकी थोड़ी दया है ? इसके लिये क्या मुझे उसका उपकार नहीं मानना चाहिये ?

भाइयो ! महात्मा लोग तो ऐसे दु:खके समय भी ईश्वरका उपकार मानते हैं। परन्तु कम ज्ञान होनेके कारण तथा कमजोरीके कारण आप अगर दुःखके समय उपकार न मान सकें तो भी इतना तो समझना सीखें कि दुःखमें भी कुछ खूबी है और सुखके लिये दु:ख आता है। अगर इतना समझेंगे तो भी आपके बहुतसे दुःख घट जायंगे। इसलिये भाइयो ! अब दुःखको उड़ा देना सीखिये। दुःखको उड़ा देना सीखिये।

४६-अपने मनको वशमें रखना सुख पानेका सबसे पहला उपाय है।

जगतके सब जीवोंको तथा स्वर्गके देवताओंको भी हमेशा सुख चाहिये। कोई जीव कभी दुःख नहीं चाहता और कोई कुछ देर दुःखकी इच्छा रखता भी है तो सुखके लिये ही। क्योंकि परमात्मा आनन्दस्वरूप है और जीवात्मा उसका दास है, उसका प्रतिबिम्ब है, उसमेंसे निकला है, उसका बनाया हुआ है अथवा वही रूप है। इनमेंसे कोई एक होनेके कारण उसके गुण जीवात्मामें आते हैं। और प्रभु आनन्दस्वरूप है, यह उसका सबसे बड़ा गुण है, इसीलिये उसको शास्त्रोंमें सच्चिदानन्द कहा है। इसवास्ते सब जीवोंमें सुख पानेकी प्रबलसे प्रबल इच्छा होती है और जिन्दगीका कर्तव्य यही है कि अनन्त कालके सुखकी तरफ हमेशा बढ़ा करें। इससे सब जीव अपना अपना सुख ढूंढ़ रहे हैं और दूसरे जीवोंसे मनुष्य अधिक बुद्धिमान होनेके कारण सुख पानेके लिये कई तरहकी खास खास क्रियाएं करते हैं, इसके लिये जगह जगह जाते हैं तथा कितनी ही विद्याओंका अभ्यास करते हैं। तिसपर भी परिणाममें बहुत थोड़ा सुख पा सकते हैं। क्योंकि सुखका सबसे पहला और मुख्य उपाय क्या है यह वे नहीं जानते, इससे बाहरसे तथा दूसरी चीजोंसे और दूसरे मनुष्योंसे सुख पानेकी आशामें रह जाते हैं तथा इन्हीं बातोंके पीछे दौड़ धूप किया करते हैं। परन्तु सुख पानेका असली उपाय तो कुछ और ही है।

यह सुनकर सब भाई बहनोंके मनमें प्रश्न उठेगा कि वह

उपाय क्या है ? उसको तो हमें जरूर जानना चाहिये। इसके जवाबमें महात्मा लोग कहते हैं कि अपने मनको वशमें रखना सुख पानेका सबसे पहला उपाय है, अपने मनको वशमें रखना कई तरहके सुखोंकी असली कुंजी है; अपने मनको वशमें रखना स्वर्गमें चढ़नेके लिये सीढ़ी है; अपने मनको वशमें रखना सुखके खजानेमें से आधा खजाना मिल जानेके बराबर है; अपने मनको वशमें रखना सुखके प्रवाहको रोक रखनेके लिये बांध बांधनेके बराबर है; अपने मनको वशमें रखना सुखरूपी घोड़ेपर सवार होनेके बराबर है; अपने मनको वशमें रखना सुखके समुद्रमें सैर करनेके लिये एक अगिनबोट मिल जानेके बराबर है और अपने मनको वशमें रखना, जहां सुख न हो वहां भी, नया सुख पैदा करनेकी युक्ति है। इसलिये अपने मनको वशमें रखना सुख पानेका सबसे मुख्य उपाय है। क्योंकि जब मन वशमें होता है तभी सुख मिलनेके दूसरे सब रास्ते सूझते हैं। जैसे-मनके वशमें होनेपर ही सच्चा ज्ञान मिल सकता है, मनके वशमें होनेपर ही असली बलसे काम किया जा सकता है, मनके वशमें होनेपर ही सच्चा उत्साह और सच्ची हिम्मत आती है, मनके वशमें होनेपर ही ज्ञानियोंका उपदेश काममें आ सकता है, मनके वशमें होनेपर ही वस्तुओंका बल, कीमत तथा असली स्वरूप समझमें आता है। मनके वशमें होने-पर ही सुख हासिल करनेके नियम पाले जा सकते हैं और जब मन वशमें होता है तभी सच्चा सुख भोगा जा सकता है तथा मनके वशमें होनेपर ही बहुतसे सुख बहुत समय तक टिक सकते हैं। इसलिये अपने मनको वशमें करना सुख पानेका सबसे पहला उपाय है। जब यह पहला उपाय हाथमें होगा तब दूसरे कितने ही उपाय उससे निकल आवेंगे। जिसको

पहले इकाई ही नहीं आवेगी वह गणितज्ञ नहीं हो सकेगा और जो गाड़ी पहली लीकपर ही न चढ़ी होगी वह दौड़ नहीं सकेगी। इसी तरह मन वशमें न हुआ हो तो दूसरे सुख आसानीसे नहीं मिल सकेंगे। इसलिये अगर तरह तरहके बड़े बड़े सुख बहुत आसानीसे लेना हो और उन्हें बहुत समयतक टिकाये रखना हो तो पहले अपने मनको वशमें रखना सीखिये। अपने मनको वशमें रखना सीखिये।

कृतज्ञता ।

मैं मिरजापुरनिवासी पण्डित लक्ष्मीशंकर द्विवेदीके
ति कृतज्ञता प्रगट करता हूं जिन्होंने निःस्वार्थभावसे प्रेम-
र्वक परिश्रम करके २॥ दिनमें स्वर्गमालाके बाईस ग्राहक
ना दिये । अगर पण्डित लक्ष्मीशंकरके ऐसे एक एक हिन्दी-
मी भी एक एक नगरमें निकल आवे तो हिन्दीपत्रों और
स्तकोंका प्रचार बढ़नेमें विलम्ब न लगे । इस विषयमें
नके भाई पण्डित उमाशंकरजी द्विवेदी तथा पण्डित अच्युता-
न्द पांडेका उद्योग भी विशेष धन्यवादके योग्य है ।

प्रकाशक ।

स्वर्गमालाके नियम।

स्वर्गमालामें ... साल ४०६० पृष्ठोंकी पुस्तकें ... होंगी। सालभरमें बारह पुस्तकें या पुस्तकोंके भाग क्रमशः निकलेंगे। जो लोग दो रुपये ... भेजकर ... ग्राहकश्रेणीमें नाम लिखावेंगे उनको एकवर्षमें ... शित होनेवाली एक हजार पृष्ठोंकी पुस्तकें दी जायगी ... डाक महसूल कुछ नहीं लिया जायगा। फुटकर तौरपर ... मालाके अलग अलग खण्ड खरीदनेमें दो रुपयेके ... तीन रुपये पड़ जायगे। क्योंकि स्वर्गमालाके हर एक ... दाम चार आने होगा। नमूनेका एक खण्ड चार ... का टिकट भेजनेसे मिलेगा। ग्राहकोंका साल वसन्तपंचमी ... आरम्भ होगा। जो लोग पीछेसे ग्राहक होंगे ... सालमें पहलेके प्रकाशित खण्ड भी भेज दिये जायगे। ... लोग 1) का टिकट भेजकर नमूना मगावेंगे वे पीछे ... भेजकर १ वर्षके लिये ग्राहक हो सकेंगे।

स्वर्गमालाके सम्बन्धी चिट्ठीपत्री मनीआर्डर सब कुछ नीचे लिखे पतेपर भेजना चाहिये—

महावीरप्रसाद गहमरी

प्रबन्धक स्वर्गमाला

बनारस

स्वर्गमालाके नियम ।

स्वर्गमालामें हर साल १००० पृष्ठोंकी पुस्तकें प्रकाशित होंगी । सालभरमें बारह पुस्तकें या पुस्तकोंके बारह खण्ड क्रमशः निकलेंगे । जो लोग दो रुपये पेशगी भेजकर स्वर्गमालाकी ग्राहकश्रेणीमें नाम लिखावेंगे उनको एकवर्षमें प्रकाशित होनेवाली एक हजार पृष्ठोंकी पुस्तकें दी जायगी । डाक महसूल कुछ नहीं लिया जायगा । फुटकर तौरपर स्वर्गमालाके अलग अलग खण्ड खरीदनेसे दो रुपयेके बदले तीन रुपये पड जायगे । क्योंकि स्वर्गमालाके हर एक खण्डका दाम चार आने होगा । नमूनेका एक खण्ड चार आने का टिकट भेजनेसे मिलेगा । ग्राहकोंका साल वसन्तपञ्चमीसे आरम्भ होगा । जो लोग पीछेसे ग्राहक होंगे उनकी सेवामें पहलेके प्रकाशित खण्ड भी भेज दिये जायगे । जो लोग ।) का टिकट भेजकर नमूना मंगावेंगे वे पीछे १॥।) भेजकर १ वर्षके लिये ग्राहक हो सकेंगे ।

स्वर्गमालाके सम्बन्धकी चिट्ठीपत्री मनीआर्डर आदि सब कुछ नीचे लिखे पतेपर भेजना चाहिये—

महावीरप्रसाद गहमरी

प्रबन्धक स्वर्गमाला

बनारस सिटी ।

४७–यह आश्चर्य देखिये कि दूसरोंके जुलमसे आदमी बच सकते हैं पर अपना मन अपने ऊपर जो जुलम करता है, उससे वे नहीं बचते।

बहुतसे चतुर आदमी यह कहते हैं कि ऐसा बहुत कम होता है और कभी ही कभी होता है कि हमपर दूसरा कोई दुष्ट आदमी जुलम करे। क्योंकि हर तरहके जुलमका सामना करनेकी हर एक जीवमें कुदरती तौरपर शक्ति है। इससे कोई आदमी या प्राणी आसानीसे जुलम बरदाश्त नहीं कर सकता। इसका कारण यह है कि इस दुनियामें जिन्दगी बनाये रखनेके लिये जो लड़ाई करनी पड़ती है उसमें मददगार बननेके लिये जुलमका सामना करनेकी शक्ति परम कृपालु परमात्माने सब जीवोंको दी है और उसमें भी मनुष्योंमें तो यह शक्ति खासकर बहुत अधिक होती है। इससे हर किस्मके जुलमका मुकाबला वे अनेक युक्तियोंसे कर सकते हैं। छोटी बातको बड़ी करके दिखाते हैं, सहज बातमें रो देते हैं, सबके सामने इसके लिये पुकार मचाते हैं, अनेक सभा समाजोंके आगे फरयाद करते हैं और थोड़ा सा जुलम रोकनेके लिये अपने अनेक स्नेहियोंकी मदद मांगते हैं तथा बुद्धिसे भी मदद लेते हैं। इन सब कारणोंसे दूसरे आदमियोंके जुलमसे वे बहुत आसानीसे बच जाते हैं। पर उनका मन उनपर जो जुलम करता है उससे वे नहीं छूट सकते। इसलिये हमें यह जान लेना चाहिये कि अपना मन अपने ऊपर किस तरह जुलम करता है और उससे कैसे छुटकारा

मिल सकता है। इसका खुलासा पण्डितलोग इस तरह करते हैं कि—

पहले हमें यह जानना चाहिये कि हमारा मन हमपर किस तरह जुल्म करता है। जब किसी चीजका हमें व्यसन हो जाता है तब वह चीज हमें कितना अधिक दुःख देती है यह क्या आप नहीं जानते ? जिन आदमियोंको बारबार हुका या बीड़ी पीनेकी आदत होती है उनको जब हुक्का या बीडी नहीं मिलती तब उनका कैसा बुरा हाल होता है, वे कैसे सुस्त पड़ जाते हैं और उस समय कैसे लाचार हो जाते हैं यह क्या लोगोंको नहीं मालूम है ? यह सब जुल्म उनपर कौन करता है ? याद रखना कि और कोई नहीं इस वक्त उनका कमजोर मन ही उन्हें दुःख देता है। इसी प्रकार जब किसी तरहका विचार मनमें घुस जाता है और जोर पकड़ लेता है तब वह बिना कारण कितना अधिक दुःख दे सकता है यह कौन नहीं जानता ? उस समय आदमियोंके मनकी दशा कैसी आकुल-व्याकुल हो जाती है, उनके हृदयमें कैसी हलचल मचती है, उनको कितने सखत विक्षेप होते हैं, उस समय उनको कितनी तड़फड़ाहट होती है और वे उस समय कितने नीचे उतर जाते हैं, उन्हें कितना भय लगता है, वे अपने विचारके कैसे गुलाम बन जाते हैं और वह विचार उनपर कितना अधिक जुल्म करता है यह क्या आप नहीं जानते ? यह सब क्योंकर होता है ? याद रखना कि ऐसा जुल्म हमपर और कोई नहीं करता, हमारा मन ही हमपर ऐसा जुल्म करता है और अफसोस है कि तो भी हम अपने मनके जुल्मसे नहीं बचते। इसलिये अब हमें चेतना चाहिये और ऐसा करना चाहिये कि जिससे हमपर अपने मनका अनुचित अङ्कुश न रह सके तथा जैसे बने वैसे मनके जुल्मसे बचनेकी कोशिश करनी चाहिये।

बन्धुओं ! याद रखना कि हमारा मन हमारे ऊपर जैसा जुल्म करता है, हमें जैसा जेलखाना भोगवाता है उसका हजारवां भाग भी दूसरा कोई हमपर जुल्म नहीं कर सकता । दूसरोंके सच्चे जुल्मसे दुखी होनेवाले मनुष्य इस जगतमें बहुत थोड़े हैं, परन्तु अपने मनके जुल्मसे दुखी होनेवाले आदमी अधिक हैं। अगर वे अच्छी तरह यह समझ लें कि अपने मनको अपने वशमें नहीं रख सकनेके कारण ही हमें कई तरहके दुःख भोगने पड़ते हैं और इस बातका पूर्ण रूपसे विश्वास हो जाय तो बहुत आदमी इस दुःखसे छूटनेकी कोशिश करें। इसलिये जैसे दूसरोंके जुल्मसे बचनेकी कोशिश करते हैं वैसे अपने मनके जुल्मसे बचनेके लिये मिहनत कीजिये । इससे दुनियाके बहुतसे दुःख घट जायँगे और आप परमार्थमें भी आगे बढ़ सकेंगे । इसवास्ते पहले अपने मनको जीतनेकी कोशिश कीजिये ।

४८-महाजन माने क्या ? और महाजनोंके आचरण कैसे होते हैं ?

हमारे ऋषिमुनियोंने महाजनोंपर बहुत जोर दिया है और यह कहा है कि जिस रास्ते महाजन जाते हैं उसी रास्ते सर्व-साधारण लोग भी जाते हैं । इसीलिये कहा है कि—

महाजनो येन गतः स पन्थाः

अर्थात् बड़े आदमी जिस रास्ते जाते हैं उसी रास्ते दूसरे भी जाते हैं । इसके लिये श्रीमद्भगवद्गीतामें कहा है कि—

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते॥
(अ० ३ श्लो० २१)

अर्थात् श्रेष्ठ पुरुष जो आचरण करते हैं उसीके अनुसार दूसरे आदमी भी करते हैं और वे जैसा काम करते हैं वैसा ही सब लोग करते हैं।

इसी प्रकार कितनी ही जगह महाजनोंके बारेमें उत्तम विचार प्रगट किये हैं। ऐसे महा जनोंको हम सद्गृहस्थ कहते हैं, सज्जन कहते हैं, भलेमानस कहते हैं और अंगरेजीमें उनको जेण्टलमेन कहते हैं। ये लोग पहले जमानेमें महाजन कहे जाते थे। इसलिये देशमें और दुनियामें इस उत्तम श्रेणीके जो मनुष्य होते हैं उनके लक्षण हमें जानना चाहिये। इसके लिये बहुत थोड़ेमें कहना पड़े तो यह कहा जा सकता है कि "जो आदमी अपने आपको सुधारनेकी कोशिश करते हैं और अपने आसपासके लोगोंको सुधारनेकी कोशिश करते हैं उनको सज्जन समझना।" क्योंकि इन दो विषयोंमें और अनेक बातें आ जाती हैं।

महाजनका यह लक्षण सुनकर शायद् कोई कोई आदमी सोचेंगे कि बस! इतनी ही बातमें महाजनपन या गृहस्थपन आ गया! इसके जवाबमें पण्डित कहते हैं कि हां। इन दो गुणोंके अन्दर और अनेक गुण आ जाते हैं। तिसपर भी हम देखते हैं कि हमारे करोड़ों भाई बहनें इन दोमें से एक गुण भी नहीं रखतीं। सज्जनोंका पहला लक्षण है आप सुधरना। अब विचार कीजिये कि आप सुधरनेके लिये कितने थोड़े आदमी मिहनत करते हैं और उनमेंसे कितने थोड़े आदमी कितनी थोड़ी सफलता पाते हैं? साधारण तौरपर देखनेसे हमें ऐसा मालूम होता है कि दुनियाका हर एक आदमी आगे बढ़ने

तथा सुधरनेके लिये कुछ न कुछ मिहनत कर रहा है। परन्तु लोगोंकी यह मिहनत कामचलाऊ होती है, उनकी यह मिहनत दिखाऊ होती है, उनकी यह मिहनत मजबूरन होती है, उनकी यह मिहनत बिना आनन्दकी होती है, उनकी यह मिहनत ढीली सीली और गिरती पड़ती होती है, उनकी यह मिहनत सिर्फ छोटे स्वार्थके लिये होती है, उनकी यह मिहनत कुछ दबावके कारण होती है, उनकी यह मिहनत बेमनकी होती है और उनकी यह मिहनत बिना किसी ऊंचे उद्देश्यके होती है तथा अपने आपको सुधारनेके लिये वे जो मिहनत करते हैं वह मिहनत भी उन्हें बोझ सी लगती है। इसलिये थोड़ी बहुत मिहनत करने पर भी वे सज्जनोंकी गिनतीमें आनेलायक नहीं हो सकते। उनकी इस ऊपरी मिहनतसे कोई बड़ा गहरा परिणाम नहीं निकलता; इससे लाचारी दरजे कीहुई कामचलाऊ मिहनतका कुछ बहुत मोल नहीं होता। क्योंकि उससे कुछ बहुत बड़ा और अच्छा फल नहीं मिलता। बल्कि वे लोग सिर्फ व्यवहारके कोल्हूमें जुते रहते हैं और दुखी होकर जैसे तैसे अपना पेट भरनेकी दशामें ही रह जाते हैं। वे न तो अपना बहुत फायदा कर सकते और न अपने भाई बन्दोंका कुछ खास फायदा कर सकते। इससे वे महाजनोंकी श्रेणीमें नहीं आ सकते।

साधारण गंवार लोग अपने सुधारके बारेमें जहां इस तरह बेपरवा रहते हैं वहां महाजन लोग अपने सुधारके लिये कितना खयाल रखते हैं यह आपको मालूम है? इसके लिये अनुभवी लोग कहते हैं कि जो सज्जन हैं वे अपने मनमें पक्के तौरपर यह समझ लेते हैं कि हमें अपना फर्ज पूरा करना ही चाहिये और फर्ज पूरा करनेके लिये तथा फर्ज समझनेके लिये पहले हमें खुद खूब अच्छी तरह सुधरना चाहिये और सबसे आगे बढ़ना चाहिये।

हमारी इच्छा अपने भाइयोंकी मदद करनेकी है पर मदद कहांसे हो? जब कुएमें जल हो तब लोटेमें आवे ; पर जब कुएमें ही न हो तो लोटेमें कहांसे आवे ? इसी तरह हम दूसरोंकी मदद करना चाहते है पर जब हममें मदद करनेकी सामर्थ्य न हो तब हम कहांसे मदद कर सकते हैं ? जैसे-हमारी इच्छा है कि हम अकालमें दुःख पानेवालोंकी धनसे मदद करे परन्तु जब हमारे पास धन नहीं है तो हम धनकी मदद कैसे कर सकते हैं? हमें यह इच्छा होती है कि अपने अज्ञान भाइयोंको हम ज्ञान दें और सीधा रास्ता दिखावें परन्तु जब हमारे पास ज्ञान नहीं है तब हम दूसरों को ज्ञान कहासे दे सकते हैं ? और हमारी यह इच्छा होती है कि हम अपने शरीरके बलसे अपने भाइयोंकी सेवा करें पर अगर हम खुद रातदिन बीमार रहते हैं और हमारा शरीर चगा नहीं है तथा कुछ मिहनत नहीं कर सकता तब कैसे सेवा की जा सकती है ? इसलिये अगर दूसरोंकी मदद करनी हो तो पहले हमें स्वयं अच्छी तरह सुधरना चाहिये । यह सोच कर वे लोग अपने आपको सुधारनेके लिये बहुत बड़ी मिहनत करते हैं । जैसे-ज्ञान हासिल करनेके लिये उन्हें परदेश जाना पड़े तो वे बहुत कष्ट उठा कर भी जाते हैं; ज्ञान हासिल करनेके लिये पैसा खर्चना पड़े तो इसमें भी वे पीछे नहीं हटते , ज्ञान हासिल करनेके लिये उन्हें भूखों रहना पड़े, जागरण करना पड़े और दूसरी कितनी ही अडचनें सहनी पड़ें तो वे इन सबको भी धीरे धीरे सह लेते हैं; ज्ञान हासिल करनेके लिये किसीका काम करना पड़े किसीसे दबना पड़े, किसीकी मदद मांगनी पड़े या किसी की खुशामद करनी पड़े तो यह सब भी हदमें रहकर वे करते हैं । अपनी इन्द्रियोंको कुमार्गमें जानेसे रोकनेके लिये वे अनेक प्रकारके उपाय करते हैं, अपनी इन्द्रियोंका घोड़ा काबूमें रखनेके लिये वे

अपने मनमें रातदिन लड़ाई किया करते हैं, अपने मनको जीतनेके लिये वे अनेक सज्जनोंका सत्संग करते हैं, अनेक उपदेशकोंके उपदेश सुनते हैं, कितनी ही पुस्तकें खास कर इसीलिये पढ़ते हैं और मनको वशमें रखनेकी अलग अलग युक्तियां शास्त्रोंमें ढूंढ़ते हैं तथा उनमें जो युक्ति अपने अनुकूल होती है उसकी आजमाइश अपने मन पर करते हैं। इतना करनेपर भी किसी किस्मका विकार काबूमें न आता हो और कोई भूल होती हो तो वे बहुत दुखी होकर बड़ा पश्चाताप करते हैं और उस समय आप अपने मनको बहुत धिक्कारते हैं तथा उसे बहुत समझाते हैं और उस समय उस विकारको काबूमें रखनेके लिये कुछ कड़ी प्रतिज्ञा करते हैं तथा अपने मनको वश करनेकी शक्ति देनेके लिये परम कृपालु परमात्माकी प्रार्थना करते हैं। इस प्रकार अपने मनको सुधारनेके लिये वे मिहनत करते हैं। इसीसे वे महाजन कहलाते हैं, इसीसे वे सज्जन कहलाते हैं, इसीसे वे गृहस्थ कहलाते हैं और अपने आपको सुधारनेके लिये जो आदमी ऐसी मिहनत करते हैं उन्हींको हम भलेमानस कहते हैं। क्योंकि अपने आपको सुधारनेके लिये जिसने इतनी बड़ी मिहनत की हो वही आदमी इस दुनियामें बहुत आगे बढ़ सकता है और जिस आदमीने ज्ञान हासिल करनेमें तथा मनको वश करनेमें योग्य रीतिसे योग्य परिश्रम किया हो उसीको अनेक प्रकारसे सफलता मिलती है। जो आदमी अपनी ओरसे बेपरवा होता है उसकी मदद ईश्वर भी नहीं करता। और जो आदमी अपनी मदद आप करता है उसकी मदद प्रभु भी करता है। इसलिये याद रखना कि जो आदमी आप अपना सुधार करना चाहता है और इसके लिये खूब ज्यादा मिहनत करता है वही आदमी इज्जत हासिल कर सकता है, वही आदमी धन पा

सकता है, वही आदमी लम्बी उमर पा सकता है, वही आदमी जगतकी मनक चीजों तथा अनेक आदमियोंपर प्रभुता जमा सकता है और वही आदमी अच्छा नागरिक कहलाता है तथा महाजन कहलाता है। ऐसे ही आदमी आत्मिकसन्तोष पा सकते हैं तथा प्रभुके प्यारे हो सकते हैं।

जो आदमी पहले आप ही न सुधरें और ज्ञान तथा मानसिक बलमें आगे न बढ़ें वे दूसरोंका सुधार कैसे कर सकते हैं? और अगर कभी देखादेखी या दूसरे कारणसे ऐसी इच्छा हो भी तो वे बेचारे क्या कर सकते हैं? वे आप ज्ञान प्राप्त किये हुए नहीं होते जिससे दूसरोंके काम आवें तथा दूसरोंकी मदद करनेकी कुंजी नहीं जानते। इससे व असली रास्तेसे काम नहीं कर सकते, सच्चे बलसे काम नहीं कर सकते, सच्चे उत्साहसे काम नहीं कर सकते और इससे उनके कामका जगतपर कुछ बहुत असर नहीं होता। और लल्लोपत्तोंके कामसे उन्हें खुद भी कुछ बहुत लाभ नहीं हो सकता। परन्तु जिन्होंने अपने आपको सुधारा है और ज्ञान पानेके लिये तथा हृदयका बल पानेके लिये भगीरथप्रयत्न किया है वे आदमी अपने भाइयोंकी मदद करनेके लिये भी बहुत जोरसे काम कर सकते हैं और उसका तुरत असर होता है और वह असर बहुत दूर तक पहुंच सकता है तथा बहुत अधिक समय तक टिक सकता है। क्योंकि वे अपने भाइयोंके लिये जो कुछ अच्छा काम करते हैं वह सिर्फ ऊपरसे थोड़ी देरकी वाहवाही लेनेके लिये नहीं करते, वे जो कुछ करते हैं वह सिर्फ लोकलाजसे नहीं करते, वे जो कुछ करते हैं वह दूसरोंकी देखादेखी नहीं करते, वे जो कुछ करते हैं वह बड़ाई पानेके लिये नहीं करते और वे जो कुछ करते हैं वह कुछ अपना मतलब साधने या किसीकी खुशामदके

लिये नहीं करते; बल्कि जो कुछ करते हैं हृदयकी उमङ्गसे करते हैं वे जो कुछ शुभ काम करते हैं वह अपना कर्तव्य पूरा करनेके लिये करते हैं, वे जो कुछ करते हैं वह अपने भीतरके ज्ञानके कुदरती धक्केके कारण करते हैं,-वे किसी तरहके तुच्छ बदलेकीआशा रक्खे बिना प्रभुके प्रीत्यर्थ करते हैं। वे जब इस प्रकार शुद्धतासे, हृदयसे और सच्चे बलसे काम करते हैं तभी उनकी आत्माको सन्तोष होता है। सो अपनी आत्माके सन्तोषके लिये वे सबको सुधारने और मदद देनेकी कोशिश करते हैं इससे उनमें बहुत अधिक बल होता है जिससे वे जल्द सफलता पाते हैं। और जो व्यवहारी लोग परमार्थके काम करते हैं वे दूसरोंकी मदद करनेके लिये काम करना चाहते हैं, इससे उनके काममें कुछ बहुत जान नहीं होती। क्योंकि मनुष्य तथा प्राणीमात्रका यह कुदरती स्वभाव होता है कि वे अपनी आत्माके लिये जितना कर सकते हैं उतना दूसरोंके लिये नहीं कर सकते। इसलिये जो दूसरोंके लिये करने जाते हैं उनके काममें और जो अपनी आत्माके लिये करते हैं उनके काममें बहुत फर्क होता है। वैसा ही फर्क साधारण आदमियों तथा महाजनोंके काममें भी होता है और इसी फर्कके कारण पिछले जन महाजन कहलाते हैं। इसलिये अगर भलेमानस बनना हो और आत्मिक शान्ति लेना हो तो पहले आप अपनेको सुधारनेकी कोशिश कीजिये और फिर दूसरोंको आगे बढ़ानेकी कोशिश कीजिये। ऐसा करनेका नाम ही श्रेष्ठता है, यही जीवनकी सार्थकता है, यही धर्मका काम है और जो ऐसा कर सकता है वही महाजन है। इसलिये ऐसा महाजन बननेकी कोशिश कीजिये।

४९—अब हमें यह समझना चाहिये कि अज्ञानतामें पड़े रहना भी एक प्रकारका बहुत बड़ा अपराध है और इस अपराधकी कड़ी सजा भोगनी पड़ती है। इसलिये इस बातका खयाल रखना चाहिये कि हम अज्ञान न रह जायं।

अभीतक लोग यह समझते हैं कि चोरी करना अपराध है, व्यभिचार करना अपराध है, हिंसा करना अपराध है, झूठ बोलना अपराध है, शराब पीना गुनाह है, विश्वासघात करना अपराध है, किसीपर जुल्म करना अपराध है, किसी निर्दोषका हक मारदेना या लूट लेना अपराध है, झूठी गवाही देना अपराध है और लोगोंका राज्य तथा धर्मके कानूनपर न चलना अपराध है। लोग ऐसा समझते हैं परन्तु ये सब प्रकारके अपराध जिससे पैदा होते हैं उस अज्ञानताको लोग ठीक ठीक अपराध या गुनाह नहीं समझते। अब जमाना बदला है, इसस जैसे हरएक वस्तुका रूप बदलता जाता है वैसे ही अपराधोंका स्वरूप भी अब बदलेगा और पहलेके जमानेमें जिस किस्मके अपराधोंको हम अपराध नहीं मानते थे उनको भी अब अपराध मानना पड़ेगा। और जो चीजें या जो बातें पहले समयमें बतौर गुनाहके मानी जाती थीं उनमसे कितनी ही आजकलके समय गुनाह नहीं मानी जायगी। समयके फेर बदलके साथ ऐसा फेरफार हुआ करता है। इसलिये हमें आजकलके बड़ेसे बड़े अपराधको जान लेना चाहिये। वह है अज्ञान रहना। आज कलके जमानेमें अज्ञान रहना सबसे बड़ा अपराध है। क्योंकि परम कृपालु परमात्माने

हमें कृपा करके अद्भुत सामर्थ्यवाली अलौकिक बुद्धि दी है; महान बलवाली, जबरदस्त शक्तिवाली, चमत्कार कर दिखाने वाली और जबरन आगे खींच ले जानेवाली इन्द्रियां दी हैं; सारे ब्रह्माण्डमें घड़ीभरमें भ्रमण कर सकनेवाला चंचल मन दिया है; अपनापा प्रगट करनेवाला अहंभाव दिया और हरएक स्थितिके अनुकूल होने योग्य गठनका उत्तम मनुष्यशरीर दिया है। इसके सिवा कभी नाश न होनेवाली, अजर, अमर स्वयंप्रकाश आत्मा दी है और मानो इतनेको भी कम समझ कर प्रभु आप हमारे अन्तःकरणमें अन्तर्यामी तथा साक्षीरूपसे मौजूद है। ऐसी ऐसी अनुकूलताके होनेपर भी अगर हम अज्ञान रहें तो क्या यह हमारी भूल नहीं है? यह हमारी नालायकी नहीं है? और इन सब साधनोंके रहते हुए भी जङ्गली बने रहना क्या बड़ेसे बड़ा अपराध नहीं है? बेशक है। अज्ञान रहना बहुत बड़ा अपराध है और इस अपराधकी बड़ी कड़ी सजा भोगनी पड़ती है। अपराध जितना बड़ा होता है उसकी सजा उतनी ही बड़ी होती है। अज्ञानता बड़ा गुनाह है। क्योंकि सब तरहके पाप अज्ञानतासे पैदा होते हैं, सब तरहके मोह अज्ञानतासे पैदा होते हैं, सब तरहके विकार अज्ञानताके कारण जोर पकड़ लेते हैं और सब वृत्तियां अज्ञानताके कारण ही वशमें नहीं रहतीं। इस संसारमें आकर अच्छेसे अच्छा सार लेना चाहिये तथा इस संसारमें स्वर्ग भोगना चाहिये; इसके बदले अज्ञानताके कारण हमारे आसपास जहां तहां नरक दिखाई देता है। ऐसी दशामें पड़े रहना क्या गुनाह नहीं है? बेशक बहुत बड़ा गुनाह है।

आज कलके जमानेमें छापाखानेके साधन, रेलके साधन, तारके साधन, प्रजाकी रक्षाके लिये पुलिस तथा पलटनके साधन भिन्न भिन्न देशोंमें मुलहके कौलकरार और अनेक प्रकारके

क्योंकि साधनोंके होते हुए भी अज्ञानताके कारण अगर हम इन सब विषयोंकी कुछ भी खबर न रक्खें और "मैं और मेरा भतार इसीमें सब संसार" समझकर बैठ रहें और दुनियासे अज्ञान रहें तो क्या यह अपराध नहीं है ?

आजकलके जमानेमें ऐसा अच्छा सुबीता है कि हम अपनी कोठरीमें बैठे बैठे दुनियाभरकी बड़ी बड़ी बातें बहुत सहजमें जान सकते हैं। देशमें क्या क्या सुधार होता है, जुदी जुदी जातोंमें कौन कौन अगुआ मुख्य करके काम करते हैं, कितने विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं, किस किस्मकी नयी कारीगरी खिलती जाती है, हमारे ऊपर जो राजा या हाकिम हुकूमत करते हैं उनके विषयमें दुनियामें कैसे विचार चलते हैं, परदेशमें क्या क्या उथलपुथल हो रही है, वर्त्तमान वर्षमें देशकी उपज कैसी है, जुदे जुदे भागोंका हवा-पानी कैसा है, देशमें किस किस्मकी खानें निकल सकती हैं, किस किस्मके विद्यार्थी सहायताके योग्य हैं, परदेशसे सम्बन्ध बढ़ानेके लिये क्या क्या उपाय करना चाहिये, राज्यव्यवस्थामें सुधार बढ़ाव करनेके लिये किस प्रकार तथा किससे अर्ज करना चाहिये, हमारी जातिके बालक कैसे आगे बढ़ सकते हैं, स्त्रियोंके मुंह पर जो मक्खियां भिनभिनाया करती हैं वे कैसे दूर हों, व्यापार कैसे बढ़े, खेतीबारीमें कैसे सुधार हो, गरीब लोगोंकी मदद किस तरह की जाय, निचले दरजेके लोग कैसे सुधारे जायं, अकालमें पशुओंको बचानेके लिये क्या क्या उपाय करने चाहिये, नहरें निकालने तथा कुए खुदवानेके लिये किस तरह काम करना चाहिये, शिक्षित लोगोंमें खेतीका शौक जगानेके लिये क्या क्या उपाय करना चाहिये, नये ढङ्गके काम काज कैसे फैलाये जायं, राजाप्रजाका सम्बन्ध क्योंकर अधिक मजबूत हो, वैद्यक विभागमें क्या क्या नये आविष्कार होते हैं तथा

कैसे कैसे आविष्कारोंकी आज कल जरूरत है और वैसे आविष्कारोंके लिये क्या क्या उपाय करना चाहिये, साहित्यके प्रदेशमें कितनी बढ़ती होती है उसमें कैसे कैसे रत्न हैं और वे क्या क्या काम कर रहे हैं, उनकी कदर करने वाले कौन कौन हैं और इस उपयोगी वर्गकी क्यों कर अधिक सहायता की जाय, धर्मकी दशा कैसी है, धर्म गुरुओंकी दशा कैसी है, धर्म सम्बन्धी लोगोंके आचार विचारमें क्या क्या फेरबदल होता जाता है, नये नये धर्मोंका जोर कैसे बढ़ता जाता है और पुराने धर्म कैसे ढीले पड़ते जाते हैं, सदाचारमें लोग आगे बढ़े हैं कि पीछे हटे हैं, देशके पुराने शिल्प फिरसे जी सकते है कि नहीं, देशकी आमदनी कितनी है, परदेशकी आमद बढ़ती है कि घटती है, किस किस्मकी आमद क्यों बढ़ती है या क्यों घटती है, शिक्षकोंकी स्थिति कैसी है, हाकिमोंकी स्थिति कैसी है, विद्यार्थियोंकी स्थिति कैसी है, स्त्रियोंकी स्थिति कैसी है, प्रजाकी तन्दुरुस्ती कैसी है और पहले कैसी थी तथा भविष्यमें कैसी होनी चाहिये, लोगोंकी मानसिक शक्ति किस कदर खिली है, क्योंकर जल्द खिल सकती है और लोग अपना कर्तव्य क्योंकर खूब अच्छी तरह कर सकते हैं-इन सब बातोंका विचार करना क्या हमारा काम नहीं है ? ऐसी बातोंमें अज्ञान रहना क्या गुनाह नहीं है ? भाइयो ! यह सच है कि इन सभी विषयोंमें ध्यान नहीं दिया जा सकता पर इनमेंसे किसी एकाध विषयका खास अभ्यास करना ही चाहिये और उसमें अगुआ होना चाहिये ।

कुछ वर्ष पहले लोग यह कहा करते थे कि फलाने सेठके पास बहुत धन है-इतना धन है कि सात पीढ़ी तक खानेसे भी खतम नहीं होनेका, तब उनके लड़के क्यों पढ़ें ? इसी

तरह किसानोंके बारेमें अब भी बहुत आदमी कहते हैं कि उनको पढ़कर क्या करना है ? पढ़ कर भी हल ही जोतना होगा न ! वे पढ़ कर क्या गद्दी तकिया लगाकर बैठेंगे ? स्त्रियोंके लिये भी लोग कहते हैं कि उनको क्या आफिसमें क्लर्की करना है कि पढ़ें ! ऐसे ऐसे विचार अब भी चलते हैं। जब कोई अखबार पढ़ता है तथा परदेशके ईजाद आविष्कार या लड़ाई भिड़ाईकी बातें कहता है तो कितने ही आदमी कहते हैं कि हटाओ इस बखेड़ेको, इससे हमें क्या मतलब है ? चीनका चाहे जो हो और तुर्कीका चाहे जो हो इसमें हमारे बापका क्या जाता है ? ऐसे ऐसे खयाल अब भी प्रगट किये जाते हैं। परन्तु याद रखना कि हमारा देश भी दुनियाका एक भाग है और हम स्वयं उसके एक छोटेसे अंग हैं, इसलिये जैसे शरीरमें कहीं चोट लग जानेसे उसका धक्का शरीरके सब भागोंमें पहुंचता है वैसे ही दुनियामें जो बड़ा फेरबदल होता है उसका अच्छा बुरा असर हमें भी सहना पड़ता है। जैसे-

(१) अमेरिकामें कपासकी उपज कम हो तो हमारे देशमें कपासकी फसल अच्छी होनेपर भी रुईका भाव बहुत महंगा हो जाता है। इससे हमारे देशके मिलवालोंको, व्यापारियोंको तथा भूत कपड़ेके ग्राहक साधारण लोगोंको भी उसकी महंगीका धक्का सहना पड़ता है।

(२) हमारे देशके लोगोंका बड़ा भाग अभी जंगलीपनमें पड़ा रहता है तथा दरिद्रतामें पड़ा करता है; इससे हम लोग कोई बड़ा नया आविष्कार नहीं कर सकते। पर विलायतके लोगोंने जो रेल निकाली है उसका लाभ हम लोगोंको मिलता है, अमेरिकाके लोगोंने कपड़े सीनेकी जो कल बनायी है उससे हम लोगोंको फायदा होता है, इटलीके लोगोंने हारमोनियमका जो आविष्कार किया है, उसका लाभ हम लोगोंको मिलता है,

फरांसीसी लोगोंने जो मोटर निकाली है उससे हम लोग फायदा उठाते हैं, जर्मन लोगोंने रसायन शास्त्रकी मददसे अनेक प्रकारके रङ्गोंमें, रोगनोंमें, फलोंमें तथा और कितनी ही चीजोंमें जो फेर बदल तथा सुधार बढ़ाव किया है उसमे हम लोग विना मिहनत आसानीसे फायदा उठाते हैं।

(३) युरोप अमेरिकामें नये नये ढङ्गके सायंसके जो उत्तमसे उत्तम ग्रंथ लिखे जाते हैं उनसे हम लोगोंको लाभ होता है और हमारे देशके प्राचीन समयके जो उत्तमोत्तम ग्रंथ हैं उनसे उन लोगोंको लाभ होता है।

(४) अमेरिका, आस्ट्रेलिया या ट्रांसवालमें चांदी या सोनेकी बड़ी खान निकल पड़े तो चांदी सोनेका भाव घट बढ़ जाता है जिससे हमारे देशके व्यापारियों तथा देहाती लोगोंको भी उसका नफा नुकसान सहना पड़ता है।

(५) जर्मन लोगोंने रसायनसे जो नकली नीलका रंग आविष्कार किया उससे हमारे देशका नीलका व्यापार टूट गया।

(६) युरोप अमेरिकाके लोगोंने जो चाय काफी तथा सिगरेट पीना सीखा तो इन चीजोंकी खेती हमारे देशमें अधिकतासे होने लगी और इन सब चीजोंका व्यसन भी हमारे देशमें धीरे धीरे फैलता जाता है।

(७) विलायतमें कोयलोंकी खानोंके मजदूर हड़ताल करते हैं तो उसका असर यहांके कारखानेवालों तथा व्यापारियोंको भी सहना पड़ता है।

(८) युरोप, अमेरिका, जापान, अफरीका या आस्ट्रेलियामें जकात सम्बन्धी जो कानून बनता है तथा परदेशी आदमियोंके सम्बन्धमें जो कानून बनता है उसका असर हमारे देशके लोगों पर भी पड़ता है। टैक्स वहां लगता है और माल यहांके

बाजारमें महगा या सस्ता हो जाता है ।

बन्धुओ ! इस प्रकार अनेक रीतियोंसे सारी दुनियाका असर हम सब पर पड़ता है। आज कलके जमानेमें दुनिया दुनिया नहीं रही बल्कि सारी दुनिया एक देश सी हो गयी है, एक देश एक प्रान्त सा हो गया है एक प्रान्त एक शहर सा हो गया है, एक शहर एक महल्ले सा हो गया है और एक महल्ला एक मकानकी जुदी जुदी कोठरियोंके समान हो गया है। क्योंकि विद्या कला के साधनोंने हमलोगोंको एक दूसरेके बहुत निकट कर दिया है तथा दिन पर दिन हम लोग और निकट होते जायगे । परिणाम यह होगा कि यह दुनिया एक मकान समान बन जायगी और जुदजुदे देश उसके जुदे जुदे कमरे समान हो जायगे । अब विचार कीजिये कि ऐसे समय हम दूसरे लोगों या दूसरे देशोंसे लापरवाही रखेंगे तो कैसे निभेगा ? हम मकड़ीके जालकी तरह अपने ही घरमें पड़ रहें तो कैसे चलेगा ? हम अपने मनमें यह सोचें कि दुनिया चूल्हेमें पड़े हमसे क्या मतलब, दूसरे लोग सुधरें या बिगड़े इसमें हमारे बापका क्या लेना देना है तो कैसे बनेगा ? क्योंकि अब तो सबका असर सबपर पड़ता है । जापानमें भूकम्प हो तो उसका असर हिन्दुस्थानसे माल लादकर अमेरिका जाते हुए जहाज पर पड़ता है और इटलीमें ज्वालामुखी फटे तो उसका असर अफरीकाके किनारेपर होता है और वहांके जहाज उलट जाते हैं जिनमें कभी कभी हमारे देशके आदमी भी होते हैं। इस प्रकार सारी दुनियाकी बड़ी बड़ी घटनाओंका असर हर एक देश पर थोड़ा बहुत पड़ता है । इसलिये अब हमें दुनिया भरको जानने योग्य सब बातें जाननी चाहियें और हर एक मुख्य प्रश्नमें अपनी हैसियतके अनुसार भाग लेना चाहिये । तभी हमारा हक बना रह सकता है और तभी दूसरी प्रजाके साथ आगे बढ़ा जा

सकता है। इसलिये अब एकान्तसे बाहर निकलना चाहिये, "काज़ी जी! दुबले क्यों? शहरके अन्देशेसे" की कहावतसे अब हमें बाज आना चाहिये और सारे जगतमें भ्रातृभाव बढ़ानेकी कोशिश करनी चाहिये। ऐसा करनेमें ही हमारा तथा हमारे भाइयोंका और दूसरे लोगोंका कल्याण है।

इन सब बातोंको जो लोग ठीक ठीक समझते हैं उनको विश्वास हो जाता है कि अज्ञानतामें पड़े रहना बहुत बड़ा अपराध है, अज्ञानतामें पड़े रहना बड़ी भारी भूल है और अज्ञानतामें पड़े रहना बहुत बड़ा पाप है। क्योंकि सब पाप इससे उत्पन्न होते हैं। इसवास्ते अपने कल्याणके लिये तथा परम कृपालु परमात्मा जो ज्ञानस्वरूप है उसको प्रसन्न करनेके लिये हमें अज्ञानतासे छूटना चाहिये और ऐसा करना चाहिये कि जिससे हमारे भाई बन्दोंमें तथा सारे जगतमें ज्ञान खूब फैले। क्योंकि ज्ञान फैलाना सबसे बड़ा काम है और सबसे बड़ा धर्म है। ज्ञानसे आत्माका जितना कल्याण हो सकता है उतना और किसी तरह नहीं हो सकता। इसलिये जैसे बने वैसे अज्ञानताके पापसे छूटनेकी कोशिश कीजिये और ज्ञानके पुण्यके पवित्र प्रकाशमें आइये। ज्ञानके पुण्यके पवित्र प्रकाशमें आइये।

६०–जुदी जुदी सम्प्रदायोंके जो जुदे जुदे मत हैं वे कुछ स्वभावसिद्ध नहीं हैं और न वे आत्माके मत हैं; बल्कि वे देश कालके अनुसार गढ़े हुए मत हैं, इसलिये उनमें समयके अनुसार फेर बदल करना चाहिये।

याद रखना कि जगतमें जितने धर्म हैं, जितने पंथ हैं, जितनी

सम्प्रदायें हैं और जितने मत हैं वे सब कुछ प्रकृतिके नियमके अनुसार नहीं हैं, वे सब कुदरतके नियमानुसार नहीं हैं, वे सब मत कुछ शरीर के गठनके अनुसार नहीं हैं, वे सब वैद्यक शास्त्रके नियमानुसार नहीं हैं, वे सब समाजका गठन समझ कर नहीं रचे गये हैं, वे सब पुराने मत कुछ हालके जमानेके राज्यके कानून जानकर नहीं बनाये गये हैं और न वे सभी ऐसे हैं कि आत्माको पसन्द आ जाय। जिस समय ये मत फैले उस समय देशकी जैसी दशा थी, लोगोंकी जैसी दशा थी और आस पासकी दुनियाकी जैसी दशा थी वैसी दशा आजके जमानेमें नहीं है। जैसे-जिस समय महात्मा मनु महाराजने मनुस्मृतिके कानून बनाये उस समय यहां अंगरेजी राज्य नहीं था, उस समय रेल या तार नहीं था, उस समय तरह तरहके धर्म और पंथ नहीं थे, उस समय देशमें इतनी अधिक बस्ती न थी, उस समय गुजारेके लिये लोगोंको आजकलकी सी हैरानी नहीं उठानी पड़ती थी, उस समय आजकलके बराबर मौज शौककी चीजें न थीं और उस समय आजकलकी तरह लोग प्रवृत्तिमें घुल मिल नहीं गये थे। इससे उस समयके सब कानून हालके जमानेमें काम नहीं आ सकते। इसी तरह बुद्ध तथा उनके बाद के अनुयायियोंने जो नियम बनाये वे आजकलके जमानेमें सब देशोंमें नहीं चल सकते। क्योंकि बुद्धका प्रादुर्भाव पाटलीपुत्रमें हुआ था; उनके उस समयके रस्मरिवाज और आचार हालके जापानमें नहीं चल सकते। हालके जापानियोंका अपने देशकी रक्षा करनेके लिये जरूरत होने पर रूससे लड़नेको लाचार होना पड़ता है और बुद्धका तो यह हुक्म है कि सब छोड़ देना चाहिये, तभी निर्वाण मिल सकता है। यह हुक्म भला आज कलके चीनियों या जापानियोंके कैसे काम आ सकता है? इस

समय पाटली पुत्रकी जो स्थिति थी उसमें और हालके चीन जापानकी स्थितिमें जमीन आसमानका फर्क है। इसलिये याद रखना कि जैसे जैसे दशा बदलती है वैसे ही वैसे मत पंथोंमें भी धीरे धीरे आपसे आप फेर बदल होता जाता है। परन्तु यह फेर बदल बहुत धीमे होता है और अगर जान सुनकर फेर बदल किया जाय तो तेजीसे हो सकता है। इसवास्ते धर्ममें लगे रहनेके लिये और उससे लाभ उठानेके लिये तथा धर्मको और विशाल और ऊंचा बनाने के लिये हमें ऐसी वैसी अच्छी बातें भी समझ लेनी चाहियें। जैसे—

जब हजरत ईसाने धर्म चलाया उस समय युरोपमें आज कलकी तरह विद्याएं खिली हुई नहीं थीं। इससे उन्होंने जो कुछ बातें उस समय कही हों या की हों वे सब बातें अबके सायंसके सामने नहीं टिक सकतीं। तौ भी अगर बाइबिलका शब्द शब्द माना जाय तो मानसिक गड़बड़ाध्याय हुए बिना न रहे और आगे भी न बढ़ा जा सके। जैसे-महात्मा ईसाने यह कहा है कि अगर कोई तुम्हारे बायें गालपर तमाचा मारे तो उसके सामने तुम अपना दायां गाल भी कर दो, जो कोई तुम्हारी टोपी ले ले उसे तुम अपना कोट भी ले जाने दो और कोई तुम्हें एक कोस बेगारमें पकड़ ले जाय तो तुम उसके साथ दो कोस बेगारमें चले जाओ। ये नियम क्या युरोप अमेरिकाके ईसाई राजा आजकल पाल सकते हैं? और अगर पालें तो क्या दुनियामें उनका राज्य इतना बढ़े?

इसी तरह पैगम्बर महम्मद साहबने अरबस्थानमें जंगली अरबोंको सुधारनेके लिये धर्म चलाते समय जो कानून बनाये थे सब कानून क्या आजकलके लोग पूरा पूरा मान सकते हैं? जैसे-चार स्त्रियां ब्याहनेकी छूट, ब्याज न खानेका हुक्म, कुरबानी

करनेका ठहराव तथा मूर्तिपूजक काफिरोंको मार डालने और उनसे दोस्ती न करनेका हुक्म आजकलके जमानेमें सब लोग नहीं पसन्द कर सकते। चतुर मुसलमानोंकी समझमें अब यह बात आती जाती है कि आजके जमानेमें ब्याज लिये बिना व्यापार धंधा नहीं चल सकता। जब हमसे दूसरे व्यापारी ब्याज लेते हैं, तब हम दूसरोंसे ब्याज न लेंगे तो कैसे चलेगा? स्त्रियोंको परदेमें रखनेके बारेमें भी लोगोंका ख्याल पलटता जाता है और इसमें भी युरोप अमेरिकाकी छूटका असर पड़ रहा है। इसी तरह वेजिटेरियन दयालु मुसलमान भाइयोंको पशुओंकी कुरबानीका काम भी नापसन्द है और एकसे अधिक स्त्रियोंसे ब्याह करनेका रिवाज भी बहुत घटता जाता है। इस प्रकार जमानेके अनुसार हर एक धर्मके मतमें कुछ न कुछ फेर बदल होता जाता है।

इसी प्रकार जन्तु विद्याने जैनमतपर भी कुछ असर डाला है और जीवदयाके नियम पालना बहुत अच्छी बात होने पर भी उसमें जो बेहद अत्युक्ति होती है उसकी तरफ सुधरे हुए जैन भाइयोंका लक्ष्य खिंचता जाता है। इस तरह दुनियाके हर एक धर्मवाले समझते जाते हैं कि हमारे मतमें जो जो क्रियाएं बतायी हैं तथा जो जो हुक्म फरमाये हैं वे सब कुछ हमेशाके लिये नहीं हैं। क्योंकि ये सब कुछ आत्माकी तहमेंसे नहीं निकले हैं और न वे ऐसे मत हैं जो तीनों कालमें टिक सकें, बल्कि देशकालके अनुसार तथा आस पासके संयोगोंके अनुसार उस समयके लोगोंकी दशा देखकर उन्हें सुधारनेके लिये उस समयके महात्माओंने मौकेकी बातें कही हैं और उनकी उनके जमानेमें बहुत जरूरत थी इसमें कुछ शक नहीं। उनकी मिहनतसे, उनके नियमोंसे, उनके मतोंसे और उनकी

क्रियाओंसे अनेक आदमियोंको लाभ पहुंचा है और अब भी अनेक आदमियोंको इन रास्तोंसे फायदा होगा इसमें कुछ शक नहीं और कुछ आश्चर्य नहीं है। परन्तु तो भी यह बात समझ लेने लायक है कि पुराने समय और पुराने धर्मके सब मत प्रकृतिके सदा अनुकूल नहीं हो सकते और न हालके समाजके अनुकूल ही हो सकते हैं। और आजकलके राज्यके कानूनोंसे मेल खानेलायक भी वे मत नहीं हैं। इसलिये जहां जहां या जिन जिन विषयोंमें ऐसी अड़चल पड़ती हो वहां सिर्फ पुस्तकोंमें ही न लगे रहकर ईश्वरको हाजिर नाजिर जानकर, अन्तःकरणकी प्रेरणाओंके अनुसार, महात्माओंकी सलाहके अनुसार और देशकालकी स्थितिके अनुसार बर्ताव किया जाय तो उससे बहुत जल्द उन्नति हो सकती है। इसलिये इस भूलमें न पड़े रह जाइये कि यह मत हमारे धर्मका है इसको कैसे छोड़ें। बल्कि जो सत्य है उसीको अपने धर्मका मत समझकर ग्रहण करनेकी कोशिश कीजिये।

ये सब बातें बताकर हम आपको कुछ यह नहीं समझाना चाहते कि दुनियाके सब धर्म झूठे हैं या न हम यह कहते हैं कि सब धर्मोंके सब सिद्धान्त मानने लायक नहीं हैं। इसके विरुद्ध हम तो बड़ी प्रतिष्ठाके साथ यह समझते हैं कि हर एक धर्ममें कितनी ही खूबियां है तथा हर एक धर्मकी मददसे अनेक लोगोंका कल्याण हुआ है और अब भी होगा। पर मूल बात इतनी ही है कि जो बात या जो मत अन्तःकरणको खलता हो और आत्माके स्वभावके विरुद्ध लगता हो उस मतके गुलाम बननेसे पहले शुद्ध सत्यको सामने रखकर साफ दिलसे विचार करना और फिर जो अन्तरात्मा हुक्म दे उसके मुताबिक चलना। यही हमारी आपकी सलाह है।

५७–हालमें हमारे पास क्या है, हालका समय कैसा है और हालके हमारे साधन तथा संयोग कैसे हैं, यह जैसे हम जानते हैं वैसे ही अगर आगे बढ़ना हो तो यह भी जानना चाहिये कि इनसब विषयोंमें और क्या क्या उन्नति दरकार है।

हम देखते हैं कि हर एक आदमीको आगे बढ़नेकी इच्छा होती है। कोई आदमी सच्चे दिलसे यह नहीं चाहता कि मैं पीछे पड़ा रहूं। कुदरतकी इच्छा ही ऐसी है, उसके नियम ही ऐसे हैं और इस जगतकी रचना ही ऐसी है कि हर एक जीव तथा हर एक प्राणीको आगे बढ़नेकी स्वभावत इच्छा होती है। यहांतक कि जाने या बेजाने ऐसा करनेको उसे लाचार होना पड़ता है। इससे जगतकी हर एक वस्तुमें भी हर घड़ी कुछ न कुछ कुदरती रासायनिक फेर बदल हुआ करता है। परन्तु अभी हमारा ज्ञान बहुत अधूरा है और उस सूक्ष्म फेर बदल देख लेने माप लेने तथा समझ लेनेके साधन अभी तक जैसे चाहियें वैस हमारे पास नहीं हैं। इससे हर घड़ी होने वाला फेर बदल जब बहुत बड़ा रूप धारण कर लेता है और बहुत समय बीत जाता है तब हम उसे देख सकते हैं। जैसे—

दूधसे दही जमानेके लिये जिस समय उसमें जोरन डालते हैं उसी समयसे उसमें कुछ न कुछ रासायनिक क्रिया होने लगती है। उस क्रियाको उसी वक्त हम असली रूपमें नहीं देख सकते। जब कई घंटे बाद दही जम जाता है तब हम दूधके स्वरूपमें फेर बदल हुआ पाते हैं। पानी गरम करनेके लिये जब चूल्हे पर चढ़ाते हैं तभीसे, उसी क्षणसे उसमें कुछ फेर बदल होने

लगता है परन्तु जब तक पानी ठीक ठीक गरम नहीं हो जाता तब तक उसका फेर बदल हम नहीं देख सकते। बीजको जब जमीनमें बोते हैं उसी क्षणसे उसमें फेर बदल होने लगता है परन्तु जब तक उसमें अंकुर नहीं फूटता और बाहर नहीं निकलता तब तक हम उसकी भीतरकी क्रिया नहीं जानते। बुखार आने पर होता है तो कई दिन पहलेसे शरीरमें उसकी तय्यारियां होने लगती हैं परन्तु यह बात बहुत आदमी नहीं जानते ; जब बुखार आ जाता है तभी मालूम पड़ता है कि बुखार आया। लेकिन उसकी तय्यारियां तो कई दिन पहलेसे होती हैं। कुछ फायदा होनेको या नुकसान होनेको होता है तो उसका बीज भी मुद्दत पहले पड़ जाता है परन्तु उस समय यह बात हम नहीं जानते। इससे जब उसके फलसे लाभ या हानिको अचानक जानते हैं तब हमें बहुत बड़ा हर्ष या शोक होता है। लेकिन सच पूछिये तो जगतकी हर एक घटना क्रम क्रम तथा नियमसे होती है। कोई बात आपसे आप, एक दम, अचानक नहीं हो जाती। हर एक वस्तुकी जड़ बहुत गहरी होती है और वह हर घड़ी होनेवाले फेर बदलका परिणाम है, पर हम वैसा सूक्ष्म फेर बदल नहीं देख सकते। इससे हमें ऐसी महीन महीन बातोंकी खबर नहीं होती ; सिर्फ बड़े बड़े परिणाम हमें सूझते हैं जिन्हें देखकर हमें हर्ष या शोक होता है।

जो रूखे दिलके आदमी हैं, जो बाहरकी बातोंमें ही लिपटे रहते हैं, जिन्होंने अपनी देखनेकी शक्तिको विकसित नहीं किया है, जिन्होंने अपनी बुद्धिको विकसित नहीं किया है, जिन्होंने जुदे जुदे विषयोंके शास्त्रोंका खूब मनन नहीं किया है और जिन्होंने जगतमें होनेवाले फेर बदलका तथा मनुष्यके मनमें होनेवाले फेर बदलका मनन नहीं किया है उनको कुदरतकी

हर एक वस्तुमें घड़ी घड़ी होनेवाले फेर बदलकी खबर नहीं होती। परन्तु जो आदमी आगे बढ़ेहुए हैं, जिन आदमियोंने निकम्मी चीज़ोंके मोहसे बच कर ऐसे आनन्ददायक विषयोंमें अपना समय लगाया है और जिन आदमियोंने सर्वशक्तिमान महान ईश्वरकी अद्भुत लीला समझनेका प्रयत्न किया है उन ज्ञानियोंको हर एक वस्तुके सूक्ष्म फेर बदलका भी थोड़ा बहुत पता लग जाता है। पर ऐसी सूक्ष्म दृष्टिवाले महात्मा बहुत ही थोड़े होते हैं और जो ऐसे होते हैं वे बड़ी तेजीसे आगे बढ़ सकते हैं। सो आगे बढ़नेके लिये ऐसी सूक्ष्म दृष्टि हासिल करना सीखना चाहिये। व्यवहारी आदमियोंमें इतनी गहरी दृष्टि और सूक्ष्म बुद्धि न हो तो भी उन्हें अपनी वर्तमान स्थिति समझ लेनी चाहिये। जैसे-इस समय हमारे शरीरकी प्रवृत्ति कैसी है, हमारे कुटुम्बकी स्थिति कैसी है, हमारी आमदनी कितनी है, हमारा खर्च कितना है, हमारे मित्र कैसे हैं रोजगारमें साधन कैसे हैं, वक्त कैसा है, हमारे देशकी या गांवकी दशा कैसी है, हमारे मनका चक्र किस तरफको ढलाहुआ है, धर्मके विषयमें हमारी वृत्ति कैसी है, हम किस किस्मके दोस्तोंकी मदद पसन्द करते हैं, हमारा शौक किस किस्मका है, हमारे कुटुम्बके आदमियोंका स्वभाव कैसा है, हमें किस किस्मकी पुस्तकें पढ़ना पसन्द है, हमारे आस पास जाननेयोग्य क्या क्या वारदातें होती हैं, हमारे रोजगारमें उन्नतिका ढङ्ग है कि नहीं और किन किन विषयोंमें कैसे कैसे सुबीते हैं तथा क्या क्या असुबीते हैं, यह हर एक आदमीको जानना चाहिये। क्योंकि ये सब बातें बड़ी आसानीसे जानी जा सकती हैं और साधारण समझसे भी समझी जा सकती हैं। इतना समझनेके लिये कुछ अलौकिक बुद्धि दरकार नहीं है। बल्कि जरा ज्यादा

ध्यान देनेसे ये सब बातें आसानीसे समझमें आ सकती है। पर अफसोस है कि अभी हमारे करोड़ों भाई बहनें हर रोजके इश्योंमेंसे ऐसी मोटी मोटी बातें भी नहीं जान सकतीं और जो घटनाएं उनके आस पास हो रही हैं तथा जिस स्थितिमें वे लोग स्वयं पड़े हुए हैं उनका भी विचार वे लोग नहीं करते और न उनसे अटकल लगाना उन्हें आता है। हम इतनी बड़ी अज्ञानतामें डूब गये हैं। इसलिये हमें ऐसा करना चाहिये कि जिससे हमारे भाई बहनें अपनी सच्ची दशा समझा करें।

बन्धुओ! आगे बढ़नेके लिये, उन्नति करनेके लिये और मोक्ष पानेके लिये अर्थात् सम्पूर्णताको पहुंचनेके लिये अपनी वर्तमान दशा समझना ही बस नहीं है; बल्कि इसके लिये महात्मा लोग कहते हैं कि जैसे, हालमें क्या है यह जानना दरकार है वैसे ही इसके बाद क्या होना चाहिये यह जानना भी दरकार है। यह बात ठीक ठीक समझमें आवे तभी हम तेजीसे आगे बढ़ सकते हैं। हमें यह मालूम हो जाय कि अब इस प्रकार होना चाहिये तो हमारा रास्ता सीधा हो जाय; हमें मालूम हो जाय कि अब हमें अमुक अमुक चीजोंकी जरूरत है तो उनको हासिल करनेके लिये मिहनत की जा सकती है और हमें मालूम हो जाय कि हमें फलानी जगह पहुंचना है तो वह जगह कितनी दूर है, वहां जानेमें कितना समय लगेगा और किस उपायसे हम वहां जा सकेंगे ये सब बातें बहुत आसानीसे समझमें आ सकती हैं। इससे तेजीसे आगे बढ़ा जा सकता है। इसलिये जैसे हम यह बात ठीक ठीक समझते हैं कि हमारी हालकी क्या दशा है वैसे ही हमें यह भी खूब अच्छी तरह समझ लेना चाहिये कि अब क्या करना चाहिये। आगे करनेकी बात समझ जानेसे हमारे जीवनका गठन निश्चित हो जाता है, काम करनेकी कुंजियां

मिल जाती है और फिर हममें एक तरहकी मजबूती आ जाती है। इससे हम जिधरकी हवा लगे उधरको नहीं लुढ़कते बल्कि अपनी जगहपर दृढ़तासे खड़े रह सकते हैं। जो आदमी इन सब बातोंका विचार नहीं करते और क्या होना चाहिये तथा कहां पहुंचना चाहिये, इसका खयाल नहीं करते वे बेपेंदीके लोटेकी तरह होते हैं और जिधर जिधर झुक जाते हैं। वे बिना लंगरके जहाज समान होते हैं जिधरको हवा आती है उधरका बहते फिरते हैं। ऐसे आदमी दुनियामें बड़े आदमी नहीं हो सकते। जिन्होंने अपनी दिशा नहीं ठहरा ली है, जिन्होंने अपनी पतवार अपने हाथमें नहीं रखी है, जिन्होंने अपनी नींव मजबूत नहीं रखी है, जिन्होंने अपनी शक्तियोंको चमकानेकी कोशिश नहीं की है, जिन्होंने अपनी बुद्धिसे अच्छी तरह काम लेनेकी तकलीफ नहीं उठायी है और जिन्हें अपने प्रभुकी महिमा समझनेकी परवा नहीं है वे आदमी कैसे आगे बढ़ सकते हैं? नहीं बढ़ सकते। इसलिये अगर आगे बढ़ना हो तो हालमें क्या है यह जैसे जानते हैं वैसे ही इसके बाद क्या होना चाहिये यह जाननेकी भी खास कोशिश कीजिये। तब बहुत आसानीसे आगे बढ़ सकेंगे।

क्या होना चाहिये इसका विचार करनेके लिये पहले यह सोचना कि हमारी दशा कैसी है, हमारी शक्ति कितनी है यह सोचना कि हमारे देशमें या हमारे गांवमें या हमारी जातिमें इस समय किस चीजकी ज्यादा जरूरत है या किस बातसे अधिक लोगोंका भला हो सकता है और यह सोचना कि परम कृपालु परमात्माने हमें कितनी बड़ी बड़ी शक्तियां दी हैं और उसके हिसाबसे हम कितनी थोड़ी शक्तिसे काम लेते हैं। फिर यह सोचना कि धर्मके लिये, अपनी आत्माके कल्याणके

लिये तथा सर्वशक्तिमान महान प्रभुके लिये हम कितना ज्यादा काम कर सकते हैं तथा क्या क्या करनेके लिये शास्त्रकी आज्ञा है। ये सब बातें समझकर इसका विचार करना कि अब क्या करना चाहिये। ऐसा करनेसे बहुतेरे रास्ते मिल जाते हैं और इससे आगे जाकर बहुत फायदा होता है। क्योंकि अब क्या करना चाहिये यह जान लेनेसे जिन्दगीमें नया बल आ जाता है और उत्तम प्रकारका चरित्र बन जाता है; इससे आगे जाकर महात्मा बना जा सकता है और फिर प्रभुका प्यारा बना जा सकता है। इसलिये हालमें क्या है यह जैसे जानते हैं वैसे ही अब क्या होना चाहिये यह जाननेकी कोशिश कीजिये। यह जाननेकी कोशिश कीजिये।

५२–बड़े बड़े सुखोंको हम छोटा गिन लेते हैं और छोटे छोटे दुःखोंको बड़ा माना करते हैं; इससे हमें भारी भारी दुःख दिखाई देते हैं, पर असलमें देखा जाय तो उनमें दुःख बहुत ही थोड़ा होता है।

हमेशा हर जगह इस किस्मकी शिकायत सुनी जाती है कि हम दुखी हैं। कोई कहता है कि मुझे स्त्रीसे दुःख है, कोई कहता है कि मुझे रोजगारसे दुःख है, कोई कहता है कि मुझे लड़कोंसे दुःख है, कोई कहता है कि मुझे मालिकसे दुःख है कोई कहता है कि मुझे नौकरोंसे दुःख है, कोई कहता है कि मुझे ज्ञानसे दुःख है अर्थात् जो जो बातें मैं जानता हूं उनके

करनेका मेरे पास मसाला नहीं है इसका मुझे दुःख है, कितने ही भक्त कहते हैं कि हम जो जानते हैं उसके अनुसार चल नहीं सकते इसका हमें दुःख है, कितने ही कहते हैं कि हमें गरीबीसे दुःख है, लड़के कहते हैं कि हमें मास्टरसे दुःख है, मास्टर कहते हैं कि हमें खराब विद्यार्थियोंसे हैरानी है ; स्त्रियोंमें कोई कहती है कि मुझे सास ससुर या देवरानी जेठानीसे दुःख है, कोई कहती है कि मुझे वैधव्यका दुःख है, कोई कहती है कि मुझे लड़का न होने या होकर न जीनेका दुःख है: कोई आदमी कहता है कि मुझे धर्मगुरुसे दुःख है, कोई कहता है कि मुझे धर्मके ह्रासका दुःख है, कोई कहता है कि मेरा शरीर ठीक नहीं रहता इसका दुःख है, कोई कहता है कि मेरे पड़ोसी खराब हैं मुझे इसका दुःख है, और कोई कहता है कि मेरी मिहनतकी कदर नहीं होती मुझे इसका दुःख है। इस तरह सब आदमी तरह तरहका दुखड़ा रोया करते हैं।

यह सब देखकर बहुत आदमियोंको ऐसा मालूम होता है कि यह दुनिया दुःखसे ही भरी हुई है। क्योंकि वे जिधर नज़र डालते हैं या जिस आदमीसे मिलते हैं या जिस रोजगारको देखते हैं सर्वत्र उनको दुःख ही दिखाई देता है, इससे लाखों आदमी यह मान लेते हैं कि यह संसार दुःखस्वरूप ही है।

अब हमें विचार करना चाहिये कि क्या यह दुनिया दुःखरूप ही है ? क्या सचमुच दुनियामें दुःख ही अधिक है ? अगर सुखसे दुःख अधिक हो तो फिर जिन्दगी क्योंकर टिक सकती है ? अगर दुनियामें दुःख अधिक होता तो क्या भोग विलासकी भरमार सामग्री होती ? अगर दुःखको अधिक रखना कुदरतकी इच्छा होती तो क्या दुनियाकी रचना ऐसी सुख देनेवाली होती ? अगर दुःख देना ही प्रभुकी इच्छा होती तो क्या

प्राणी मात्रकी आरम्भसे अन्त तककी दौड़ सुखकी तरफ होती ? और अगर दुःख देनेकी ही ईश्वरकी इच्छा होती तो क्या मनुष्यके अन्दर शान्ति, दया, क्षमा, तितिक्षा, ज्ञान, प्रेम, वैराग्य और परोपकार जैसे अनेक महान सद्गुण होते ? अगर दुःख देनेकी ही प्रभुकी इच्छा होती तो क्या प्रभु स्वयं आनन्दस्वरूप होता ? कहिये कि नहीं। इन सब विषयोंको जो लोग ठीक ठीक समझते हैं वे आइनेकी तरह साफ साफ देख सकते हैं कि संसार साररूप है, कुछ दुःखरूप नहीं है। इससे हर आदमीकी जिन्दगीमें तथा हर एक जीवकी जिन्दगीमें हमेशा सुख ही अधिक होता है। यहां तक कि जगतके जो जो महान तत्त्व हैं वे सब सुख देनेवाले स्वभावके ही हैं। जैसे-पवन अपनी शीतलतासे प्राणियोंको कितना कुछ न आनन्द दे सकता है; वर्षा अपनी वृष्टिसे संसारका कितना कुछ न भला कर सकती है; पृथ्वीकी महान शक्तिसे कैसे सुन्दर महान फल उत्पन्न होते हैं और कैसे एकसे अनेक फल हो जाते हैं, सूर्य नारायण अपने प्रकाशसे जगतका कितना बड़ा दुःख घटा देते है, कितने बड़े बड़े भयंकर जन्तुओंका नाश करते है और कितना अधिक प्राणतत्त्व देते हैं; समुद्र बहुत तूफानी, मस्त और बेपरवा सा होने पर भी मनुष्योंका कितना भारी बोझ अपनी पीठ पर उठाता है; अग्निदेव रसोई बनानेके काममें मददगार होकर जगतकी कितनी बड़ी सेवा करते हैं; चन्द्रमा अपना शान्त अमृत बरसा कर जगतका कितना बड़ा उपकार करता है और अनाज, फल, फूल तथा औषधियां अपने पुष्टिकारक अनमोल गुणोंसे जगतके जीवोंका कितना कुछ न पोषण करती हैं यह तो जरा देखिये। इतना ही नहीं बल्कि मनुष्यके शरीरकी रचना कैसी अनुपम हुई है तथा भिन्न भिन्न किस्मके प्राणियोंके शरीरकी रचना कैसी

अद्भुत है यह भी जरा देखिये । ऐसी रचना हुई है कि मछलियां पानीके अन्दर रहकर सुख पाती हैं, गायें घास खाकर दूध दे सकती हैं, पक्षी मुफ्त मिलनेवाली खुराक खाकर सुन्दर गीत गा सकते हैं, हवाके जीव हवामें रहकर मौज कर सकते हैं, जगलके जीव जगलमें रहकर आनंद भोग सकते हैं और अनेक प्रकारके जन्तु किस्म किस्मके प्राणियों-के शरीरके अन्दर रहकर भी आनंद भोग सकते हैं। ये सब क्या दुःख देनेके लिये हैं? भाइयो ! इन सब बातों पर विचार करनेसे हमें यही मालूम देता है कि सुख भोगनेके लिये परम कृपालु परमात्माने इस सृष्टिकी रचना की है । इसीसे जगह जगह सुखके साधन हैं और हर एक बातमें खुल्लम खुला या छिप तौर पर सुख समाया हुआ है । तिसपर भी लोग बहुत करके दुःखकी ही शिकायत किया करते हैं और दुःख ही भोगा करते हैं यह क्या अफसोसकी बात नहीं है ?

भाइयो ! इस जगतमें और हमारी इस जिन्दगीमें खास करके सुख ही अधिक है तो भी हम सब दुःखको बहुत मानते हैं । इसके कारण जानने लायक हैं । इसके लिये पण्डितजन कहते हैं कि—

परम कृपालु परमात्माने मनुष्य जातिको जो बड़े बड़े कुदरती सुख बख्शे हैं उनकी लोग कीमत नहीं समझते, इतना ही नहीं बल्कि ऐसे स्वाभाविक सुखोंको भी बहुत छोटा समझते हैं और छोटे छोटे दुःखोंको भी बड़ा मानते हैं, इससे वे दुखी होते हैं। जैसे-ऐसी उत्तम जिन्दगी मिली है इसके लिये उपकार माननेकी नहीं सूझती, चौरासी लाख जातियोंमेंसे उत्तम मनुष्यका जन्म मिला है इसकी कीमत लोग नहीं समझते, जिसकी किसी तरह कीमत नहीं आंकी जा सकती यह उत्तम तन्दुरुस्ती मिली है इस

सुखको नहीं देखते, जिस हवा बिना एक क्षण भी नहीं चल सकता वह सुन्दर और कीमती हवा मुफ्त मिलती है और जितनी चाहिये उतनी मिल सकती है, इसका सुख किसी लेखेमें नहीं है; प्रकाश और गरमी जो जीवनके मुख्य तत्व हैं वे तत्व बहुतायतसे सबको मिले हैं उसका कुछ दाम ही नहीं है; हमारे मा बापके हृदयमें हमारे लिये अतिशय स्नेह भरा हुआ है इस सुखका हमारे सामने, कुछ मोल नहीं है और जिन्दगीकी जरूरतके अनेक सुबीते हमें मिले हैं; इन सब सुखोंको हम किसी हिसाबमें नहीं गिनते। लेकिन किसी दिन जरा कहीं मनमानी न हो तो उसका बहुत बड़ा दुःख मान लेते हैं।

प्रभुने कान दिये और उनमें सुननेकी शक्ति दी इसका उपकार मानना तो दूर रहा और वह सुख तो अलग रहा पर थोड़ेसे शब्द, जो हमें नहीं रुचते, अपने विरोधी आदमीके मुंहसे सुनाई दें तो इसको हम बड़ा भारी दुःख मान बैठते हैं। विचार कीजिये कि आप अपनी जिन्दगीमें अपमानके शब्द अधिक सुनते हैं कि अपमानके शब्द अधिक सुनते हैं? ज्ञान, उपदेश, धर्म और नीतिके शब्द अधिक सुनते हैं कि मूर्खताके शब्द अधिक सुनते हैं? स्वीकार कीजिये कि हमारे कानोंको बहुत करके हमेशा अच्छे ही शब्द अधिक सुन पड़ते हैं और खराब शब्द कभी कभी सुन पड़ते हैं और वे भी बहुत थोड़े होते हैं तथा खराब शब्द खासकर स्वाभाविक नहीं होते बल्कि सयोग वश होते हैं और जब वह संयोग बदल जाता है तब उस तरहके शब्द भी मिट जाते हैं। मन्दिरोंके घंटोंकी ध्वनि मुफ्त सुन पड़ती है, बाजों और उस्ताद गवैयोंके गीत जगह जगह फोनोग्राफोंमें तथा और कई तरह मुफ्त सुनाई देते हैं, कोयलोंकी आवाज, तोते मैनाकी आवाज, पानीकी कलकल ध्वनि, व्याख्यानोंमें

गाये जानेवाले गीत, आम तौर पर बजते हुए बैण्ड और कितने ही मन्दिरोंमें होने वाली कथा तथा आम सभाओंमें होने वाले कीमती भाषण मुफ्त सुननेको मिलते हैं। इसके सिवा स्नेहियों और मित्रोंके प्रेम भरे वचन, छोटे लड़कोंकी तोतली बोली और प्राणप्यारोंके हार्दिक स्नेह भरे वचन सुन सुन कर हमें बार बार आनन्द होता है परन्तु शरमकी बात देखिये कि इन सब बातोंकी तथा इन सब सुखोंको भूल कर, किसी वक्त किसी खराब आदमीसे कटुक वचन सुननेमें आ जाय तो उससे हम भारी दुःख माना करते हैं, इस तरह हम दुःख मानते हैं इससे ऊपरकी उन बड़ी बड़ी चीजोंके सुख तथा हर रोज मिलने वाले बारबारके सुख हवामें बह जाते हैं। क्योंकि उन सुखोंकी हमारे सामने कीमत नहीं है, परन्तु हम दुःखकी इतनी कीमत समझते है कि वह कलेजेमें गड़ जाता है। इससे हम छोटे छोटे दुःखोंको भी बहुत बड़ा माना करते है और उनसे हैरान हुआ करते हैं।

अब दूसरी बातका विचार कीजिये कि हमारे सामने अच्छे दृश्य अधिक पड़ते हैं कि खराब दृश्य अधिक पड़ते हैं? जिधर नजर डालते है उधर मजेदार सुन्दर फल फूल वाले पेड़ दिखाई देते हैं मकानोंके सामने नजर दौड़ाते हैं तो मनुष्यकी उत्तम कारीगरीके नमूने जगह जगह दिखाई देते हैं, पक्षियोंके उड़ते हुए झुण्डपर दृष्टि डालते हैं तो उसे देख कर भी एक प्रकारका आनन्द होता है, गायोंका समूह चला आता हो तो उसको देखनेसे भी एक प्रकारका आनन्द होता है, पानीके झरनों, नदियों, तालाबों या समुद्रको देखते हैं तो उससे भी अनेक प्रकारका कुदरती आनन्द होता है, शामको आकाशके सामने ताकते हैं तो उसकी बहारदार अनुपम छटा देखकर मन प्रफुल्लित होता है"

रातको आकाशकी ओर निहारते हैं तो उसमें जगमगाते हुए अनेक तारे देखकर स्वभावतः एक प्रकारके आश्चर्यके साथ आनन्द होता है और सबेरे आकाशकी तरफ दृष्टि फेंकते हैं तो उगते हुए सूर्यको देखकर हमारे जीवनमें आनन्दका कुछ नया सोता आ जाता है। बकरियोंके छोटे बच्चोंको, कुतियोंके छोटे बच्चोंको, पशुओंके छोटे बच्चोंको, पक्षियोंके छोटे बच्चोंको या मनुष्योंके छोटे छोटे बालकोंको देखते हैं तो, उनके निर्दोष हाव भाव देखकर बिना कारण उनपर हमारा स्नेह उमड़ता है और उनको खेलानेका मन करता है तथा उनसे एक प्रकारका कुदरती आनन्द मिला करता है। इसके सिवा बाजारमें जिधर जाते हैं उधर ही मनुष्यकी कारीगरी तथा कुदरतकी कारीगरीकी कितनी ही कलाएं और सुन्दर नमूने हमारी नजरमें आते हैं। इस प्रकार जहां जहां हमारी दृष्टि पड़ती है वहां बहुत करके कुछ खास सुन्दरता ही दिखाई देती है। जिसपर भी हमारी कमनसीबी देखिये कि इस सारी सुन्दरताको दबाकर, किसी वक्त कोई नापसन्द चीज सामने पड़ गयी हो तो उसीकी बातें हम किया करते हैं और उसीका दुखड़ा रोया करते हैं। यहां तक कि कभी कोई खराब चीज दिख जाय तो न जाने क्या हो जाता है कि उसी चीजका संस्कार मनमें बिठा लेते हैं। परन्तु इतने बड़े सुखको छोड़कर जरा से दुःखमें जीवको डाल देना कितना बुरा है यह हम लोग नहीं जानते। और जो लोग जानते हैं वे भी उसके अनुसार नहीं चलते। इसीसे दुःख अधिक दिखाई देता है।

इसी प्रकार खानेके विषयमें विचार कीजिये कि हमें हमेशा अच्छा खाना मिलता है कि बुरा? अगर हम अपनी दशाको भली भांति समझते हों और अपने सन्तोषकी वृत्तिको अच्छी

तरह समझने हों तो हमें विश्वास हो जाता है कि ईश्वरकी कृपासे हर रोज बहुत करके हमें अपनी योग्यताके अनुसार ही खाने पीनेको मिलता है। उसमें खराब खाना तो कभी ही कभी होता है। तिसपर भी कभी कुछ भूल हो जाय तो उसको हम बहुत भारी बात माना करते हैं और किसी वक्त कुछ सुभीता न हो तो उसीका दुखड़ा रोया करते हैं। जैसे-घरमें हमेशा कढ़ी अच्छी बनती है तो उसका सुख किसी लेखेमें नहीं, पर महीनेमें एकाध बार किसी कारण जब कढ़ी बिगड़ जाती है तब उसका दुःख हमें बहुत भारी हो जाता है और इसके लिये बीबीके साथ हम खूब कलह करते हैं। इसी प्रकार स्पर्श सुखके बारेमें समझना चाहिये। और धनके दुःखके लिये भी इसी किस्मकी पोल होती है। जैसे-ईश्वरकी कृपासे बहुत धन मिला हो या खर्च चलजाने लायक पैसा मिलता हो तो उसकी कुछ गिनती नहीं पर उसमेंसे कुछ किसी कारणसे खो जाय या जाता रहे तो वह महाभारतका दुःख हो जाता है।

भाइयो! याद रखना कि इसी प्रकार हम दूसरे अनेक बड़े बड़े सुखोंकी कीमत नहीं समझते और छोटे छोटे दुःखोंको बहुत बड़ा मान लिया करते हैं; इसीसे हम दुखी हैं। नहीं तो असलमें दुःख बहुत ही थोड़ा है। इसलिये जैसे बनेवैसे सुखोंकी कीमत समझना सीखिये और विश्वासके साथ यह समझ लीजिये कि इस जगतमें ईश्वरके दिये हुए दुःख बहुत थोड़े होते हैं, बाकी ज्यादातर दुःख लोग अपनी अज्ञानतासे खड़ा करलेते हैं। इतना ही नहीं बल्कि जो दुःख मर गया है उसको भी मनुष्य फिरसे जिला देते हैं और न उठता हो तो उसको खोद खोदकर उठाते हैं। कहा जाता है कि पुराने जमानेमें संजीवनी विद्या थी उससे आदमी मुर्दोंको जिला सकते थे; अब यह संजीवनी विद्या

नष्ट हो गयी है, इससे लोग मुर्दोंको नहीं जिला सकते । परन्तु हम यह नहीं मानते कि संजीवनी विद्या नष्ट हो गयी है । मुर्दोंको जिलानेकी विद्या भले ही नष्ट हो गयी हो परन्तु मरे हुए दुःखोंको फिरसे जिला देनेकी संजीवनी शक्ति तो हमारे कितने ही खूसट बूढ़े बुढ़ियोंमें अब भी है । वे मुद्दत पहलेके मरे हुए दुःखोंको जिला सकते हैं और उन्हें भोगा करते हैं । भाइयो ! खबरदार हो जाइये कि अमूल्य संजीवनी शक्तिका ऐसा दुरुपयोग न हो सुखोंकी कीमत समझना सीखिये परन्तु दुःखोंकी कीमत बढ़ानेकी कला मत सीखिये और छोटे छोटे दुःखोंको बड़ा बना देनेकी भूल मत कीजिये । क्योंकि सुख स्वर्गकी तरफ ले जाता है और दुःख नरककी तरफ ले जाता है । इसलिये ऐसा कीजिये कि सुखकी रास्ता खुले , ऐसा मत कीजिये कि दुःखका रास्ता खुले । यही प्रार्थना है ।

५३–भाग्यको सुखका आधार मानना कमजोर मनकी निशानी है । इसलिये भाग्यको सुखका आधार माननेके बदले ज्ञान तथा उद्योगको सुखका आधार मानना सीखिये, तब जल्द सुख पा सकेंगे ।

हमारे बहुतसे भाई तथा लाखों बहनें बहुत सुस्त होती हैं, उनकी रहन सहन बेढङ्गी होती है, उनकी जिन्दगीकी नाव बिना पतवार और बिना लंगरकी होती है। किस तरफको जाना है, किस जगह जाना है, कितने अरसेमें जाना है,किस उपायसे

आता है और किस लिये जाना है इन बातोंपर ये लोग कुछ भी ध्यान नहीं देते। हवा जैसे हिलमिलाते हुए पत्तेको या तृणको उड़ा ले जाती है वैसे ही ये लोग संयोगोंके आधारपर भटकते फिरते हैं या फुटबाल खेलते समय गेंदको जैसे चारों तरफमें जो सामने पाता है वह ठोकर लगा देता है वैसी ही हालत उन लोगोंकी होती है। क्योंकि ये लोग आत्माकी कीमत नहीं समझते और उद्योगकी कीमत भी नहीं समझते। तब ये आत्माके यत्नकी कीमत क्या समझ सकते हैं? और सर्वशक्तिमान महान परमात्माकी कृपाकी मददको क्या समझ सकते हैं? नहीं समझ सकते। इससे बेचारे ऐसे आदमी भाग्यके भरोसे रह जाते हैं। और भाग्य एक ऐसा उलझनवाला शब्द है, इतना विशाल अर्थ रखनेवाला शब्द है और लोगोंके हृदयमें इतना गहरा जमा हुआ तथा सबका मान्य बना हुआ शब्द है कि उसके विरुद्ध दलीलोंको आदमी आसानीसे मान नहीं सकते। यह नहीं कि सिर्फ अज्ञान आदमी नहीं मानते, बल्कि बड़े बड़े चतुर कहलाने वाले आदमी भी भाग्यकी माळमें पड़े रहते हैं। क्योंकि, पुराने संस्कृत ग्रंथोंमें इस किस्मके बहुतसे वचन मिल जाते हैं और कथा बाचनेवाले व्यासजी महाराज लोग भी इसका समर्थन किया करते हैं। इससे भाग्य शब्द हर एकके मनमें घुस गया है जिससे जहां कोई भी बात होती हो वहां लोग भाग्यको सामने खड़ा कर देते हैं। जैसे-किसीको रोजगारमें घाटा लगे तो कहा जाता है कि इसके भाग्यका दोष है। परन्तु आदमी यह नहीं कहता या यह नहीं देखता कि इसमें खुद इसकी कुछ भूल है कि नहीं। किसी लड़केके मा बाप मर जायें तो लोग कहते हैं कि इसके भाग्यका दोष है। किसीकी नौकरी चली जाय तो कहते हैं कि भाग्यका दोष। बिरादरीमें

लड़की न हो और बिरादरी गिनतीमें थोड़ी हो इससे किसीको जन्मभर क्वारा रहना पड़ता हो तो भी कहते हैं कि इसके नसीबका दोष है, इसके नसीबमें होगा तो जोरू मिल ही जायगी। परन्तु उसके नसीबमें जोरू कहांसे आ जायगी इसका कोई विचार नहीं करता। किसी स्त्रीके लड़का न होता हो तो कहते हैं इसके नसीबका दोष है; परन्तु उचित इलाज करानेकी जरूरत नहीं समझमें आती और नसीबका दोष समझमें आ जाता है यह भी एक खूबी नहीं तो क्या है? कितने ही लड़के पढ़नेमें मन नहीं लगाते, ऊधम उपद्रव मचाते फिरते हैं, पाठ नहीं याद करते और फिर पास नहीं होते तो उनके मा बाप कहते हैं कि भाग्यका दोष है। इस प्रकार लोग अपनी जिन्दगीके हर एक काम काजमें भाग्यको घुसेड़ देते हैं। परन्तु जिस भाग्यको हम इतना बड़ा समझते हैं उस भाग्यके बारेमें युरोपके विद्वानोंका क्या कहना है यह आप जानते हैं? वे कहते हैं कि—

भाग्य माने पीढ़ी दरपीढ़ीसे चला आता हुआ एक प्रकारका गोरखधंधे वाला शब्द, भाग्य माने कमजोर मनके आदमियोंके ढारस पानेकी जगह; भाग्य माने अपनी नालायकी छिपानेका परदा, भाग्य माने एक प्रकारकी पोल, भाग्य माने एक तरहकी अज्ञानताका दरवाजा, भाग्य माने ज्ञान तथा मिहनतको रोक देनेवाली खिल्ली, भाग्य माने अज्ञानियोंसे लिखा हुआ एक प्रकारका जल्द न छूट सकनेवाला सूत, भाग्य माने मनुष्योंकी कमजोरियोंको भड़कानेवाली फुकाठी, भाग्य माने नवीन आविष्कार ईजादको रोक देनेवाली हिकमत, भाग्य माने अपनी बात सच साबित कर देनेकी सहजमें सहज युक्ति, भाग्य माने बेचारी बुद्धिको तकलीफसे बचानेवाली तरकीब, भाग्य माने सम्भव बातोंको असम्भव बातोंमें मोड़ देनेकी करामात,

भाग्य माने चतुर आदमियोंकी आखोंमें धूल डालनेवाला जादू, भाग्य माने सहज विषयोंको भी कठिन बनानेवाली तथा कठिन विषयोंको भी सहज बनाने वाली एक तरहकी कीमिया, भाग्य माने अपना हाथ अपने वशमें नहीं है बल्कि दूसरेके वशमें है यह समझानेवाला उपदेशक, भाग्य माने सुरती (लाटरी) या एक तरहका जूआ भाग्य माने नकली, दिखाऊ वैराग्यका मित्र, भाग्य माने अपन बलसे उड़नेकी इच्छा रखनेवाले बहादुर आदमियोंके पर काट डालनेकी कल, भाग्य माने मनुष्योंको अनक प्रकारकी गुलामीमें बांध देनेवाली बड़ी, भाग्य माने ईश्वरसे विमुख करनके लिये शैतानका बिछाया हुआ जाल और भाग्य माने कुदरतके नियमका आत्माके बलका तथा ईश्वरकी सर्वशक्तिमत्ताका अनादर।

बन्धुओ! जिसको हम भाग्य कहते हैं उस भाग्यका यह हाल है। यह बेचारा अज्ञानियोंके हाथ पड़ गया है इससे उसका यह हाल होता है। परन्तु जब यही भाग्य ज्ञानियोंके हाथमें जाता है, जब उद्योगी पुरुषोंके हाथमें जाता है जब समयकी कीमत समझनेवाले सज्जनोंके हाथमें जाता है और जब यह भाग्य महात्माओंके हाथमें जाता है तब इसकी कैसी हालत होती है यह आप जानते हैं? इसके लिये एक दलके पण्डित कहते हैं कि—

ज्ञानी अथवा भाग्यको अपनी मुट्ठीमें लेकर घूमते हैं, क्योंकि वे खूब अच्छी तरह समझते हैं कि हमारे भाग्यको भगवान नहीं बनाता बल्कि हम, आप अपने भाग्यको बनाते हैं। हमारे अपने ही कामोंसे हमारा भाग्य बनता है और इसके आगे हम जैसे जैसे काम करेंगे वैसा ही हमारा भविष्यका भाग्य बनता। इस कारण असलमें हम भाग्यके हाथमें नहीं हैं बल्कि भाग्य

हमारे हाथमें है। क्योंकि भाग्य ने जीवोंको उत्पन्न नहीं किया है, बल्कि जीवोंने अपने कामोंसे भाग्यको बनाया है ; इसलिये भाग्य हमको अपनी उंगली पर नहीं नचा सकता बल्कि हम अपनी मरजीके मुताबिक भाग्यको फेर सकते हैं । भाग्यके बारेमें महात्माओंका यह विचार है ।

दूसरे दलके पण्डित भाग्यके बारेमें यह कहते हैं कि आदमी अपनी चाहे जितनी चतुराई चलावे और ज्ञानमें, उद्योगमें तथा भक्तिमें चाहे जितना आगे बढ़े तौभी उसमें कुछ न कुछ अधूरापन रह जाता है, इससे वह सम्पूर्णताको नहीं पहुंच सकता। क्योंकि मनुष्यके शरीरकी रचना ऐसी है कि उसको आगे बढ़नेमें अनेक प्रकारकी अड़चलें पड़ती हैं और तिसपर भी किसी चीजका पूरा पूरा यथार्थ ज्ञान नहीं हो सकता। कोई न कोई चीज बाकी रह जाती है, क्योंकि कुदरतकी हर एक चीजमें इतने अधिक महान तत्त्व भेरहुए हैं कि इनका कुछ पता ही नहीं लग सकता। इसकेसिवा एक ही वस्तुमें इतने अधिक तत्त्व भरे हुए हैं और उनसे इतनी अधिक बातें हो सकती हैं कि जिनकी सीमा ही नहीं। इस प्रकार कुदरतकी विशालता तथा गहनताका अन्त ही नहीं है। दूसरी ओर मनुष्यकी आयु बहुत थोड़ी है और उसमें भी मनुष्यका मन बड़ा ही चंचल है, इससे वह किसी एक ही विषयको पकड़े नहीं रह सकता। इसके सिवा यह बात भी इस प्रसङ्ग पर जान लेने योग्य है कि मनुष्यको मिली हुई बुद्धिकी अलौकिक शक्ति ऐसी महीन है और उसका पेट इतना बड़ा है कि उसमें एक समुद्र तो क्या अनन्त ब्रह्माण्ड भी पच जाय। ऐसी उसमें शक्ति है। इससे तालाबमें कंकड़ फेकने पर जैसे उसमें वृत्ताकार चिन्ह बनता और बढ़ता जाता है वैसे ही जब बुद्धिसे ठीक ठीक काम लेते हैं और उसे कसौटी पर

पड़ते हैं तब उसमेंसे भी अनेक प्रकारके नये नये रंग निकलते जाते हैं और उनके वृत्ताकार चिन्ह बनते जाते हैं तथा उनकी हद बढ़ती जाती है। यह बात भी ध्यानमें रखने लायक है कि हम जो जो काम करते हैं उन सब पर हमारे आस पासकी दुनियाके अनेक तरहका छोटा बड़ा असर पड़ता है। इसमें कुछ असर टेढ़े तौर पर होता है और हमारी समझमें न आने योग्य अदृश्य होता है। समझमें न आनेका कारण इतना ही है कि अभीतक हमारा ज्ञान उस हद तक नहीं पहुंचा है और अगर पहुंचा भी है तो उस असरको तौलनेके लिये, मापनेके लिये और उसको दिखानेके लिये जो जो यंत्र दरकार हैं तथा इस विषयकी जो दूसरी सामग्री और तय्यारियां दरकार हैं वे हमारे पास अभीतक नहीं हैं। इसके सिवा जुदे जुदे ढङ्गका असर मिलनेसे तथा हमारी जुदी जुदी भावनाओंसे और हमारे कामके इन सबसे होनेवाले मिलापसे एक प्रकारकी रसायनी क्रिया उत्पन्न होती है और इसमेंसे किसी समय अनसोचा परिणाम निकल आता है। इन सब कारणोंसे हम जो काम करते हैं उसमें कुछ कचाई रह जाती है, इससे उसका फल हमेशा हमारे विचारानुसार नहीं होता। बल्कि कभी कभी उसमें कोई बड़ा फेर बदल हो जाता है। उसको लोग भाग्य कहते हैं। इस विषयमें और बहुत सी जानने योग्य गूढ़ बातें कही जा सकती हैं परन्तु साधारण मनुष्योंको उतनी गहराईमें जानेकी आदत नहीं होती इससे उनको यह विषय ऊसठ लगता है। इस कारण यहीं खतम कर देते हैं।

तीसरे प्रकारके आगे बढ़े हुए लोग भाग्यके बारेमें कहते हैं कि यथासाध्य परिश्रम कर चुकनेपर भी जब मनलायक काम नहीं होता तब अफसोससे बचने और ढारस

बांधनेके लिये तथा कुछ न जाने हुए कारणोंसे किसी वक्त अचानक कुछ बड़ा लाभ हो जानेपर अभिमान न आवे और इतरा न जाय, इसके लिये महात्मा लोगोंने समजस (बेलेंस) बनाये रखनेकी जो युक्ति बता दी है उसका नाम भाग्य है। इस प्रकार सुख और दुःखके वक्त ढारसकी जरूरत पड़ती है, इसके लिये महात्माओंने भाग्यको खड़ाकर दिया है। इस कारण जहांतक ऊपर बताया है वहां तक भाग्य कामका है।

भाग्यके इस प्रकार अनेक अर्थ पण्डित लोग करते हैं, पर वे सब अर्थ जाननेकी सब आदमियोंको जरुरत नहीं है। सिर्फ इतना ही मुख्य अर्थ समझा जाय और उसका सार लिया जाय तो भी बहुत है। ज्ञानी लोग भाग्यका स्वरूप कैसा समझते हैं और अज्ञानी कैसा समझते हैं ये दोनों बातें अगर ठीक ठीक समझमें आ जायं तो बहुत कुछ काम हो सकता है। इसलिये जरा गहरे उतर कर इतनी बात अच्छी तरह समझ लीजिये कि किसीके भाग्यको दूसरा कोई नहीं बनाता, बल्कि हमारे अपने कामोंसे ही हमारा भाग्य बनता है। जैसा काम हम पहले कर चुके हैं वैसा ही हमारा हालका भाग्य बना है और अब जैसा काम हम करेंगे वैसा हमारा भविष्यका भाग्य बनेगा। क्योंकि प्रभु हमारा भाग्य नहीं बनाता। अलबत्ता, हम अच्छा या बुरा जो कर्म किये रहते हैं उसका फल प्रभु देता है। परन्तु वह किसीका भाग्य नहीं बनाता। अगर प्रभु जीवोंका भाग्य बनावे तो प्रभुमें पक्षपात आ जाय। परन्तु प्रभु न्यायी है। इसलिये वह किसीका भाग्य नहीं बनाता। हां, सबको उनके कर्मके अनुसार फल देता है। जैसे राजा किसीको बिना कसूर कुछ दुःख नहीं देता और न बिना किसी खास योग्यताके किसीको कुछ बड़ा इनाम देता है, वैसे ही प्रभु भी बिना कसूर किसीको सजा नहीं देता और न

किसीको इनाम देता है। यह सब अपने अपने कर्मके अनुसार होता है। इसलिये अपने कर्मोपर जोर देना सीखिये और कर्म सुधारनेकी कोशिश कीजिये। उद्योग और ज्ञान क्या है यह आप जानते हैं? इनके लिये शास्त्रोंमें कहा है कि—

उद्योग कुदरतका महान नियम है, उद्योग पुरुषार्थकी पहली और अन्तिम सीढ़ी है, उद्योग स्वर्गकी सीढ़ी है, उद्योग प्रभुकी कृपा है, उद्योग प्राणीमात्रका स्वभाव है, उद्योग एक प्रकारकी इस दुनियामें बड़ीसे बड़ी कीमिया है, उद्योग मनुष्यके हाथमें आया हुआ पारसमणि है, उद्योग महा जबरदस्त कालको भी पकड़नेवाला जादूगर है, उद्योग एक तरहका मीठा सोमरस है और उद्योग जिन्दगी सुधारने तथा भाग्य फेरनेकी कुंजी है। जैसे उद्योग ऐसी अनमोल वस्तु है वैसे ज्ञान कैसी अलौकिक वस्तु है यह आप जानते हैं?

ज्ञान ईश्वरका स्वरूप है, ज्ञान इस जगतकी सभी वस्तुओंमें-से चुलाया हुआ अर्क है, ज्ञान परमात्माके अनन्त ब्रह्माण्डमें उड़नेका बिमान है, ज्ञान देवताओंसे ऊपर चले जानेकी सड़क है और ज्ञान कुदरतके गहरेसे गहरे भेदोंके भीतर घुस जानेके लिये चाभी है। ऐसे उत्तम ज्ञानको तथा ऐसे महान उद्योगको छोड़कर जो लोग पोलम पोलवाले तथा जिधरकी फूँ उधरकी फिरनेवाले भाग्यकी हदमें बंध रहते हैं और इसीको बड़ा माना करते हैं वे बहुत कमजोर मनके आदमी हैं। और याद रखना कि कमजोर मन रखकर दुनियामें सफलता नहीं हासिल की जा सकती या न प्रभुका प्यारा बना जा सकता है। इसलिये मजबूत मन रखकर ज्ञान हासिल कीजिये और उद्योग कीजिये। तब धीरे धीरे आपका भाग्य आपके हाथमें आ जायगा। और जब ऐसा होगा तभी

आप ठीक ठीक उन्नति कर सकेंगे। इसलिये भाग्यको जैसे अज्ञानी मानते हैं वैसे मत मानिये बल्कि जैसे ज्ञानी मानते हैं वैसे मानना सीखिये। इससे आपका कमजोर भाग्य भी थोड़े समयमें अच्छा बन जायगा। ऐसा करनेका, परम कृपालु परमात्मा आपको बल दे यह हमारी प्रार्थना है।

---

५४ कुदरतकी हर एक चीजका रुख चतुराईको उत्तेजन देने तथा बढ़ानेकी तरफ है और कुदरत आप भी चतुर आदमियोंकी तरफ है। क्योंकि अज्ञानी लोगोंका, जल्द या देर में, नाश हुए बिना नहीं रहता। इसलिये ज्ञान हासिल करनेकी कोशिश कीजिये।

आजकल दुनियाके हर एक देशमें मुख्य करके जहां तहां यही चर्चा चल रही है कि जैसे बने वैसे शिक्षा बढ़ानी चाहिये और ज्ञान हासिल करनेका मार्ग सुगम बनाना चाहिये। इसके लिये युरोप, अमेरिका, जापान वगैरह सुधरे हुए देशोंमें बहुत जोर शोरसे दौड़ धूप हो रही है, हर एक देशकी यूनीवर्सिटियोंके अगुआ यही विचार करते हैं कि अपने देशमें शिक्षा बढ़ानेके लिये तथा उसको जबरदस्त बनानेके लिये क्या क्या उपाय करना चाहिये। इस विषयकी अनेक प्रकारकी तजवीज लोग कर रहे हैं। कोई शिल्पकी शिक्षापर जोर देता है, कोई खेती बारीकी शिक्षापर जोर देता है, कोई नवीन आविष्कार ईजादकी शिक्षापर जोर देता है, कोई व्यापारकी शिक्षापर जोर

देता है, कोई खनिज विद्याकी शिक्षापर जोर देता है, कोई सूक्ष्मशिल्प (फाइन आर्ट) की शिक्षापर जोर देता है, कोई व्यापारकी शिक्षापर जोर देता है, कोई कानूनकी शिक्षापर जोर देता है, कोई इंजिनियरिङ्गकी शिक्षापर जोर देता है, कोई धर्मकी शिक्षापर जोर देता है, कोई नीतिकी शिक्षापर जोर देता है, कोई राजनीतिकी शिक्षापर जोर देता है, कोई लश्करी शिक्षा पर जोर देता है, कोई साहित्यकी शिक्षापर जोर देता है कोई प्राचीन भाषाओंकी शिक्षापर जोर देता है कोई नये नये ढगके वर्त्तमान समयके ज्ञान सीखनेपर जोर देता है, कोई शरीर सुधारकी शिक्षापर जोर देता है कोई मातृभाषकी शिक्षापर जोर देता है और कोई मध्यम शिक्षापर जोर देता है। इस प्रकार जुदे जुदे देशोंमें जुदी जुदी संस्थाएं जुदे जुदे ढङ्गकी शिक्षा पढ़ानेके लिये जहां तक बनता है, मिहनत करती है।

क्योंकि शिक्षित लोगोंको निजके अनुभवसे यह विश्वास हो गया है कि ज्ञान बहुत बड़ी चीज है और उसका फल बहुत बड़ा है। इसलिये इसको जैसे बने वैसे खूब खुले बनाने फैलानेमें ही लाभ है। इस समझके कारण तथा इस प्रकारके अनुभवके कारण सुधरे हुए देशोंमें शिक्षा पढ़ानेके पीछे हर साल करोड़ों रुपयोंका खर्च होता है। इसमें कोई गृहस्थ लाइब्रेरियां खोलनेके लिये बड़ी रकम देता है, कोई गृहस्थ पुस्तक लिखवानेके लिये बादशाही रकम देता है, कोई गृहस्थ स्कूल खोलनेके लिये बड़ी रकम देता है, कोई गृहस्थ कालेज खोलनेके लिये लाखों रुपयेकी रकम दान कर देता है, कोई गृहस्थ कन्याशालाओंके लिये अच्छी रकम देता है, कोई गृहस्थ विद्यार्थियोंको वजीफा देनेके लिये खूब पैसे खर्चता है कोई गृहस्थ स्त्रियोंको सेवासदन जैसे आश्रमोंकी

मार्फत ज्ञान दिलानेके लिये खूब पैसा लगाता है, कोई गृहस्थ रात्रिशालाके लिये बहुत कुछ खर्चता है, कोई गृहस्थ अनाथ बालकोंको शिक्षा दिलानेके लिये मिहनत तथा खर्च करता है, कोई गृहस्थ सज्जनों और साधुओंको सम्हालनेके लिये बड़ी मिहनत करता है, कोई गृहस्थ अपराधियों और कैदियोंको सुधारनेमें अपना पैसा खर्चता है, कोई गृहस्थ पागलोंको सुधारनेके लिये बड़ी रकम खर्च करता है, कोई हरिजन नास्तिक आदमियोंको आस्तिक बनानेके लिये मिहनत करता है और रुपया खर्चता है, और बहुत आदमी इससे भी आगे बढ़कर गाय, घोड़े, कुत्ते, बिल्ली, बाघ, रीछ, सांप आदि पशुओंको भी सुधारनेकी कोशिश करते हैं। क्योंकि वे यह समझते हैं कि ज्ञान बहुत बड़ी वस्तु है, ज्ञानके अन्दरसे ही सब सुख उत्पन्न हो सकते हैं, ज्ञानसेही आगे बढ़ा जा सकता है और ज्ञानमें ही आगे जा कर कल्याण हो सकता है। इसलिये ज्ञान जैसी दुनियामें और कोई चीज नहीं है। सो इसको जैसे बने वैसे हर जगह खूब अधिक फैलाना चाहिये और हर एक भाग्यशाली सज्जनको इसमें खूब उदारताके साथ, खूब प्रेमसे तथा खूब शौकके साथ मदद देनी चाहिये। ज्ञानसे हमारी आत्मा जितनी प्रसन्न हो सकती है उतनी और किसी चीजसे नहीं हो सकती। इसका कारण यह है कि जड़ वस्तुओंसे आत्माका जितना सम्बन्ध है ज्ञानसे उससे कहीं अधिक सम्बन्ध है। इतना ही नहीं, बल्कि वेदान्त शास्त्रमें तो यही कहा है कि आत्मा ज्ञानस्वरूप है और खुद परमात्मा भी ज्ञानस्वरूप है। इसलिये आत्माको ज्ञान पसन्द होना स्वाभाविक है। इसीसे दुनियाके हर एक मुख्य धर्मने ज्ञान हासिल करनेकी बड़ी ताकीद की है और हरएक महात्माका यही फरमान है कि पहले

समयके अनुसार जरुरी ज्ञान हासिल कीजिये और पीछे आत्माके कल्याणका ज्ञान प्राप्त कीजिये।

ज्ञानके लिये शास्त्रकी आज्ञा और महात्माओंके उपदेश तथा अपनी आत्माके अन्दरसे ज्ञानकी मांग होनेसे लोगोंको जाने या बेजाने थोड़ा या अधिक ज्ञान हासिल करना पड़ता है। इन सब बातोंके सिवा कुदरती चीजोंको देखें तो वे भी ज्ञानकी ही महिमा गाती हैं तथा हमें ज्ञान देनेके लिये मिहनत करती जान पड़ती हैं। जैसे-बादलोंके रंग देखकर चितेरा उनसे रंग मिलाना सीखता है, अग्निका बल देखकर मनुष्यका जी उससे काम लेनेको चाहता है; सूर्यकी गरमी तथा प्रकाश देखकर मनुष्य इन दोनों चीजोंसे भी अनेक प्रकारसे लाभ उठाना चाहता है। जैसे-फोटो उतारनेका काम सूर्यकी किरणोंके जरिये हो सकता है वैसे ही रोशनी की मददसे कई तरहकी बीमारियां मिट सकती हैं। पानीकी मददसे भी कितने ही काम हो सकते हैं और पवनकी मददसे भी कितने ही काम हो सकते हैं। क्योंकि ये सब चीजें ज्ञान लेनेके लिये लोगोंको प्रेरणा किया करती हैं और जो उनकी प्रेरणा समझकर अपनी आंखें तथा कान खुले रखते हैं और हृदयको विशाल रखते हैं तथा बुद्धिको गहरे उतरने देते हैं उनके सामने वे अपना हृदय खोल देती हैं और अपना गुप्त भेद बता देती हैं। इस प्रकार जब जड़ वस्तुएं भी ज्ञान दे सकती हैं तब परम कृपालु परमात्मा आदमियों को-अजी यों कहो कि अपने प्यारे बालकोंको ज्ञान दे तो इसमें आश्चर्य क्या है? यह तो हर तरह स्वाभाविक है। इसलिये पण्डित लोग कहते हैं कि कुदरत आप चतुर मनुष्योंकी तरफ है और इसमें कुछ भी शक नहीं है। क्योंकि हम अपने रोजके अनुभवसे देखते

हैं कि जो व्यापारी चतुर होता है वह दूसरोंसे बहुत ज्यादा कमा लेता है; जो वकील चतुर होता है उसे बहुत मुकद्दमे मिलते हैं, जो डाक्टर चतुर होता है उसको बहुत ज्यादा फीस मिलती है; जो शिक्षक चतुर होता है उसकी इज्जत अधिक होती है; जो राजनीतिक मनुष्य चतुर होता है वह अपना तथा प्रजाका और राज्यका अधिक भला कर सकता है और अधिक जगह आदर पा सकता है; जो धर्मगुरु चतुर होता है वह अपने धर्मका बल अधिक बढ़ा सकता है; जो कारीगर चतुर होता है वह अनेक प्रकारके बहुत उपयोगी नये नये आविष्कार कर सकता है, जो किसान चतुर होता है वह बहुत सुखी होता है; जो विद्यार्थी चतुर होता है वह बहुत आसानीसे पास होता है तथा इनाम पाता है और जो स्त्री बहुत चतुर होती है उसकी घर गृहस्थी बहुत सुखी होती है तथा वह अपने कुटुम्बको अपनी इच्छानुसार चला सकती है। इस प्रकार जगतमें जो जो चतुर आदमी हैं वे इज्जत हासिल कर लेते हैं, पैसा हासिल कर लेते हैं, सबके प्यारे बन जाते हैं, मनमाना काम कर लेते हैं और अपने शरीर तथा मनको भी अच्छी दशामें रख सकते हैं। क्योंकि कुदरत आप उनकी तरफ है। इससे हर एक बातमें बहुत आसानीसे उनको सफलता मिलती जाती है। इसके विरुद्ध जो अज्ञानी हैं उनके विरुद्ध स्वयं कुदरत है, इससे वे हर बातमें हर जगह मार खाते हैं और जहाँ जाते हैं वहाँसे पीछेको लौटते हैं जिससे उनकी जिन्दगी दुःखमय होती है, उनकी जिन्दगी कंगाली भरी होती है; उन्हें दूसरोंका बहुत मुँहताज बनना पड़ता है तथा बारंबार बल खाना पड़ता है और तो भी कोई बात उनके मनकी नहीं होती। इससे अफसोसमें ही उनकी सारी जिन्दगी जाती है। आगे जाकर उनमें क्षीणता

आ जाती हैं। रोजके धक्के, रोजके दुःख और रोजकी चिन्ता व कहांतक बरदाश्त कर सकते हैं? इससे अन्तमें वे निराश हो जाते हैं और फिर धीरे धीरे उनका नाश होता है। क्योंकि खुद कुदरत अज्ञान तथा अज्ञानियोंको टिकने नहीं देती। इसलिये अगर सुखी होना हो और कुदरतको अपनी तरफ रखना हो तो अबके जमानेकी अनुकूलतासे लाभ उठाकर जैसे बने वैसे किसी किस्मका खास ज्ञान हासिल कीजिये। इसके बिना आज कलके जमानेमें टिक नहीं सकेंगे। यह बात अच्छी तरह याद रखना।

६५–बिना अपने कसूरके भी कभी कभी अपने शरीरको किसी तरहकी चोट पहुंच जाती है परन्तु अपने कसूर बिना अपने मनको दुःख नहीं होता। इसलिये अपनी तरफसे कुछ भूल न होजाय इसका ख्याल रखना।

इस दुनियामें कई तरहके दुःख हैं परन्तु वे सब दुःख मुख्य दो भागोंमें आ जाते हैं। इनमें पहला दुःख शरीरका है और दूसरा दुःख मनका है।

शरीरके दुःख अनेक कारणोंसे उत्पन्न होते हैं और वे दुःख भी अनेक तरहके होते हैं। उनमें मुख्य करके छोटे बड़े रोग होते हैं। जैसे ज्वर, खांसी, सिरदर्द, पेट दर्द, रक्तविकार, अजीर्ण, वाई, हैजा, प्लेग, चेचक, क्षय आदि अनेक प्रकारके रोग होते हैं। इन रोगोंसे शरीरको बहुत कष्ट सहना पड़ता है

और उसका असर मनपर भी पहुंचता है। ये सब रोग बहुत करके लोगोंकी भूलसे पैदा होते हैं। कुछ रोग माता पिताकी भूलसे होते हैं, कुछ रोग रिवाजोंकी भूलसे होते हैं, कुछ रोग अज्ञानतासे उपजते हैं, कुछ रोग खानदानी होते हैं, कुछ रोग मौजशौकसे होते हैं, कुछ रोग भोग विलासको हदमें न रखनेसे होते हैं, कुछ रोग शरीरके नियम न समझनेसे होते हैं, कुछ रोग ऋतुओंके फेरफारके अनुकूल न होनेसे होते हैं, कुछ रोग खाने पीनेके नियम न जाननेसे होते हैं, कुछ रोग वहमके कारण होते हैं, कुछ रोग स्नेहियोंको खुश करनेके लिये खरीदे हुए होते हैं और कुछ रोग अपने अभिमान तथा नासमझी पैदा होते हैं। इस प्रकार शरीरके सब तरहके दुःख बहुत करके निजकी भूलसे ही उत्पन्न होते हैं। परन्तु इनके सिवा कुछ दुःख ऐसे भी हैं जिन्हें अपनी कुछ भूल न होनेपर भी हमारे शरीरको दूसरोंकी भूलसे भोगना पड़ता है। जैसे-हम रेलगाड़ीमें सफर करते हों और कोई दुर्घटना हो जाय और उसमें हमारे शरीरको चोट पहुंचे तो उसमें हमारी कुछ भूल नहीं होती। हम रास्तेमें चले जाते हों और अचानक कुत्ता काट ले और उससे शरीरको चोट पहुचे तो उसमें हमारी कोई भूल नहीं होती। इसी तरह कितनी ही बातें ऐसी होती हैं जिनमें बिना अपनी कुछ भूलके, दूसरोंकी भूलके कारण भी हमारे शरीरको दुःख होता है। परन्तु महात्मा लोग यह कहते हैं कि बिना अपने दोष के, दूसरोंके दोषसे अपने मनको दुःख नहीं हो सकता। अपना मन तो अपनी भूलोंसे ही दुखी होता है। दूसरोंकी भूलसे मनको जो धक्का लगता है उस धक्केमें और मनको जो असलमें दुःख होता है उसमें बड़ा फर्क है। दूसरोंकी भूलसे मनको जो दुःख होता है वह ऊपर ऊपरका होता है; वह दुःख या तो स्वार्थका

होता है या परमार्थकी रुचिकी खातिर होता है और वह दुःख मनको उतना भारी नहीं लगता । परन्तु अपनी भूलसे अपने मनको जो दुःख होता है वह बहुत ही बड़ा, बहुत ही भयानक और बहुत ही गहरा होता है और उस दुःखको निकालनेमें भी बड़ी ही मिहनत पड़ती है। इतना ही नहीं बल्कि अपनी भूलके कारण अपने मनको जो दुःख होता है वह बहुत सख्त होता है। क्योंकि इस दुःखमें अपनी भूलका पश्चाताप मिलाहुआ होता है और यह पश्चाताप ऐसी वस्तु है कि यह हृदयको नोच खाता है और जीवको हुमच डालता है। पश्चातापसे जो वेदना पैदा होती है वह बहुत विकट होती है। इससे वह वेदना मनको बेहाल कर देती है और भ्रमित कर देती है। ऐसा दुःख दूसरोंकी भूलसे नहीं होता, बल्कि अपनी ही भूलसे होता है। इसलिये इस बातकी सम्हाल रखना कि ऐसी भूल न होने पाव।

शरीरके सब दुःख जल्द मिट जाने लायक होते हैं और वे दुःख जैसे दूसरोंकी भूलसे भी हो सकते हैं वैसे ही दूसरोंकी मरहम पट्टा या दवा दारूसे अच्छे भी हो सकते हैं। परन्तु मनकी चोटमें ऐसा नहीं होता। दूसरोंकी भूलसे यह दुःख कभी होता भी नहीं और दूसरोंकी मरहम पट्टी या कहने सुननेसे यह मिटता भी नहीं। यह तो जब मामला भली भांति समाधान हो जाता है तभी मिटता है।

दूसरोंकी भूलसे हमारे मनको असली दुःख नहीं होता, पर दूसरोंकी भूलसे शरीरको दुःख हो सकता है। इसका कारण यह है कि शरीर जड़ है और यह थोड़े समय तक रहने वाला है, पीछे उसका नाश हो जाता है। इससे उसमें जो दुःख होते हैं उनका असर जल्द मिट जाता है। इसलिये शरीरमें

दूसरोंकी भूलसे कभी कोई दुःख हो जाय तो वह निबह सकता है परन्तु मनकी बात ऐसी नहीं है । मन तो बहुत ऊंचा तत्त्व है, शरीरका नाश होनेपर भी वह रह सकता है ; शरीर तथा इन्द्रियोंको चलानेवाला मन है । मनपर सुख दुःखका जो असर पड़ता है वह बहुत समय तक रह सकता है । इसलिये अगर दूसरोंकी भूलका दुःख अपने मनपर होता तो मनुष्यके दुःखका पार ही नहीं रहता और ऐसा होता तो फिर सुख भोगनेका दिन ही नहीं आता और शान्ति मनमें टिक ही न सकती। इसीसे परम कृपालु परमात्माने ऐसा बन्दोबस्त कर दिया है कि अपनी भूल बिना अपने मनको असली दुःख नहीं होता। सो जब अपने मनको असली दुःख हो तब यह समझ लेना कि हमारी ही भूलका परिणाम है। इतना ही नहीं, बल्कि दूसरोंके दोषसे अपने मनको दुःख होता हो तो उसे भी अपनी ही भूल समझना। क्योंकि अपनी अज्ञानताके कारण हमें दुःख होता है । दूसरोंकी भूलसे कैसे बचना, मनमें किस किस्मके विचार आने देना, किस किस्मके विचारोंका अभ्यास करना और किस किस्मके विचारोंसे डरते रहना चाहिये ये सब बातें हम नहीं जानते। हमारे मनके साथ शरीरका कितना सम्बन्ध है, तथा मनके दुःख और शरीरके दुःखमें कितना फर्क है, शरीरके दुःख क्योंकर उत्पन्न होते हैं, शरीरके दुःख कितनी देर रहते हैं और मनके दुःख कितनी देर रहते हैं ; शरीरके दुःख आधारमापर कितना असर पहुंचाते हैं और मनके दुःख कितना असर पहुंचाते हैं, ये सब बातें ठीक ठीक समझनी चाहियें । यह समझनेसे कितने ही तरहके रोग मिटाये जा सकते हैं ; बड़े बड़े जान पड़नेवाले दुःख छोटे बनाये जा सकते हैं ; जो दुःख न मिटने योग्य लगते हैं वे भी दूर किये जा

सकते हैं और जब हमें यह विश्वास हो जाय कि "अपने दोष बिना अपने मनको दुःख होता ही नहीं" तब हम बहुत सम्हल कर चल सकते हैं तथा दूसरोंकी भूल निकालनेसे बचे सकते हैं। इसलिये अगर धर्मकी जिन्दगी बितानी हो, सज्जन बनना हो और परम कृपालु परमात्माके प्यारे बनना हो तो यह अच्छी तरह समझ लीजिये कि अपने दोष बिना अपने मनको दुःख होता ही नहीं। इसवास्ते अपनी भूल सुधारनेकी कोशिश कीजिये। अपनी भूल सुधारनेकी कोशिश कीजिये।

५६–किसी भूलभरे विचारसे अपनेको निकालना एक प्रकारकी गुलामीसे छूटनेके बराबर है।

कोई आदमी कैदमें हो या किसी आदमीको किसीने खरीद लिया हो या किसी आदमीपर उसका मालिक या घरके आदमी बहुत जुल्म करते हों तो इसको हम लोग गुलामी समझते हैं और कहते हैं कि उस बेचारेको बड़ा दुःख है और वह गुलामीमें पड़ा हुआ है। बस आदमीपर हमें दया आती है। परन्तु सन्त जन कहते हैं कि ऊपर कही हुई गुलामी तो बहुत छोटी है और हलके दरजेकी है। हम सब इससे भी सख्त गुलामी में फंसे हुए हैं। तिसपर भी हमें मालूम नहीं पड़ता कि वह गुलामी क्या है। वह असलमें गुलामी है तो भी उसका दुःख हमें नहीं दिखाई देता। इससे दूसरोंकी बहुत छोटी गुलामीसे हम छूट भी सकते हैं पर आप पैदा की हुई बड़ी गुलामीसे हम नहीं छूटते। क्योंकि हम जानते ही नहीं कि यह गुलामी क्या है और किस किस्मकी है। इसलिये पहले हमें यह

जानना चाहिये कि जिस घड़ीसे बड़ी गुलामीकी बात होती है और जिसमें हम आपसे आप पड़े हुए हैं वह गुलामी कैसी है।

इसके उपायमें विद्वान कहते हैं कि किसी तरहके खोटे या भूलभरे विचारमें पड़े रहना और उसके अनुसार चलना सबसे बड़ी गुलामी है। क्योंकि जो विचार मगजमें खूब जोर पकड़ कर जम जाते हैं वे आसानीसे नहीं निकल सकते। और उन विचारोंको त्याग देनेकी आपसे आप नहीं सूझती; यहां तक कि ऐसे जमे हुए विचारोंको छोड़ देनेके लिये कोई कहे तो भी उसकी बात हमें नहीं भाती। मनुष्यका स्वभाव ऐसा है कि उसके मनमें जो बातें घस जाती हैं वे फिर आसानीसे नहीं निकल सकतीं। इतना ही नहीं बल्कि उसीके अनुसार करनेका मन करता है और जो विचार या जो कल्पना या जो सिद्धान्त मनमें घुस जाता है उसके अनुसार लाचारी तौरपर चलना पड़ता है। क्योंकि अच्छा या बुरा जो विचार मनमें जम जाता है उसका आदमी गुलाम बन जाता है। हर एक आदमीकी जिन्दगीमें प्रायः हमेशा यही होता है कि कुछ न कुछ भूल भरे विचार मगजमें घुस जाते हैं। उनमें कुछ विचार मा बापकी तरफसे मिलते हैं, कुछ विचार जातिपांतिके बंधनसे उपजते हैं, कुछ विचार राज्यके कानूनसे बनते हैं, कुछ विचार धर्मसे मिलते हैं, कुछ विचार पुस्तकोंसे मिलते हैं, कुछ विचार मित्रोंसे मिलते हैं, कुछ विचार आसपासके अच्छे बुरे संयोगोंसे उत्पन्न होते हैं, कुछ विचार अधूरी जांचसे मिलते हैं और कुछ विचार अपनी प्रकृति तथा मगजसे निकलते हैं। इस प्रकार कितने ही कारणोंसे मनुष्योंके मनमें भूलभरे विचार दाखिल हो जाते हैं और एक बार उन विचारोंके मगजमें घुस जाने पर फिर उनको निकालना कठिन

हो जाता है। फिर तो वे विचार धीरे धीरे और मजबूत होते जाते हैं तथा हृदयकी तहमें जम जाते हैं। इसके बाद उन विचारोंके अनुसार चलनेका मन होता है और आगे जाकर लाचारी तौर पर उनके अनुसार हमें चलना पड़ता है और इस ढङ्गसे कि मानो हमें कोई जबरदस्ती उधरको घसीटता हो इच्छा न होने पर भी उन विचारोंके अधीन होना पड़ता है। इसके बाद कोई मित्र उपदेशक या पुस्तक हमें समझावे कि तुम जो विचार रखते हो वे विचार भूलभरे हुए हैं और अपनी अनुभव भी कहे कि हम जिन विचारोंमें रहते हैं और उनके कारण जो आचरण करते हैं वे ठीक नहीं हैं इसलिये उनमें हमें सुधार करना चाहिये, तो भी हम आसानीसे उन विचारोंको नहीं छोड सकते। ऐसी हालत हो जानेका नाम बड़ीसे बड़ी गुलामी है। क्योंकि बाहरकी गुलामीसे यह हृदयकी गुलामी कहीं अधिक दुःख दे सकती है। इसके दृष्टान्त जानना हो तो कहीं दूर जानेकी जरूरत नहीं है। हमें अपने जीवनमें इस किस्मके कितने ही दृष्टान्त मिल जाते हैं। जैसे-हम आज पसार कर देखते हैं कि विदेश जानेमें आजकलके जमानेमें किसी तरहका नुकसान नहीं है बल्कि विदेश जानेकी बहुत बड़ी जरूरत है तो भी हमारे मनमें जाति बिरादरीके बन्धनके जो विचार घुस गये हैं उनके कारण हम इससे लाभ नहीं उठा सकते। हम जानते हैं कि छूआछूतके मामलेमें कुछ बहुत जान नहीं है तो भी इस किस्मके संस्कारोंके दाग हमारे हृदयमें पड़ गये हैं कि हम इससे निकल नहीं सकते हम जानते हैं कि जो धर्मगुरु नालायक हों उनको मानने या मदद देनेकी जरूरत नहीं है, तो भी पुराने संस्कारोंके कारण हम इस विषयमें पोल चलाये जाते हैं। इसी प्रकार हर तरहके भूलभरे विचार भरे

जाकर हमपर सवार हो जाते हैं और फिर हमको अपने पंजेमें कर लेते हैं। ऐसी दशाका नाम गुलामी है। ऐसे समय हम अपनी स्वतंत्रता बनाये नहीं रख सकते, ऐसे मौकेपर हम असली सत्यको नहीं समझ सकते और समझें भी तो उसे अमलमें नहीं ला सकते। क्योंकि खोटे विचारोंकी गुलामीमें हम पहले से ही फंसे हुए होते हैं। इससे बहुत समय तक सत्य भी दब जाता है और सत्यका दब जाना क्या अफसोसकी बात नहीं है ?

अब विचार कीजिये कि यह सब क्यों होता है। याद रखना कि यह सब भूलभरे खोटे विचारोंके मनमें जम जानेसे होता है। इसलिये हर तरहके भूल भरे विचारोंसे अपना छुटकारा करना एक प्रकारकी बड़ी भारी गुलामीसे छूटनेके बराबर है। सो अगर ऐसी रोजकी गुलामीसे तथा अपनी खुशीसे कबूल की हुई भारी गुलामीसे छूटना हो तो जैसे बने वैसे भूल भरे विचारोंका त्याग कीजिये। त्याग कीजिये।

५७-अपने स्वभावको वशमें रखनेका दृढ़ उपाय।

दुनियाके तमाम धर्म तथा सब महात्मा हमें सिखाते हैं कि तुम्हें अपने स्वभावको वशमें रखना चाहिये। क्योंकि जिसका स्वभाव वशमें होता है वह सफलता पा सकता है और बहुत मजेमें धर्म कर सकता है। इसके विरुद्ध जिस आदमीका स्वभाव अपने इख्तियारमें नहीं होता उस आदमीसे अनेक प्रकारकी भूलें हो जाती हैं; जिस आदमीका स्वभाव काबूमें न हो उसके मुंहसे न कहने लायक वचन निकल जाते हैं, जिस आदमीका

स्वभाव अपने कब्जेमें न हो उससे कितने ही तरहके पाप हो जाते हैं और हित मित्रोंमें या लोगोंमें उसकी मर्यादा नहीं रहती। उसे अच्छे मित्र नहीं मिलते और उसको हृदयकी शान्ति नहीं मिलती। वह अपने स्वभावको अपने हाथमें नहीं रख सकता, इससे हर जगह तथा हर मौकेपर उससे कुछ न कुछ उलटी बात हो जाती है। इस किस्मके आदमी सब लोगोंके चित्तसे उतर जाते हैं और आगे जाकर उनको और कई तरहसे नुकसान पहुचता है। इन सब खराबियोंसे बचनेके लिये तथा अच्छी तरह धर्म पालने, आत्माका सन्ताप पाने और प्रभुका प्यारा बननेके लिये अपने स्वभावको वशमें रखनेकी जरूरत है। परन्तु हम देखते हैं कि इस दुनियामें बहुत ही कम आदमी अपने स्वभावको वशमें रख सकते हैं। यद्यपि सब लोग अपने स्वभावको वशमें रखना चाहते हैं परन्तु स्वभावको वशमें रखनेकी सहज कुञ्जी उन्हें नहीं मिलती इससे वे अपने स्वभावको नहीं रोक सकते। अगर इसके लिये कोई सहज कुञ्जी मिल जाय तो बहुत आदमी अपने स्वभावको वशमें रख सकते हैं। क्योंकि सब लोग यही चाहते हैं कि हमारा मन वशमें रहे। इसके लिये एक महात्माने कहा है कि-

जैसा अपना स्वभाव है वैसा जगतके सब लोगोंका स्वभाव नहीं होता, बल्कि आदमी आदमीका स्वभाव अलग अलग होता है, आदमी आदमीकी प्रकृति जुदी जुदी होती है, आदमी आदमीमें कुदरती संस्कार जुदे जुदे होते हैं, आदमी आदमीके रस्म रिवाज जुदे जुदे किस्मके होते हैं, हर एक आदमीको जो शिक्षा मिलती है वह अलग अलग किस्मकी होती है, आदमी आदमीके धर्मसम्बन्धी विचार भी जुदे जुदे होते हैं, आदमी आदमीकी व्यावहारिक स्थिति भी जुदी जुदी

होती है और आदमी आदमीकी अवस्थामें भी कुछ भेद होता है। इससे जैसे हमारे विचार होते हैं और जैसा हमारा स्वभाव होता है वैसा सबका नहीं होता। जैसे हमें मीठा बहुत पसन्द हो तो इससे हमारे आस पासके सब आदमियोंको मीठा नहीं आता; उनमेंसे किसीको खट्टा चाहिये, किसीको तीखा चाहिये, किसीको खारा चाहिये, किसीको तेलउंस चाहिये और किसीको एकदम कसैला चाहिये। इसी प्रकार हमको सफेद रंग पसन्द हो तो सबको सफेद रंग नहीं पसंद हो सकता। किसीको काला रंग पसन्द आता है, किसीको लाल रंग पसन्द आता है, किसीको पीला, किसीको आसमानी और किसीको पचरंगी पसन्द है।

जैसे इन छोटी छोटी चीजोंके स्वाद तथा शौकमें फर्क होता है वैसे ही धर्मसम्बन्धी तथा राजनीतिसम्बन्धी विचारोंमें भी फर्क होता है। किसी आदमीको चलते आये हुए पुराने विचार पसन्द आते हैं और किसीको नहीं पसन्द आते। इस प्रकार दुनियामें मतभेद तो रहेगा ही। मतभेदसे हमें अपने स्वभावको नहीं छोड़ना चाहिये। क्योंकि जैसे हमको अपनी मरजीके मुताबिक विचार रखनेका हक है, वैसे ही हमारे आस पास जो हितमित्र तथा दूसरे आदमी हैं उनको भी अपने अपने स्वतंत्र विचार रखनेका हक है। इसलिये न्यायपूर्वक हदमें रहकर वे जो विचार रखते हैं उनसे हम उनको हटा नहीं सकते। समझा कर फेरनेकी बात दूसरी है पर क्रोध करके, अपना स्वभाव बिगाड़ कर उनको नहीं सुधार सकते। दूसरे यह मतभेद और ऐसी विभिन्नता तो रहेगी ही; क्योंकि सबका स्वभाव और सबकी प्रकृति कुछ एक सी नहीं होनेकी। इसमें फर्क तो रहेगा ही। और अगर हम हर एक मतभेदके

समय सबके साथ विरोध किया करें, क्रोध किया करें और मिजाज बिगाड़ा करें तो फिर कैसे निबह सकता है ? इसलिये बन्धुओ ! जगतको अपने वशमें रखने तथा अपने आसपासके आदमियोंको अपनी ही मरजीके मुताबिक चलानेकी अभिमानवाली इच्छा त्यागकर आप खुद सुधरिये। आप खुद अपने स्वभावको वशमें रखना सीखिये और मामूली कारणोंसे मतभेद हो जाया करे तो उससे नाराज मत हो जाइये। बल्कि यह समझकर कि ऐसा मतभेद तो थोड़ा बहुत रहेगा ही, अपने स्वभावको वशमें रखनेकी कोशिश कीजिये।

५८-किसी विद्याकी मददसे या कुदरतकी शक्तिसे भी गया हुआ समय फिर नहीं मिलता; इसलिये समयका सदुपयोग कीजिये।

आजकलके जमानेमें मनुष्योंने अनेक प्रकारके नये नये हुनर ढूंढ निकाले हैं। जैसे-आकाशमें उड़नेकी कल, बाइसिकल, मोटर, किस्म किस्मकी गैस, बिजली, अनेक प्रकारके खिलौने, खेतीके ओजार, खान खोदनेकी कल, सरदी, गरमी मापनेके यंत्र आदि अनेक चीजें ईजादकी हैं और अभी क्या क्या करेंगे इसका कुछ ठिकाना नहीं। इस प्रकार मनुष्य अपने बुद्धिबलसे अनेक प्रकारके आविष्कार कर सकता है और कुदरतके छिपे भेदोंको जान सकता है तथा जगतमें बहुत कुछ उथल पुथल कर दे सकता है। और अभी इससे भी बढ़कर कर सकेगा। पर आजतक दुनियामें ऐसा एक भी हुनर नहीं निकला कि जिससे गया हुआ वक्त फिर मिल सके। आदमीके हुनरमें तो क्या ताकत

कुदरतके अन्दर भी ऐसी शक्ति नहीं है कि गया हुआ वक्त लौटा सके। इसीसे कहा है कि "गया वक्त फिर हाथ आता नहीं।"

अब विचार कीजिये कि मनुष्यकी विद्यासे या कुदरतकी शक्तिसे भी जो वक्त नहीं लौट सकता उस वक्तकी कीमत कितनी ज्यादा है और ऐसे अनमोल समयके सदुपयोगसे कितना कुछ न किया जा सकता है। यह जरा ख्याल कीजिये और इसके साथ यह भी देखिये कि ऐसे उत्तमसे उत्तम समयको हम किस बुरे ढङ्गसे खो देते हे तथा कैसी निकम्मी बातोंमें उसको लगा देते हैं।

जिस वक्तके क्षणक्षणसे जिन्दगी बनी है, जिस वक्तके क्षणक्षणके सदुपयोगसे मोक्ष मिलना है जिस , वक्तके पल पलको पकड़ कर इस सीढ़ीके जरिये प्रभुके पास पहुचना है, जिस समयके सदुपयोगसे जगतकी अच्छीस अच्छी चीजें तथा विद्या हुनर उत्पन्न हुए हैं और इन्द्रासन दे देने पर भी जिस वक्तका एक पल भी वापस नहीं मिल सकता वह वक्त ईश्वरके भजन बिना जाय और हमारा कुछ भी कल्याण किये बिना जाय यह क्या अफसोसकी बात नहीं है ?

भाइयो और बहनो ! याद रखना कि इस जगतमें जो कोई बड़ेसे बड़े महात्मा हुए हैं, जो कोई अच्छेसे अच्छे धर्मगुरु हुए हैं, जो कोई बड़ेसे बड़े चक्रवर्ती राजा हुए हैं, जो कोई महान बुद्धि-शाली अद्भुत नवीन आविष्कारक हुए हैं, जो कोई महान पण्डित, रसज्ञ कवि या समर्थ विद्वान हुए हैं व सब समयका सदुपयोग करनेसे ही हुए हैं। इसलिये अगर आपको भी जगतके कल्याणके बड़े काम करना हो तथा जिन्दगी सार्थक करना हो तो आपको समयका सदुपयोग करना सीखना चाहिये और इस बातका पूरा खयाल रखना चाहिये कि एक सेकेण्ड भी व्यर्थ न जाय।

क्योंकि मनुष्यकी कोई विद्या या खुद कुदरत भी गये हुए वक्तको लौटा नहीं सकती। इसलिये जैसे बने वैसे समयका सदुपयोग कीजिये। समयको अच्छे काममें लगाइये।

८९–काम करनेसे आदमी नहीं मरता, बल्कि फिकरसे मर जाता है; इसलिये झूठी फिकर मत रखिये।

बहुतेरे आदमियोंको यह वहम है कि बहुत काम करनेसे थकावट आती है जिससे शक्ति छीज जाती है और आयु घट जाती है। ऐसा विचार धनवानोंमें बहुत फैला हुआ है, इससे वे काम करनेसे जी चुराते हैं और झूठे आराम तथा आलसमें अपना वक्त खोते हैं। परन्तु ऐसा करना बड़ा भारी पाप है, फर्ज अदा करनेके लिये, कर्त्तव्य पालनेके लिये और काम करनेके लिये ही हमें यह जिन्दगी दी गयी है। क्योंकि काम करनेसे ही सब कुछ होता है। इस जगतमें जितनी अच्छी चीजें हैं वे सब काम करनेसे ही उत्पन्न हुई हैं। इतना ही नहीं बल्कि परम कृपालु परमात्माने हमारे शरीरको गढ़ा ही ऐसा है कि किसी तरहका अच्छा या बुरा काम किये बिना वह एक पल भी नहीं रह सकता। यह कुदरतका नियम है। यह नियम आदमियोंमें ही नहीं है बल्कि पशु पक्षियोंमें, छोटे छोटे जन्तुओंमें, पेड़ पत्तोंमें और खनिज पदार्थोंमें भी चल रहा है। इससे आकाशका कोई गोला भी अपना काम किये बिना निमिषमात्र नहीं रह सकता। पवन, अग्नि, समुद्र और पृथ्वीके नीचे होनेवाले परिवर्तन भी हर घड़ी बिना चूके अपना काम किया करते

हैं। जब जड़ वस्तुएं भी बिना काम किये नहीं रह सकतीं तब बुद्धिमान मनुष्यसे बिना काम किये कैसे रहा जा सकता है ? और अगर आदमी बिना कामके रहे तो फिर उसकी कीमत ही क्या ? सो काम करना हमारी जिन्दगीका महान उद्देश्य है, काम करना हमारी जिन्दगीका महा नियम है और काम करनेके लिये ही हमें उत्तम मनुष्यजन्म दिया गया है। इसलिये हमें अच्छेसे अच्छा काम करना चाहिये। और काम करनेसे पैदा होनेवाली थकावटके अन्दर भी एक तरहका दिलासा है, इस थकावटके अन्दर कीर्त्ति है, इस थकावटमें तन्दुरुस्ती है, इस थाकवटमें ईश्वरकी दया है और इस थकावटमें उन्नति है। इसलिये काम करनेसे उपजी हुई थकावटको तो बहुत खुशीके साथ सहना चाहिये। क्योंकि वह कर्तव्य पूरा करनेकी थकावट है, वह प्रभुके रास्तेमें चलनेकी थकावट है, वह नयी रोशनी देनेवाली थकावट है, वह नया अनुभव करानेवाली थकावट है और वह प्रभुको प्यारी लगनेवाली थकावट है। इसलिये काम करनेसे होनेवाली थकावटको अपने माथे चढ़ाना चाहिये और ऐसी थकावट मिलनेसे अपना धन्य भाग्य समझकर इस थकावटकेलिये परम कृपालु परमात्माका उपकार मानना चाहिये।

इससे समझमें आ जायगा कि काम करनेसे जो थकावट पैदा होती है उससे आदमी मरता नहीं। आदमीके छीजने और मरनेका कारण तो कुछ और ही है और वह भी जानने योग्य है। क्योंकि यह जाननेसे काम करनेमें आलस घट जाता है और सच्ची हालत जाननेपर झूठे वहमसे छुटकारा मिलता है। इसलिये आजसे समझ लीजिये कि आदमीको मार डालनेवाला काम नहीं है, बल्कि आदमीको मार डालनेवाली फिकर है। तो भी हम सब अनेक प्रकारकी झूठी फिकर करते रहनेमें ही

अपना वक्त तथा जिन्दगी गवा देते हैं। इतना ही नहीं बल्कि जिस किसमकी फिकर करनेकी हालमें हमें जरूरत नहीं है उस किसमकी फिकर भी हम किया करते हैं। बालकपनकी बातें याद करके तथा बुढ़ापेकी चिन्ता कर करके हम असीम व्यर्थ रोया करते हैं और जिन्दगीको घटा देते हैं। फिकर बड़ी खराब है, फिकर एक प्रकारकी राक्षसी है, फिकर लहू चूस लेनेवाली जोंक है, फिकर बुद्धिको छिपा देने वाला काला परदा है, फिकर आत्म विकासकी कलीको मसल देनेवाला पत्थर है, फिकर मनुष्योंकी सुन्दरता खा जाने वाला कीड़ा है, फिकर मनुष्योंके सद्गुण हरलेने वाला दुर्गुण है और फिकर शैतानका साथी है। इसलिये जिन्दगी घटाने वाली झूठी फिकरसे जैसे बने वैसे बचना चाहिये और अपनी शक्तिके अनुसार तथा देश कालके अनुसार उत्साहपूर्वक काम करना चाहिये। यही आगे बढ़ने तथा जिन्दगी बढ़ानेका सहजमें सहज और अच्छसे अच्छा उपाय है। इसलिये चिन्ता छोड़कर काम कीजिये। काम कीजिये।

६०—परमेश्वर और सब कुछ देनेमें बड़ा उदार है परन्तु समय देनेमें बड़ा कंजूस है। और हम दूसरी चीजें देनेमें कंजूस हैं पर समय खो देनेमें बड़े शाहखर्च हैं।

एक भक्त कहता था कि ईश्वरके ऐसा उदार और कोई नहीं है। अजी! उसकी उदारता तो देखो। वह पेड़ोंमें कितने फूल तथा

फल देता है; समुद्रमें कितने तरह के प्राणियोंको कितनी चतुराईसे पैदा करता है; उसने बिजलीको तेजी देनेमें कितनी बड़ी उदारता की है; चन्द्र सूर्यको तेज देनेमें कितनी बड़ी उदारताकी है; आकाशसे मेह बरसानेमें वह कितनी बड़ी उदारता दिखाता है; उसने जुदे जुदे प्राणियोंको अपने बच्चोंका पालन पोषण करनेके लिये जुदे जुदे साधन देनेमें कितनी बड़ी उदारता की है; उसने मनुष्योंको अपना ज्ञान देनेमें कितनी बड़ी उदारताकी है; उसने पृथ्वीके अन्दर अनेक प्रकारकी कीमती धातुओंका ढेर तथा रत्नोंका भंडार भर रखनेमें कितनी बड़ी उदारता की है, उसने काठमें, कोयलेमें, किस्म किस्मके तेलोंमें तथा किस्म किस्मकी दवाओंमें आग भर रखनेमें कितनी बड़ी उदारताकी है? उसने समुद्रसे मनुष्योंका बोझ उठवानेमें कितनी बड़ी उदारता दिखलायी है; उसने भाफ, बिजली, पवन, अग्नि और सूर्य आदि महान शक्तियोंको मनुष्योंके हाथ सौंपनेमें कितनी बड़ी उदारताकी है; उसने किस्म किस्मकी दवाओंमें किस्म किस्मके गुण भर देनेमें कितनी बड़ी उदारताकी है; उसने मनुष्यकी देहकी रचना करनेमें कैसी अद्भुत कारीगरी दिखायी है, उसने आकाश और उसके भीतर ग्रह तथा तारे बनानेमें कितनी बड़ी उदारता की है और उसने इस जगतके अन्दर अपना पवित्र स्नेह देनेमें कितनी बड़ी उदारता दिखायी है! जरा खयाल तो करो! इतना ही नहीं, मनुष्योंको अनन्त कालका मोक्षसुख देनेमें प्रभु कितनी बड़ी उदारतासे काम लेता है और मनुष्योंके पाप क्षमा करनेमें प्रभु कितनी बड़ी उदारता दिखाता है यह जो जरा विचारो। अहा! प्रभु तो प्रभु ही है। उसकी उदारताको कोई पहुंच नहीं सकता।

यह सुनकर वहां बैठे हुए एक भक्तने कहा कि प्रभु जैसा कजूस है ऐसा कोई भी नहीं है।

तब पहले भक्तने कहा कि हैं ' तुम मेरे प्रभुको कजूस कहते हो ? उसकी कजूसी जरा बताओ तो सही। प्रभु कभी कजूस नहीं है। अगर वह कंजूस है तो प्रभु नहीं है।

दूसरे भक्तने कहा कि और सब कुछ देनेमें प्रभु उदार है परन्तु समय देनेमें वह महा कजूस है। अगर तुम मेरी बात न मानो तो अपने प्रभुसे कह देखो कि मेरा गया हुआ वक्त लौटा द।

यह सुनकर पहले भक्तने कबूल किया कि तुम्हारी यह बात सच है। इस विषयमें प्रभु बेशक कंजूस है। गये हुए वक्तको वह वापस नहीं दे सकता, इतनी उदारता उसमें नहीं है। ओहो ! तुमने तो कमाल किया। मेरे प्रभुको तुमने कजूस ठहराया। यह कह कर वह भक्त इसका जवाब देनेके सोचमें पड़ गया।

बन्धुओ। यह दृष्टान्त देकर एक कथा बांचनेवाला यह समझाता था कि प्रभु सब कुछ देनेमें बड़ा उदार है पर वक्त देनेमें वह भी कजूस है। और जब खुद प्रभु वक्त देनेमें कंजूस है तब और किसकी ताकत है कि हमें गया हुआ वक्त वापस दे सके ? या बन चुके हुए वक्तसे और अधिक वक्त दिला दे ? याद रखना कि ऐसी ताकत किसीमें नहीं है। वक्त एसा अनमोल है। जिस चीजको खुद प्रभु भी नहीं दे सकता वह चीज कितनी कीमती तथा कैसी अलौकिक है यह जरा खयाल तो कीजिये !

बन्धुओ ! वक्तके लिये चारों तरफसे जो इतना ज्यादा कहा जाता है इसका कारण यह है कि हमारी जिन्दगी बहुत थोड़ी है

और यह बहुत जल्द भाग जानेवाली है। घंटा आध घंटा करते करते, घड़ी दो घड़ी करते करते, और आज कल करते करते हमारी बेखबरीमें वर्षके वर्ष बीत जाते हैं और तिसपर भी हम नहीं चेतते और वक्तकी कीमत नहीं समझते। दूसरे, एक तरफ थोड़ी जिन्दगी है और दूसरी तरफ कर्त्तव्य करनेको बहुत है और तीसरी तरफ रागद्वेष और मोहका जहर भी ज्यादा है। हम गफलतमें ही रह जाते हैं और समयका सदुपयोग नहीं कर सकते। इसलिये समयकी कीमत समझानेकी सब उपदेशकोंको बार बार जरूरत पड़ती है तथा यह उनका कर्त्तव्य होता है।

एक तो समय बड़ा अनमोल है, दूसरे उसके देनेमें स्वयं प्रभु कंजूस है और तीसरे हम जगतकी बहुत सी निकम्मी जड़ वस्तुएं फेंकनेमें कजूस हैं परन्तु समयको खो देनेमें उदार ही नहीं बल्कि उड़ाऊ हैं। जैसे—

हमारे फटे हुए जो कपड़े हमारे काममें नहीं आते उन्हें हम जाड़ेमें थरथर कांपते हुए कगालोंको भी नहीं दे सकते, परन्तु बैठे बैठे घंटे खोना हो तो उसमें हमें जरा भी सोच नहीं होता कि इतना वक्त व्यर्थ क्यों खो रहे हैं। हमारे पास पुरानी पुस्तकें हों और हमारे काममें न आती हों बल्कि व्यर्थ जगह रोके हुई हों, उनमें कीड़े और चूहे भरे रहते हों और उन्हें झाड़ना पड़ता हो या उनके सामने देखनेकी भी फुरसत न मिलती हो और वे दूसरोंके काम आ सकती हों तथा उनके दानसे आशीर्वाद मिल सकता हो तौ भी हम अपने मनसे तुरत उन्हें दूसरोंको नहीं दे सकते। इसमें हम बड़े कजूस हैं। परन्तु अगर किसी जगह खेल कूदमें या मौज शौकमें वक्त गंवाना हो तो उसमें हमारा जी जरा भी नहीं

हिचकता । वक्तको हम खुशीसे गंवा देते हैं । इसी प्रकार खाने पीनेके रीति रिवाजमें, जाति बिरादरीके लिहाजमें और दूसरे कितने ही छोटे छोटे विषयोंको साबित रखनेमें तथा उनसे चिपककर रहनेमें हम लोभी हैं, परन्तु अनमोल वक्तको गंवा देनेमें बड़े ही उदार हैं। अपनी इस मूर्खताको तो देखिये ! जो अनमोल चीज देनेमें खुद प्रभु भी कंजूस है उसमें हम उदार हैं और जो बातें बहुत कामकी नहीं हैं तथा तुच्छ सी हैं उनको पकड़ रखनेका हम लोभ करते हैं। फिर भी हम अपने आपको धर्मात्मा समझते हैं और मोक्षकी आशा रखते हैं ! पर जरा विचार तो कीजिये कि समयका दुरुपयोग करके क्या कभी कोई आदमी आगे बढ़ सका है? कभी नहीं। इसलिये अगर कल्याणकी इच्छा हो तो जैसे बने वैसे वक्तकी कीमत समझिये और उसका सदुपयोग कीजिये ।

६१ — क्षमा करनेमें, जितनी कठिनाई है, उससे कहीं अधिक बड़ाई है ।

इस दुनियाके हर एक आदमीके आचार विचार अलग अलग होते हैं तथा रीति रिवाज भी जुदे जुदे होते हैं और जुदे जुदे धर्मकी क्रियाएं तथा रस्में भी जुदी जुदी होती हैं और लोगोंका ज्ञान भी यथायोग्य या घट बढ़ होता है। इससे दुनियामें मतभेद होता है । इसमें कुछ आश्चर्य नहीं है। क्योंकि हमारे आसपासके सब आदमी कुछ हमारे ही जैसे विचारके नहीं होते और जो चीज या जो विषय हमें पसन्द है वही सबको पसन्द नहीं होता; जितनी बड़ी हमारी उमर होती है

उतनी ही कुछ सबकी उमर नहीं होती; जैसा हमारा शौक होता है, जैसा हमारा स्वभाव होता है, जैसी हमारी बोली होती है और जैसा हमारे आस पासका अच्छा बुरा संयोग होता है वैसा ही कुछ सबका नहीं होता। इससे हमारे सब आचार विचार सबको नहीं पसन्द आते। और यह भी याद रखना कि हम चाहे जितने चतुर हों तो भी अन्तको आदमी हैं, कुछ देवता नहीं हैं। इससे हमारे कामोंमें भूल हो सकती है। इसके सिवा बहुत आदमियोंका स्वभाव ऐसा होता है कि वे जहां भूल न दिखाई देती हो वहां भी भूल ढूंढ़ते हैं और शककी नजरसे देखते हैं। दुनियामें ऐसे करोड़ों आदमी हैं और हमारे आस पास भी ऐसे बहुत आदमी होते हैं। इससे मतभेद होता ही रहता है। इस मतभेदसे कहासुनी होती है और आगे जाकर बिगाड़ होता है, झगड़ा होता है और बैर बढ़ता है। इससे दोनों पक्ष एक दूसरेकी बुराई करना चाहते हैं। ऐसी बात दुनियामें जगह जगह होती है; यहांतक कि ऐसी ऐसी छोटी बड़ी वारदातें हर एक आदमीकी जिन्दगीमें हुआ करती हैं। इससे जिन्दगीकी कड़वास बढ़ती जाती है।

हमें प्रभुका हुक्म यह है कि जैसे बने वैसे मेल मिलाप रखना चाहिये, जैसे बने वैसे भ्रातृभाव बढ़ाना चाहिये, जैसे बने वैसे वैरविष घटाना चाहिये और जैसे बने वैसे शान्तिसे रहना चाहिये तथा छोटी छोटी बातोंमें रंज न मानना चाहिये।

भाइयो! प्रभुका हुक्म तो ऐसा है और हम छोटी छोटी बातोंमें वैरका विष बढ़ाते हैं। तब क्या ऐसा कोई उपाय है कि जिससे यह वैरका विष घटे? अगर इसका कोई सहज उपाय मिल जाय तो हम आप अपनी मूर्खतासे नाहकके खड़े किये हुए कितने ही तरहके दुःख कष्टसे बच सकते हैं।

इसके जवाबमें महात्माओंने कहा है कि हाँ ऐसा सहजमें सहज एक उपाय है और वह यह है कि दूसरोंने तुम्हारा कुछ कसूर किया हो तो उनको माफ कर दो। माफ करना क्या है यह तुम जानते हो? माफ करना ऊँचे मनका काम है माफ करना चतुराईका काम है, माफ करना धर्मका काम है, माफ करना आत्माके कल्याणका काम है और माफ करना प्रभुका बहुत प्यारा काम है। क्योंकि अपने दुश्मनको माफ करनेसे अपने हृदयका बोझ हलका हो जाता है, अपने कलेजेमें जो एक तरहका काँटा गड़ा होता है वह निकल जाता है और माफ करनेसे सामनेके आदमीको भी बेहद फायदा होता है। इससे जब हम सच्चे दिलसे माफ करते हैं तब, उसी घड़ीसे हमारे आचार विचार बदलने लगते हैं और हममें उच्चता आती जाती है। क्योंकि क्षमा स्वर्गकी वस्तु है यह देवताओंमें होती है। वहाँसे प्रभुने थोड़ी सी इस दुनियामें भेजी है। इससे जिसको क्षमा करना आ जाता है उसका बड़ा भाग्य है।

यह सुनकर एक हरिजन कहता है कि यह सब सच तो है पर हो कैसे सकता है? यह बड़ा मुश्किल काम है। क्योंकि जिस आदमीने मुझे गाली दी है, जिस आदमीने दूसरे आदमीके सामने मेरी निन्दा की है, जिस आदमीने मेरे विरुद्ध झूठी झूठी अफवाहें फैलायी हैं, जो आदमी मेरे लिये अपने मनमें हमेशा बुरा खयाल रखता है और जो आदमी मेरी बुराई करनेकी तय्यारी कर रहा है तथा उसका मौका ढूँढ़ रहा है और दूसरोंको भी मेरे विरुद्ध उभाड़ता है उस आदमीको मैं कैसे माफ कर सकता हूँ? महाराज! यह तो बड़ा मुश्किल काम है।

ऐसा कहनेवाले भक्तको एक दूसरा भक्त कहता है कि भाई! क्षमा करनेमें जितनी कठिनाई है उससे अधिक बड़ाई है।

क्योंकि क्षमा न करनेसे जिन्दगी बिगड़ती है और क्षमा करनेसे जिन्दगी सुधरती है। पर याद रखना कि बाहरकी माफीके लिये यह बात नहीं है, खाली शब्दोंकी माफीके लिये यह बात नहीं है, शिष्टाचारकी खातिर माफ करनेके लिये यह बात नहीं है, किसीके समझाने बुझानेसे मजबूरन माफ करनेमें यह बात नहीं है और डरके मारे या लाचारीके मारे माफ करनेमें यह बात नहीं है। बल्कि ईश्वरको हाजिर नाजिर जानकर अपनी राजी खुशीसे समझ बूझकर अन्त:करणके भीतरसे जो माफी दी जाती है उसके लिये यह बात है। ऐसी सच्ची माफीसे हृदयका बोझ हलका हो जाता है, ऐसी सच्ची माफीसे बैरकी जगह प्रेम हो जाता है, ऐसी सच्ची माफीसे दैवी सम्पत्तिका जोर बढ़ जाता है और ऐसी सच्ची माफीसे आगे बढ़नेके और कितने ही रास्ते आपमें आप खुल जाते हैं। इसलिये क्षमाकी कठिनाईके सामने मत देखो, बल्कि उसकी बड़ाईका खयाल करके प्रभुके बालकोंको और अपने भाई बहनोंको क्षमा करना सीखो। क्षमा करना सीखो।

६२–हर एक धर्ममें अनेक नामों और अनेक रूपोंसे ईश्वरकी पहचान बतायी जाती है। इससे यह न समझना कि जगतके धर्म बेसमझीसे प्रगट हुए हैं।

लोग और सब बातोंमें चाहे जितने चतुर और समझदार

हों तथा उदार विचार रखते हों पर धर्मसम्बन्धी बातोंमें वे बड़े संकीर्ण होते हैं। यहां तक कि इस विषयमें वे जरा भी उदारता नहीं रख सकते। इससे हर एक धर्मवाले बहुत करके कुएके मेंड्कके समान संकीर्ण विचारमें रह जाते हैं और अपने छोटेसे घेरेमें ही खुश रहा करते हैं। इस कारण वे दुनियाके दूसरे धर्मोंकी खूबियोंको नहीं देख सकते और न दूसरे धर्मोंकी तरफ इज्जतकी निगाह रख सकते हैं। क्योंकि हर एक धर्मके गुरु अपने चेलोंके मनमें हमेशा यही बात ठूसते हैं कि दुनियाके सब धर्म खराब हैं तथा पापसे भरे हुए हैं, सिर्फ हमारा एक धर्म सबसे श्रेष्ठ है। इस किस्मके विचार बचपनमें ही लड़कोंके मगजमें घुसाये जाते हैं, इससे बहुत करके सब धर्मवाले यही विचार रखते हैं कि 'हमारा धर्म सबसे बढ़कर है" और दूसरोंके धर्म खराब हैं। यह विश्वास फैलानेसे धर्मगुरुओंको फायदा होता है, परन्तु इससे बेचारे अज्ञान आदमी कुएके मेंड्कके समान रह जाते हैं। क्योंकि ऐसी समझके कारण वे दूसरे धर्मोंकी खूबी समझनेकी चेष्टा नहीं करते या न मिहनत उठाते हैं। इससे बहुत सी जानने योग्य बातें भी वे नहीं जान सकते। इतना ही नहीं बल्कि भिन्न भिन्न धर्मवाले एक दूसरेकी निन्दा करते हैं और एक दूसरेसे जलते हैं। इससे लड़ाई झगड़ा उत्पन्न होता है। ऐसा न होने देनेके लिये हर एक धर्मकी खूबी समझनेकी चेष्टा करनी चाहिये।

दुनियाका हर एक धर्मवाला दूसरे धर्मवालेको क्यों नीच समझता है इसका कारण आप जानते हैं? इसका कारण यही है कि जुदी जुदी भाषाओंमें ईश्वरके जुदे जुदे नाम होते हैं और ईश्वरको पहचाननेकी रीतियां भी जुदी जुदी होती हैं। इससे नाम तथा रूप अलग अलग देखकर-अपने यहांके रिवाजोंसे

और किस्मके रिवाज देखकर लोग भड़क जाते हैं और यह मान लेते हैं कि हमारा धर्म ही सच्चा है और बाकी सब धर्म खराब हैं। परन्तु जरा साफ दिलसे तथा प्रभुकी महिमा समझकर यह नहीं विचारते कि प्रभुके नामोंकी हद बांधनेका हमें क्या हक है और प्रभुके पानेका रास्ता इतना ही होना चाहिये और ऐसा ही होना चाहिये यह ठहरा देनेका भी हमें क्या इख्तियार है? हमारे धर्ममें जो रास्ता बताया है उसके सिवा प्रभुको पानेका क्या और कोई रास्ता नहीं हो सकता? और जिस नामसे हम प्रभुको पहचानते हैं क्या उसके सिवा और कोई नाम उसका नहीं हो सकता? भाइयो! याद रखना कि सर्वशक्तिमान परमात्माके अनेक नाम हैं और उसको पानेके अनेक रास्ते हैं। इससे जैसे जुदी जुदी नदियां जुदे जुदे रास्तोंसे होकर अन्तको एक ही समुद्रमें जाती हैं वैसे ही दुनियाके सब धर्मोंकी क्रियाएं चाहे जुदी जुदी हों और ईश्वरके नाम तथा स्वरूपकी पहचान चाहे जुदी जुदी हो तो भी सब धर्म अन्तको एक ही ईश्वरमें जाते हैं। इसलिये खूब अच्छी तरह यह समझ लीजिये कि कोई धर्म बेसमझे प्रगट नहीं होसकता, उठ नहीं सकता और टिक नहीं सकता। बल्कि जब उसमें कुछ रहस्य होता है तभी वह निबह सकता है। इसलिये किसी धर्मको खराब कहनेसे पहले खूब विचारना। इतना ही नहीं बल्कि अपने हृदयको विशाल बनानेके लिये, ज्ञानका स्वाद चखनेके लिये, प्रभुकी महिमा समझनेके लिये और भक्तिकी कुंजी जान लेनेके लिये बन पड़े तो अपने धर्मका अध्ययन कर लेने पर दूसरे धर्मोंका भी थोड़ा बहुत मनन करना और उनका रहस्य अपने भाइयोंको समझानेकी कोशिश करना। अगर ऐसा कर सकें तो यह भी इस दुनियाकी तथा प्रभुकी बहुत

सेवा है। क्योंकि ऐसा करनेसे कितने ही तरहके रूगड़े झगड़े घट जाते हैं और भिन्न भिन्न धर्मवालोंमें भाईचारा बढ़ता है। इसलिये दुनियाके सब धर्मोंको इज्जतकी निगाहसे देखना सीखिये। इज्जतकी निगाहसे देखना सीखिये।

६३–यह बात ध्यानमें रखना कि अन्तमें हमको एक ऐसी जगह जाना है जहां ऊंच नीच सब बराबर हैं। इसलिये ऊंचनीच-पनके अभिमानमें मत रह जाना।

हमारी जिन्दगीका कितना ही भाग ऊंचनीचपनकी तकरारोंमें तथा इस किस्मकी भावनाएं रखनेमें चला जाता है। इतना ही नहीं बल्कि हमारे मगजमें भी इस किस्मके कितने ही विचार भरे रहते हैं। इससे ऐसी मामूली छोटी छोटी बातोंमें भी अनमोल मगजका बहुत सा हिस्सा रुका रहता है। इसलिये इसके बारेमें कुछ बढ़िया बातें हमें जान लेनी चाहियें। जैसे—

पवित्रता रखनेकी इच्छासे ऊंचनीचपनकी भावनाएं पैदा हुई हैं। इससे इन भावनाओंका उद्देश्य कितने ही अंशमें अच्छा है पर हालके जमानेमें ऊंचनीचपन जिस रूपमें बरता जाता है यह रूप बहुत खराब है। क्योंकि हम ऊंच हैं और दूसरे नीच हैं यह समझनेसे हममें एक तरहका झूठा अभिमान आ जाता है और दूसरोंसे नफरत करनेकी इच्छा पैदा

हो जाती हैं । दूसरे " हम ऊच हैं और दूसरे नीच हैं " यह समझनेसे उनमें और हममें जुदाई बढ़ती जाती है और उनके तथा हमारे आचार विचारमें भी फर्क पड़ता जाता है । तीसरे हम ऊच हैं और दूसरे नीच हैं यह समझनेसे हममें एक प्रकारकी स्वाभाविक मोटाई आती जाती है । क्योंकि मनुष्यका स्वभाव ऐसा है कि जिनको वह नीच समझता है उनके साथ खराब वर्ताव करनेका उसका मन करता है । इससे बंधन, गुलामी तथा जुल्म पैदा होते हैं । चौथे जो आदमी अपने मनमें सचमुच यह समझते हैं कि हम नीच हैं, हममें कुछ योग्यता नहीं है, हमसे कुछ नहीं हो सकता, हमें तो उच्च वर्णोंकी सेवा टहल ही करनी चाहिये और यही हमारा धर्म है—ऐसी ऐसी बातें जिन आदमियोंके मगजमें बस जाती हैं-वे आदमी बहुत आसानीसे आगे नहीं बढ़ सकते।

ऐसे ऐसे कितने ही कारणोंसे नीच तथा ऊच गिने जानेवाले लोग पीछे रह जाते हैं । इतना ही नहीं बल्कि ऊच नीचके भेदके कारण दोनों दलके लोगोंमें एक प्रकारकी खास जुदाई हो जाती है और उससे बहुत खराबी होती है। इसलिये खूब अच्छी तरह यह समझ लेना चाहिय कि " पवित्रता और बात है और ऊच-नीचपनका ऊपरी रिवाज और बात है । " इन दोनोंको सह-मड कर देनेकी जरूरत नहीं है । पवित्रताकी भावना जितनी खिले उतना ही अच्छा है और इससे सबका कल्याण है । परन्तु ऊच नीचपनकी भावना ज्यों ज्यों बढ़ती जाती है त्यों त्यों उलट खराबी होती जाती है । हालका जमाना भ्रातृभावका है और आगे चलकर अभेदभावका जमाना आता है । ऐसे समय बाहरके लोकाचारके ऊचनीचपनकी बातें बहुत टिक नहीं सकतीं । इसलिये इस विषयमें धीरे धीरे अपनी भावनाए

सुधारनी चाहिये और ऊंचनीचका जो बहुत बड़ा भेद है उसको घटानेका उपाय करना चाहिये।

ऊंच नीचपनके बारेमें अब यह बात भी समझ लेने योग्य है कि हम सब एक ही मल्से पैदा हुए हैं और अन्तको एक ही जगह जानेवाले हैं। और जिस जगह जाना है उस जगह-परम कृपालु परमात्माके धाममें ऊंचनीचपन नहीं है। वहां तो सभी समान हैं। इसलिये ये सब बातें समझ कर जैसे बने वैसे ऐसा कीजिये कि ऊंच नीचपनका अहंकारमय भेदभाव घटे और पवित्रता रहे।

६४—हमारा जो समय जाता है वह ईश्वरके पास जाता है। इसलिये उसको छूछे हाथ या बुरी-खबर लेकर मत जाने देना।

हमारा देश बहुत दुखी हालतमें है और हम लोग बड़ी अज्ञान दशामें हैं। इसका एक मुख्य कारण यह है कि हम लोगोंके यहां वक्तकी कीमत नहीं है, इससे हम लोग जंगली दशामें रह जाते हैं। हम वक्तकी कीमत न समझनेसे उसका सदुपयोग नहीं कर सकते। और जगतमें आगे बढ़नेके जो कुछ काम होते हैं वे वक्तकी मददसे ही होते हैं। इसलिये जैसे बने वैसे वक्तका अच्छेमें अच्छा उपयोग करना चाहिये और

इस बातका खास खयाल रखना चाहिये कि एक पल भी व्यर्थ न जाय। इसके बदले लोगोंका यह हाल है कि हमें परायी निन्दा सुननेका जितना खयाल है उतना खयाल वक्तका नहीं है। नींद न आवे तो भी अलहदी बनकर चारपाई पर पड़े रहना जितना रुचता है उतना वक्तसे फायदा उठाना नहीं सुहाता। बिरादरीमें या हितमित्रोंके यहां एक बार जीमने जानेमें हम जितना वक्त गंवाते हैं उसका दसवां भाग भी किसी कीमती काममें नहीं लगाते। मृत्युके रोदनमें तथा रोगोंकी हाय हाय और व्याहके गीतों और क्रियाओंमें जितना वक्त खोते हैं उसका चौथा भाग भी जमानेके अनुकूल नवीन विचार देखनेमें नहीं बिताते। हितमित्रोंका, पड़ोसियोंका और जाति बिरादरीका पचड़ा गानेमें हम अपना जितना वक्त खोते हैं उसका पचासवां भाग भी अपने कल्याणकी बातोंमें नहीं लगाते। दिखाऊ देवदर्शनमें, त्योहारोंकी विधियोंमें व्रतोंकी क्रियाओंमें और बिना समझे बूझे तीर्थयात्रा कर आनेमें हम जितना वक्त खोते हैं उसका बीसवां भाग भी अपने भाइयोंकी सेवामें नहीं लगाते। छोटी छोटी चीजोंके मोहमें, मौज शौकमें, रंगरागमें, चाय, पान, तमाखू वगैरहके व्यसनमें और इसी किस्मके कितने ही निकम्मे, छोटे तथा साधारण विषयोंमें हम अपना जितना वक्त खोते हैं उसका बीसवां भाग भी अपने मनको सुधारनेमें नहीं लगाते। इससे हम पीछे रह जाते हैं।

दूसरे देशोंमें वक्तकी कीमत मिनटोंसे होती है और वक्तका वादा मिनटोंपर होता है। जैसे-मैं तुमसे तीन या पांच मिनट बात करूंगा; सात बजनेमें दस मिनट बाकी रहे तब आता; सात बजकर पचीस मिनटपर मैं स्टेशन पर मिलूंगा; ठीक ग्यारह बजकर दो मिनटपर मैं आ पहुंचूंगा; इस प्रकार प्रत्येक-

हुए देशोंमें जहां मिनटोंका वादा होता है वहां हमारे देशमें वक्तका वादा कैसे होता है और वह कैसे पूरा किया जाता है यह आप जानते हैं ?

हमारे देशमें करोड़ों आदमियोंके पास अभीतक घड़ी नहीं है। उनमें बहुत आदमी तो घड़ीकी जरूरत ही नहीं समझते और करोड़ों आदमियोंको एक एक रुपयेवाली या दो दो रुपये वाली घड़ी लेनेकी भी गुञ्जाइश नहीं। इसलिये हमारा वादा मिनटपर या घंटेपर नहीं बल्कि अटकल पर होता है। जैसे-चार घड़ी दिन चढ़े तब आना; तीसरे पहर आना, बेर ढले तब आना मुर्गा बोले तब गाड़ी जोड़ना, चिराग बत्तीका जून हो तब बात कालीजीके दर्शनके वक्त मुलाकात होगी, ऐसे ऐसे वादे हमारे देहातियोंमें चलते हैं।

अब विचार कीजिये कि जहां यह हालत है और जहां वक्तकी ऐसी कीमत है वहांके लोग दुखी, दरिद्री और अज्ञानी नहीं होंगे तो और कहांके होंगे ?

इस तरह वक्तके अटकलिया वादे चलते हैं इतना ही नहीं बल्कि जो वादे किये जाते हैं उनके मुताबिक भी लोग नहीं जाते और खुद वादा करनेवाला भी वक्तपर मौजूद नहीं मिलता। यह बात हमारी घर गृहस्थीमें हर रोज जगह जगह होती है। यहां तक कि सभाओंमें जो वक्त पहलेसे नियत कर दिया जाता है उससे घंटे आध घंटे बाद सभाएं होती हैं। हमारे यहां वक्तकी यह कीमत है। अब विचार कीजिये कि जिन सभाओंमें विद्वान होते हैं, अगुए होते हैं और बड़े बड़े गृहस्थ होते हैं वे सभाएं भी जब वक्तकी पाबन्दी नहीं कर सकतीं तब फिर जंगली देहाती लोगोंके वक्तकी तो बात ही क्या कहना है!

जहां इस प्रकार वक्तकी कुछ भी कीमत नहीं होती वहां वक्त व्यर्थ जाय, वहां वक्त छूछे हाथ जाय और वहां वक्त बुरी खबर लेकर जाय तो इसमें आश्चर्य ही क्या है ? परन्तु याद रखना कि हमारा जो वक्त जाता है वह ईश्वरके पास जाता है; इसलिये उसे खाली हाथ न जाने देना चाहिये और न बुरी खबर लेकर जाने देना चाहिये। बल्कि उसका अच्छेसे अच्छा उपयोग करना चाहिये। यही आगे बढ़नेका उपाय है, यही सफलता पानेका उपाय है और यही समयका उपयोग करने और ईश्वरको खुश रखनेका उपाय है। इसलिये जैसे बने वैसे समयका सदुपयोग कीजिये। वक्तसे अच्छा काम लीजिये।

८९–जिस बलसे इस लोकमें और परलोकमें बाजी जीती जासकती है तथा जिन्दगी बढ़ायी जा सकती है उसका पता।

महात्माओंका यह सिद्धान्त है कि हमारी जिन्दगी एक प्रकारकी घोर लड़ाई है। क्योंकि इसमें एक दूसरके विरोधी जुदे जुदे तत्त्वोंको आपसमें लड़ना पड़ता है और उनमें जो बलवान होता है उसकी अन्तिम जीत होती है। हररोजकी और हर घड़ीकी इस लड़ाईमें कमजोर ठहर नहीं सकते, परन्तु जो असलमें बलवान होते हैं वे जीत जाते हैं। इसीसे शास्त्रमें कहा है कि जो नीति पर चलेंगे, जो धर्म पालेंगे, जो अपने मनको मजबूत रखेंगे, जो अपनी इन्द्रियोंको काबूमें रखेंगे, जो अपने स्वार्थको अंकुशमें रखेंगे, जो अपने अन्दरके सद्गुणोंको विकसित होने देंगे, जो अपनी आत्माका बल समझेंगे और जो सर्वशक्ति-

मान, अनन्त कालतक रहनेवाले अमर प्रभुके कदमबकदम चलेंगे, वे ही इस दुनियामें टिक सकेंगे और सफलता पा सकेंगे तथा परलोकमें भी उन्हींकी जय होगी। परन्तु जो कमजोर होंगे, जो स्वार्थी होंगे, जो अपने मनको मनमाने तौरपर भटकने देंगे, जो जिन्दगीके उत्तम उद्देश्योंको नहीं समझेंगे, जो एक दूसरेकी मदद नहीं करेंगे, जो अपनी इन्द्रियोंके बलको उल्टे रास्ते खर्च कर डालेंगे और जो अज्ञानतामें पड़े रहेंगे तथा जो महानतत्त्वको नहीं जानेंगे, उनका नाश होगा। क्योंकि श्रीमद्भगवद्गीताका यह सिद्धान्त है,—

> नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः।
> उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनयोस्तत्त्वदर्शिभिः॥
>
> अ० २ श्लो० १६

अर्थात्—असत्‌की सत्ता नहीं और सत्‌का नाश नहीं। इस प्रकार दोनोंका निर्णय तत्त्व जाननेवालोंने किया है।

प्रभुका यह सिद्धान्त होनेके कारण, जो आदमी कमजोर रहते हैं वे इस जगतमें बहुत दिनतक नहीं टिक सकते। इसी प्रकार जो प्रजा कमजोर रहती है वह भी दूसरी जोरावर प्रजाके सामने नहीं ठहर सकती। क्योंकि प्रकृति आप असत् वस्तुओंका नाश करती है। इसलिये कमजोरका नाश होता है। क्या आप जानते हैं कि असत्‌का अर्थ क्या है? जो चीज थोड़ी देर रहती है वह असत् कहलाती है, जो चीज जड़ होती है जो चीज बहुत दामी नहीं होती जो चीज बहुत उपयोगी नहीं होती, जो चीज सुन्दर नहीं होती, जो चीज प्रकृतिके दूसरे महान तत्त्वोंकी बिना मददके होती है, जो चीज थोड़ेमें थोड़ा तत्त्व ग्रहण कर सकती है, जो चीज लोकप्रिय

नहीं है, जो चीज उन्नतिके रास्तेमें अड़चल डालनेवाली है, जो चीज महात्माओंकी त्यागी हुई है, जो चीज सच्ची कसौटीपर पास होने लायक नहीं है और जिस चीजके सब अङ्गोंमें बहुत निर्बलता दिखाई देती है वह चीज असत् कहलाती है। वह चाहे जगत्की स्थूल वस्तु हो, चाहे देहसम्बन्धी वस्तु हो और चाहे मनसम्बन्धी वस्तु हो, कुछ भी हो, अगर बिना हीरके है तो वह असत् कहलाती है और उसका नाश होता है।

अब जो चीज बहुत समयतक ठहरती है और जो सत् वस्तु कहलाती है वह क्या है इसका विचार करना चाहिये। इसके लिये महात्मा लोग कहते हैं कि असली सत् तो कुछ और ही चीज है और उस सत्तक पहुंचना बहुत दूरकी बात है। यह भाग्यवानोंका काम है। इसलिये जो अन्तिम महान तत्व है और जिसको ब्रह्म, परब्रह्म, परमात्मा और ईश्वर या भगवान कहते हैं वह सत् तो कुछ और ही चीज है, परन्तु ऐसे महान सत्की मदद करनेवाली तथा उसके रास्तेमें ले जानेवाली जो चीजें हैं उनको भी महात्मा लोग सत् कहते हैं। क्योंकि वे भी अच्छी होती हैं, बहुत समय तक टिक सकती हैं और महान सत्के नियमके अनुसार वे चीजें होती हैं। इसलिये वे भी किसी सीमा तक सत् कहलाती हैं। वे चीजें हृदयके सद्गुण हैं। जैसे— दया, क्षमा, सरलता, शान्ति, सन्तोष, इन्द्रियनिग्रह, ब्रह्मचर्य सत्य, अहिंसा, भ्रातृभाव, आत्मज्ञान, प्रभुका बल, आत्माका निरालापन, स्वार्थत्यागका वैराग्य, ज्ञान तथा ज्ञानियोंके प्रति स्नेह, विचारोंकी एकाग्रता, मनकी दृढ़ता, सौन्दर्य, आरोग्य, नियमितपन, मिताहारपन, सत्सङ्ग, शास्त्रोंका अध्ययन, पवित्रता और आत्मश्रद्धा तथा हृदयबल इत्यादि चीजें सत् कहलाती हैं। जो सत् वस्तु है उसीका नाम जोर है, उसीका नाम बल

है, उसीका नाम शान्ति है और उसीका नाम अधिकार है। इसलिये जिनमें यह शान्ति, यह बल और यह अधिकार थे हैं। आदमी इस दुनियामें सफलता पा सकेंगे। जिनमें बलवान सत्त्व नहीं होंगे, वे आदमी या वह प्रजा इस नहीं टिक सकेगी। क्योंकि कमजोर चीजोंका-असत् प्रकृति आप ही नाश करती है। इसलिये अगर इस नाशसे हो, तो जोरावर बनिये, बलवान बनिये, शक्तिमान अधिकारी बनिये। याद रखना, कि अधिकार बिना छोटी चीज भी नहीं मिल सकती। तब जिन्दगी बनाये बड़ा हक कैसे मिल सकेगा? और अधिकार पानेके लिये लियाकत चाहिये। वह लियाकत बल है, परन्तु वह बल पशुवृत्तियोंका नहीं; बल्कि वह सात्विक बल है, वह सद्गुणका बल है, वह पवित्रताका बल है, वह कोमलताका बल है, वह सुन्दरताका बल है, वह ज्ञानका बल है, वह स्नेहका बल है, वह भ्रातृभावका बल है, वह अभेदभावका बल है और महान तत्त्वके साथकी एकताका बल है। ऐसा बल जिनमें होता है, वे ही इस जिन्दगीकी लड़ाईमें विजय पा सकते हैं जो विजयता पा सकते हैं वे आदमी अपना जीवन टिका सकते हैं तथा अपनी सार्थकता कर सकते हैं और ईश्वरको प्रसन्न कर सकते हैं। इसलिये केवल इस उच्च श्रेणीके सत्त्वको प्राप्त कोशिश कीजिये। कोशिश कीजिये।

विशेष धन्यवाद ।

श्रीयुत आर० जे० ब्रदर्स (हालसी रोड, कानपुर) से १, श्रीयुत प्यारेलाल दयाचन्द जैन बजाज (रेहली-सागर)से १ और पण्डित छविराम शर्म्मा मालगुजार(सेमरा-रायपुर) से २ ग्राहक स्वर्गमालाके लिये मिले हैं । इन अपरिचित सज्जनोंने अपने उत्साहसे ग्राहक बढ़ानेकी कृपा की है । इसके लिये मैं इन लोगोंको विशेष रूपसे धन्यवाद देता हूं ।

प्रकाशक ।

स्वर्गमाला—पुष्प ४

यतोऽभ्युदय श्रेय सिद्धि स धर्म'।

स्वर्गके रत्न।

चौथा खण्ड।

प्रकाशक

महावीरप्रसाद गहमरी

स्वर्गमाला कार्यालय

बनारस सिटी।

मूल्य एक खण्डका ।)

Printed by B[illegible] at the Hit Chintak Press Ramghat Benares City

स्वर्गमालाके नियम ।

स्वर्गमालामें हर माह्न १००० पृष्ठोंकी पुस्तकें प्रकाशित होंगी। मोलभरमें वाहर पुस्तकें या पुस्तकोंके वाहर खण्ड क्रमश: निकलेंगे। जो लोग दो रुपये पेशगी भेजकर स्वर्गमालाकी ग्राहकश्रेणीमें नाम लिखावेंगे उनको एकवर्षमें प्रकाशित होनेवाली एक हजार पृष्ठोंकी पुस्तकें दी जायगी। डाक महसूल कुछ नहीं लिया जायगा। फुटकर तौरपर स्वर्गमालाके अलग अलग खण्ड खरीदनेसे दो रुपयेके बदले तीन रुपये पड जायगे। क्योंकि स्वर्गमालाके हर एक खण्डका दाम चार आने होगा। नमूनेका एक खण्ड चार आनेका टिकट भेजनेसे मिलेगा। ग्राहकोंका माह्न वसन्तपञ्चमीसे आरम्भ होगा। जो लोग पीछेसे ग्राहक होंगे उनकी सेवामें पहलेके प्रकाशित खण्ड भी भेज दिये जायगे। जो लोग ।) का टिकट भेजकर नमूना मगावेंगे वे पीछे १।।) भेजकर १ वर्षके लिये ग्राहक हो सकेंगे।

स्वर्गमालाके सम्बन्धकी चिट्ठीपत्री मनीआर्डर आदि सब कुछ नीचे लिखे पतेपर भेजना चाहिये—

महावीरप्रसाद गहमरी

प्रबन्धक स्वर्गमाला

बनारस सिटी।

६६-शास्त्रका यह हुक्म है कि हर एक चीजका उचित आदर करो, किसी चीजको बेकारण तोड़ या नफरतसे फेंक मत दो। तब मनुष्यके लिये ऐसा कैसे कर सकते हैं?

महात्मा लोग कहते हैं कि ईश्वर सर्वव्यापक है। इससे वह जैसे हममें है वैसे ही हर एक चीजमें व्यापक रूपसे स्वयं मौजूद है। इसलिये अपनी अज्ञानताके कारण तथा अपने मिजाजके कारण जगतकी किसी चीजसे नफरत न करना। तिसपर भी हम अगर किसी चीजसे नफरत करें तो उसका पाप लगे बिना न रहेगा। क्योंकि हमें अपनी ही आंखें नहीं दिखाई देतीं। और यहां तो हर एक चीजमें ईश्वरका चैतन्य मौजूद है, हर चीजमें अद्भुत गुण है, हर एक चीज कई तरहसे काममें लायी जा सकती है, हर एक चीजके बनानेमें ईश्वरने अद्भुत चतुराईसे काम लिया है और जिस चीजसे हम नफरत करते हैं उस वस्तुकी भी असली खूबी अगर हम समझें तो उसको भी अपने सिरपर रखनेकी इच्छा हुए बिना न रहे। हर चीजमें ऐसी खूबी है। इसलिये उतावले बनकर, क्रोधमें आकर और रुचिको एक ही तरफ दौड़ा कर किसी चीजसे बिना विचारे नफरत मत करना।

दूसरे यह भी याद रखना कि जब किसी चीजका असली स्वरूप समझमें नहीं आता तभी उससे नफरत होती है; जब उस चीजकी विशेषता तथा कुदरतकी महान कारीगरी समझमें नहीं आती तभी उससे नफरत होती है। इतना ही नहीं बल्कि जब हममें विचार शक्ति नहीं होती, विवेक बुद्धि नहीं होती,

वस्तुओंके गुणदोष जाननेकी शक्ति नहीं होती और जब वस्तुओंको पलट देनेका बल नहीं होता तभी उनसे नफरत करनेकी सूझती है। और इन सब जरूरी चीजोंका हममें न होना क्या हमारी अज्ञानता नहीं है? यह क्या हमारे लिये शरमकी बात नहीं है? और यह क्या हमारी नालायकी नहीं है? सो याद रखना कि जब हम किसी चीजसे नफरत करते हैं तब उस चीजसे नफरत नहीं करते बल्कि अपने आपसे नफरत करते हैं और इसमें उल्टे अपने ही ज्ञानका मोल हो जाता है। इसलिये किसी चीजसे नफरत करनेसे पहले खूब विचारना।

इस विषयमें यह बात भी जानने योग्य है कि जिस चीजको हम जितनी खराब समझते हैं वह चीज उतनी खराब नहीं है बल्कि वह तो बहुत ही लाभदायक है। तो भी हमें कुछ चीजोंका वर्त्तमान स्वरूप न रुचता हो तो रसायन शास्त्रकी मददसे, पाकशास्त्रकी मददसे, वैद्यक शास्त्रकी मददसे, विज्ञानकी मददसे और दूसरी कितनी ही चीजोंकी मददसे हम उनके रूप, रंग, आकार, कद, वजन तथा गुणदोष बदल सकते हैं और ऐसी ऐसी युक्तियोंसे हम जगतकी वस्तुओंकी कीमत जितनी ही बढ़ाते हैं उतनी ही हमारी कीमत बढ़ती है और हम चीजोंसे जितनी नफरत करते हैं उतनी ही नफरत कुदरत हमसे करती है। इसलिये भाइयो और बहनो! किसी चीजसे नफरत करनेके पहले खूब विचार करना और इस बातका खयाल रखना कि किसी चीजसे नफरत न होने पावे।

इसपरसे जो कुछ विचारना है वह यह है कि जब जगतकी किसी चीजसे नफरत करना नहीं चाहिये तब उत्तमसे उत्तम जो मनुष्य है, जिसके अन्दर मन बुद्धि मौजूद है और जिसके अन्तःकरणमें साक्षी स्वरूप ईश्वर आप रूप मौजूद है उससे

नफरत क्यों करना ? और इस नफरतको प्रभु कैसे सह सकता है ? इसलिये याद रखना कि आपपर छोटी या खराब मालूम देती हुई चीजोंसे नफरत करनेके लिये प्रभु अगर थोडी बहुत दया कर भी सके तो अपने बालकोंसे की जानेवाली नफरतको वह नहीं बरदाश्त कर सकता। सो जैसे बने वैसे सब आदमियोंके साथ बहुत विचार कर बर्ताव करना। यही हमारी आपको सलाह है

६७–कितने ही आदमी धर्म का बहुत बखान किया करते हैं पर आप धर्म नहीं पाल सकते ; इसका कारण।

हम देखते हैं कि बहुत आदमी धर्मके सिद्धान्तोंको अच्छी तरह समझते हैं, इससे व धर्मकी बहुत बातें दूसरोंके सामने बहुत अच्छी तरह कह सकते हैं जिससे उनकी बातें सुननेवाले आदमियोंका बड़ा आनन्द होता है। पर वे खुद जैसा चाहिये वैसा धर्मका पालन नहीं कर सकते। इससे उनके आस पासके भावुक लोगोंको–जो उनको रीति भांति तथा आचारसे परिचित रहते हैं–बड़ा आश्चर्य लगता है कि अरे! धर्मकी बातें तो ये बड़ी अच्छी अच्छी करते हैं पर धर्म पालनेमें ऐसे ढीले क्यों हैं ? इस विरुद्धताका खुलासा वे नहीं कर सकते, इससे उनका मन उलझनमें पडा रहता है और इसके लिये वे अनेक प्रकारके तर्क वितर्क किया करते हैं परन्तु मन लायक समाधान नहीं होता।

तभी हृदयको शान्ति मिल सकती तथा सर्वशक्तिमान परम कृपालु परमात्माको आप जान सकेंगे। इसके बिना धर्मका खाली बखान किया करनेसे कुछ नहीं होनेका। यह याद रखना और इस बातका ख्याल रखना कि ऐसी पोलमें न पड़े रह जाय।

६८-बहुतसे अच्छे आदमी भारी पाप नहीं करते, पर वे अपने वैभव तथा प्रभावका बुरा उपयोग करते हैं और फिर भी वे नहीं जानते कि 'बुरा उपयोग होता है' इससे वे पीछे रह जाते हैं।

बहुतसे अच्छे अच्छे तथा बड़े बड़े आदमी भी यह सोचा करते हैं कि हमसे पाप न हो, यही बहुत है। अगर हमसे पाप न हो तो हमारे ऐसा भाग्यवान कोई दूसरा नहीं है। इससे वे पापसे डरते रहते हैं परन्तु पापका अर्थ समझनेमें उनमे थोड़ी भूल होती है। क्योंकि वे बहुत बड़े पापोंको ही पापों समझा करते हैं। जैसे हिंसा न करना, चोरी न करना, व्यभिचार न करना विश्वासघात न करना, किसीको दुःख न देना, झूठ न बोलना शराब न पीना, जुआ न खेलना इत्यादि बड़े बड़े पापोंसे वे बचते हैं पर दूसरी छोटी छोटी भूलोंकी व परवा नहीं करते। इससे वे बहुत आगे नहीं बढ़ सकते। क्योंकि बहुत बड़े पापोंसे बचना कोई बड़ी बात नहीं है। अच्छे आदमियोंका ऐसे अधम पापोंसे बचना स्वाभाविक है, क्योंकि ऐसे पापोंसे वे राज्यके कानूनके कारण बचते हैं, समाजके नियमोंके कारण बचते हैं, अपनी आबरूकी खातिर बचते हैं, जाति बिरादरीके रिवाज तथा लोक

लाजके कारण बचते हैं, पापसे डरनेके लिये बचपनसे मनमें जो संस्कार पड़े होते हैं उनके कारण बचते हैं और ऐसे २ और कितने ही कारणोंसे बड़े बड़े पापोंसे भले आदमी बचते हैं। पर जिन छोटे पापोंके लिये राज्यका कानून उनसे नहीं पूछता, समाजके नियम उनको नहीं टोकते, लोकलाज उनको बाधा नहीं देती और गंवार लोगोंमें ज्ञान भी रुकावट नहीं डालता वैसी जो छोटी छोटी भूलें आदमियोंसे होती हैं उन्हींके कारण मनुष्य असलमें धर्मके रास्तेमें आगे नहीं बढ़ सकते। इसके लिये एक महात्मा भक्त कहते थे कि बड़े आदमी और अच्छे आदमी अपने वैभवमें ही रह जाते हैं और अपनी छोटी छोटी जरूरतों के पीछे इतना अधिक ध्यान देते हैं और उसमें इतने ज्यादा उलझ जाते हैं तथा जरूरतोंको इस कदर बढ़ा देते हैं और वैभवको इतना फैला देते हैं कि उसमें उनको फुर्सत ही नहीं मिलती। इससे वे अन्ततक अपने वैभव और जरूरतोंमें ही पड़ रहते हैं। ऐसा होनेके कारण वे आगे नहीं बढ़ सकते और तौ भी उन्हें मालूम नहीं पड़ता कि हमारा वैभव और हमारी जरूरतें हमें बांध रखती हैं और आगे नहीं जाने देतीं। ऐसी दशामें रह कर वे बड़े बड़े पापोंसे बचनेमें ही सन्तोष माना करते हैं। परन्तु असलमें जिस जोरसे, जिस उत्साहसे, जिस रुचिसे और जिस समझसे प्रभुके मार्गमें आगे बढ़ना चाहिये उसके अनुसार वे नहीं बढ़ सकते। क्योंकि बिना कारण बढ़ाये हुए वैभवमें व इतने उलझ जाते हैं और शरीरकी छोटी २ जरूरतें बढ़ानेमें तथा उन्हें पूरा करनेमें इतना बारीक ध्यान देते हैं कि उसमें वे निकल नहीं सकते। इससे अन्ततक उसीमें पड़े रहते हैं इतने बजे चाय पीना ही चाहिये, इतने बजे फलाने आदमीसे मिलना ही चाहिये, इतने बजे फलानी जगह जाना ही चाहिये, इतने बजे जीमना ही

चाहिये, इतने बजे फल खाना ही चाहिये, इतने बजे दूध पीना ही चाहिये, इतने बजे टहलने जाना ही चाहिये, फलाने वक्त फलानी किस्मकी पोशाक पहननी ही चाहिये, फलाने आदमीसे बात चीत करते वक्त फलानी भाषा बोलनी ही चाहिये, फलानी जगह जाते वक्त फलाने किस्मका ठाट बाट रखना ही चाहिये, जीमनेमें इतनी तरहकी तरकारी तथा इतनी इतनी चीजें तो हर रोज होनी ही चाहिये इत्यादि छोटी बातोंमें व इतने फस जाते हैं कि दूसरी बड़ी जरूरतकी बातोंमें वे ध्यान नहीं दे सकते। भले मनसत होनेपर भी, सद्गुण होने पर भी, साधारण ज्ञान होने पर भी और मनमें आगे बढ़नेकी आशा होने पर भी बढ़ाये हुए वैभवके कारण सद्गुणोंके खिलने देनेका मौका न मिलनेसे वे पीछे रह जाते हैं। और ऐसी फुर्सत न मिलनेका कारण यही है कि वे अपने बढ़ाये हुए वैभव और जरूरत रफा करनेमें ही पड़े रहते हैं। इससे वे आगे नहीं बढ़ सकते और साधनाके होते हुए भी ऐसी ऐसी छोटी भूलोंके कारण बहुत पीछे रह जाते हैं। इसलिये परम कृपालु परमात्माके दिये शुभ अवसरसे लाभ उठाइये और निकम्मे झूठे वैभवों तथा वे कामकी जरूरतें पूरी करनेके लोभमें अच्छी चीजोंसे वंचित न हूजिये। अगर इतना ध्यान रखेंगे तोभी धीरे धीरे आगे बढ़ सकेंगे। इसलिये इस बातका खयाल रखना कि प्रभु कृपासे मिले हुए वैभव तथा प्रसादका बुरा उपयोग न हो। बल्कि ऐसा कीजिये कि प्रभुके लिये और अपनी आत्माके कल्याणके लिये उसका सदुपयोग हो।

१९-हमारे शरीरको मच्छड़, खटमल या जूं काट देती है या कोई फुन्सी हो जाती है तो उसके लिये कितना खयाल किया जाता है ? पर जीवसे कामक्रोध चिमट रहे हैं इसका कुछ खयाल है ?

जिस आदमीको धर्मका तत्व जाननेकी इच्छा हो उस आदमीको यह बात अच्छी तरह समझ लेना चाहिये कि देह और जीवात्मा दो अलग अलग चीजें हैं। देह जड़ है, भूख प्यासका स्वभाव रखनेवाली है, थकावट, नींद, जाग्रत वगेरह दशावाली है और अनेक तरह के विकारोंसे भरी हुई है तथा इसका जल्द नाश हो जाता है । परन्तु इसमें जो जीवात्मा है वह चैतन्य स्वरूप है, वह अमर रहनेवाली है, वह बिना विकारके है, वह बिना खाये पियेभी जी सकती है, वह जुदी जुदी देहोंमें जाती है तो भी खास उसके अन्दर कुछ भी फेर बदल नहीं होता और मन, बुद्धि, इन्द्रियां तथा शरीरके सब अवयव उसीकी सत्तासे अपना अपना काम कर सकते हैं। अगर उनमेंसे जीव निकल जाय तो उनसे कुछ न हो सके। शरीर सब तरहसे जीवके आधार पर है, इसलिये देहसे जीव लाखों दरजे श्रेष्ठ है । इतना ही नहीं बल्कि जो सुख दुःख भोगने पड़ते हैं वे भी जीवको ही भोगने पड़ते हैं, जो जन्म लेना पड़ता है वह भी जीवको ही लेना पड़ता है और पाप पुण्यका जो अच्छा बुरा फल भोगना पड़ता है वह भी जीवको ही भोगना पड़ता है। मतलब यह कि धर्मके शुभ फल भोगनेका सबसे अधिक लाभ जीवको ही मिलता है। देहको तो उसके हिसाबसे बहुत थोड़ा ही लाभ मिलता है । क्योंकि धर्म पालनेका बल देहमें नहीं है, बल्कि यह बल

जीवमेंसे आता है। देह तो जीवका वाहन है, देह तो जीवका नौकर है और देह तो जीवके सुवीतेकी सामग्री है। खुद देह कुछ मुख्य वस्तु नहीं है। इसलिये हरिजनोंको देहकी बहुत परवा नहीं रखनी चाहिये। क्योंकि देहका थोड़े समयके अन्दर नाश होना है और आत्मा तो अमर रहनेवाली है। इसलिये आत्माके कल्याणका खास खयाल रखना चाहिये। परन्तु इसके बदले हम बिलकुल उलटा बर्ताव करते हैं और देहकी जितनी परवा रखते हैं उसका दसवां भाग भी आत्माकी परवा नहीं रखते। जैसे खानेमें, पीनेमें, सोनेमें, बैठनेमें, उठनेमें, कपड़ा पहननेमें, मिलने जुलनेमें और मौज शौक करनेमें हम देहकी जितनी परवा करते हैं उसके दसवें भागके बराबर भी इन विषयोंमें अपनी आत्माकी परवा नहीं करते। अगर देहसे अपनी आत्माकी अधिक परवा रखें तो हमारी हालत कुछ और ही हो जाय।

यह सुनकर कितने ही आदमी पूछ बैठेंगे कि क्या हमें अपनी आत्माकी परवा नहीं है? इसके जवाबमें सन्त लोग कहते हैं कि नहीं तुम्हें आत्माकी परवा नहीं है। अगर तुम्हें आत्माकी परवा होती तो तुम ऐसी ओछी दशामें न रहते। देखो न तुम्हारे शरीरको मच्छड़ न काटें इसके लिये तुम कितना खयाल रखते हो? और फिर भी मच्छड़ काट ले तो कितना अफसोस करते हो? तथा उसके लिये कितने उपाय करते हो?

जैसे-पहले तो घरमें मच्छड़ न हों इसके लिये कमरेमें गन्दगी ही नहीं रहने देते, सदा साफ रखते हो और सील नहीं ... देते। तो भी अगर मच्छड़ हों तो मसहरी रखते हो, ओढ़नेका बन्दोबस्त रखते हो तथा मच्छड़ न काटें इसके लिये शरीरमें तेल लगाते हो और तो भी अगर मच्छड़ काटें तो उसके लिये

कितने ही उपाय करते हो । जैसे–किसी खास किस्मका तेल चुपड़ते हो या जन्तुनाशक दवा सेवन करते हो या कुनैनकी गोली खाते हो। इस तरह पहले तो मच्छड़ पैदा न होने पावें इसका उपाय करते हो और फिर भी पैदा हो जायं तो उनके नाश करनेकी कोशिश करते हो तथा इस बातका खयाल रखते हो कि मच्छड़ काट न लें और काट लें तो तुरत दवा करते हो। परन्तु मच्छड़से लाख गुने भयंकर काम, क्रोध, लोभ, मोह, अभिमान, डाह, आलस वगैरह कितने ही बड़े बड़े शत्रु जीवसे चिमटे हुए हैं और उसको बहुत हैरान करते हैं, उनको भगानेके लिये किसी दिन सचमुच ध्यान दिया है ? कहो कि नहीं।

अब विचार करो कि थोड़े समयके अन्दर जो देह मसानमें फूक दी जानेवाली है उस देहके लिये और एक छोटेसे मच्छड़ जैसे जन्तुके लिये भी कितनी ज्यादा तन्देही है ? और जो आत्मा हमेशा अमर रहनेवाला है, जो आत्मा ईश्वरके सामने जा सकती है, जो जीव ईश्वरका अंश है, जिस जीवकी सत्तासे अनेक देह हुई हैं और अनेक होंगी तथा जिस जीवको पाप पुण्य भोगना पड़ता है, उस जीवसे काम, क्रोध, लोभ जैसे भयंकर राक्षस चिमटे हुए हैं तो भी उसकी कुछ परवा नहीं है। यह क्या हरिजनोंका लक्षण है ? यह क्या धर्म पालनेका लक्षण है ? और यह क्या प्रभुको प्रसन्न रखनेका लक्षण है ? नहीं। इसलिये भाइयो। अगर सच्चा धर्म पालना हो और प्रभुके मार्गमें चलना हो तो जितनी देहकी परवा रखते हो उससे अधिक आत्माके कल्याणकी परवा रखना सीखो। यही धर्मकी कुंजी है। अगर यह कुंजी ले लो तो धर्मके रास्तेमें बहुत आसानीसे आगे बढ सकते हो । इसलिये देह और आत्माके बीचका

फर्क समझो। इस समय देह पर जो अधिक ध्यान है हो उसके पहले अगर भक्त होना हो तो आत्मापर अधिक ध्यान रखना सीखो। इससे तुममें नया बल आ जायगा और तुम आसानीसे ऊंचे दरजेका धर्म पाल सकोगे। अबतक जो सिर्फ देहको देखते हो वैसा न करके अबसे अपनी आत्माके सामने भी देखनेकी मेहरबानी करो। यही हमारी प्रार्थना है। क्योंकि इसीमें सबका कल्याण है। इसलिये आत्माके सामने देखो। आत्माके सामने देखो।

७०--घड़ीका एक पुर्जा बिगड़ जाय तो उससे समूची घड़ी बिगड़ जाती है। वैसे ही अगर पैसा बुरे काममें लगाया जाय तो उससे आरोग्यता, वक्त, शक्ति और दूसरी सब चीजें बुरे काममें लगती हैं। ऐसा न होने देने के लिये धनका सदुपयोग करना सीखिये।

हम लोगोंको धर्म बहुत पसन्द है। इसका पहला कारण यह है कि हमारे पूर्वज बड़े धार्मिक जीवन बितानेवाले थे, इससे उनके संस्कार वंशपरम्परासे हममें चले आते हैं। दूसरे हमारे पूर्वज धर्मसम्बधी बातोंमें बहुत गहरे उतर गये थे, इससे हमारे देशमें धर्मकी बहुत पुस्तकें हैं, इतना ही नहीं बल्कि हिन्दू धर्म सम्बधी जितना ऊंचा और अधिक साहित्य हमारे देशमें है उतने अन्य दुनियाके और किसी धर्मके सम्बन्धमें नहीं लिखे गये हैं। तीसरे

सरे दूसरे देशोंमें व्यवहार और धर्मको अलग अलग रखा इससे किसी खास दिनको तथा मन्दिरोंमें और किसी स विषयमें ही उनके पास धर्मके विचार आ सकते हैं, न्तु आर्योंके जीवनमें तो तह तहमें धर्म गुथा हुआ है और न्दगीके हर एक काममें मुख्य करके धर्म है, इससे हमलोगोंमें र्मका जोर अधिक होता है। चौथे दूसरे मुल्कोंमें ऋतुओंके र बदलके कारण, सरदी गरमीके कारण तथा अनाज और ल फुलकी कुदरती कम उपजके कारण धर्म पालनेमें कितनी ी तरहकी कठिनाइयां पड़ती हैं, परन्तु हमारे देशमे ईश्वर-कृपासे इस किसमकी कठिनाइयां बहुत ही थोड़ी होती हैं, इससे र्म पालनेका बहुत अधिक सुबीता हम लोगोंका मिल सकता है जिससे दुनियाके और देशवालों और दूसरे धर्मवालोंसे मार्य अपना धर्म अधिक खूबसूरतीसे पाल सकते हैं। पांचवां कारण यह है कि हमारे देशमें साधु बहुत अधिक हैं और वे सब बहुत करके वैराग्यकी बातें करने वाले ही होते हैं और गांवमें चुटकी मांगने जाते हैं तो वहां भी हर घरके सामने कहते हैं-" धर्मकी जय, " ऐसे शब्द हर एक आदमीके कानमें हर रोज बार बार पड़ा करते हैं। इससे धर्मके नाम पर वैराग्यके विचार अधिक अधिक फैलते जाते हैं। इन सब कारणोंसे हमारे यहांके लोगोंमें और हमारे देशमें धार्मिकता बहुत ही अधिक है। और धर्म अधिक हो और उसका असली रूपमें पालन हो तो यह बड़ी अच्छी बात है परन्तु हमारे यहां होता यह है कि असली धर्म दब जाता है और धर्मान्धपन बढ़ जाता है, धर्मका गुलामीपन बढ़जाता है और धर्मके नामपर चलते हुए बाहरके आडम्बर तथा पोल बढ़ जाती है। इन सबके कारण फल यह होता है कि धर्मके किसी एकाध अंगमें आदमी

बहुत गहरे चले जाते हैं और दूसरे सब अंगोंसे लापरवा बन जाते हैं। जैसे-कोई आदमी वैराग्यपर बहुत जोर देता है, इससे नाहक कई तरहके असुबीते सहता है और पैसेके मामलेमें भी बहुत बेपरवाही दिखाता है। यह नहीं कि ऐसा सिर्फ साधु करते हैं, बल्कि स्त्रियाँ और गृहस्थोंमें भी इसकी छूत लगती है इससे वे भी इससे लापरवाही दिखाते हैं और झूठे सन्तोषमें पड़े रहते हैं। इससे हमलोग बहुतायतसे पैसा नहीं पैदा करते, पैदा करें तो उसका संचय नहीं करते और संचय किया हो तो उसका सदुपयोग नहीं करते। क्योंकि इन सब बातोंमें शुरूसे खराबीका धक्का चला आता है, इसमें थोड़ी थोड़ी पोल होती है। इस कारण पैसेका दुरुपयोग होता है। अर्थात् पैसेकी जरूरत होनेपर भी पैसा नहीं रखते या जहां पैसेकी जरूरत नहीं है उन जगहोंमें भी, उन गुरुओंको भी और उन मन्दिरोंमें भी लोग पैसा दे आते हैं। वैसे जगहोंमें पैसेकी बहुतायतके कारण तथा अज्ञान आदमियोंके कारण अधर्म बढ़ता जाता है और जिन संस्थाओंको पैसेकी बहुत जरूरत है उन्हें पैसेकी मदद नहीं मिलती, इससे बहुत सी उपयोगी संस्थाएं नहीं खुलती तथा जो खुलती हैं वे भी धीरे धीरे बन्द हो जाती हैं। जैसे-बहुतसे साधु परदेश जाय तो वहां अपने धर्मके लिये बहुत काम कर सकते हैं और वहांके लोगोंपर तथा वहांके धर्मोंपर बहुत अच्छा असर डाल सकते हैं। परन्तु इसमें अड़चन यह पड़ती है कि उन्हें पैसा पसन्द नहीं, इससे पैसेकी मदद बिना वे उन जगहोंमें नहीं जा सकते। और जिन धर्मगुरुओंके घरके सामने पैसेका ढेर लगता है वे गुरु इसी स्वार्थके विचारसे होते हैं कि वे अपना मन्दिर छोड़कर बाहर परदेश नहीं निकलते। दूसरी तरफ जिन मन्दिरोंको पैसेकी

जरूरत नहीं होती वहां भी लोग पैसा दिया करते हैं और इस पैसेका सदुपयोग न होता हो तो भी लोग उन्हींको पैसा दिया करते हैं। इससे ऐसी जगहोंमें लाखों और करोड़ों रुपये बेकार व्यर्थ पड़े रहते हैं और शिक्षाके काममें, स्त्रियोंको सुधारनेके काममें, अनाथ बालकोंकी मददके काममें, सस्ती कीमतमें अच्छी पुस्तकोंका प्रचार करनेके काममें, हुनर कारीगरी सिखानेके काममें, परदेश जानेके बारेमें, बीमारोंको दवा देनेके कामों और इसी किस्मके दूसरे परमार्थके कितने ही कामोंमें पैसेकी बहुत ही तंगी पड़ती है। क्योंकि ऐसे कामोंकी लोग कीमत नहीं समझते इससे उनमें बहुतायतसे पैसा नहीं देते जिससे वे उपयोगी संस्थाएं मुर्दार बनी रहती हैं। और जिनको विशेष जरूरत नहीं है उन मन्दिरों तथा गुरुओंको जितना चाहिये उससे अधिक पैसा मिलता है।

इस प्रकार धनका बुरा उपयोग होनेसे कितने ही अच्छे कामोंको भी बहुत बड़ा धक्का पहुंचता है। इस अज्ञानताके कारण बहुत आदमी मौज शौकमें बुरी तरह अपना पैसा उड़ा देते हैं। क्योंकि पैसा कैसे कमाना, कैसे रखना, और कैसे खर्चना चाहिये इसपर विशेष जोर नहीं दिया जाता, सिर्फ वैराग्यके विचारोंपर ही जोर दिया जाता है। इससे पैसा सम्बन्धी अंग अधूरा रह जाता है जिससे उसका दुरुपयोग होता है और यह एक बड़ा पुर्जा बिगड़ जाता है,। इसके कारण वक्तकी कीमत समझमें नहीं आती,। इससे कितने ही सद्गुण नहीं खिलने पाते और कितनी ही शक्तियां व्यर्थ जाती हैं,। क्योंकि घड़ीमें जैसे एक पुर्जेके बिगड़ने पर उसका असर दूसरे सब पुर्जों पर पड़ता है वैसे ही पैसा सम्बन्धी एक पुर्जा बिगड़ता है तो उसका असर और कितनी ही बातों पर पड़ता है। इससे सारी जिन्दगीका

चक्कर तथा धर्मका चक्कर बिगड़ने लगता है। याद रखो कि यह सब पैसेका बुरा उपयोग करनेसे होता है। इससे धर्मके भोलेपनमें न पड़े रह कर पैसेका होने देनेका ख्याल रखना। क्योंकि "पैसा भी धर्मका एक अंग है।" इसलिये उसका पैदा करना जरूरत भर सचय करना और उसे परोपकारके काममें खर्च करना धर्मका बहुत बड़ा कर्त्तव्य है। इसलिये झूठे वैराग्यमें न जाकर इन सब बातोंकी तरफ ख्याल रखना। क्योंकि पैसा धर्मका एक अंग है और आजके जमानेमें जिन्दगीकी जरूरतें पूरी करनेके लिये यह बहुत जरूरी सामग्री है। इसकी मदद बिना कितने ही उपयोगी काम भी अधूरे रह जाते हैं। उनके अधूरे रह जानेसे हम प्रभुके रास्तेमें आगे नहीं बढ़ सकते। क्योंकि लक्ष्मी भगवानकी अर्द्धांगिनी हैं। भगवानके राज्य पहुंचनेमें इनकी अर्द्धाङ्गिनाकी मदद भी बड़े कामकी होती है। इसवास्ते इस अंगको इस-चक्करमें बिगड़ा मत रहने देना, बल्कि ऐसा करना कि उसका सदुपयोग हो। यही आगे बढ़नेका असली उपाय है। इसलिये पैसेका सदुपयोग करना।

७१-पारसमणि और सन्तमें बहुत फर्क है। पारस मणि तो लोहेको सिर्फ सोना बना सकता है, लोहेको पारस नहीं बना सकता; परन्तु सन्त अज्ञानियोंको भी अपने ऐसा बना देते हैं। इसलिये पारस—मणिसे सन्त श्रेष्ठ हैं।

धर्मके मार्गमें प्रभुके कदम बकदम चलने वाले सन्तोंकी

जितनी कीमत समझें उतनी थोड़ी ही है ! क्योंकि वे अपनी और अपने भाइयोंकी इतनी आधिक भलाई करते हैं कि जिसकी कुछ हद ही नहीं । हित मित्र बहुत मेहरबानी करते हैं तो व्यवहारके काममें कुछ कुछ मदद कर देते हैं । जैसे-ब्याहके वक्त काम आते हैं, बीमारीके वक्त आया जाया करते हैं, कहीं बाहर जाना हो तो साथ हो लेते हैं, किसी वक्त कुछ पैसेकी मदद दरकार हो तो देते हैं, किसी वक्त किसीसे कलह तकरार हो तो उसमें हमारा पक्ष लेते हैं, हमारे परिवारमें किसी-को सगाई बगाई करनी हो तो उस काममें मदद करते हैं और कोई मर गया हो तो क्रिया कर्म आदिके लिये दौड़ धूप करते हैं। इस प्रकारकी मदद व्यवहारी लोग करते हैं। परन्तु सन्त जो मदद करते हैं वह और ही तरहकी होती है । जैसे सन्त हमारे दुर्गुण घटाते हैं, संत हमारे पाप काट देते हैं, सन्त हमें प्रभुके कदम बकदम चलना सिखाते हैं, सन्त हममें सद्गुण भरते हैं, सन्त हमारी जिन्दगीमें अमृत ढालते हैं, सन्त हमें नया जन्म देते हैं और नया आदमी बना देते हैं, सन्त हमारे मनका संशय काट देते हैं, सन्त हमें आत्मिक दिलासा देते हैं, सन्त हमारे हृदयमें स्नेहकी ज्योति प्रगटा देते हैं, सन्त हमें शान्तिके समुद्रमें ले जाते हैं, सन्त हमें सब प्रकारकी इच्छाएं पूरी करनेवाली कामधेनु दे देते हैं, सन्त हमारे अनेक जन्मोंका ताप घटा देते हैं, सन्त हमारी आंखोंमें नया अंजन आंज देते हैं जिससे आजतक हमें जो तत्त्व नहीं दीख पड़ा था वह भी दिख जाता है, सन्त हमारे हृदयका चक्कर बदल देते हैं, सन्त हमारे हृदयमें मिठास भर देते हैं, सन्त हमारा अधिकार बढ़ा देते हैं, सन्त हमें ऊंची भूमिकामें ले जाते हैं, सन्त हमारी मानसिक दरिद्रता मिटा देते हैं, सन्त हमें इसी संसारमें स्वर्ग

दिखा देते हैं और सन्त जैसे आप होते हैं वैसा ही हमें बना देते हैं। परन्तु ये सन्त कैसे होते हैं यह आप जानते हैं?

सन्त शान्तिके समुद्र से होते हैं, सन्त ज्ञानके भंडार से होते हैं, सन्त स्नेहके सूर्य से होते हैं, सन्त कृपाके आगार से होते हैं, सन्त स्वर्गके देवता से होते हैं, सन्त प्रभुके हृदयमें रहनेवाले होते हैं तथा खास प्रभुके ऊपर भी हुक्म चला सकनेवाले होते हैं और वे हमें भी वैसा ही बना देते हैं। इसीसे हरिजन कहते हैं कि सन्तोंकी बलिहारी है। क्योंकि पारसमणिसे भी सन्त श्रेष्ठ हैं। पारसमणि तो लोहेको सोना ही बना सकता है, वह लोहेको पारसमणि नहीं बना सकता। लेकिन सन्त तो मूर्ख दासोंको भी अपने समान सन्त बना देते हैं। इससे लोहेको सोना बनानेवाले जड पारसमणिसे भी प्रभुके हृदयमें रहनेवाले और प्रभुको अपने हृदयमें रखनेवाले सन्त श्रेष्ठ हैं। इसलिये पापके रास्तेसे बचना हो, आगे बढ़ना हो, शान्ति लेना हो और प्रभुके प्यारे बनना हो तथा आत्माका कल्याण करना हो तो सन्तोंकी शरण जाइये, उनके कदम बकदम चलिये, उनकी सेवा कीजिये, उनके सत्संगमें रहिये और उनके जैसा होनेकी कोशिश कीजिये। तब आप उनकी कृपासे बहुत आसानीसे धर्मके मार्गमें बहुत आगे बढ़ सकेंगे। पर सन्त कैसे होते हैं और कहां रहते हैं इस विषयमें धोखा मत खाना। कपडेके रंगसे या मन्दिर और गुफासे सन्तकी कीमत मत मान लेना। बल्कि खूब अच्छी तरह समझ लेना कि हर एक देशमें सन्त होते हैं, हर एक धर्ममें सन्त होते हैं, हर एक भाषामें सन्त होते हैं, हर किस्मके रोजगारियोंमें सन्त होते हैं, व्यवहार के जंजालमें भी कहीं कहीं सन्त होते हैं, स्त्रियोंमें भी सन्त होते हैं यानी सन्तके लक्षणवाली बहुत सी स्त्रियां होती हैं, बालकोंमें भी किसी किसी समय कहीं कहीं सन्तपन होता है।

धनवानोंमें भी कभी कभी सन्त होते हैं, राजाओंमें भी कभी कभी सन्त होते हैं, भिखमंगोंमें भी कभी कभी सन्त होते हैं और छोटा रोजगार करनेवाले गिरे दरजेके लोगोंमें भी कभी कभी सन्त होते हैं । इसलिये जगहके ठाटसे या कपड़ेके ठाटसे या शब्दोंकी चतुराईसे धोखा मत खा जाना; बल्कि सन्तकी पहचान समझ लेनेके लिये ध्यानमें रखना कि जिनमें शान्ति हो और जो अपनी शान्ति दूसरोंको दे सकें वे सन्त हैं; जो समता रख सकें वे सन्त हैं; जो देशकाल समझ कर निस्पृहीपनसे शुभकाम कर सकें वे सन्त हैं; जो अपने भाइयोंके कल्याणके लिये अपना स्वार्थ छोड़ दें वे सन्त हैं; जो धर्मका या दूसरे शास्त्रका खूब गहरा अध्ययन करें और उसका अर्क खींचकर आप पी जायं तथा दूसरोंको पिला दें वे सन्त हैं; जो स्नेहके सागरमें गोता लगावें और दूसरोंको भी उसमें शराबोर करें वे सन्त हैं; जिनके हृदयका किवाड़ खुल गया हो और जो दूसरोंके हृदयके किवाड़ खोल सकें वे सन्त हैं; जो अपने विकारोंको काबूमें रख सकें और दूसरोंके विकारोंको अंकुशमें रखनेकी शक्ति रखते हों सन्त हैं; जो भली इच्छासे शुभ काम किया ही करें और उसके फलकी इच्छा न रखें वे सन्त हैं और जिनके चेहरे पर एक प्रकारकी भलाईका कुदरती तेज झलकता हो, जिनकी वाणीमें मिठास हो, जिनके हृदयमें सब पर स्नेह हो और प्रभुके लिये जो किसी तरहकी सेवा कर रहे हों वे सन्त हैं तथा जो आप तर गये हों और दूसरोंको तार सकते हों वे सन्त हैं। कपड़ेके रंगसे और भाषा या जगहसे सन्तपनका सम्बन्ध नहीं है बल्कि हृदयके चक्करसे और उससे होनेवाले बाहरके शुभ कर्मोंसे सन्तपनका सम्बन्ध है । और ऐसे छोटे बड़े सन्त, कितनी ही जगहोंमें, कितनी ही जातियोंमें

और कितने ही धर्मोंमें होते हैं। इसलिये उनको ढूंढ़िये, उनके सत्संगमें रहिये और उनके कदम बकदम चलिये। तब आप भी कुछ दिनमें सन्त हो सकेंगे और प्रभुके प्यारे बन सकेंगे। क्योंकि सन्त दूसरोंको भी सन्त बना सकते हैं। इसलिये सन्त बननेकी कोशिश कीजिये।

७२–जिसको क्षयरोग हो जाता है वह आदमी मुंहसे यह कहता है कि मुझे कुछ नहीं हुआ है। परन्तु इससे क्या हुआ? वह तो मरेगा ही। वैसे ही जो पाप करता है परन्तु कहता है कि मैं पाप नहीं करता उसके ऐसा कहनेमें क्या रखा है? पापीकी खराबी तो होती ही है। इसलिये खराबीसे बचना हो तो जल्द पाप सकारो, तब तुरत उपाय हो सकता है।

कितने ही आदमी ऐसे होते हैं जिनको बड़ा भयङ्कर नाशकारक रोग हुआ रहता है तो भी वे दूसरोंके सामने कहते हैं कि हमें कुछ नहीं हुआ है। और लोगोंके सामने ऐसा कहनेसे शायद कुछ दिन चल भी सकता है परन्तु होशियार डाक्टरोंके सामने जब वे यह कहते हैं कि हमें कोई रोग नहीं है तब वे डाक्टर उनकी बेवकूफी पर मनमें हंसते हैं, अफसोस करते हैं और उनपर तरस खाते हैं। क्योंकि वे उनके चेहरेसे ताड़ जाते हैं कि ये रोगी हैं, उनकी बोल चालसे समझ जाते हैं कि

ये रोगी हैं, उनकी सांससे पहचान लेते हैं कि इनकी शक्ति छीजती जाती है, उनकी खुराकसे जान लेते हैं कि ये रोगी हैं और उनके बर्तावसे देख लेते हैं कि इनको क्षयरोग हुआ है; और वे फिर भी कहते हैं कि हमें कुछ नहीं हुआ है। इसलिये या तो लुचपनसे या अपना कुछ मतलब साधनेके लिये वे क्षयरोगको छिपाते हैं अथवा वे ऐसे मूर्ख हैं कि उन्हें अपने रोगकी खबर नहीं होती। इन दोंमेंसे कोई एक कारण जरूर है, होशियार डाक्टर यह बात समझ जाते हैं। इसी तरह कितने ही आदमी बहुत तरहके पापोंमें फँसे रहते हैं, उन पापोंको ज्ञानी महात्मा देखते हैं, इससे वे ऐसे लोगोंसे कहते हैं कि तुम पापी हो और पाप बड़ी खराब चीज है इसलिये चेतो नहीं तो मारे जाओगे। परन्तु इसके जवाबमें ऐसे लोग कहते हैं कि हम पापी नहीं हैं। कुछ लोग पाप कबूल करनेमें शरमाते हैं इससे ऐसा कहते हैं। कुछ लोग अभिमानी होते हैं, वे अपने अभिमानके कारण पाप कबूल नहीं करते। कुछ लोग बड़े व्यवहारचतुर होते हैं वे मनमें यह सोचते हैं कि अपनी बात अपने मनमें समझलें परन्तु दूसरोंको न जानने देनेमें ही खूबी है; दूसरों के सामने क्यों कबूल करें कि हम पापी हैं और कुछ बेचारे इतने नादान होते हैं कि उन्हें अपने पापकी खबर नहीं होती। क्योंकि पाप कई तरहके हैं।

तीन प्रकारके पाप कहलाते हैं (१) शरीरके (२) वाणीके और (३) मनके। इनमेंसे शरीरके पापको प्रायः सब लोग समझ सकते हैं परन्तु कितने ही आदमी खान्दानी संस्कारोंके कारण तथा चले आते हुए रिवाजोंके कारण शरीरके स्थूल पापोंको भी नहीं समझते। जैसे—जो लोग मांसाहारी होते हैं वे ऐसी मलिन वस्तु खाने तथा जीव मारनेमें भी पाप नहीं समझते।

वाममार्गी लोग व्यभिचारमें भी पाप नहीं समझते । भिन्न भिन्न राजाओंमें जब लड़ाई होती है, तब पलटनोंका विकास भिफल जाता है उसमें वे लोग पाप नहीं समझते । नहाना जिन्दगीके लिये जरूरी बात है और तन्दुरुस्तीसे सम्बन्ध रखता है, खासकर गरम मुल्कोंमें तो नहानेकी बड़ी ही जरूरत होती है तो भी जैन लोगोंमें कितने ही साधु ऐसे होते हैं जो सारी जिंदगी नहीं नहाते। न नहानेका उनका मत होता है और इसको वे धर्म समझते हैं । फलाने दिन पशुओंको मारना ही चाहिये यह भी कितने ही लोगों की समझमें धर्म है और वे ऐसा करते हैं। ऐसे ऐसे कितने ही तरहके स्थूल पाप लोग करते हैं और तो भी उनको पाप नहीं मानते । जब देहसे होनेवाले स्थूल पापोंमें भी ऐसी भूल होती है और ऐसा गड़बड़ाध्याय चलता है तब वाणीके पापोंमें और विचारोंके मानसिक पापोंमें बहुत ज्यादा गड़बड़ाध्याय चलना कुछ आश्चर्यकी बात नहीं है। परन्तु सच्चे पापको भी हम पाप न समझें तो इससे पाप हमको छोड़नेवाला नहीं, जैसे क्षयरोगको हम रोग न मानें तो इससे इस रोगकी खराबीसे हम नहीं बच जाते वैसे ही पापको भी पाप न समझें तो पापसे होनेवाली खराबीसे नहीं बच सकते । इसलिये पापका असली स्वरूप समझना चाहिये।

वाणी तथा मनके पापोंको हमलोग ठीक ठीक पाप नहीं समझते। इससे हम कठोर शब्द बोलते हैं, जिस बातके कहनेकी जरूरत न हो उसे भी कह डालते हैं, जहां ऊंची बात कहना हो वहां भी हलकी बात कह देते हैं, जिनके पास चुप रहनेकी जरूरत हो वहां भी बकवक किया करते हैं, जहां थोड़े शब्दोंसे काम चल सकता हो वहां भी लम्बी लम्बी वक्तृता झाड़ते हैं, जहां कुछ सच्ची बात कह डालनेकी जरूरत हो वहां

स्वार्थके कारण, अच्छे कहलानेके लिये या दूसरोंको नाराज न करनेकी गरजसे कुछ नहीं बोलते; सुधारके जिस काममें सहारा देनेकी जरूरत हो उस काममें भी चुप्पी साध लेते हैं। जिस जगह प्रेमके शब्द बोलना चाहिये वहां, प्रेमके बदले, जहरके शब्द बोल देते हैं, जहां लड़कोंके कानमें हंसाते खेलाते अच्छे शब्द डालना चाहिये वहां, इसके बदले, नीचता भरे हलके शब्द लड़कोंके कानमें डालते हैं; जैसे छोटी लड़कीको खेलाते खेलाते यों भी वहां जा सकता है कि अहा! बेटी! तू तो देवी है! तू चतुर होगी। तू दयाकी देवी होगी। तू बड़े बड़े काम कर सकेगी। ऐसा कहनेके बदले हम कहते हैं-देखो! देखो! रांड़ कैसी हंसती है! यह लड़की बड़ी पाजी होगी। यह अपनी माके नहीं पड़ेगी। यह तो अपनी सासको कान पकड़कर उठावेगी बिठावेगी, यह अपने मर्दको नहीं चलने देगी। ऐसी वैसी बातें हम उसके कानमें बिना कारण भरते हैं। यह सब वाणीका पाप है और ऐसे पापमें हम इस समय डूबे हुए हैं तौभी मनमें यह समझते हैं कि हम कुछ पाप नहीं करते। क्योंकि बहुत बड़े पापको ही हम पाप समझते हैं, परन्तु हर रोज जो ऐसी ऐसी कितनी ही भूलें होती हैं उनका हमें खयाल नहीं होता।

इसी तरह मनके कितने ही पाप जाने बेजाने हुआ करते हैं। जैसे-हम अपने मनमें तरह तरहके निकम्मे संकल्प विकल्प किया करते हैं। किसी स्त्री पुरुषके बारेमें हमारे मनमें जो खराब विचार बैठ जाता है उसकी खोद बिनोद किया करते हैं और उसके बारेमें बुरे विचार किया करते हैं; सोते वक्त जिस किस्मके विचारोंकी जरूरत नहीं होती उस किस्मके विचार उस समय करते हैं; मन्दिरमें जिस किस्मके विचार नहीं करना चाहिये उस किस्मके विचार वहां करते

हैं। किसीके बीमार पड़नेपर उसके बारेमें जिस किस्मके विचार न करना चाहिये उस किस्मके विचार करते हैं; रास्तेमें चलते वक्त जिस किस्मके विचार न करना चाहिये उस किस्मके विचार करते हैं; भोगविलासके लिये जितना विचार करना चाहिये उसका सौगुना विचार करते हैं; धनके लिये जितना विचार करना चाहिये उसका हजार गुना विचार करते हैं और जिन्दगी सुधारनेके लिये जितना विचार करना चाहिये तथा जगतके महान तत्त्वोंका गुप्त भेद समझनेके लिये जितना विचार करना चाहिये उसका हजारवां या लाखवां भाग भी हम नहीं विचार करते। निकम्मे विचारोंमें ही जिन्दगी खो देते हैं। ऐसा करना मनका पाप है। इस किस्मके पापोंकी अभी हमारे यहांके लोगोंको खबर नहीं है इससे वे समझते हैं कि हम पाप नहीं करते। किन्तु अब बुद्धिका जमाना आता जा रहा है इसलिये अब ऐसी पोलमें पड़े रहना ठीक नहीं। अब तो हमें अपने स्थूल पापोंके बाद वाणीके पापोंको समझना चाहिये, मनके पापोंको समझना चाहिये, बुद्धिके पापोंको समझना चाहिये और अवस्थाके पापोंको समझना चाहिये। जैसे विद्यार्थीअवस्थाके पाप और तरहके होते हैं, जवानीके पाप और तरहके होते हैं, बुढ़ापेके पाप और तरहके होते हैं, अधिकारके पाप और तरहके होते हैं, गरीबीके पाप और तरहके होते हैं, अमीरीके पाप और तरहके होते हैं, मास्टरोंके पाप और तरहके होते हैं, डाक्टरोंके पाप और तरहके होते हैं, वकीलोंके पाप और तरहके होते हैं, स्त्रियोंके पाप और तरहके होते हैं, विधवाओंके पाप और तरहके होते हैं, कुमारिकाओंके पाप और तरहके होते हैं, [illegible] पाप और तरहके होते हैं, धर्मगुरुओंके पाप और तरहके होते हैं, पुलिस वालोंके पाप और तरहके होते हैं,

गृहस्थोंके पाप और तरहके होते हैं, साधुओंके पाप और तरहके होते हैं, कोठी कारखाने चलानेवाले व्यापारियोंके पाप और तरहके होते हैं, अखबारके सम्पादकोंके पाप और तरहके होते हैं, अनजान देहातियोंके पाप और तरहके होते हैं और आगे बढ़नेकी इच्छा रखनेवालोंके पाप और तरहके होते हैं। मतलब यह कि मनुष्योंकी जुदी जुदी हालतोंमें जुदे जुदे तरहके जाने बेजाने कितने ही पाप हो जाते हैं। इन सब पापोंसे जंगली लोग अगर लापरवा रहें तो उनकी बात दूसरी है परन्तु जिनको हरिजन होना है, जिनको प्रभुके रास्तेमें चलना है और जिनको अपनी आत्माका कल्याण करना है तथा इसी जिन्दगीमें आत्मिक आनन्द लेना है उनका इस किस्मके पापोंमें पड़े रहना ठीक नहीं है। क्योंकि क्षयरोग रोज रोज बढ़ता जाता है। पाप क्षयरोगसे भी खराब है और उसका धक्का जबरदस्त होता है। इसलिये पापसे बेपरवा मत रहिये, बल्कि जैसे बने वैसे पापका असली रूप समझकर उसे दूर करनेकी कोशिश कीजिये। तब आप फुर्तीसे जिन्दगी सुधार सकेंगे और हृदयका आनन्द भोग सकेंगे।

७३—हमारा भाग्य अच्छा है यह जाननेसे भी आदमीमें महान शक्ति आ जाती है। इसलिये हमारा भाग्य अच्छा है ऐसा विश्वास रखना सीखिये।

मनुष्यस्वभावमें एक इच्छा इस किस्मकी है कि उसका,-

मन भविष्य जानना चाहता है। यह इच्छा जहां तक हदमें रहती है वहां तक तो बहुत फायदा करती है; परन्तु जब यह इच्छा हदबाहर हो जाती है तब आदमी वहमी बन जाता है और भविष्य जाननेके लिये कितने ही व्यर्थ काम किया करता है तथा जिस चीज में कुछ दम नहीं है उसमें भी बड़ी बड़ी बातें समझा करता है जिन बातोंका भविष्यसे कुछ भी सम्बन्ध नहीं है उनका भी भविष्यसे सम्बन्ध माना करता है और जो आदमी भविष्यके बारेमें कुछ न जानते हों उनके वचन पर विश्वास रखा करता है तथा जिन पुस्तकोंमें भविष्यके बारेमें कुछ भी खुलासा न किया गया हो उन पुस्तकोंके भरोसे भी यह पड़ा रहता है। इससे अपना भविष्य जाननेके विषयमें लोग धोखा खाते हैं और उलटे नुकसान उठाते हैं। इसलिये इस बातका खयाल रखना कि भविष्य जाननेकी कुदरती इच्छा वहमका रूप न पकड़ ले।

भविष्य जाननेकी इच्छा मनुष्योंमें कुदरती तौरपर है यह जान कर बहुत आदमी यह सवाल पूछना चाहेंगे कि क्या मनुष्य भविष्यमें होनेवाली घटनाओंको पहलेसे जान सकता है? इसके जवाबमें कहना है कि हां मनुष्य भविष्यकी बातोंको पहलेसे जान सकता है, यह पक्की बात है। अगर यह जाननेकी मनुष्योंमें शक्ति न होती तो मनुष्योंको उसके जाननेकी कुदरती वृत्ति भी न होती। क्योंकि मनुष्यस्वभावका यह नियम है कि जितना उससे हो सकता है उतना ही उसकी इच्छा होती है। मनुष्यका गठन ही परम कृपालु परमात्माने ऐसा किया है कि उससे जितना हो सकता है उतनी ही उसकी इच्छा होती है। जो कभी होने लायक नहीं या जो कुदरतके नियमके विरुद्ध है वैसी इच्छा उसके हृदयमें स्वभाव-

नहीं होती। यह सुनकर कितने भाई बहनोंको बड़ा आश्चर्य होगा कि क्या मनमें जो जो कुदरती इच्छाएं उठती हैं वे सब पूरी हो सकने लायक हैं? अगर ऐसा है तो हमारी बड़ी इच्छाएं तो दूर रहीं छोटी छोटी इच्छाएं भी पूरी क्यों नहीं होतीं! जैसे-थोड़ा अधिक पैसा चाहिये, दो एक सुन्दर लड़के चाहियें, शरीरकी तन्दुरुस्ती चाहिये, अच्छी बुद्धि चाहिये, गुणवान मित्र चाहिये, रोजगार धंधेमें बरकत चाहिये, जाति बिरादरीका बंधन घटना चाहिये, लड़कोंको शिक्षा देनेका सामान बहुत अधिक चाहिये, कुटुम्बमें अच्छे स्वभावकी रूपवती और गुणवती स्त्रियां चाहियें, राज्यका कानून समस्त प्रजाके पसन्द लायक चाहिये, धर्मके सम्बन्धकी बाहरी क्रियाएं कम होनी चाहियें, गुरुओंने जो हदसे ज्यादा लकड़ी घुसेड़ रखी है उसे निकालना चाहिये, शिल्प कला बढ़ाना चाहिये और ऐसा होना चाहिये कि पवित्र ईश्वरी रास्तेमें चलनेका बल आवे।

ये सब इच्छाएं क्या स्वाभाविक नहीं हैं? पर जब इतनी भी पूरी नहीं होतीं तब बड़ी २ इच्छाओंका क्या कहना है जो असम्भव ही हैं? जैसे-किसीका मन चन्द्रलोकमें घूमनेका होता है, किसीको समुद्रकी तलहटीमें घर बनाकर रहनेकी इच्छा होती है, किसीको जुदे जुदे ग्रहोंपर सैर कर आनेकी खाहिश होती है, किसीको हवा खाकर जिन्दगी कायम रखनेकी इच्छा होती है, कोई ऐसा करना चाहता है कि इस दुनियासे सूर्यका प्रकाश हटे ही नहीं, अर्थात् रातको भी दिनकी तरह सूर्यका प्रकाश और गरमी मिला करे, कोई इस पृथ्वीपर दूसरी नयी दुनिया ढूंढ़ निकालनेकी इच्छा करता है, किसीको पृथ्वीके आरपार छेद कर देनेकी इच्छा है, किसीको अपनी मरजीके मुताबिक मेह बरसानेकी इच्छा होती है, किसीको

समुद्रमें उठनेवाले तूफान रोक देनेकी इच्छा होती है और कोई मनुष्योंको होनेवाली सब तरहकी बिमारियां मिटा देना चाहता है। तो क्या ये सब हो सकते हैं? महात्मा लोग कहते हैं कि हां ये सब और इनसे भी कहीं अधिक बातें हो सकती हैं जिनकी इस समय कल्पना भी नहीं हो सकती। परन्तु ऐसा होनेके पहले देशकालकी मददकी जरूरत है, कुदरती बुद्धिको पूरी तरह खिलने देनेकी जरूरत है और सारी दुनियाका हर एक आदमी तथा हर एक चीज जुदे जुदे रूपमें किसी न किसी तरहकी मदद यही मदद करने लगे तभी यह सब हो सकता है। परन्तु ऐसा होनेके लिये बहुत समय दरकार है तथा यह सब होनेके लिये जो जो सामग्री दरकार है उसका पहलेसे तय्यार होना जरूरी है। इसके बाद जब कोई अद्भुत शक्तिवाला योजक निकल आवेगा तब उसके हाथसे यह काम हो सकेगा। इसी तरह क्रम क्रमसे जगतके बड़े बड़े आविष्कार हुए हैं, कोई भी नया आविष्कार आपसे आप या अचानक, वक्त आये बिना नहीं होता। और बेवक्तका जो आविष्कार होता है उसको थोड़े समयके अन्दर मरजाना पड़ता है। जैसे-बेमौसिम कोई बीज बहुत जोरके कारण या थोड़ी देरकी कुछ अनुकूलताके कारण उग आवे तो भी कुछ समय बाद मौसिम न होनेसे प्रतिकूलताके कारण उसे सूख जाना पड़ता है, मुरझा जाना पड़ता है, मर जाना पड़ता है या बिगड़ जाना पड़ता है। बेवक्तका जो आविष्कार होता है उसका भी यही हाल होता है।

इस समय असम्भव लगने वाली ऐसी ऐसी बातें भी जरूर हो सकती हैं, परन्तु अभी हममें उतना ज्ञान नहीं है उतना पुरुषार्थ नहीं है और हमारे आस पास जो साधन हैं, हमारे जो औजार हैं, हमारी जो कलें हैं और हमारे पास वक्त

र, भाफ, गैस, बिजली वगैरह जो शक्तियां हैं वे सब अभी
क रूपमें हैं, वे सब अभी ठीक ठीक खिली नहीं हैं; इतना ही
बल्कि आवाजका बल, इच्छाशक्तिका बल, ईश्वरका बल
ई कितने ही तरहके बलसे अभी हम काम लेना नहीं जानते;
के सिवा और कितने ही तरह का बल इस जगतमें है उसकी
खबर नहीं है। इससे हमें कितनी ही बातें असम्भव लगती हैं,
तु जब हम इन सब विषयोंको समझेंगे और सब प्रकारके
से काम लेना सीखेंगे तब हम बहुत आश्चर्यजनक काम
सकेंगे। इसमें कुछ भी शक नहीं है।

अब विचार कीजिये कि जब ऐसी ऐसी महान बातें भी मनुष्यसे
सकती हैं तब भविष्यका हाल जान लेना कौन बड़ी बात है?
तो बहुत आसानीसे हो सकता है क्योंकि भविष्यमें होनेवाली
।—जिनको हम नसीब कहते हैं—कुछ अचानक या
बारगी आपसे आप नहीं हो जातीं, बल्कि जगतकी सब
नाएं क्रम क्रमसे होती हैं। सब घटनाओंके बीज पहलेसे ही
। हुए होते हैं, भविष्यमें होनेवाली घटनाओंके लिये पहलेसे
थोड़ी बहुत तय्यारी हुई रहती है और हर घटना किसी न
से नियमके आधारसे होती है, कोई घटना अकस्मात् नहीं
ी, क्योंकि दुनिया नियमके अधीन है। इसलिये अगर अपने
के नियम हमारी समझमें आ जायं, हमारी करनेकी कुंजियां
रे हाथमें आजायं और हम अपना ज्ञान इतना बढ़ावें कि
यामें होनेवाली बहुतेरी घटनाओंका क्रम समझ सकें तो
(अपने भाग्यको समझ लेना कोई बड़ी बात नहीं है।
रे वनस्पति शास्त्रवाले कोई पौधा या बीज देखकर उसकी
त ठहरा सकते हैं तथा जमीनकी किस्म, खादकी किस्म,
ोकी किस्म, बीजकी किस्म और मालीका ज्ञान देखकर पौधोंका

भविष्य जान सकते हैं, जैसे प्राणी शास्त्रवाले किस्म किस्मके प्राणियोंके बारेमें नयी नयी बातें पहलेसे जान जाते हैं और जैसे रसायन शास्त्री अपने रसायनी प्रयोगोंका फल पहलेसे समझ लेते हैं ऐसे ही चतुर आदमी भी अपना भाग्य पहलेसे जान लेते हैं और जब उनको यह विश्वास हो जाता है कि हमारा भाग्य बहुत अच्छा है तब वे बहुत ज्यादा जोरसे काम करते हैं जिससे बहुत जल्द आगे बढ़ जाते हैं। इसलिये हमारा भाग्य कैसा है यह जाननेकी कुंजी हासिल करना चाहिये।

जो चतुर आदमी हैं वे साधु फकीरोंके कहने पर भाग्यका भरोसा नहीं रखते, जो चतुर आदमी हैं वे रमलके पासेपर अपने भाग्यका भरोसा नहीं रखते; जो चतुर आदमी हैं वे मूर्खंदास जैसे, अगड़बम जैसे ज्योतिषियोंके मीन मेखपर अपने भाग्यका भरोसा नहीं रखते और जो चतुर आदमी हैं वे मूर्त्तियोंपर, जंतर मंतर पर, गंडे तावीज पर या सगुन साइत पर अपने सुखका भरोसा नहीं रखते। बल्कि वे तो अपने आसपासकी दशापर संयोगोंपर तथा अपने ज्ञानपर अपने भाग्यका भरोसा रखते हैं। जैसे—हमारा भाग्य खराब होता तो चौरासी लाख जीवोंमें से, हमें, उत्तम मनुष्य जन्म नहीं मिलता; अगर हमारा भाग्य खराब होता तो हमें ऐसे अच्छे मा बाप न मिलते जैसे कि मिले हैं; अगर हमारा भाग्य खराब होता तो हमारा जन्म ऐसे अच्छे कुलमें न होता, अगर हमारा भाग्य खराब होता तो हमारे शरीरकी ऐसी आरोग्यता न होती; अगर हमारा भाग्य खराब होता तो हमें ज्ञान पैदा करनेका ऐसा मौका न मिलता, अगर हमारा भाग्य खराब होता तो हमें ऐसा रोजगार धन्धा या नौकरी चाकरी न मिलती, अगर हमारा भाग्य खराब होता तो हमें ऐसे अच्छे

मित्र न मिलते ; अगर हमारा भाग्य खराब होता तो हमें उत्तम धर्म न मिलता; अगर हमारा भाग्य खराब होता तो हमें अच्छा राज्य न मिलता; अगर हमारा भाग्य खराब होता तो हमें यह सब विचारनेकी सद्बुद्धि न मिलती और अगर हमारा भाग्य खराब होता तो हमारी इन्द्रियोंमें इतनी अधिक कुदरती शक्ति न होती। परन्तु हम देखते हैं कि ये सब हममें बहुत अच्छी तरह हैं, इतना ही नहीं बल्कि पहले किसी जमानेमें मनुष्योंको आगे बढ़नेके लिये जितना मौका मिलता रहा है उससे हालके जमानेमें कहीं अधिक मौका मिलता है। इन सब बातोंसे अच्छी तरह समझ पड़ता है कि हमारा भाग्य बहुत ही अच्छा है। इसलिये हमें इससे खूब लाभ उठाना चाहिये और ऐसा उपाय करना चाहिये कि हमारा भाग्य और भी अच्छा हो। क्योंकि अपने भाग्यका अच्छा बनाना भी हमारे हाथमें है। इसका कारण यह है कि हम अपना भाग्य आप बनाते हैं। हमारा भाग्य कोई देवी या देवता नहीं बनाता, हमारा भाग्य कोई दूसरा आदमी नहीं बनाता और न हमारा भाग्य भगवान ही बनाता है; बल्कि हम आप अच्छे या बुरे जो काम करते हैं अच्छे या बुरे जो विचार करते हैं उन्हींसे हमारा भाग्य बनता है। इसलिये हमारा भाग्य अच्छा है यह समझकर उसको और भी अच्छा बनानेकी कोशिश करनी चाहिये। अगर ऐसा करें तो बहुत आसानीसे और बहुत जल्द इस जगतमें भारी सफलता हो सकती है तथा ईश्वरी रास्तेमें बहुत आसानीसे आगे बढ़ा जा सकता है। इसलिये हमारा भाग्य बहुत ही अच्छा है यह समझ कर तथा यह बल रख कर खूब उत्साहके साथ शुभ काम कीजिये। इससे बहुत फायदा होगा और भाग्य अबसे और अच्छा हो सकेगा। अपना भाग्य दूसरोंके हाथमें मत सौंपिये,.पक्की दृढ़की

खेलनेवालोंके हाथमें मत सौंपिये बल्कि आप अपने ही हाथमें अपने भाग्यको रखिये और यह अच्छा है यह समझ कर उसको और अच्छा बनानेकी कोशिश कीजिये, तब ईश्वरकृपासे आपके शुभ विचारों तथा शुभ कामोंसे ही सब अच्छा होजायगा।

७४–लोगोंमें प्रचलित आचार विचारोंको तथा पुराने रिवाजों को कहां तक मानना चाहिये

बहुत लोग कहते हैं कि लोकाचारके विरुद्ध नहीं चलते बनता। शिष्टाचारकी दृष्टिसे देखने पर ऐसा जान पड़ता है कि लोकाचारके विरुद्ध चलनेसे आबरू जाती है; लोकाचारके विरुद्ध चलनेसे लोगोंमें प्रतिष्ठा नहीं रहती, लोकाचारके विरुद्ध चलनेसे बहुत आदमियोंके ताने सुनने पड़ते हैं, लोकाचारके विरुद्ध चलनेसे लोग दिल्लगी उड़ाते हैं और लोकाचारके विरुद्ध चलनेसे अनेक प्रकारकी कठिनाइयोंमें पड़ना पड़ता है। इसलिये प्रचलित आचार विचारोंको छोड़ना ठीक नहीं, क्योंकि लोकाचारके विरुद्ध होना एक प्रकारकी उच्छृंखलता है; लोकाचारके विरुद्ध जाना उत्पात मचानेका लक्षण है, लोकाचारके विरुद्ध जाना एक प्रकार का पागलपन है, लोकाचारके विरुद्ध जाना एक तरहकी बड़ा भारी मूर्खता है और लोकाचारके विरुद्ध जाना अपना स्वार्थ बिगाड़नेके समान है। बिना कारण इतनी अड़चनें सहनेसे क्या लाभ है ? उलटे हंसी होती है और कुछ नुकसान उठाना पड़ता है। ऐसे बखेड़ोंमें जान बूझकर क्यों

पढ़ना ? इस प्रकार व्यवहार चतुर मनुष्य जोशीले नौजवानोंको सिखाते हैं।

जहां एक ओर व्यवहारचतुर, कम हौसलेवाले, दब्बू तथा अपने मतलबके ही गुलाम बने हुए आदमी ऊपर लिखे अनुसार सलाह देते चलते हैं वहां दूसरी ओर इस विषयमें आगे बढ़े हुए समर्थ विद्वान क्या कहते हैं यह आप जानते हैं ? यह दूसरा पहलू भी जानना चाहिये। वे कहते हैं कि जो आदमी तेजस्वी होते हैं, जो आदमी ज्ञानकी महिमा समझते हैं, जो आदमी बहुत तेजीसे उन्नतिके रास्तेमें आगे बढ़ना चाहते हैं, जो आदमी अपना स्वार्थ थोड़ा बहुत त्याग सकते हैं, जो आदमी यह जानते हैं कि प्रचलित आचार विचारों तथा रिवाजोंमें कितना दम है और उनके पालने और न पालनेमें कितना नफा नुकसान है, जो आदमी देशकालका फेर बदल समझते हैं, जो आदमी जमानेके अनुसार होना चाहते हैं, जो आदमी सत्यको ढूंढना चाहते हैं, जो आदमी कुदरतके भेद तथा उद्देश्य समझनेकी चेष्टा करते हैं, जो आदमी अपने आपको तथा मनुष्यजातिको सुधारना और आगे बढाना चाहते हैं और जो आदमी सत्य धर्म पालना चाहते हैं तथा शीघ्रतासे प्रभुके मार्गमें चलना चाहते हैं उन आदमियोंको लोकाचारके विरुद्ध चलना आवश्यक हो जाता है। क्योंकि साधारण लोगोंका ऐसा स्वभाव होता है कि कोई आदमी उनसे आगे निकल जाय तो यह उनसे सहा नहीं जाता। इसी तरह कोई आदमी उनसे पीछे रह जाय और छूट जाय तो भी उनसे सहा नहीं जाता। वे सब आदमियोंको अपने ही जैसे आचार विचार युक्त देखना चाहते हैं। इससे जो व्यवहारमें पिछड़ जाता है उसकी भी निन्दा करते हैं और जो लोकाचारको छोड़ कर आगे बढ

जाता है उसकी भी निन्दा करते हैं। जैसे-ब्याह या मृत्यु पर बिरादरी जिमानेका रिवाज हो और अगर कोई आदमी न जिमावे तो लोग उसकी निन्दा करते हैं और बन पड़े तो उसे धमकी देते हैं तथा दण्ड भी देते हैं। और मौका पड़नेपर इससे बिरादरीका खर्च वसूलकर लेते हैं। क्योंकि कोई आदमी उनके व्यवहारमें इतना पीछे रह जाय यह उन्हें नहीं रुचता। इसी प्रकार उन्हें यह भी नहीं रुचता कि कोई हमारे रिवाजोंसे आगे निकल जाय। जैसे-एक जातिके ब्राह्मण दूसरी जातिके ब्राह्मणोंके यहां न जीमते हों परन्तु उनमेंसे कोई आदमी प्रसङ्गवश दूसरी जातिवाले ब्राह्मणके यहां जीमले तो उसको जातिवालोंसे देखा नहीं जाता। विदेश जानेका रिवाज न हो और बिरादरीका कोई आदमी विदेश जाय तो बिरादरीवालोंको नहीं रुचता क्योंकि उनसे यह सहा नहीं जाता कि हमारे रिवाजोंसे निकल कर कोई इतना आगे बढ़ जाय। इससे ऐसे समयपर व बहुत धूम मचाते हैं। परन्तु आजकलके जमानेमें आगे बढ़े हुए पण्डित लोग कहते हैं कि हम लोग आजकल जिसको लोकाचार कहते हैं और लोकलाज कहते हैं वह सब एक प्रकारकी पोल है। उसमें कोई बहुत बड़ी बात नहीं है। हम लोकलाजको बाहरसे देखते हैं तो वह भारी पहाड़ सी दिखाई देती है परन्तु भीतरसे देखनेमें वह सिर्फ हवाई बादलके समान है। वह विशेष कुछ कर नहीं सकती और उसमें कुछ विशेष दम भी नहीं होता। वह बाहरसे बहुत बड़ी दिखाई देती है पर असलमें ऐसी होती है कि एक जबरदस्त फूंक मारनेसे उड़ जाती है और फिर सुधरे हुए नये रूपमें जन्म लेती है। उसका नाश नहीं होता। इसलिये जिस आदमीको आगे बढ़ना हो और जिसमें सचमुच बल तथा ज्ञान या स्नेह हो उसका काम तो लोकलाजको लात मारे बिना

चल ही नहीं सकता। क्योंकि जिसकी आत्मा आगे बढ़नेके लिये तड़प रही है, जिसकी बुद्धि निश्चय कर चुकी है कि ऐसी बातोंमें और ऐसे आचारोंमें अब नहीं पड़े रहना चाहिये, जिसने अपने मनको वशमें कर लिया है तथा कोई खास काम करने पर कमर कस ली है और वैसा करनेको जिसमें बल है; जो देशकालको समझता है, जो ईश्वरको हाजिर नाजिर जानते हुए अपना स्वार्थ त्याग कर शुभ इच्छासे परमार्थका काम करना चाहता है और जिसकी आत्माको उड़नेके मजबूत पंख मिल गये हैं वह आदमी लोकलाजके बनावटी बन्धनोंमें नहीं पड़ा रह सकता। वह आदमी तो एक फूंकमें ऐसे बन्धनोंको उड़ा देता है। वह कमहौसलेवाले गंवार स्वार्थी लोगोंके आचार विचारोंका जाल तोड़ कर एकदम आगे निकल जाता है और पहलेके बड़े बड़े पण्डितों तथा भक्तोंके कदम ब कदम चलता है। जैसे—श्रीकृष्ण भगवानने लोकाचारकी तनिक परवा न की थी। पाण्डव अगर लोकलाजकी परवा करते तो क्या पांचों भाई मिलकर एक द्रौपदीसे ब्याह कर सकते? नरसिंह मेहताने अगर लोकलाज की परवा की होती तो क्या वह महानभक्त हो सकते? मीराबाईने लोकलाजकी परवा की होती तो क्या आज उनका यश गाया जाता? अगर जगन्नाथ पण्डितने लोकलाजकी परवा की होती तो क्या वह मुसलमान बादशाहकी लड़कीसे ब्याह कर सकते? अगर जयदेवने लोकलाजकी परवा की होती तो क्या वह स्त्रीके साथ जल मरनेको तैयार होते? अगर तुकारामने लोकलाजकी परवा की होती तो क्या वह प्रभुके इतने प्यारे हो सकते? अगर शिवाजीने लोकलाजकी परवा की होती और वह प्रचलित आचार विचारोंमें पड़े रहते तो क्या महाराष्ट्र राज्यकी स्थापना कर सकते? अगर जापानियोंने चंदलू रिवाजोंकी

परवा की होती और उन्हींमें पड़े रहते तो क्या वे रूसियोंको परास्त कर सकते ? अगर युरोपके लोग अपने पुराने रिवाजोंमें लिपटे रहते और झूठी लोकलाजके बन्धनोंमें पड़े रहते तो क्या वे जगतमें उथल पुथल मचा देनेवाले बड़े बड़े आविष्कार कर सकते ? याद रहे कि हम जिनको बड़े आदमी मानते हैं, जिन आदमियोंने अपना तथा जगतका भला किया है और जो आदमी नमूने बन गये हैं तथा ऐसे जो आदमी इस समय मौजूद हैं और जिनके जीवनचरित्र हम बड़े प्रेमसे पढ़ते हैं उन सब आदमियोंको लोकलाज तथा लोकाचारके विरुद्ध चलना पड़ा है। भविष्यमें भी जो आदमी ऐसे प्रसिद्ध तथा अद्भुत शक्तिवाले निकलेंगे उन्हें लोकाचारका सामना करना पड़ेगा। ये भेड़िया धसानमें कब तक पड़े रह सकते हैं ? ऐसे विमानमें उड़ने वालोंसे ऐसा नहीं हो सकता। इसलिये याद रखना कि गंवार लोगोंके जो प्रचलित बन्धन हैं वे उन्हींके जैसे आदमियोंके लिये हैं और उनके लिये लोकाचार तथा लोकलाज जरूरी है। इससे संकुचित वृत्तिके मनुष्योंको बहुत फायदा होता है। इससे अज्ञानी लोग अंकुशमें रहते हैं और उनके व्यवहारमें सरलता होती है। इसलिये उनको ऐसे बन्धनकी जरूरत है। परन्तु जिसका जीव जाग उठा है, जिसका मन मजबूत है, जिसकी बुद्धि विशाल है, जिसमें भविष्यकी घटनाएं तथा परिणाम जाननेकी शक्ति है और जो व्यवहारी लोगोंसे सैकड़ों दर्जे आगे बढ़ सकता है तथा इस प्रकार फुर्तीसे बढ़नेके लिये जिसकी आत्मा भीतरसे उछल कूद रही है और ज़ोर मार रही है तथा तड़प रही है वह विरल मनुष्य गंवार लोगोंके आचार विचारोंमें नहीं पड़ा रह सकता। उन लोगोंकी नन्हीसी लोकलाजके बन्धनमें उसकी फुदकती हुई आत्मा नहीं बंधती और ऐसी छोटी नजरके

स्वार्थी लोगोंके वाड़ेमें यह बन्द नहीं रह सकती। इसलिये उसे तो लोकलाज तथा पुराने आचार विचार तोड़ने ही पड़ेंगे। क्योंकि ऐसे आचार विचारोंको तथा ऐसी लोकलाजको तोड़नेसे ही उसका कल्याण होता है। इससे यह आदमी ऐसी बातोंकी बहुत परवा नहीं रखता। यह खूब समझता है कि लोगोंके जो जो रिवाज हैं और आचार विचार हैं वे कुछ ईश्वरके घरके नहीं हैं, वे कुछ महात्माओंके घरके नहीं हैं और न ऐसे हैं कि बदले न जा सकें। वे ऐसे हैं कि ज्यों ज्यों समय बदलता जाय तथा मनुष्योंके ज्ञानमें फेरफार होता जाय त्यों त्यों उनमें भी फेरबदल होना चाहिये। अगर हम पहलेसे चेतकर उनमें फेरबदल न करें तो खुद कुदरत कुछ जबरदस्त संयोग खड़ा करके उनमें फेरबदल करा देती है। इसलिये खूब अच्छी तरह समझ लीजिये कि हमारे जो आचार विचार हैं तथा हम जिसको लोकलाज कहते हैं वे सब वस्तुएं कुछ सदाके लिये नहीं हैं, वे वस्तुएं कुछ बढ़ियासे बढ़िया नहीं हैं, वे सब वस्तुएं कुछ सब आदमियोंके सब तरह पूरी पूरी पालने योग्य नहीं हैं और वे सब वस्तुएं कुछ आत्माको आगे बढ़ाने वाली नहीं हैं; बल्कि वे सब वस्तुएं साधारण लोगोंके कामकी है। इसलिये अब हमें यह जान लेना चाहिये कि इस जगतमें दो तरहके मनुष्य हैं। उनमें पहली श्रेणीके आदमी ऐसे हैं जिन्हें कम शक्ति होती है, कम शऊर होता है, कम साधन होते हैं, कम बल होता है; जो बाहरी धर्मवाले हैं और जो रिवाजों तथा आचार विचारोंको ही मुख्य करके मानते हैं परन्तु अन्तः-करणकी आवाजको नहीं समझते। उनके लिये लोकाचारके रिवाजोंकी तथा लोकलाजकी खास जरूरत है। और सैकड़े निन्नानवे आदमी बहुत करके इस श्रेणीके होते हैं। इसलिये

उनको लोकलाज तथा लोकाचारका बन्धन बहुत उपयोगी होता है। परन्तु जो दूसरी श्रेणीके मनुष्य हैं और जो सौमें या हजारमें सिर्फ एक होते हैं उनकी बुद्धि विशाल होती है, उनके हौसलेमें बाढ़ आयी होती है, उनकी इच्छाएं अन्तरात्माके भीतरसे निकली हुई होती हैं, वे अपने स्वार्थ पर धूल डाल कर परमार्थके दुःख सहनेको तय्यार होते हैं और ऐसा करनेके लिये आत्मा अन्दरसे उन्हें धक्के देती है। वे भीतरकी ईश्वरी आवाजको अर्थात् कुदरती प्रेरणाको पहचानते हैं। वे जैसे वर्तमान दशाको देख सकते हैं वैसे ही भविष्यको भी देख सकते हैं और उसकी कुछ गणना भी कर सकते हैं। वे दूसरोंको चला सकते हैं। उन्हें अपने हृदयसे कुछ प्रकाश मिलता है और दूसरे व्यवहारी लोगोंमें जो बल होता है उससे सैकड़ों गुना बल उनके हृदयमें होता है। इसके सिवाय वे भावनाके प्रदेशमें रमनेवाले होते हैं और ज्ञानके समुद्रमें गोता लगानेवाले होते हैं। इससे वे व्यवहारी गंवार लोगोंके साथ नहीं रह सकते। और ऐसा होना कुछ आश्चर्य नहीं है, क्योंकि उनकी स्थिति दूसरोंसे जुदी होती है। इससे वे लोकाचारको लात मार सकते हैं। इसलिये आप अपनी स्थितिका विचार करना, अपने अन्तःकरणको तौलना और फिर जैसा उचित जचे वैसा करना। यही आपको हमारी सलाह है। हम कुछ यह नहीं कहते कि आप अधिकारी न हों तो भी आप लोकलाज त्याग दें और न हम यही कहते हैं कि आपको लोकलाज त्यागनेकी जरूरत हो तो भी उसमें पड़े रहें। हम इतना ही कहते हैं कि कितने ही आदमियोंके लिये लोकाचार तथा लोकलाज छोड़ देना भी अच्छी बात है और बहुतसे आदमियोंके लिये लोकलाज रखना तथा लोकाचारके अनुसार चलना भी अच्छी बात है। इसलिये इन दोनों में जो

बात आपको ठीक जँचे और जैसा आपका अधिकार हो उसके अनुसार चलिये, यही हमारी विनय है।

७२-जिन आदमियोंसे काम पड़ता है उन आदमियों पर जितना प्रेम रखना चाहिये उतना प्रेम हम नहीं रखते। इसके कारण तथा प्रेम बढ़ानेके उपाय।

दुनियाके हर एक शास्त्रका, हर एक धर्मका तथा हर एक महात्माका खास करके और बहुत करके यही उपदेश है कि जैसे बने वैसे हमें मनुष्यजातिपर अपना प्रेम बढ़ाना चाहिये। यद्यपि सच बात तो यह है तथा बहुत ऊंची बात तो यह है कि प्राणिमात्रपर प्रेम बढ़ाना चाहिये; इतना ही नहीं बल्कि यह समझना चाहिये और वैसा अनुभव करना चाहिये कि हर एक जीव मेरी ही आत्मा है। और वह इस हदतक कि जगतके किसी जीवको भी दुःख होता है वह मुझे ही होता है। यह समझकर प्राणियोंके दुःख घटानेकी तजवीज करनी चाहियें और सब जीवोंके कल्याणमें रहना चाहिये। यह परमात्माका हुक्म है। परन्तु यह बहुत ऊंची दशाकी बात है, यह बहुत दूरकी बात है, यह बहुत गहरी बात है और यह बहुत ज्ञानकी बात है। इसलिये इतना अधिक तो महात्माओंसे ही हो सकता है। साधारण व्यवहारी मनुष्योंसे इतनी अधिक आशा नहीं की जा सकती। वे पहले मनुष्य भाइयों पर प्रेम करना सीखें तो इतना भी बहुत है। परन्तु हम देखते हैं कि अभी तक इतना भी हम

लोगोंसे नहीं होता। सम्पूर्ण मनुष्यजातिपर प्रेम रखना तो दूर किनार; जो लोग हमारे धर्मके हैं, जो लोग हमारे आपसके हैं, जो लोग हमारे सम्बन्धी हैं, जो लोग किसी किसी वक्त हमारे मददगार हो जाते हैं, जिन लोगोंके पूर्वजोंके किये हुए शुभ कामोंसे हम लाभ उठाते हैं और जो लोग हमारे हित मित्र हैं उनपर भी हम पूरा पूरा प्रेम नहीं रखते। यह क्या अफसोसकी बात नहीं है? जो लोग हमपर कुछ कुछ उपकार कर चुके हैं, जो लोग मौकेपर हमारी मदद करते हैं और भविष्यमें किसी वक्त मदद कर सकते हैं तथा जो लोग खास खास बातोंमें दुखी हैं, यह हम जानते हैं और उनके दुःख दूर करनेकी हममें शक्ति है तो भी हम उनकी मदद करनेमें-ऐसे उपयोगी विषयोंमें लापरवाही दिखावें और साधन रहते हुए भी एक दूसरेकी पूरी पूरी मदद न कर सकें तो यह क्या हमारी नालायकी नहीं है!

हम लोग ऐसे हैं कि चाहें तो बहुत आदमियोंकी बहुत तरहकी मदद दे सकते हैं। क्योंकि सब आदमी हमारे पाससे सर्वस्व नहीं ले लेना चाहते; बल्कि कोई आदमी कुछ पैसेसे राजी हो जाता है, कोई आदमी अच्छे अच्छे शब्दोंसे राजी हो जाता है, कोई आदमी ढारसके शब्दोंसे खुश हो जाता है, कोई आदमी धन्यवादके शब्दोंसे प्रसन्न हो जाता है, कोई आदमी कपड़े लत्तेके दानसे प्रसन्न हो जाता है, कोई आदमी खाने पीनेकी चीजोंसे प्रसन्न हो जाता है कोई आदमी पुस्तकोंकी मददसे प्रसन्न हो जाता है, कोई आदमी दवाओंकी मददसे प्रसन्न हो जाता है कोई आदमी सलाहकी चिट्ठीसे प्रसन्न हो जाता है, कोई आदमी जरा अधिक देर साथ रहनेसे प्रसन्न हो जाता है, कोई आदमी हमें कुछ देना चाहता है उसको ले लेनेसे वह प्रसन्न हो जाता है कोई आदमी किसी काममें योग्य सलाह पानेसे खुश

हो जाता है, किसी आदमीके सिरपर हाथ फेरनेसे वह खुश हो जाता है, कोई आदमी सिर झुकानेसे खुश हो जाता है, किसी आदमीके उचित विचारोंका अनुमोदन करनेसे वह खुश हो जाता है, कोई आदमी कुछ विद्या सिखानेसे या सद्गुण सिखानेसे खुश होजाता है, किसी आदमीके घर हम चले जायं तो वह इससे प्रसन्न हो जाता है, किसी आदमीको हम जरा मीठे वचन कहकर बुलावें और उसका आदर करें तो वह उससे खुश हो जाता है, किसी आदमीके रोजगार धन्धे या नौकरी चाकरी पानेमें मदद करें तो इससे वह खुश हो जाता है, किसी आदमीके सामने हम हंसते हुए जायं तो इससे वह खुश हो जाता है और बहुतसे आदमी तो जिनसे हमारा काम पड़ता है—ऐसी वैसी बातों और चीजोंसे खुश हो जाते हैं कि यह सब देखकर उनका खयाल आनेसे हमें अचरज हुए बिना नहीं रहता। तिसपर भी अफसोस है कि हमसे इतना भी नहीं बन पड़ता। ऐसी छोटी छोटी भलाई भी हम नहीं कर सकते और तो भी धर्म पालनेकी डींग मारते हैं! तथा मोक्ष पानेकी इच्छा रखते हैं! पर जरा विचार कीजिये कि प्राणीमात्रपर प्रेम रखना और जगतके सब जीवोंको अपने समान समझना तो दूर रहे, हम प्रभुके बालक जो मनुष्य हैं उनपर भी कुछ प्रेम न रखें—अजी यह भी जाने दो अपने सगे सम्बन्धियोंपर, अपनी जान पहचान वालोंपर तथा अपने आसरे पड़े हुए कुटुम्बीजनों पर भी हम उचित प्रेम न रख सकें और तिसपर भी तर जानेकी आशा रखें तो यह क्या हो सकता है? क्या मोक्ष ऐसी चीज है कि हम पोल ही पोलमें रहकर भी उसे हासिल कर सकते हैं? कभी नहीं। याद रखना कि मोक्ष ऊंचीसे ऊंची और अन्तिमसे अन्तिम वस्तु है। इसके लिये तो बहुत ही करारी

कसौटीपर चढ़ना पड़ता है, परन्तु अफसोस है कि हम ऐसी छोटी छोटी भलाई भी नहीं करते और तो भी धर्म पालनेकी डींग मारा करते हैं। प्रभु ! प्रभु ! हमारी क्या गति होगी ? हमारा बेड़ा कैसे पार लगेगा ? भाइयो ! ऐसे ढीले आचरण रखकर हम कैसे आगे बढ़ सकेंगे ? और कैसे तर सकेंगे ? यह विचारने योग्य बात है।

अब हमें यह जानना चाहिये कि हम जो अपने स्नेहियोंपर भी बहुत प्रेम नहीं रखते इसका क्या कारण है। हम यह खूब अच्छी तरहसे जानते हैं कि सब सम्बन्धियोंके साथ इस समय हमारा जो बर्ताव है वह ठीक नहीं है बल्कि ढीला सीला है। इसके सिवा हम यह भी समझते हैं कि हम अगर चाहें तो अभी बहुत आदमियोंपर बहुत अधिक स्नेह रख सकते हैं, तो भी हमसे अधिक स्नेह रखते नहीं बनता और अधिक स्नेह न रखनेसे हम अधिक भलाई भी नहीं कर सकते। क्योंकि स्नेह जितना ही अधिक होगा भलाई उतनी ही अधिक होगी और स्नेह जितना कम होगा भलाई उतनी ही कम होगी। भलाईका मूल प्रेम है, भलाईकी नींव प्रेम है और भलाईकी उत्पत्ति प्रेमसे है। इसलिये प्रेम जितना ही अधिक होता है भलाई उतनी ही अधिक होती है। सो सबकी भलाई करनेके लिये पहले हमको सबके साथ प्रेम बढ़ाना चाहिये। और यह प्रेम क्यों नहीं बढ़ता ? इसका कारण जानना चाहिये। इसके लिये अनहदनाद समझनेवाले पण्डित कहते हैं कि—

हम जो मनुष्योंपर प्रेम नहीं रखते इसके दो मुख्य कारण हैं—

(१) पहला कारण यह है कि हमने अपने मनको ज्ञानके बलसे तथा धर्ममयके हथौड़ेसे मजबूत नहीं बनाया, जिससे

मारा मन अभी बहुत कमज़ोर है। इससे बात बातमें हमारे मनको धक्का लग जाता है और जिस बातको जितनी बुरी न मानना चाहिये उसको हम उतनी बुरी मान लेते हैं तथा जिस बातको जितनी अच्छी न समझना चाहिये उसको उतनी अच्छी समझ लेते हैं, इससे उसका जितना चाहिये उससे अधिक ख़याल हमारे मनमें बैठ जाता है।

(२) जिस किस्मका डर न रखना चाहिये उस किस्मका डर हमारे मनमें घुस गया है जिस किस्मकी टेव न रखनी चाहिये वैसी हमारी टेव पड़ गयी है, जैसा स्वभाव न रखना चाहिये वैसा स्वभाव रखनेके संस्कार हममें पड़ गये हैं, ऊंचे दरजेका बर्ताव कैसा होता है और मजबूत मनके आदमी कैसे होते हैं इसके नमूने हमने नहीं देखे बल्कि उलटे कमजोर मनवाले आदमियोंकी सोहबतमें ही हमें विशेष कर रहना पड़ता है। जनस्वभावकी खूबियोंकी हम नहीं समझते, मनुष्योंकी रुचिका बल हम नहीं जानते, मनुष्योंकी अवस्थाका बल हम नहीं जानते, मनुष्यकी दशा तथा संयोगका बल हम नहीं जानते और वंश परम्पराके संस्कारोंका तथा जाति बिरादरीके रिवाजोंका बल हम नहीं जानते; इससे बहुत आदमियोंमें बहुत तरहके दोष हमें दिखाई देते हैं और उनको देखकर हमारा मन अधिक अधिक सकीर्ण होता है। ऐसे कारणोंसे हमारा मन छोटा हो जाता है। इसके सिवा और बड़ा अवगुण हममें यह घुस बैठा है कि छोटी चीज़ोंको हम बड़ी माना करते हैं, जो चीज बहुत कामकी न हो भी हम बहुत अधिक मोह रखते हैं और जिस ज़रा भी ध्यान न देना चाहिये उसको भी इससे धीरे धीरे हमारा मन सकीर्ण

आसानीसे अपने दुर्गुणोंको दूर कर सकता है तथा दूसरोंके दुर्गुणोंको दूर करा सकता है। इतना सुभीता और इतने साधनोंके रहते हुए भी हम अपने मनकी कमजोरियोंसे लिपटे रहते हैं और अपनेसे काम पड़नेवाले आदमियोंकी छोटी भूलोंको देखा करते हैं, परन्तु उनमें और जो कितने ही सद्गुण होते हैं उनकी तरफ नहीं देखते। इससे हमें उनके ऊपर प्रेम नहीं होता। ऐसा न होने देनेके लिये अब हमें अपनी दृष्टि सुधारनी चाहिये और अपने मनको गुणग्राही बनानेकी टेव डालनी चाहिये-गुणग्राही बनानेकी कोशिश करनी चाहिये और अपनेसे काम पड़नेवाले किसी आदमीमें हमें कभी कोई अवगुण दिखाई दे तो उसको न देखते रहकर उसमें जो कुछ गुण हो उसकी तरफ देखनेकी चेष्टा करनी चाहिये। जैसे-किसी आदमीमें कंजूसी होती है तो उसको हम देखा करते हैं और उसकी कंजूसी पर हम नाक सिकोड़ते हैं, परन्तु उसमें पैसा सञ्चय करनेका शऊर होता है, कुटुम्ब पर प्रेम होता है उद्योग करनेका दम होता है, खुद मिहनत करनेका बल होता है, किसी खराब रास्ते पैसा न खर्चनेकी उसमें शक्ति होती है, और दूसरे लोग कंजूस कहकर उसका जो अपमान करते हैं उस अपमानको भी सह लेनेकी उसमें शक्ति होती है। इन सब बातोंकी तरफ हम नहीं देखते। इसी तरह कोई आदमी क्रोधी होता है तो उसके क्रोधकी तरफ हम देखा करते हैं, पर उसमें जो सत्यता होती है, उसमें जो भोलापन होता है, उसमें जो एक तरहकी तीव्रता होती है, उसमें जो दूसरोंका सामना करनेका बल होता है, उसमें जो उदारता होती है, उसमें जो एकान्त वास सहनेकी शक्ति होती है और उसके हौसलेमें जो बल होता है उन सबकी ओर हम नहीं देखते। इसी प्रकार हर एक विषयमें अब

हरे उतरकर विचार करें तो खूब अच्छी तरह हमारी समझमें यह बात आ जाय कि मनुष्यमें दुर्गुणोंकी अपेक्षा गुण अधिक होते हैं। इसलिये वे घृणा करने योग्य नहीं हैं बल्कि प्रेम करने योग्य हैं। दूसरे यह भी ध्यान में रखना कि किसी आदमीमें किसी किस्मका अवगुण हो परन्तु हमारे साथ उसका बर्ताव बहुत अच्छा हो तथा उसके अवगुणसे हमें कष्ट न भोगना पड़ता हो तो उसके छोटेसे अवगुणको देखते रहनेकी हमें कोई जरूरत नहीं है। बेशक इतना सच है कि जब मौका मिले तब अपने स्नेहियोंको या अपने समागममें आनेवाले लोगोंको उनके अवगुणके लिये प्रसङ्गवश चेता देना हमारा फर्ज है और उनकी भूल सुधारनेके लिये उचित उपाय आजमाना भी हमारा फर्ज है परन्तु छोटी छोटी भूलोंके लिये उनके ऊपरसे प्रेम घटाना उचित नहीं है। यह कुछ लायकीकी बात नहीं है और न प्रभुके पसन्द लायक बात है। इसलिये हमें अपने भाइयोंका गुण देखना सीखना चाहिये और उनके दोषकी तरफ उदार दृष्टि रखनेकी मेहरबानी करनी चाहिये तथा प्रभु हमारी चूक क्षमा करे इसके लिये हमें अपने भाइयोंकी चूक क्षमा करना सीखना चाहिये और उनपर स्नेह बढ़ाना चाहिये। इसीमें हमारा कल्याण है और इसीसे प्रभु भी प्रसन्न होता है। इसलिये ऐसा कीजिये कि मनुष्योंपर तथा सब जीवोंपर प्रेम बढ़े। ऐसा कीजिये कि प्रेम बढ़े।

७६–संसार पाप धोनेका तीर्थ है, इसलिये इसमें पाप धोनेकी कोशिश करना और इस बातकी खबरदारी रखना कि नया पाप न हो।

चतुर मनुष्योंने इस दुनियाका नाम संसार रखा है। क्योंकि यह ऐसा है कि अगर सार लेना आवे तो इसमेंसे बहुत कुछ सार लिया जा सकता है। इतना ही नहीं बल्कि इसमें अच्छेसे अच्छा सार भरा हुआ है। इसीलिये यह संसार कहलाता है। संसारमें क्या सार है यह आप जानते हैं? महात्मा लोग कहते हैं कि संसार बड़ेसे बड़ा तीर्थ है। और तीर्थका काम क्या है? तीर्थका उद्देश्य क्या है? तीर्थ किसे कहते हैं? और तीर्थसे क्या क्या लाभ होते हैं? यह सब जानना चाहिये। इसके लिये ज्ञानी कहते हैं कि जिस जगह शान्ति मिले उसका नाम तीर्थ है, जिस जगह नये नये अनुभव मिलें उसका नाम तीर्थ है जिस जगह हृदयका संशय मिटे उसका नाम तीर्थ है, जिस जगह अपना दुःख भूल जाय और घटाया जा सके वह तीर्थ है जिस जगहसे पवित्रता मिले उसका नाम तीर्थ है जिस जगह अपनी त्रुटि समझमें आवे और उस त्रुटिको दूर करनेका उपाय मिले वह तीर्थ है, जिस जगह जानेसे अपने स्वार्थका त्याग करना सीखा जाय वह तीर्थ है, जिस जगह बाहर तथा भीतर कुदरती अद्भुत सौन्दर्य हो वह तीर्थ है, जिस जगह आत्मिक बल मिले वह तीर्थ है, जिस जगह दृष्टि खुल जाय और उत्तमता देखनेका बल आ जाय वह तीर्थ है, जिस जगह ईश्वरकी महिमा समझमें आवे वह तीर्थ है, जिस जगह जगतकी वस्तुओंकी हालसे कहीं अधिक कीमत समझमें आवे और उसके

अनुसार कर दिखाना आवे वह तीर्थ है और जिस जगह हमारा तथा दूसरोंका पाप कटे वह तीर्थ है। यह सब और इससे भी कहीं बढ़कर संसारमें हो सकता है; इसलिये संसार सबसे बड़ा तीर्थ है। और हमारे धर्मका तथा दुनियाके और सब धर्मोंका यह मुख्य सिद्धान्त है कि दूसरी जगह जो पाप किया हो वह पाप तीर्थमें जानेसे छूट जाता है, परन्तु तीर्थमें जो पाप होता है वह पाप तो वज्रके जैसा कठोर बनकर अडिग्ग हो जाता है। उस पापका निवारण आसानीसे नहीं हो सकता। इस कारण दूसरी जगह जो पाप हुआ हो उसकी माफी मिल सकती है; परन्तु तीर्थमें जो पाप होता है उसकी माफी नहीं मिल सकती। इसलिये तीर्थमें कभी किसी कारणसे पाप न करना चाहिये।

अब विचार कीजिये कि जब छोटे छोटे तीर्थोंमें भी पाप नहीं करना चाहिये और कभी पाप हो जाय तो वह वज्रलेप सा हो जाता है तब जो सबसे बड़ा तीर्थ है और जिसके अन्दर जगतके सब तीर्थ आ जाते हैं उस महान तीर्थमें पाप करनेसे वह पाप कितना भयंकर हो सकता है? इसलिये इस बातकी खबरदारी रखना कि संसार रूपी तीर्थमें किसी किस्मका पाप न हो।

•

हमको अपनी आत्माका कल्याण करनेका मौका मिले इसके लिये परम कृपालु परमात्माने इस संसार रूपी तीर्थमें हमें भेजा है। क्योंकि शास्त्रमें यह कहा है कि संसार कर्मभूमि है अर्थात् अच्छे अच्छे काम कर लेनेकी यह जगह है। संसार और देहको छोड़ कर जो स्थिति है उसमें जब जीव रहता है तब वह कुछ नहीं कर सकता। परन्तु जीवको जब देहकी मदद मिलती है तथा संसारसमुद्र रूपी महान् तीर्थ मिलता है तब वह अपना कर्तव्य ठीक ठीक पूरा कर सकता है और तभी वह प्रभुके कदम,

एकदम चल कर मोक्ष पा सकता है। इसलिये याद रखना कि देह तथा संसार कुछ निकम्मी चीजें नहीं हैं ये कुछ दुःख देनेवाली चीजें नहीं हैं, ये कुछ मनुष्योंको पीछे ढकेलनेके साधन नहीं हैं, ये कुछ जीवको बन्धनमें रख देनेके साधन नहीं हैं और ये जीमें आया वैसे उड़ा देनेके विषय नहीं हैं। परन्तु संसार समुद्र ऐसा है कि इसके अन्दर सब तीर्थ हैं और इस समुद्रमें तरनेके लिये देह रूपी जहाज मिला है। इसलिये उनका दुरुपयोग मत होने देना बल्कि जैसे बने, उनका सदुपयोग करना। और ऐसा करना कि जिससे इस महान संसार तीर्थमें पाप धुल जाय और पवित्रता आ जाय। क्योंकि ऐसा करनेमें ही जिन्दगी की सार्थकता है और इसीके लिये परम कृपालु परमात्माने हमें यह संसाररूपी तीर्थ दिया है। इसलिये, जैसा कि बहुतेरे अज्ञानी कहते हैं उस तरह संसारको अज्ञानताका ही फलस्वरूप मत समझना और देहको पापका फल मत समझना, बल्कि खूब अच्छी तरह यह समझ लेना कि मनुष्यजन्म बड़े पुण्यका फल है और मोक्ष पानेका अनमोल अवसर देनेके लिये ही संसार रूपी तीर्थ हमें मिला है। इस महान तीर्थमें जैसे बने वैसे खूब दान पुण्य करना चाहिये, इस महान तीर्थमें जैसे बने वैसे खूब जप, तप ध्यान, व्रत, सेवा आदि करना चाहिये, इस महान तीर्थमें जैसे बने वैसे खूब पवित्र रहना चाहिये, इस महान तीर्थमें जैसे बने वैसे नये नये अनुभव हासिल करना चाहिये और इस महान तीर्थमें ऐसा करना चाहिये कि जिससे आत्माको शान्ति मिल सके। ऐसा करना हमारा कर्तव्य है। इसके लिये जैसे बने वैसे संसार रूपी तीर्थमें खूब अच्छा बर्ताव करना और इससे खूब लाभ उठाना। यही हमारी प्रार्थना है।

३७-अगर बन्दूकमें गोली न हो तो बन्दूकके धड़ाकेसे लगाया हुआ निशाना नहीं मारा जा सकता। वैसे ही जिस भक्तके हृदयमें प्रभुप्रेम न हो उसके वचनोंमें कोई बड़ा काम नहीं हो सकता। क्योंकि प्रभुप्रेम गोली है। यह जिसमें हो वह अपनी वाणीके बलसे फतेह कर सकता है।

कितने ही उपदेशक, कितने ही धर्मगुरु, कितने ही कथा बांचनेवाले तथा कितने ही वक्ता ऐसा असर करनेवाले होते हैं कि वे बहुत आसानीसे लोगोंका मन फेर सकते हैं और कितने ही ऐसे होते हैं जो हर रोज सिर खपाया करते हैं तो भी कुछ असर नहीं कर सकते। इसका कारण क्या है यह जाननेकी बहुत आदमियोंको इच्छा होती है। यह स्वाभाविक है। इस लिये इसका खुलासा जान लेना चाहिये। इसके लिये विद्वान कहते हैं—

जिसका हृदय तर हो उसकी वाणी लोगों पर असर कर सकती है; जो आत्माका हुक्म समझता हो और उसे शब्दोंमें कहना आता हो उसकी वाणी लोगों पर असर कर सकती है, जिसके हृदयमें ईश्वरकी प्रेरणाएं होती हों और जो उनके अनुसार बातें करता हो उसकी वाणी असर कर सकती है जो आप पवित्र हो गया हो उसकी वाणी असर कर सकती है, जिसके हृदयसे स्नेहका झरना बहता हो उसकी वाणी असर कर सकती है, सबका कल्याण चाहनेकी भावनाओंको जिसने मजबूत बनाया हो उसकी वाणी असर कर सकती है;

जिसने महात्माओंके चरणोंकी सेवा की हो उसकी वाणी असर कर सकती है; जिसकी बुद्धिमें कुछ खास अलौकिक चमत्कार हो उसकी वाणी असर कर सकती है; जिसने कुदरतके छिपे भेदोंको समझनेका खूब प्रयत्न किया हो और उनमेंसे कुछ नये नियम ढूंढ निकाले हों उसकी वाणी असर कर सकती है; साधारण लोग जितना देख सकते हैं उससे कहीं अधिक आगे या पीछेको देखनेकी शक्ति जिसमें हो और इस शक्तिको जिसने अच्छी तरह चमकाया हो उसकी वाणी असर कर सकती है, लोग जितना जानते हैं उसके सिवा एक नयी सीढ़ी जो दिखावे उसकी वाणी असर कर सकती है; जिसने जनस्वभावका अध्ययन किया हो और इस अध्ययनके बलसे लोगोंकी दशा, रीति तथा रहन सहन ठीक तौरसे जो जानता हो और उसको योग्य शब्दोंमें और सरल भाषामें कह दिखाना जिसको आता हो उसकी वाणी लोगोंपर असर कर सकती है, जिसने अपने अनुभवसे तथा दूसरोंके अनुभवसे ऊंचे तत्त्वोंका खींच लिया हो और जो दूसरोंको यह समझा सकता हो उसकी वाणी असर कर सकती है, जिसको अपने अन्तःकरणमें गहरे उतरना आता हो उसकी वाणी असर कर सकती है, जिसने शब्दोंके बलका अध्ययन किया हो और जिसको मौका देखकर शब्दरूपी बाण फेंकना आता हो उसकी वाणी असर कर सकती है, जिसने अपनी इन्द्रियोंको काबूमें रखा हो तथा अपने मनको वशमें किया हो उसकी वाणी असर कर सकती है; जिसने सत्यधर्ममें अपनी जिन्दगी बितायी हो और धर्मका तत्त्व जिसकी समझमें आ गया हो उसकी वाणी असर कर सकती है; जो वक्तकी कीमत समझता हो और जो भगीरथप्रयत्न करता हो उसकी वाणी असर कर सकती है,

धनका बल, हुकूमतका बल और शरीरका बल तथा बुद्धिका बल या ऐसा ही कोई दूसरा महान बल जिसमें हो और इस प्रकार जिसमें दूसरोंसे ईश्वरका ऐश्वर्य अधिक हो उसकी वाणी असर कर सकती है ; जो बेडर हो कर असली सत्यको साफ साफ कह सकता हो उसकी वाणी असर कर सकती है और प्रभुमें जो तल्लीन हुआ हो, जिसने अपना जीवन प्रभुको अर्पण कर दिया हो और जो प्रभुकी महिमा समझ कर उसके साथ एकताका अनुभव करता हो उस महात्माकी वाणी लोगोंपर असर कर सकती है । क्योंकि ये सब सज्जन जो कुछ करते हैं उसका अधिक भाग लोगोंके पसन्द लायक होता है ; उसमें बहुत सी नयी नयी सीखने समझनेकी बातें होती हैं, उसमें बहुत सी उपयोगी तरकीबें होती हैं और वे उनके हृदयके भीतरसे तथा जोरसे निकली हुई होती हैं। इनकी वाणीमें उनकी कार्यसाधकताका कुछ बल भी मौजूद होता है । इससे ऐसे आदमी बहुत आसानीसे लोगोंपर असर डाल देते हैं । उनकी वाणी रूपी बन्दूकमें इस किस्मकी गोलियां भरी होती हैं । इससे वे लगाया हुआ निशाना बेध सकते हैं अर्थात् अपनी वाणीके बलसे अपनी इच्छानुसार लोगोंपर असर कर सकते हैं और उनको जिधर फेरना हो उधर फेर सकते हैं ।

अब जिनकी वाणी दूसरे लोगोंपर असर नहीं कर सकती वे कैसे होते हैं यह भी सुन लीजिये । बिना गोलीकी बन्दूक जैसे इन आदमियोंकी वाणी कैसी होती है यह भी जरा जान लीजिये । इससे आपको अपनी बन्दूकमें गोली भरना आवेगा तथा आप यह समझ सकेंगे कि बिना गोलीके धड़ाका करनेवाली बन्दूकें कैसी हैं और गोलीवाली बन्दूकें कैसी हैं । इसलिये अब दूसरा पटल् भी देखनेका कष्ट उठानेकी कृपा कीजिये ।

जिसकी निजकी जिन्दगीमें किसी किस्मका नया रंग न आया हो—कुछ खास मिठास न आयी हो उसकी वाणी असर नहीं कर सकती. जिसकी बुद्धिका विकास न हुआ हो उसकी वाणी असर नहीं कर सकती; जो भीड़ियाधसानमें पड़ा हुआ हो उसकी वाणी असर नहीं कर सकती: जो बापके कुएँ डूब मरनेवाला हो उसकी वाणी असर नहीं कर सकती, जो दूसरोंका गाया गा सुनाता हो और दूसरोंका किया कह सुनाता हो परन्तु जिसमें खास अपना कुछ भी न हो उसकी वाणी असर नहीं कर सकती, जो व्यवहारकी उपाधिमें पड़ा हुआ हो और उसीमें सर्वस्व मानता हो उसकी वाणी असर नहीं कर सकती; जिसने संसारके अच्छे बुरे बहुतसे अनुभव न किये हों और जो सिर्फ पोथियां पढ़कर ही बातें बनाता हो उसकी वाणी असर नहीं कर सकती; जिसके हृदयमें बल न हो, श्रद्धा न हो, प्रेम न हो और गहराई न हो उसकी वाणी असर नहीं कर सकती; जिसमें बहुत ज्यादा स्वार्थ हो और जो स्वार्थके लिये ही सब काम करता हो उसकी वाणी असर नहीं कर सकती, जो हाय हाय करता हो और सबकी खुशामदमें रहता हो उसकी वाणी असर नहीं कर सकती; जिसने अपने जीवनमें कोई गूढ़ तत्व न ढूंढा हो उसकी वाणी असर नहीं कर सकती, जो आप अपने कहनेके अनुसार न करता हो उसकी वाणी असर नहीं कर सकती, जो पढ़ाये हुए तोतेके जैसा हो या फोनोग्राफकी नलियों सा हो उसकी वाणी असर नहीं कर सकती; जो बिना समझे तथा देशकाल बिना देखे पुराने दस्तूरके मुआफिक बातें करता हो उसकी वाणी असर नहीं कर सकती; जिसमें धर्मका बल न हो, जिसके आचरणमें पवित्रता न हो, जिसके उद्देश्योंमें उच्चता न हो और लोगोंको उसे प्रिय

कर देनेकी जिसमें शक्ति न हो उस आदमीकी वाणी लोगोंपर असर नहीं कर सकती और जिसमें प्रभु प्रेम न हो, जिसका प्रभु उसके अन्तःकरणमें न हो बल्कि विष्णुलोकमें, गोलोकमें, ब्रह्मलोकमें, अक्षयधाममें या सातवें आसमान पर बैठा हो उसकी वाणी असर नहीं कर सकती। थोड़ेमें यह कि जो लोग ऊपरी बातोंमें रह गये हों और पोलम्पोलमें पड़े हुए हों उनकी वाणी असर नहीं कर सकती; उनका धड़ाका बिना गोलीकी बन्दूकका सा होता है। इसलिये इस बातका खयाल रखना कि ऐसे न रह जाओ और ऐसे शक्तिमान होनेकी कोशिश करना कि वाणीके बलसे सोचा हुआ काम पूरा हो सके। अगर इसके लिये लगे रहोगे तो सर्व शक्तिमान महान् परमात्मा तुम्हारा मददगार होगा और तब उसकी मददसे तुम बहुत कुछ पा सकोगे। इसलिये ऐसा करो कि उसकी मदद मिले और वाणीका बल बढ़े, वाणीकी शक्ति बढ़े और वाणीके बलसे लोगों पर चमत्कारिक प्रभाव पड़े।

७८--गुरुकी मदद बिना आगे नहीं बढ़ सकते; इसलिये गुरु तो चाहिये ही; तब यह देखना रहा कि कैसे गुरुको पसन्द करें। इसका खुलासा।

बन्धुओ! आगे बढ़नेके लिये हमें ऐसे सद्गुरुकी जरूरत है जो अपने सद्गुणका लाभ दे। क्योंकि गुरु शब्दका अर्थ श्रेष्ठ होता है, गुरु शब्दका अर्थ अंधेरेसे निकालनेवाला होता है और गुरु किसी अजीब खजानेका चाबी सौंप देनेवालेको लोग समझते हैं। इसमें कुछ गलती भी नहीं है। जो सच्चे गुरु हैं वे ऐसे ही होते हैं। ऐसे गुरुकी मदद लेनेसे बड़ी तेजीसे आगे बढ़ा जा सकता है, इसमें कुछ सन्देह नहीं है। क्योंकि वे

जिस विषयके गुरु होते हैं उस विषयमें वे बहुत प्रवीण होते हैं और हमसे उस विषयमें बहुत आगे बढ़े हुए होते हैं। इसलिये उनकी सलाह हमारे लिये बड़े कामकी होती है और उनके अनुभवका लाभ हमें मिल जाता है जिससे हम बहुत सहजमें आगे बढ़ सकते हैं। इसवास्ते गुरुकी जरूरत है। जगतमें तरह तरहके व्यवहारी काम सीखनेके लिये भी उस विषयके अनुभवी उस्तादकी जरूरत पड़ती है। जैसे चित्रकारी सीखनेके लिये किसी अच्छे चितेरेके पास रहना पड़ता है कारीगरी सीखनेके लिये किसी होशियार मिस्त्रीके पास रहना पड़ता है, मकान बनानेकी विद्या सीखनेके लिये अच्छे इञ्जीनियरके नीचे काम करना पड़ता है, दरजीका काम सीखनेके लिये किसी होशियार दरजीकी मदद लेनी पड़ती है, बूट काटनेका काम सीखनेके लिये यह काम जाननेवालेकी मदद लेनी पड़ती है और व्यापार सीखनेके लिये किसी चतुर व्यापारीके नीचे रहकर उसके अनुभवसे लाभ उठाना होता है। इस प्रकार व्यवहारकी मोटी मोटी बातोंमें भी जब अनुभवी आदमियोंकी मददकी जरूरत पड़ती है तब ईश्वरके ज्ञानके लिये महान गुरुकी मददकी जरूरत पड़े तो इसमें आश्चर्य ही क्या है?

इन सब बातोंसे हमें यह मालूम देता है कि अगर धर्मके रास्तेमें आगे बढ़ना है और प्रभुके कदम बकदम चलना है तो सद्‌गुरुकी मदद चाहिये। इसलिये अब यह जानना चाहिये कि सद्‌गुरु कैसे होते हैं। क्योंकि गुरुआईमें बड़ा तमाशा है। जो लोग गुरु बन बैठे हैं उनको आदर मिलता है, धन मिलता है, वैभव भोगनेको मिलता है, उनकी पूजा होती है और उन्हें अनेक प्रकारके सुख भोगनेका मौका और सुबीता होता है। इससे बहुत आदमियोंको अपनेमें योग्यता न रहने पर भी गुरु

न जानेकी चाह होती है । इतना ही नहीं बल्कि इस जगतके सब धर्मोंमें ऐसे हजारों आदमी गुरु बन भी बैठे हैं । जिनको कुछ भी ज्ञान नहीं है, जिनके हृदयमें प्रभुप्रेम नहीं है, जिनके मनका समाधान नहीं हुआ है, जिनकी इन्द्रियां वशमें नहीं हैं, जिनके विकार काबूमें नहीं आये हैं, जिन्हें दूसरोंको उपदेश देना नहीं आता, जो आप अपना कुछ भी कल्याण नहीं कर सके हैं और उल्टे जो साधारण लोगोंसे भी अधिक खराब दशामें हैं वे भी गुरु बन बैठे हैं और उनको भी लोग गुरु मानते हैं ! भाइयो ! ऐसे गुरु किसी खास पंथ या खास धर्ममें ही नहीं होते, बल्कि दुनियाके हर एक देशमें हर समय और हर एक धर्ममें इस तरहके पोलंपोलवाले धर्मगुरु होते हैं । और तिसपर भी भोलेभाले अज्ञानी लोग तथा कुछ समझदार आदमी भी ऐसे लेभग्गुओंको सद्गुरु समझा करते हैं और उनके बाड़ेमें या गढ़ेमें पड़े रहते हैं । इससे वे आगे नहीं बढ़ सकते । उनकी देखादेखी उनके आसपासके दूसरे लोग भी बिगड़ते हैं । ऐसा न होने देनेके लिये और ऐसी पोलमें न पड़े रहनेके लिये हमें सद्गुरुकी पहचान कर लेनी चाहिये, सद्गुरु कैसे होते हैं यह समझ लेना चाहिये और जो सचमुच योग्य हों उन्हींको गुरु करके मानना चाहिये ।

गुरु बहुत हैं और उनमें सच्चे झूठे मिल जुल गये हैं-इस लिये कौन गुरु सच्चे हैं और कौन गुरु नकली हैं इसका खुलासा जान लेना चाहिये । इसके लिये ज्ञानी भक्त कहते हैं कि जो आप तर गया है वह दूसरोंको तार सकता है ; जिसका अपना बंधन छूट गया है वह दूसरोंका बंधन तोड़ सकता है; जो आप जिस चीजको समझ गया है वह दूसरोंको उसे समझा सकता है; जो आप जीत गया है वह दूसरोंको फतेहकी कुंजी दे

सकता है और जो आप बच गया है वह दूसरोंको बचा सकता है। इसके विरुद्ध जो आप गहरे खन्दकमें पड़ा है वह दूसरोंको खन्दकसे कैसे निकाल सकता है? जो आप ही विकारोंका गुलाम है वह दूसरोंके विकार कैसे छुड़ा सकता है? जो आप लोभी दास है और कुछ ढोंग ढकोसला तथा आडम्बर रच कर लोगोंसे पैसे उगाहता है वह दूसरों को त्याग या निर्लोभीपन कैसे सिखा सकता है? जो आप दूसरोंके तरसने योग्य वैभव भोगता है और उस वैभवको बढ़ानेके लिये दौड़ धूप करता है वह दूसरोंको मोह घटानेका उपदेश कैसे दे सकता है? और जो आप धर्मकी कुछ भी खूबी नहीं समझता वह दूसरों को क्या समझा सकता है? नहीं समझा सकता। तिसपर भी आज कलके जमानेमें बहुत करके ऐसे ही आदमी गुरु बन बैठे हैं और उसमें भी हिन्दुस्थानमें तो इस विषयमें बड़ा अंधेर चल रहा है। इसलिये ऐसे अधरमें न पड़े रहकर हमें सद्गुरुकी खोज करनी चाहिये और सद्गुरु कैसे होते हैं यह समझ लेना चाहिये।

सद्गुरु कैसे होते है यह समझानेके लिये एक भक्त महाराज सत्सगमण्डलीमें कहते थे कि जो सद्गुरु है वह बख्तर पहने हुए होता है; इससे उसे किसी तरहके हथियारकी चोट नहीं लगती या न किसी तरहके सुख दुःखका असर उसपर होता। हर समय वह अपनी समता बनाये रखता है, अपना समजस ठीक रखता है और लाभमें या हानिमें, जयमें या पराजयमें हर मौकेपर वह समता रख सकता है। जो ऐसा है वह सद्गुरु होनेके योग्य है। इसके लिये एक दृष्टान्त है कि—

एक राजाके दरबारमें बहुतसे बख्तरवाले अपना अपना बख्तर बेचने आये और हर एक व्यापारी कहने लगा कि मेरा बख्तर औरोंसे बढ़िया है। किसीने कहा कि मेरे बख्तरपर गोली

असर नहीं कर सकती; किसीने कहा कि मेरा बख्तर बहुत बढ़िया फौलादका बना हुआ है; किसीने कहा कि मेरा बख्तर कभी टूटनेका नहीं—इस प्रकार सब अपने अपने बख्तरका बखान करने लगे और मेरा बख्तर लीजिये, मेरा बख्तर लीजिये कहने लगे। राजाने कहा कि जो व्यापारी अपना बख्तर आप पहन कर उसपर मुझे गोली मारने देगा उसीका बख्तर मैं लूंगा। यह सुनकर बहुतसे बख्तरवाले खिसक गये, उनमेंसे किसीने अपने ऊपर गोली नहीं मारने दी। परन्तु एक बख्तर वालेने कहा कि अच्छा सरकार! मैं अपना बख्तर पहन लेता हूं आप मुझपर चाहे जितनी गोलियां छोड़िये। राजाने विश्वास करके उसका बख्तर लिया। इसी तरह जो गुरु अपने आचार बिचारका विश्वास दिला सके, जो गुरु अपने चाल चलनके लिये विश्वास दिला सके, जो गुरु अपनी आत्मिक शान्तिका विश्वास दिला सके, जो गुरु अपनी निस्पृहताका विश्वास दिला सके, जो गुरु अपने प्रभुप्रेमका विश्वास दिला सके, जो गुरु अपने ज्ञानका विश्वास दिला सके, जो गुरु अपने इन्द्रियनिग्रहका विश्वास दिला सके और जो गुरु ईश्वरी रास्तेका, सन्तोषदायक रीतिसे, पता दे सके उसी गुरुको मानना चाहिये। मतलब यह कि जिसने आप ऐसा बख्तर पहन लिया हो कि उस पर किसी प्रकारके हथियारकी चोट न लग सके वैसे ही बख्तरवालेका बख्तर हमें खरीदना चाहिये। और जो सिर्फ मुंहसे कहे कि मेरा बख्तर बहुत बढ़िया है पर जब परीक्षाका वक्त आवे तब परीक्षा न दे सके या विश्वास न दिला सके उसके बख्तरके भरोसे मत रहना। क्योंकि हमारी जिन्दगीमें दैवी और आसुरी सम्पत्तिका युद्ध हमेशा चला करता है। उसमें बचनेके लिये हमें मजबूत बख्तरकी जरूरत है और वह

'बख्तर हमारा गुरु है। इसलिये जो आप अपना बख्तर पहन कर उसपर दूसरोंको हथियार चलाने दे और तो भी उसे चोट न लगे उसीका बख्तर असली कहलायेगा। वैसे ही जिन गुरुओंने ऐसा बख्तर पहन लिया हो कि काम, क्रोध, लोभ मोह, वगैरह दुश्मन वाल बाँका न कर सकें उन गुरुओंका उपदेश कामका है। परन्तु जिन्हें अपना बख्तर काम नहीं देता, जिनको अपने बख्तर पर विश्वास नहीं है और जो अपने बख्तरका विश्वास नहीं दिला सकते उनका बख्तर कौन लेगा! अर्थात् उनका उपदेश कौन सुनेगा? और उनके कहनेके मुताबिक कौन चलेगा? इसलिये सद्गुरुकी परीक्षाकी युक्ति यह है। कि जिसके बख्तर पर गोली न लग सके और जो आप यह बख्तर पहन कर दूसरेको गोली मारने देनेपर तय्यार हो उसके बख्तरको सच्चा समझना और ऐसा करना कि उसका बख्तर अपनेको मिले। ऐसा करना हमारा फर्ज है। इसलिये ऐसे बख्तरवालेको गुरु बनाओ। ऐसे बख्तरवालेको गुरु बनाओ।

७९-देहातका जो किसान बहुत चतुर होता है वह आसपासके बहुतसे गाँवोंका रास्ता जानता है परन्तु वह समुद्रका रास्ता क्या जाने? ऐसे ही जो आदमी व्यवहारचतुर होते हैं वे दुनियाका रास्ता बता सकते हैं परन्तु प्रभुका रास्ता कैसे बता सकते हैं? यह रास्ता तो सन्त ही बता सकते हैं। इसलिये अगर यह रास्ता जानना हो तो सन्तकी शरण लीजिये।
दुनियाके हर एक धर्ममें सन्तका बहुत बखान किया है,

ीमद्भगवद्गीतामें भगवानने भी कहा है कि सब किस्मके क बहुत उदार हैं और मुझे बहुत प्यारे हैं परन्तु उनमें नी तो मेरी आत्मा ही है । इसलिये खूब अच्छी तरह जोर देकर पुन गीतामें फरमाया है कि-" ज्ञान पानेके लिये ज्ञानियोंकी रणमें जाओ और उनकी सेवा करो।" प्रभुका ऐसा हुक्म नेके कारण जो हरिजन हैं वे सब सन्तोंपर प्रेम रखते है और नकी देखादेखी दुनियाके दूसरे व्यवहारी आदमी भी सन्तोंपर म रखते हैं। तो भी कितनी ही बार कितनी ही जगह इस षयमें कुछ भूल होती है। वह यह कि या तो जिन्हें वे सन्त मझते हैं उनके शरीरकी बड़ी खुशामद करते हैं-इतनी कि सकी हद नहीं या ऐसा होता है कि बहुतसे ढोंगी साधुओं, ोगी धर्मगुरुओं और ढोंगी भक्तोंके होनेसे अच्छे अच्छे सन्तोंको ी उसी दरजेमें गिन लेते हैं, इससे मदद करने योग्य और ौर योग्यतावाले प्रभुप्रेमी सन्तोंसे भी लापरवाही दिखाई ाती है । ऐसा न होने पावे इसके लिये हमें यह जानना ाहिये कि सन्त कैसे होते हैं और हमें सन्तोंका आदर कस लिये करना चाहिये तथा उनके साथ कैसा बर्ताव रना चाहिये ।

सन्त कैसे होते हैं, इसके विषयमें शास्त्र कहते है कि जो न्त हैं वे शान्तिवाले होते हैं; जो सन्त हैं उनकी बुद्धि स्थिर ोती है; जो सन्त हैं वे बिना विकारके होते हैं; जो सन्त हैं वे ना भयके होते हैं; जो सन्त हैं वे सब जीवोंका कल्याण चाहने ाले होते हैं; जो सन्त हैं वे समदृष्टि वाले होते है, जो सन्त हैं वे वित्र आचरण वाले होते हैं; जो सन्त हैं वे संशय होते हैं; ो सन्त हैं वे अपने निजके स्वार्थको जला देनेवाले होते हैं; जो सन्त हैं वे सुख दुःखमें एक समान वृत्ति रखते हैं;

जो सन्त हैं वे थोड़ेमें अपना निर्वाह कर लेते हैं जो सन्त हैं वे मिताहारी होते हैं, जो सन्त हैं वे दूसरे सन्तोंकी कीमत समझनेवाले होते हैं, जो सन्त हैं वे अज्ञानी लोगोंपर बहुत ही करुणा रखने वाले होते हैं, जो सन्त हैं वे यह समझे हुए होते हैं कि जगतकी वस्तुएं कदापि कामकी हैं जो सन्त हैं वे प्रभुके नियमपर चलते हैं, जो सन्त हैं उनके हृदयका किवाड़ खुला हुआ होता है, जो सन्त हैं उनका अहंकार मिटा हुआ होता है, जो सन्त हैं उनमें बहुत ही उदारता होती है जो सन्त हैं उनके चेहरे पर एक प्रकारका कुदरती तेज होता है जो सन्त हैं उनकी वाणीमें मिठास होती है तथा प्रभाव होता है, जो सन्त हैं उनकी रहनसहन एक समान होती है जो सन्त हैं उनके विचारों और आचारोंमें एकता होती है; जो सन्त हैं उनमें कई तरहके सद्गुण स्वाभाविक तौरपर ही बहुत खिले हुए होते हैं और जो सन्त हैं वे प्रभुका रास्ता देखे हुए होते हैं तथा उस रास्ते पर चलनेवाले होते हैं, इतना ही नहीं बल्कि जो सच्चे सन्त हैं उनके हृदयमें प्रभु आप विराजमान होता है। और प्रभुके हृदयमें उनका वास होता है। ऐसे आचरण जिनके हों, ऐसी योग्यता जिनमें हो और ऐसे सद्गुण जिनमें हों वे सन्त कहलाते हैं। वे चाहे जिस देशमें हों, चाहे जिस समय हों, चाहे जिस जातिके हों, चाहे जो भाषा बोलते हों और चाहे जो धर्म पालते हों परन्तु जिनमें ये लक्षण हों वे सन्त कहलाते हैं। हम मूड़ मुड़नेवाले, जटा रखनेवाले, भगवा वस्त्र लेपटने वाले, परापरम्पराके धर्मगुरु बने हुए, आपसे आप गुरु बन बैठे हुए और बाहरी आडम्बरवाले सन्तोंकी बात नहीं कहते हैं, बल्कि जो सन्त ऊपर लिखे गुणवाले हैं उनकी बात कहते हैं और उन्हींकी शरण जानेके लिये कहते हैं।

सन्त कैसे होते हैं यह जाननेके बाद हमें यह जानना चाहिये कि हमें क्यों सन्तोंका आदर करना चाहिये या किस लिये उनकी शरणमें जाना चाहिये । इसके जवाबमें आगे बढ़े हुए भक्त तथा शास्त्र कहते हैं कि हमें मोक्ष पानेके लिये जिस मार्गसे जाना है उस मार्गका, अभी हमें, पता नहीं है ; अनन्त कालका सुख भोगनेके लिये हमें जिस रास्तेसे चलना चाहिये उस रास्तेकी, हमें, खबर नहीं है ; धर्मके जिस मार्गपर चलना चाहिये हमें उस मार्गकी खबर नहीं है, नीतिके जिस मार्गपर हमें चलना चाहिये उस मार्गको हम नहीं जानते और अपने अन्तःकरणको जिससे सन्तोष हो वह मार्ग अभी तक हमें नहीं मिला है । परन्तु यह मार्ग सन्तोंको मिल गया है और वे हमें यह मार्ग बतानेको तय्यार हैं इसलिये वे नमन करने योग्य हैं और उनकी शरणमें जाना उचित है । क्योंकि देहातका किसान चाहे जितना चतुर हो परन्तु वह समुद्रका रास्ता नहीं बता सकता यह रास्ता तो समुद्र पार करनेवाले जहाजी लोग ही बता सकते हैं । इसी तरह व्यवहारचतुर मनुष्य हमें संसारके बहुतसे रास्ते बता सकते हैं; जैसे-ठठेरीबाजारकी गली बता सकते हैं, सोने चांदीकी दलाली करना सिखा सकते हैं, रूईका व्यापार करना समझा सकते हैं, अफीमका सट्टा कैसे होता है यह कह सकते हैं, कागजका कारखाना खोलनेसे कितना लाभ होता है यह कह सकते हैं, रबरकी खेतीमें कितना नफा है यह बता सकते हैं, रंगका कारखाना खोलनेमें कितना फायदा है यह बता सकते हैं, किस किस्मका तेजाब बनानेसे शिल्पकलाके काममें कितना फायदा होता है यह समझा सकते हैं, देशी तथा विदेशी दवाएं बनानेके कारखाने खोलनेमें कितना नफा है यह बता सकते हैं, कलवाले खिलौने बनानेमें कितना

नफा हो सकता है यह समझा सकते हैं, कांचका कारखाना खोलनेमें कितना फायदा है यह समझा सकते हैं, सीमेण्टमिट्टी बनानेमें कितना लाभ होता है यह समझा सकते हैं, पानीके झरनोंका उपयोग करके उनसे कितना बल खींचा जा सकता है यह बता सकते हैं, वर्षा कम होने पर पानीकी तंगीसे बचनेके लिये पानी जमा करनेका उपाय बता सकते हैं, लड़के लड़कियोंकी सगाई करनेके समय कौन कन्या अच्छी है या कौन वर अच्छा है इसकी सलाह दे सकते हैं, नौकरी चाकरीकी जरूरत होनेपर कुछ सिफारिश पहुंचा सकते हैं और किसीके साथ मनमुटाव हो गया हो तो बीचमें पड़कर उसका निबटेरा करा सकते हैं। इस प्रकार व्यवहारी आदमी व्यवहारकी कितनी ही बातोंमें काम आ सकते हैं, परन्तु ईश्वरीज्ञान हासिल करनेमें वे कुछ सच्ची मदद नहीं दे सकते। उन्होंने खुद यह रास्ता नहीं देखा है; तब वे हमें कैसे दिखा सकते हैं? इस रास्तेमें तो सिर्फ सन्त ही मदद कर सकते हैं, क्योंकि उनका यह रास्ता बार बारका देखा हुआ होता है और वे उसकी खूबी तथा कठिनाइयोंको समझते हैं, इससे हमें बहुत आसानीसे बता सकते हैं। वे इस रास्तेके पथप्रदर्शक हैं, दूसरोंको रास्ता दिखानेसे उन्हें बहुत आनन्द होता है। इसके सिवा वे दूसरोंको यह रास्ता दिखाते हैं तो इसके लिये प्रभुकी तरफसे भी उन्हें बड़े बड़े इनाम मिलते हैं। इससे, जैसे आगरा वगैरह शहरोंमें ताजमहल, फतेपुर सिकरीके खंडहर, किले आदि दिखानेके लिये पथप्रदर्शक होते हैं और वे जैसे आग्रह करके मुसाफिरोंको वे जगहें दिखाने ले जाते हैं और उनको पुरानी पुरानी बातें भी समझाते हैं वैसे ही, धर्मके रास्तेके तथा प्रभुके रास्तेके प्रदर्शक सन्त भी समझा कर और आग्रहकर

रके व्यवहारी आदमियोंको तथा जिज्ञासुओंको प्रभुके रास्तेमें जाते हैं और उसके गली कूचों तथा छिपे भेदोंका और दर्द दैका हाल समझाते हैं और खूबी यह कि बिना कुछ फीस ये बिलकुल निस्पृहभावसे प्रभुके प्रीत्यर्थ यह सब करते इसीलिये वे सन्त या महात्मा कहलाते हैं।

सन्तोंका आदर किस लिये करना चाहिये यह बात ननेके बाद अब हमें यह जानना चाहिये कि सन्तोंके थ हमें कैसा बर्ताव करना चाहिये और वे कैसे प्रसन्न ये जा सकते हैं। यह बात हमें अच्छी तरह समझ ना चाहिये। क्योंकि हम मोहवादी हैं, इससे हमें भी जड़ता ही रुचती है। इस कारण हम सन्तोंका शरीर खनेमें ही रह जाते हैं और उनके शरीरकी सेवा करनेको सर्वस्व समझा करते हैं। परन्तु सच्चे सन्त तो यही मानते हैं कि यह देह क्षणभंगुर है। अगर इनका बहुत लालन पालन कया जाय तो इसकी इन्द्रियां काबूमें रहनेके बदले उलटे स्त हो जाती हैं जिससे मौका आनेपर खराबी होती है। सलिये देहसे कुछ होने लायक तितिक्षा सहनी चाहिये। सके बदले देहका मोह बढ़ानेवाले काम उन्हें नहीं रुचते। ी भी हम सब अबतक मोहवादी हैं, इससे सन्तोंको भी सा ही समझकर उनके शरीरकी सेवामें ही रह जाते हैं, उनको लमाला पहनाने, अच्छा अच्छा पक्वान्न खिलाने, कीमती कपडे ढ़ करने, उनके पैर दाबने या चरण छूने, बहुत आग्रह रके उनको जिमाने, उनके जाने आनेके लिये अच्छी अच्छी वारीका बन्दोबस्त कर देने और उनके ललाटमें तिलक करके नकी आरती उतारनेमें ही हम खुश हो जाते हैं। और यह मझते हैं कि वे भी प्रसन्न होते हैं। परन्तु ऐसा समझना भूल

है। क्योंकि ऐसी बाहरी चीजोंसे सन्त प्रसन्न नहीं होते। परन्तु जब हम उनके उपदेश अपने दिलमें बिठायें तब वे प्रसन्न होते हैं; उनके उपदेशापर चलें तब वे प्रसन्न होते हैं; उनकी रहन सहनके मुताबिक हम भी अपनी रहन सहन बनावें तब वे प्रसन्न होते हैं; उनमें जैसा भगवानपर प्रेम होता है वैसा प्रेम जब हमारे हृदयमें आवे तब वे प्रसन्न होते हैं; उनके हृदयमें सब जीवोंकी भलाईका जैसा ध्यान रहता है वैसा ध्यान हमारे जीमें आवे तब वे प्रसन्न होते हैं; वे सबके लिये जितना पुरुषार्थ करते हैं उतना पुरुषार्थ करना हमें आवे तब वे प्रसन्न होते हैं; वे धर्मके विषयमें जितने गहरे पहुंचे हुए होते हैं उतने गहरे हम पहुचें तब वे प्रसन्न होते हैं और उनमें जितनी पवित्रता होती है उतनी पवित्रता हममें आवे तब वे प्रसन्न होते हैं। इतना ही नहीं बल्कि उनमें जितनी दया है, क्षमा है, इन्द्रियनिग्रह है, आत्मबल है, अभेदभाव है और सत्य ज्ञान है यह सब जब हममें आवे तब वे प्रसन्न होते हैं। इसके सिवा जब आप प्रभुके महान गुण और ऐश्वर्य हममें आवें तभी वे ठीक ठीक प्रसन्न होते हैं। मतलब यह है कि वे पहले हमें सन्तके रूपमें देखना चाहते हैं और पीछे हमें प्रभुके साथ तन्मय हुआ और भगवद्रूप बना देखना चाहते हैं। वे कुछ यह नहीं चाहते कि हम उनकी देहकी सेवामें ही पड़े रहें। इसलिये समझ लीजिये कि जो सिर्फ शरीरकी सेवासे ही प्रसन्न हो जाते हैं वे सन्त हलके दरजेके हैं और जो भक्त या हरिजन सिर्फ ऐसी सेवामें रह जाते हैं वे भी हलके दरजेके हैं। इसवास्ते इस बातका खयाल रखना कि ऐसे हलके दरजेमें न पड़े रहजाय। इसके बदले सन्तोंकी महिमा समझकर उनकी ऊंची सेवा करना।

८०—लंगड़े आममें भी कभी कभी कीड़े पड़ जाते हैं। तौ भी वह लंगड़ा ही कहलाता है। इसी तरह किसी भक्तमें कभी कोई दुर्गुण हो तो भी वह भक्त ही रहता है।

भक्तोंका लोगोंके जीमें बड़ा आदर रहता है और लोगोंमें भी जो हरिजन होते हैं वे भक्तोंकी बड़ी इज्जत करते हैं और उनकी सेवा चाकरी किया करते हैं। परन्तु भक्तोंके सद्गुणोंके कारण जैसे उनपर प्रेम होता है वैसे ही अगर भक्तोंमें कोई अवगुण दीख पड़े तो उनसे नफरत भी बहुत हो जाती है। क्योंकि हर एक मनुष्यका यह विश्वास होता है कि भक्तोंमें तो सद्गुण ही होना चाहिये और अगर उनमें दुर्गुण हों तो वे भक्त ही नहीं कहे जा सकते। पर ऐसा विश्वास रखना अधूरी समझकी निशानी है। क्योंकि भक्त चाहे जितने अच्छे हों, चाहे जितने गुणवान हों, चाहे जैसे ज्ञानी हों, चाहे जैसे योगी हों, चाहे जैसे प्रभुप्रेमी हों और चाहे जैसे अनुभवी हों परन्तु अन्तको आदमी ही हैं। बिना भूलक तो सिर्फ एक भगवान होता है। मनुष्य मात्र भूलका पात्र है। चाहे किसीमें कम भूल हो चाहे किसीसे अधिक, पर कुछ न कुछ भूल तो हो ही जाती है। किसी भक्तसे कोई भूल न हो तो भी दुनियाके कितने ही आदमियोंको उसकी भूल सूझेगी ही। क्योंकि भक्तोंका ढर्रा और होता है और व्यवहारी लोगोंका ढर्रा और होता है; भक्तोंके उद्देश्य और होते हैं और व्यवहारी आदमियोंके उद्देश्य और होते हैं; भक्तोंकी भावना जुदी होती है और मोहमायी मनुष्योंकी भावना जुदी होती है: भक्तोंकी रीतिभांति जुदी होती है और संसारियोंकी रीतिभांति जुदी होती है;

भक्तोंके आचार विचार एक प्रकारके होते हैं और संसारियोंके आचार विचार जुदे जुदे होते हैं और भक्तोंके हृदयका चक्र और तरहसे फिरता है और संसारी आदमियोंके हृदयका चक्र और तरहसे फिरता है। ऐसा होनेके कारण भक्तोंकी कितनी ही बातें वाजिब होनेपर भी साधारण लोगोंको नहीं रुचतीं। वे भक्तोंकी भूलें निकाला करते हैं। इससे असलमें भक्तोंसे जो भूलें नहीं होतीं वे भूलें भी उनमें मान ली जाती हैं। इसलिये ऐसे झूठे विश्वासमें न फंस जायं इसका खयाल रहे।

भक्तोंसे जिस किस्मकी भूलें नहीं होतीं उस किस्मकी भूलें भी उन पर मढ़ी जाती हैं, यह बात जान लेनेके बाद हमें यह भी जान लेना चाहिये कि अवसर कितने ही भक्तोंसे किसी किसी किस्मकी भूलें भी होती हैं पर उन भूलोंमें भी उनका उद्देश्य अच्छा होता है। कितनी ही बार वे अधिक फायदेके लिये छोटी छोटी भूलें जानबूझ कर करते हैं; कितनी ही बार दूसरोंकी भलाईके लिये वे ऐसा काम करते हैं जो लोगोंको भूल मालूम पड़ती है कितनी ही बार समझके फेरके कारण, परन्तु शुभ उद्देश्यसे उनसे भूलें हो जाती हैं, कितनी ही बार संयोगवश भूलें हो जाती हैं, कितनी ही बार दयालुताके कारण, शान्तिके कारण, उदारताके कारण, तितिक्षाके कारण, निवृत्तिके कारण, नियमोंके कारण, सम्प्रदायके रिवाजोंके कारण और ऐसे ही दूसरे कारणोंसे उनसे छोटी छोटी भूलें हो जाती हैं और ऐसी भूलें हो जानेमें कुछ आश्चर्य भी नहीं है। क्योंकि मनुष्य प्रकृतिमें जो स्वार्थीपन है, जो अधूरापन है, जो मोह है और उसके इर्द गिर्द जो कमजोर संयोग है उसके कारण भूल हो जाना सम्भव है। इसलिये जब भक्तोंमें ऐसी भूल दिखाई दे तब उस पर जरा अधिक विचार करना चाहिये और यह समझना

चाहिये कि उनकी भूलमें भी कुछ शुभ उद्देश्य हो सकता है। इसके सिवा उनकी भूलें साधारण गंवार आदमियोंकी सी नहीं होतीं। भक्तोंमें क्रोध हो तो उनके क्रोधसे भी कुछ फायदा ही होता है। संसारियोंके क्रोधसे जैसा जहरीला वैर उत्पन्न होता है वैसा वैर भक्तोंके क्रोधसे नहीं पैदा होता। संसारी लोग जिस तरह दिलके भीतरसे क्रोध करते हैं उस तरह भीतरसे भक्त क्रोध नहीं करते। संसारी लोग क्रोधकी आगको सुलगाये रखते हैं परन्तु भक्त अपने क्रोधकी आगको सुलगाये नहीं रखते। संसारी लोग जैसे अपने क्रोधसे कितने ही कांटे बोते हैं वैसे भक्त अपने क्रोधसे कांटे नहीं बोते। संसारी लोग जैसे छोटी छोटी बातोंसे भड़क उठते हैं वैसे भक्त छोटी छोटी बातों पर गुस्सा नहीं करते। संसारी जैसे अपने क्रोधसे आप जला करते हैं वैसे भक्त अपने क्रोधसे आप नहीं जलते। इस प्रकार भक्तोंके क्रोध और व्यवहारी लोगोंके क्रोधमें बड़ा फर्क है और ऐसा ही हाल दूसरे विषयोंमें समझना चाहिये। मतलब यह कि लगड़े आममें किसी एक तरफ अगर कीड़ा लग गया हो तो इससे समूचा आम फेंक देना ठीक नहीं, बल्कि कीड़ावाला भाग थोड़ा काटकर बाकी अच्छा भाग काममें लाया जा सकता है। इसी तरह किसी भक्तमें कभी कोई दुर्गुण हो भी तो वह थोड़ा होता है और गुण अधिक होता है। इसलिये उसके दुर्गुणको दूर रखकर उसके सद्गुणोंसे लाभ उठाना चाहिये। इसके सिवा यह भी ध्यानमें रखना कि मामूली बीजू आम अगर बिना कीड़ेका हो तो भी उसमें जितनी मिठास होती है उससे कहीं अधिक मिठास लंगड़े आममें होती है। यह भी समझ लेना चाहिये कि बीजू आममें कीड़े पड़नेकी जितनी सम्भावना है उससे बहुत कम सम्भावना

लगड़े आममें कीड़े पड़नेकी है । इसी तरह साधारण मनुष्य में जितने दुर्गुण होते हैं उतने दुर्गुण भक्तोंमें नहीं होते । और मोहवादी लोगोंके दुर्गुणोंसे जितनी खराबी होती है उतनी खराबी भक्तोंके दुर्गुणोंसे नहीं हो सकती । क्योंकि उनमें बहुत बड़े दुर्गुण नहीं रह सकते और जिनमें बहुत बड़े दुर्गुण हों वे भक्त नहीं कहलाते । इस कारण बहुत करके किसी किसी भक्तसे दूसरे संसारी लोगोंके लेखे बहुत छोटी भूल होती है और वह क्षमा करने योग्य है। क्योंकि भक्तसे छोटी छोटी भूलें भी हमेशा नहीं हो सकतीं । इसलिये उनकी छोटी भूलोंके कारण उनके बड़े गुणोंसे लाभ उठानेमें मत चूकना । क्योंकि भक्त भक्त ही हैं । उनकी किस्म संसारियोंसे कुछ और ही है । उनकी खूबी हरिजन ही समझ सकते हैं । इसलिये उनकी भूलें अलग रखकर उनके सद्गुणोंका लाभ लीजिये। उनके सद्गुणोंका लाभ लीजिये।

८१—हममें कितने तरहके अवगुण हैं यह जाननेकी हिकमत । भजन करने बैठें तब या और किसी ऊंचे विचारमें चित्तको एकाग्र करना चाहें तब बारंबार जो बुरे विचार आपसे आप मनमें आवें समझना कि, वे ही मुख्य अवगुण हममें हैं ।

हर एक आदमीमें किसी न किसी किस्मका मुख्य अवगुण होता है । उस अवगुणको चतुर आदमी पकड़ सकते हैं । जो साधारण गंवार आदमी हैं वे दूसरोंकी भूल देख सकते हैं पर अपनी भूल—अपना दोष नहीं देख सकते । इससे

उसकी खराबी होती है। क्योंकि जब हम दूसरोंके दोषका बहुत विचार करते हैं तो उस किस्मका दोष हममें आ जाता है। इसके सिवा हम अपने दोषको नहीं समझते इससे अपना दोष दूर करनेकी मिहनत नहीं करते। जब तक यह न मालूम हो कि हममें दोष है तब तक हमें उसे दूर करनेकी कैसे सूझ सकती है? और जब तक अपने दोष न दूर हों तब तक हम उन्नति कैसे कर सकते हैं? सो अपनी भलाईके लिये हमें अपना दोष जानना चाहिये। पर आप अपना दोष जानना ज्ञानियोंके लिये, आत्म परीक्षकोंके लिये और मायाके काम तथा आत्मतत्त्वको बिलगानवाले महात्माओंके लिये जितना सहज है उतना ही साधारण लोगोंके लिये मुश्किल है। क्योंकि जैसे हमारी आंख बाहरकी सब चीजोंको देख सकती है परन्तु अपने भीतर पड़ी हुई फूली या मांड़ेको नहीं देख सकती वैसे ही हम दूसरोंके दोष देख सकते हैं पर अपने अन्दरके दोषको नहीं देख सकते। और बाहरके चाहे जितने दोष देखें जब तक अपने भीतरका दोष दिखाई न दे तब तक हमारा कल्याण नहीं हो सकता। इसलिये हमें अपने भीतरका दोष जानना चाहिये और उसके जाननेके लिये कोई सहज हिकमत मालूम करनी चाहिये। ऐसी कुंजी मोहवादी संसारियोंके पास नहीं मिल सकती। परन्तु आगे बढ़े हुए भक्तोंके यहां ऐसी कुंजी मिल सकती है। और वह यह है कि —

• हम जब परम कृपालु परमात्माका भजन करने बैठें, उसकी माला फेरने बैठें, उसका ध्यान करने बैठें, उसके गुण याद करने बैठें, उसकी महान् शक्तिका विचार करने बैठें, उसकी महिमा समझनेके लिये चित्त एकाग्र करने बैठें या और किसी शुभ

कामके विचारमें लगें उस समय बिना बुलाये जिस दुर्गुणके विचार मनमें बारंबार आया करें, हम जिस किस्मके विचारोंका आना पसन्द न करते हों उस किस्मके विचार बारबार आया करें और जिस किस्मके विचारोंको मनसे निकाल डालनेके लिये हम उस समय मिहनत करते हों वे ही बारबार आपसे आप आया करें तो समझना कि इसी किस्मके दुर्गुण हममें हैं। जैसे-उस समय हमारे मनमें बारंबार लोभके विचार आवें तो समझना कि हममें लोभ अधिक है, उस समय विषयवासनाके विचार अधिक आवें तो समझना कि हममें इसीकी हाबि अधिक है; अगर उस समय हममें डाहके विचार अधिक आवें तो समझना कि हममें यह दुर्गुण अधिक है, अगर उस समय हमारे मनमें क्रोधके विचार अधिक आवें तो समझना कि हममें क्रोधका जोर ज्यादा है अगर उस समय घरके छोटे छोटे कामकाज तथा बाल बच्चोंके विचार बारबार आवें तब समझना कि इस किस्मका मोह अभी हममें ज्यादा है। इस प्रकार विचार कर देखनेसे भजनके वक्त विकार पकड़े जा सकते हैं, अपनी भूलें जानी जा सकतीं हैं और किस किस्मका मुख्य पाप अपनेमें है यह समझा जा सकता है। क्योंकि जिस किस्मके विचार बारंबार किये जाते हैं, जिस किस्मके विचार अन्तःकरणके भीतर घुस जाते हैं, जिस किस्मके विचारोंके दाग हृदयपर पड जाते हैं, जिस किस्मके विचारोंके साथ मन रमा करता है और जिस किस्मके विचार अपने मनमें ओतप्रोत हो जाते हैं उसी किस्मके विचार ध्यानके वक्त आ सकते हैं। क्योंकि ये जोरावर बने हुए होते हैं। दूसरे विचार उस समय बहुत नहीं आते; क्योंकि उनमें जोर नहीं होता और हम अपने मनको भी उस समय कुछ खास तौरपर दृढ़ बनाये

रखते हैं इससे उसमें बाहरके फालतू विचार उस समय दाखिल नहीं हो सकते। परन्तु जो विचार मगजमें रमे हुए होते हैं वे ही विचार उस समय वारंवार आते हैं और इससे वे पकड़ जाते हैं। इसलिये अगर दुर्गुणोंसे छूटना हो तो ईश्वरके ध्यानमें या और किसी तरहके उत्तम विचारमें मनको एकाग्र कीजिये और उस समय जो बुरे विचार वारंवार आवें उस किस्मके दुर्गुण अपने अन्दर समझकर उसे दूर करनेकी कोशिश कीजिये। तब शीघ्र दुर्गुण दूर हो सकेंगे। क्योंकि जब यह मालूम हो जाय कि चोर कौन है तब यह मालूम हो जाता है कि चोर किस रास्ते आता है। फिर यह पता लग जाता है कि चोर कब आता है और चोरमें कितना बल है। जब इतना मालूम हो जाय तब उसको पकड़ लेनेमें कुछ कठिनाई नहीं पड़ती। फिर तो वह बड़ी आसानीसे पकड़ जाता है। इसी प्रकार जब हम अपने दुर्गुणोंको पहचान लें और उन्हें निकाल डालनेकी इच्छा शुद्ध अन्तःकरणसे करें तो वे बहुत देर तक नहीं रह सकते। फिर तो उनको भागते ही बनता है। क्योंकि कुदरतका यह नियम है कि कोई दुर्गुण अधिक समय तक जीता नहीं रह सकता।

दूसरे आत्माका बल ऐसा महान है कि उसके पास दुर्गुण टिक ही नहीं सकते और महान प्रभुके पवित्र नाममें ऐसा अलौकिक बल है कि उसके साथ दुर्गुण रह नहीं सकते। इसलिये दुर्गुणोंको खदेड़ देना बहुत सहज बात है। क्योंकि इतने अधिक साधन हमारी मददमें हैं। परन्तु मुख्य बात इतनी ही है कि पहले अपने दुर्गुणोंको पकड़ लेना चाहिये और उनको पकड़नेकी हिकमत है चित्तको प्रभुमें या और किसी उत्तम काममें एकाग्र करना। इसलिये इस हिकमतसे दुर्गुणोंको दूर करनेकी कोशिश कीजिये। दुर्गुणोंको दूर करनेकी कोशिश कीजिये।

८२—भाइयो ! आपके पीछे रोग, बुढ़ापा, मौत और जन्म मरणका फेरा नामक चोर लगे हैं। इसलिये इस जागनेकी जगहमें सो मत जाइये और इस भागनेकी जगहमें विश्राम मत कीजिये।

महात्मा कहते हैं कि जो अच्छी तरहसे सरक (चल) जाय उसका नाम संसार है। शरीरका अर्थ भी है धीरे धीरे सरक जाना। जब ऐसा है तब हम इस संसारमें बहुत समय तक एक ही दशामें नहीं रह सकते। क्योंकि संसार भी सरकनेवाले स्वभावका है और हमारा शरीर भी सरकनेवाले स्वभावका है। इससे एक ही दशामें हम नहीं रह सकते। इतना ही नहीं बल्कि हमारे मनके अन्दर अनेक प्रकारके विकाररूपी दुश्मन भरे हुए हैं और रोग, बुढ़ापा तथा जन्म मरण रूपी बड़े बड़े चोर हमारे पीछे लगे हैं। इसलिये महात्मा कहते हैं कि यह जगह जागनेकी है यहां सो मत जाओ और यह खिसकनेकी जगह है यहां आराम मत करो।

यह जगह जागनेकी क्यों है यह आप जानते हैं ? इसका कारण यह है कि यह संसार सार लेनेके लिये है यह मनुष्य-जन्म तरनेके लिये है, यह उत्तम देह अपने भाइयोंकी सेवा करनेके लिये है, ये तरह तरहके सुबीते हमारी आत्माको उसका असली स्वरूप समझानेके लिये है और इस जगतकी तरह तरहकी वस्तुएं हमारी मदद करनेके लिये हैं। इससे जो जागे हुए महात्मा हैं उनको ऐसा मालूम पड़ता है कि यह जागने की जगह है: क्योंकि ऐसे सुबीते कुछ बारंबार नहीं मिलते, वैसे सुबीते हर किस्मके

जीवोंको नहीं मिलते और ऐसे सुयोग मिलना सौभाग्यकी बात है। इसलिये इनसे जैसे बने वैसे खूब लाभ उठाना चाहिये। इसके बदले व्यवहारी आदमी इस जागनेकी जगह पर सो जाते हैं; यह देख कर उनको अफसोस होता है। इससे दयावश हो फर वे सलाह देते हैं कि भाइयो! इस जागनेकी जगहपर सो मत जाओ। परन्तु हमारा भाग्य फूट गया है इससे हम उनकी यह बात नहीं मानते और सो रहते हैं और उसकी खराबी भोगा करते हैं। ऐसा न होने देनेके लिये हमें जानना चाहिये कि सो जानेके माने क्या हैं। इसके जवाबमें सन्त कहते हैं कि—

अपने कल्याणके विषयमें बेपरवा रहनेका नाम सो जाना है। सर्व शक्तिमान् परमात्माके राज्यमें अटूट समृद्धि भरी हुई है तो भी उससे कुछ लाभ न उठाने और दरिद्र दशामें पड़े रहनेका नाम सो जाना है। आत्मा स्वराज्य भोगनेके लिये यहां आयी है, जगतकी अनेक वस्तुओं तथा अनेक जीवों पर मलिकाय करनेके लिये यहां आयी है, इसके बदले इसको अनेक प्रकारके छोटे बन्धनोंमें बांध रखने और नीतिमें, धर्ममें, व्यवहारमें सांसारिक रस्मरिवाजोंमें तथा आचार विचारोंमें गुलामीकी सी दशा भोगवानेका नाम सो जाना है। कुदरतने मनुष्यको ऐसे लम्बे हाथ दिये हैं कि वह जो चाहे सो हासिल कर सकता है, तिसपर भी कुछ हासिल न करने और निराशाका रोना रोया करने तथा उसीमें जिन्दगी गंवा देनेका नाम सोये रहना है। हमारी आत्मा आनन्दस्वरूप है, इसके बदले उसमें अनेक प्रकारके दुःख मान लेने और रोते झीखते जिन्दगी पूरी करने तथा दुनियामें हर जगह दुःख ही देखने और जिन्दगीमें दु खके अनुभव ही अधिक लेनेका नाम सोये रहना है। इसलिये जागनेकी

जगह पर इस प्रकार सोये न रह जानेका ख्याल रखना।

अब हम यह जानना चाहिये कि खिसकनेकी जगहके क्या माने। किस लिये यह जगह खिसकने लायक है इसका कारण हमें जानना चाहिये। इसके लिये सन्त कहते हैं-कि जब खुद पृथ्वी फिरनेवाली है तब हम न फिर तो क्या कर? वस्तुओंका स्वरूप बदल जाने योग्य है। स्वयं काल भी क्षण क्षणमें भागने वाला है। देहकी दशा भी क्षण क्षणपर बदलनेवाली है। ऋतुएं बार बार बदला करती हैं। विचार क्षण ही क्षण आगे बढ़ा करते हैं। फलों तथा फूलोंकी स्थितिमें क्षण ही क्षण फेर बदल हुआ करता है। हमारी इन्द्रियोंके स्वभाव तथा रूप रंगमें क्षण क्षणपर फेर बदल होता रहता है। हमारे रिवाज तथा धर्म भी ? बदलते जाते हैं। इसी प्रकार संसारके चक्र तथा हमारी जीवात्माके चक्रमें पल पल पर फेर बदल हुआ करता है। कोई बातें ज्योंकी त्यों एक ही रूपमें मुद्दततक नहीं रह सकती। जब जगतकी हर एक वस्तुमें फेर बदल होता है और हर एक वस्तु आगे बढ़ती है तब हमें भी उसके साथ साथ आगे बढ़ना चाहिये। हम जहांके तहां पड़े नहीं रहना चाहिये। क्योंकि यह सरकनेकी जगह है अर्थात् यहां हमारे साथ अनेक प्रकारकी जोखों है, मोहमें फंसाने लायक लालच हैं, अच्छे संयोग बदलने और बुरे संयोग आ जानेका भय है और ऐसी कठिनाइयां हैं कि अगर हाथमें आया हुआ मौका जाने दें तो फिर अनेक जन्मतक बेड़ा पार न हो। इसलिये यह जगह खिसकनेकी है अर्थात् ज्योंके त्यों एक ही दशामें पड़े रहनेकी जगह यह नहीं है, बल्कि उद्योग करके और हमेशा ज्ञान हासिल करके आगे बढ़ने लायक यह जगह है। क्योंकि इस संसारमें हमें कुछ हमेशा नहीं रहना है, बल्कि यहां तो हम थोड़ी देरके मुसाफिर हैं।

यह संसार एक प्रकारकी धर्मशाला है, यह कुछ हमारे बापका घर नहीं है। बापका घर तो जहां अनन्तकालका सुख मौजूद है वह मोक्षधाम है और वहां हमको जाना है; कुछ यहां पड़े रहना नहीं है। इसलिये इस जगहको महात्मा लोग सरकनेकी जगह कहते हैं। अगर सरकनेमें जल्दी न करें तो अनेक प्रकारका भय हमारे सामने खड़ा है। इसलिये जैसे बने वैसे फुर्तीसे जिन्दगीकी मुसाफिरीमें, उन्नतिके रास्तेमें-प्रभुके मार्गमें जल्द जल्द आगे बढ़ना चाहिये। क्योंकि मोक्षधाम विश्रामका स्थान है, कुछ संसार विश्रामका स्थान नहीं है। यह तो आगे बढ़नेका स्थान है। इसलिये महात्मा गण कहते हैं कि—

हे भाइयो! तुम्हारे पीछे रोग, बुढ़ापा और जन्ममरणके फेरे रूपी चोर लगे हैं; इसलिये इस जागनेकी जगहमें सो मत जाओ और खिसकनेकी जगहमें आराम मत करो। अगर इन दोनों बातोंकी सम्हाल रखोगे तो परम कृपालु परमात्मा तुम्हारा मददगार होगा और तुम सन्मार्गमें जल्द आगे बढ़ सकोगे।

८३—चित्तकी एकाग्रता सूक्ष्मदर्शक यंत्रके समान है; इससे उसके पासके सूक्ष्म और गूढ़ विषय भी बड़े और साफ दिखाई देते हैं। इसलिये अगर जल्द आगे बढ़ना हो तो चित्तकी एकाग्रता रूपी सूक्ष्मदर्शक यंत्र हासिल कीजिये।

इस जमानेमें जो अनेक प्रकारके बड़े बड़े आविष्कार हुए हैं उनमें सूक्ष्मदर्शक यंत्रका-खुर्दबीनका आविष्कार भी एक बहुत बड़ा आविष्कार है। इस आविष्कारकी मददसे और इस आविष्कारके प्रतापसे अनेक प्रकारके नये नये आविष्कार हो सकते हैं। इससे जगतके जीवोंका सुख बढ़ता है, जगतका सौन्दर्य

बढ़ता है और कुदरतके भेद प्रगट होते जाते हैं जिससे ईश्वरकी दूरी घटती जाती है। यह सब सूक्ष्मदर्शक यन्त्रकी सहायतासे होता है और अभी और भी कितने ही बड़े बड़े काम उसकी सहायतासे होंगे, इसमें तनिक सन्देह नहीं।

विचार कीजिये कि जब बालूसे बने हुए कांचकी बनावट तथा सजावटसे ऐसा बढ़िया यन्त्र हो सकता है और वह छोटी वस्तुको बड़े रूपमें दिखा कर कुदरतकी बहुत सी खूबियां प्रगट कर सकता है तब अगर चित्त एकाग्र हो तो वह कितना बड़ा, कितना कीमती और कितना उपयोगी सूक्ष्मदर्शक यन्त्र बन जाय! यह बात सोचने योग्य है। बालू जैसी जड़ वस्तुसे बने कांचसे और उसकी सजावटसे तय्यार किये हुए सूक्ष्मदर्शक यन्त्रसे जन्तुविद्याका बहुत बड़ा आविष्कार हुआ है, इस यन्त्रकी मददसे रसायन शास्त्रमें अनेक प्रकारके उपयोगी विषयोंका पता लगा है इस यन्त्रकी मददसे बिजलीका बहुत बड़ा आविष्कार हुआ है, इस यन्त्रकी मददसे अनेक प्रकारके रोगोंके कारण तथा उन रोगोंके दूर करनेके उपाय मालूम हुए हैं, इस यन्त्रकी मददसे वनस्पति शास्त्रमें कितनी ही जानने योग्य बातें मिली हैं, इस यन्त्रके आविष्कारसे प्राणी विद्यामें भी कुदरतकी कितनी ही खूबियां जान पड़ी हैं; इस यन्त्रकी मददसे शरीरकी रचना सम्बन्धी विषयों पर बहुत कुछ नया प्रकाश पड़ा है इस यन्त्रकी मददसे पृथ्वीकी तहमें पड़ी हुई वस्तुओंका पृथक्करण हुआ है और इससे यह पता लग सकता है कि कहां पर किस किसमकी धातु का होना सम्भव है तथा यह भी निश्चय किया जा सकता है कि वह धातु कितनी है अर्थात् अधिक है कि थोड़ी है, इस यन्त्रकी मददसे आकाशके ग्रहोंकी बनावट तथा उनके अन्दरके तत्त्वोंका टूटते हुए तारोंके पत्थरोंके विश्ले

पणसे, कुछ अन्दाज मिला है। इस प्रकार हर एक विषयमें सूक्ष्मदर्शक यंत्र बहुत काम देता है। जब काँचका नन्हा सा यंत्र इतना बड़ा काम करता है तब अगर हमें अपने चित्तकी एकाग्रता रूपी सूक्ष्मदर्शक यंत्र बनाना आवे तो उससे कितना बड़ा काम हो और काचके सूक्ष्मदर्शक यंत्र जैसे और कितने ही तरहके नये नये यंत्र बन जायं जरा इसका तो खयाल कीजिये। याद रहे कि इस समय दुनियामें जितने किस्मके यंत्र है वे सब यंत्र चित्तकी एकाग्रता रूपी सूक्ष्मदर्शक यंत्रसे बने हैं। जैसे-फोनोग्राफकी ईजाद चित्तको एकाग्र रखनेसे हुई है; बायस्कोपका आविष्कार, एक्सरेजकी किरणोंका आविष्कार, बिना तारके तारका आविष्कार, टेलीफोनका आविष्कार, दूरबीनका आविष्कार, रेडियमका आविष्कार, बिजलीसे तरह तरहके काम लेनेका आविष्कार, मोटरका आविष्कार, गुब्बारेको मनमानी चालसे उड़ानेका आविष्कार, अनेक प्रकारकी गोली बारूदका आविष्कार, नौकाशास्त्रका आविष्कार, खानोंका आविष्कार अनेक प्रकारकी नयी नयी धातुओंका आविष्कार, वैद्यक शास्त्रका आविष्कार और इस प्रकारके दूसरे कितने ही बाहरी आविष्कार तथा अन्दर मौजूद महान शक्तियोंके आध्यात्मिक आविष्कार चित्तकी एकाग्रतासे हुए हैं। क्योंकि चित्तको एकाग्र करना बहुत बड़ी बात है, इतनी भारी बात है कि कह नहीं सकते। दुनियाके हर एक शास्त्रका यही सिद्धान्त है कि अगर अनन्त कालके अनन्त सुख लेने हों तो चित्तको एकाग्र करना चाहिये योगशास्त्रमें कहा है कि—

योगश्च चित्तवृत्ति निरोधः।

चित्तकी वृत्तियोंको रोक देनेका नाम योग है। मतलब यह कि चित्तको एकाग्र करनेका नाम योग है और इसीमें योगके

अन्दरकी अनेक महान सिद्धियां मौजूद हैं । चित्तकी एकाग्रतामें इतना बड़ा बल है। इसलिये महात्मा लोग बारंबार कहते हैं कि मनको निग्रह करना सीखो। इतना ही नहीं बल्कि दुनियामें जितने धर्म हैं और हर एक धर्ममें जितनी तरहकी उपयोगी क्रियाएं हैं तथा विधि निषेध हैं वे सब चित्तकी एकाग्रताके लिये ही हैं । चित्तकी एकाग्रताका काम इतना महान तथा गहन है। इसलिये उसका सबसे बढ़िया सूक्ष्मदर्शक यंत्र हो सकता है। उससे सूक्ष्मसे सूक्ष्म वस्तुएं भी देखी जा सकती हैं, विचारोंके रूप, संगका असर, आवाजका असर, आकर्षणके भेद, अगले जन्मका हाल, बुद्धिके विकासके नियम, सृष्टिकी उत्पत्तिके नियम, जीवन बढ़ानेके उपाय, आकाशतत्त्व (ईथर) की खूबियां और ऐसे ऐसे करोड़ों नये उपयोगी विषय चित्तकी एकाग्रताके सूक्ष्मदर्शक यंत्रसे देखे जा सकते हैं तथा नये नये आविष्कार भी किये जा सकते हैं। इसलिये सब आविष्कारोंका मूल जो चित्तकी एकाग्रता है उसे करना सीखिये। चित्तको एकाग्र करना सीखिये ।

व्यवहारमें सफलता पानी हो तो चित्तकी एकाग्रतासे पा सकते हैं और धर्मकी सफलता दरकार हो तो वह भी चित्तकी एकाग्रतासे पा सकते हैं । यहां तक कि जगतमें जो गूढ़से गूढ़ तत्त्व है, जो ऊंचेसे ऊंचा तत्त्व है, जो सर्वव्यापक तत्त्व है, जो सबसे परेका तत्त्व है और जिस तत्त्वकी सहायतासे सब कुछ हो सकता है उस सर्व शक्तिमान महान तत्त्वको जानने तथा पहचाननेका काम भी चित्तकी एकाग्रतासे हो सकता है। इसलिये छोटीसे छोटी वस्तुको भी बड़े से रूपमें दिखानेवाली चित्तकी एकाग्रता रूपी सूक्ष्मदर्शक यंत्र हासिल कीजिये। तब फिर जहां जाइये और जो काम कीजिये उसमें अपनी सफलता ही समझिये।

प्रेमी जनोंकी सहायता ।

स्वर्गमालाके प्रेमी जनोंकी सहायता चन्द्रवृद्धि रूपसे मिल
ही है। मेरे ऊपर स्नेह रखनेवाले भारत पथिक स्वामी जुगला-
न्द जी विहारी (कबीरधर्म नगर-रायपुर) ने कृपा पूर्वक अब तक
ग्राहक बढ़ाये हैं और बढ़ानेका उद्योग करते ही जाते हैं।
पके बढ़ाये हुए ग्राहकोंमेंसे दुर्ग (मध्य प्रदेश) के श्रीयुत बाबू
रका प्रसादजी रायजादा वकीलको स्वर्गमालाके विषय और
ली इतनी पसन्द आयी है कि आपने अपनी इच्छासे "अपनी
कत भर" ग्राहक बढ़ानेका प्रण कर लिया है और थोड़े ही
मयमें १२ ग्राहक बना दिये हैं। इन प्रेमी जनोंकी सहायता मेरा
साह बढ़ानेवाली है। मैं इन सज्जनोंको जितना धन्यवाद
थोड़ा है। प्रकाशक।

स्वर्गीय जीवन।

यह पुस्तक बम्बईमें अभी छप कर प्रकाशित हुई है। एक
मेरिकन महान पुरुषकी लिखी हुई (In tune with the
finite) पुस्तकका यह हिन्दी अनुवाद है। मूल पुस्तक कितनी
भाषाओंमें अनुवादित हो चुकी है और उसकी लाखों प्रतियां
क चुकी हैं। पुस्तककी उत्तमताका यह एक बहुत बड़ा प्रमाण,
। मेरा अनुमान है कि स्वर्गमालाके प्रेमी 'स्वर्गीय जीवन'
कर बहुत प्रसन्न होंगे। इस आध्यात्मिक ग्रंथके अध्यायोंके
र्षक इस प्रकार हैं—विश्वका उत्कृष्ट तत्व, मनुष्यजीवनका
म सत्य, जीवनकी पूर्णता—शारीरिक आरोग्य और शक्ति,
मका परिणाम, पूर्ण शान्तिकी सिद्धि, पूर्ण शक्तिकी प्राप्ति, सब
र्थोंकी विपुलता-समृद्धिशाली होनेका नियम, महात्मा, सन्त
र दूरदर्शी बननेके नियम, सब धर्मोंका असली तत्व—विश्वधर्म
यादि। मूल्य ग्यारह आने डाक महसूल एक आना।

मिलनेका पता—प्रबन्धक स्वर्गमाला, बनारस सिटी।

स्वर्गमाला—पुष्प ९

यतोऽभ्युदय श्रेय सिद्धि स धर्म ।

स्वर्गके रत्न ।

पाँचवाँ खण्ड ।

प्रकाशक
महावीरप्रसाद गहमरी
स्वर्गमाला कार्यालय
बनारस सिटी ।

मूल्य एक खण्डका ।)

Printed by P. L. Pawag at the Hitchintak Press, Panghat Benares City

स्वर्गमालाके नियम।

स्वर्गमालामे हर साल १००० पृष्ठोंकी पुस्तकें प्रकाशित होंगी। सालभरमें बाहर पुस्तकें या पुस्तकोंके बाहर खण्ड क्रमश निकलेंगे। जो लोग दो रुपये पेशगी भेजकर स्वर्गमालाकी ग्राहकश्रेणीमें नाम लिखावेंगे उनको एकवर्षमें प्रकाशित होनेवाली एक हजार पृष्ठोंकी पुस्तकें दी जायंगी। डाक महसूल कुछ नहीं लिया जायगा। फुटकर तौरपर स्वर्गमालाके अलग अलग खण्ड खरीदनेमें दो रुपयेके बदले तीन रुपये पड जायगे। क्योंकि स्वर्गमालाके हर एक खण्डका दाम चार आने होगा। नमूनेका एक खण्ड चार आनेका टिकट भेजनेसे मिलेगा। ग्राहकोंका साल वसन्तपचमीमें आरम्भ होगा। जो लोग पीछेसे ग्राहक होंगे उनकी सेवामें पहलेके प्रकाशित खण्ड भी भेज दिये जायगे। जो लोग ।) का टिकट भेजकर नमूना मगावेंगे वे पीछे १॥।) भेजकर १ वर्षके लिये ग्राहक हो सकेंगे।

स्वर्गमालाके सम्बन्धकी चिट्ठीपत्री मनीआर्डर आदि सब कुछ नीचे लिखे पतेपर भेजना चाहिये—

महावीरप्रसाद गहमरी

प्रबन्धक स्वर्गमाला

बनारस सिटी।

८४-गायके लिये पानीकी नांद गड़ी हो और उसमें गधा, गीदड़, गिद्ध, कुत्ते वगैरह पानी पी जायं तो इसके कारण नांदको नहीं बन्द कर सकते । ऐसे ही ज्ञानका, धर्मका और परोपकारका भी दुरुपयोग होता है परन्तु इससे इन चीजोंको रोकते नहीं ।

कुछ आदमी ऐसे होते हैं जो दुर्गुण देखा करते हैं; इससे उन्हें सद्गुण सूझता ही नहीं, सब बुरा ही दिखाई देता है। जैसे-कोई आदमी जब दो चार धर्मगुरुओंको खराब दशामें देखता है-उनमें लोभ, अनीति और अज्ञानता देखता है तो यह मान लेता है कि यह धर्म ही खोटा है, और सब गुरु ऐसे ही शठ और दाम्भिक हैं। इससे अच्छे अच्छे महात्माओंसे भी यह लाभ नहीं उठाता। कितने ही आदमी ऐसे हैं जिनसे कहिये कि तुम पढ़ो या अपने लड़कोंको पढ़ाओ तो वे कहते हैं कि पढ़कर क्या होगा? पढ़े हुए तो उलटे बिगड़ जाते हैं, होटलके प्रेमी हो जाते हैं और तीसमार खां बन जाते हैं, इससे बेपढ़े भोले भाले अच्छे कि कहना तो मानें। कितने ही धनी ऐसे हैं जिनसे कहो कि परमार्थ करो तो वे जवाब देते हैं कि परमार्थ क्या धूल करें? हालमें सदावर्त्त खोला था पर उसमें खाली लफंगे आते थे, कोई अच्छा आदमी नहीं आता था। हमारी धूमाका मन्दिर है, उसमें जो पुजारी है वह दूरसे ही दण्डवत् करने योग्य है। ऐसे अकलके पीछे लठ लेकर दौड़नेवालोंको सहारा देनेसे क्या होता है? उलटे आफत बढ़ती है। हमारे काकाकी

धर्मशालामें भी बहुतसे खराब काम होते हैं। मुसाफिरोंको तो कभी ही कभी लाभ होता है लेकिन राजाके आदमी आते हैं तो दबाव डालते हैं। अब बताओ रोज रोज उनसे तकरार कौन करे? इस प्रकार हर एक अच्छे कामका बुरा उपयोग होता है और लुच्चोंकी बन आती है। तब लुच्चोंके लिये कौन मिहनत करे? इससे तो कुछ न करना अच्छा है। इस प्रकारके विचार करनेवाले और उसपर चलनेवाले भी कितने ही आदमी हैं। पर याद रखना कि यह एक तरफकी बात है। अब हमें दूसरी तरफ भी देखना चाहिये। दूसरी तरफ देखनेसे यह खयाल उठता है कि—

अगर गायके पानी पीनेके लिये नांद बनी हो और उस नांद में कभी कभी भेड़िया, गीदड़ और मुर्दा खानेवाले गिद्ध भी पानी पी जायं तो क्या इसके कारण नांद उखाड़ दी जायगी? कहिये कि नहीं। इसी तरह धर्मके, परमार्थके या ज्ञानके जो जो साधन होते हैं उनका कुछ कुछ दुरुपयोग तो होता ही है परन्तु इससे ज्ञानकी या परमार्थकी या धर्मकी कीमत नहीं घट जाती। क्योंकि इसमें धर्मका दोष नहीं है, इसमें परमार्थका दोष नहीं है—इसमें ज्ञानका दोष नहीं है, परन्तु कमजोर मनके मनुष्योंमें जो बलवान स्वार्थवृत्ति है उसके कारण वे ऐसी भूल करते हैं। और ऐसी भूल तो थोड़ी बहुत सब देशोंमें सब जगह और सब प्रजामें होगी ही। इसके कारण ऐसे शुभ कामोंमें लापरवाही करना ठीक नहीं और अपने कर्तव्यसे चूकना उचित नहीं। हमें तो अपना कर्तव्य पूरा करना ही चाहिये और उसमें जहां तक बने खबरदारी रखना चाहिये। तो भी किसी एक कुछ दुरुपयोग तो होगा ही। परन्तु कभी किसी संयोगसे अच्छे कामोंका कुछ थोड़ा दुरुपयोग हो तो

इससे कुछ हमेशाके लिये वैसे कामोंको छोड़ नहीं दे सकते। इसी प्रकार कहीं खाली पोल ही पोल हो तो सब जगह ऐसी ही बात होगी यह नहीं मान लेना चाहिये। यह सोचकर अच्छे काम करनेसे रुक जाना तो एक प्रकारकी बहुत बड़ी कमजोरी है। इसलिये ऐसी कमजोरीमें मत पड़े रहिये बल्कि जैसे बने वैसे सावधानीसे परमार्थके काम कीजिये, ज्ञान हासिल कीजिये और धर्म पालने तथा धर्म बढ़ानेकी कोशिश कीजिये। इसीमें प्रभुकी प्रसन्नता है और अन्तको इसीसे कल्याण है।

८५—एक भक्तका हाल। वह कैसे आगे बढ़ सके?

हरि बाबा बहुत प्रसिद्ध भक्त थे। उनपर लोगोंकी बड़ी श्रद्धा थी। क्योंकि उनकी वाणीमें तथा उनके चरित्रमें अजीब बल था। इससे वह जहां जाते वहां उनके हाथसे कोई न कोई छोटा बड़ा शुभ काम हो ही जाता और इसमें कुछ आश्चर्य भी नहीं था। उन भक्तराजकी आंखोंमें ज्ञानका प्रकाश था। उनके चेहरेपर ज्ञानकी गम्भीरता थी। उनकी वाणीमें अजीब मिठास थी तथा खास आकर्षण था। उनकी रीति भांतिमें सादगी थी तो भी अमीरी थी। उनका बर्ताव सबसे अदब और इज्जतके साथ होता था। उनके चेहरेपर भक्तिकी शांति छायी हुई थी। उनकी गहरी आंखें गहरे अध्ययनका परिचय देती थीं। उनका पतला शरीर तथा बाहर दिखाई देती हुई नसें उनके तपका परिचय देती थीं। वह बड़े ही विचारशील थे। उन्होंने अपनी जिन्दगी जनसेवामें तथा प्रभुसेवामें अर्पण कर दी थी और हर जगह तथा

हर श्रेणीके लोगोंपर कुछ अच्छा असर कैसे पड़े और मैं कैसे उनका मददगार बनूं यही उनकी मुख्य भावना थी। इससे उनके जीवनमें अनुपम रहस्य तथा कुदरती मिठास आ गयी थी। क्योंकि वह यह सब किसी तरहके अपने स्वार्थकेलिये नहीं करते थे, बल्कि किसी तरहके अपने फायदेकी इच्छा रखे बिना सिर्फ प्रभुके प्रीत्यर्थ सेवा किया करते थे। इससे उनमें दूसरे लाखों आदमियोंसे कहीं अधिक बल आ गया था जिससे लोगोंपर उनका जादूका सा असर होता था और उस असरकी धारामें सोचे हुएसे कहीं अधिक शुभ काम हो जाते थे। यह देखकर एक जिज्ञासु हरिजनने उक्त भक्तराजसे पूछा कि आपकी जिन्दगी जो इतनी सुधर गयी और आपको जो इतनी बड़ी सफलता मिल गयी इसका कारण क्या है? इसकी कुंजी हमें बतानेकी कृपा कीजिये।

उक्त भक्तराजने कहा कि भाई! तुमने बहुत अच्छा प्रश्न किया है। यह बात तो बहुत ही सहज है और इसमें कुछ भी छिपाने लायक नहीं है। मैं खुशीसे कहता हूँ, सुनो।

अपनी जिन्दगी सुधारनेके लिये मैंने किसी देवी देवताकी उपासना नहीं की; अपनी जिन्दगी सुधारनेके लिये मैंने कोई तंत्र मंत्र साधनेकी तकलीफ नहीं उठायी; अपनी जिन्दगी सुधारनेके लिये मैंने कोई व्रत उपवास नहीं किया; अपनी जिन्दगी सुधारनेके लिये मैं किसी तीर्थमें नहीं भटका; अपनी जिन्दगी सुधारनेके लिये, मैं किसी साधु फकीर या मोटे गुरुकी शरणमें नहीं गया न उनसे कान फुकवाया और न कंठी बंधवायी; अपनी जिन्दगी सुधारनेके लिये और इस दुनियामें सफलता पानेके लिये मैंने कोई गंडा ताबीज नहीं लिया था न किसी ज्योतिषीसे जन्म कुंडली दिखायी; अपनी

जिन्दगी सुधारनेके लिये मैंने कोई कड़ा तप नहीं किया और न अपनी जिन्दगी सुधारनेके लिये मैंने कोई ढोंग ढकोसला या प्रपंच रचा; बल्कि मैंने सिर्फ घरमें बैठे बैठे एक सीधी और सरल बात पकड़ी थी। उसीसे मेरी जिन्दगी सुधरी है और मुझे बहुत अच्छी सफलता हुई है। और वह है **पढ़ना, पढ़ना और पढ़ना**। अच्छी अच्छी पुस्तकें पढ़ना ही मेरा मुख्य काम था और इसीसे यह सब सरस नरस हुआ है। इसके सिवा और कोई बात मैं नहीं जानता। **मेरी जिन्दगी तो खास करके पढ़नेसे ही सुधरी है।**

यह सुनकर उस जिज्ञासुने आश्चर्यसे पूछा कि क्या सिर्फ पढ़नेसे इतना हो सकता है? आपको तो कई तरहकी ऋद्धि सिद्धियां मिल गयी हैं। वे सब क्या पढ़नेसे मिल सकती हैं? मुझे तो ऐसा लगता है कि यह सब योगका फल है या पूर्वजन्मके शुभ संस्कारोंका फल है। सिर्फ पढ़नेसे इतना नहीं होता और न ऐसी सफलता मिलती। तब उक्त भक्तने कहा कि पढ़नेके माने क्या हैं यह तुम नहीं जानते, इसीसे ऐसा कहते हो। परन्तु भाई! याद रखना कि अच्छी अच्छी पुस्तकें पढ़ना बहुत बड़ी बात है। इसके विषयमें हमारे गुरु जी तो यह कहते थे कि—

जिसका पुण्य उदय होता है उसे अच्छी पुस्तकें पढ़ना सूझता है; जिसका भाग्य सुधरनेको होता है उसको पढ़नेकी सूझती है; जिसके विधाता दाहिने होता है उसको पढ़नेका मन करता, है जिसके ग्रह अच्छे होते हैं उसे अच्छी पुस्तकें पढ़नेकी सूझती है और जिसपर भगवानकी कृपा होती है उसे पढ़नेकी सूझती है। पढ़ना क्या है यह बात पहले जान

लेना चाहिये । इसके लिये पहलेके पवित्र ऋषियोंने कहा है कि जो वेद है अर्थात् जो ज्ञान है वह प्रभुका श्वासोच्छ्वास है। ग्रंथ देवता हैं; पुस्तकें महात्माओंकी प्रसादी हैं, पुस्तकें विद्वानों पण्डितों और सन्तोंकी तरफसे मिली हुई सुलभ कीमती जागीर हैं ; पुस्तकें ज्ञानके भण्डार हैं, पुस्तकें अलग अलग विद्वानोंकी बुद्धिकी प्रदर्शनी हैं, पुस्तकें अलग अलग देशोंको तथा भिन्न भिन्न समयको एक जंजीरमें जोड़नेवाली कड़ियां हैं, पुस्तकें अपने अधिकारियोंके हृदयमें उथल पुथल करनेवाले रसायन हैं, पुस्तकें नयी जिन्दगी देनेवाले फिरिश्ते हैं, पुस्तकें जिन्दगीमें अमृत डालने वाले महान गुरु हैं, पुस्तकें जीवात्माके गुब्बारेमें गैस भरनेवाले यंत्र हैं और जगतमें कोई आदमी या कोई चीज जो कुछ दे सकती है उससे कहीं अधिक और कहीं अच्छा माल देनेवाली पुस्तकें हैं । इसलिये हम सबको अच्छी पुस्तकें पढ़नेका लाभ उठाना चाहिये । क्योंकि इनसे जिन्दगी सुधर सकती है और इनसे आत्माको शक्ति तथा ईश्वरकी कृपा मिल सकती है । इसलिये अगर जिन्दगी सुधारना हो, दुनियामें कामयाब होना हो और जीवनको सार्थक करना हो तो ऊंचे विचारोंसे भरी हुई पुस्तकें पढ़ो और कलियुगमें फल न दे सकनेवाले देवी देवताओंको पूजनेके बदले नगद फल देने वाले ग्रंथ रूपी देवताओंको भजो और उनकी उपासना करो । क्योंकि शास्त्रमें कहा है कि जब कलियुगके अढ़ाई हजार वर्ष बीत जायंगे तब ग्रामदेवता चले जायंगे, इससे उनका जोर हमपर नहीं चल सकेगा और वे हमारा भला नहीं कर सकेंगे। कलियुगके पांच हजार वर्ष बीतनेपर गङ्गा जी पृथ्वीपरसे उठ जायगी इससे वह हमको पवित्र नहीं कर सकेंगी या न हमारी मलिनता धो सकेंगी । मंत्र जपनेवाले तथा बहुत श्रद्धावाले

शास्त्री लोग और योगी यती भी कहते हैं कि कलियुगमें मंत्रोंको कील दे दिया गया है इससे वे फल नहीं दे सकते।

इन सब बातोंसे विचारना चाहिये कि जिन साधनोंसे फायदा न होनेकी बात शास्त्र तथा पण्डित कहते हैं और हम भी अपने थोड़े बहुत अनुभवसे यह बात जानते हैं उनमें फिर भी पड़े रहनेसे क्या फायदा है? चतुराई तो इसीमें है कि जिस रास्तेसे जल्द कल्याण हो वह रास्ता पकड़ें। वह रास्ता कौन सा है? इसके लिये श्रीमद्भगवद्गीतामें श्रीकृष्ण भगवानने कहा है कि—

अपि चेदसि पापेभ्यः सर्वेभ्यः पापकृत्तमः ।
सर्वं ज्ञानप्लवेनैव वृजिनं संतरिष्यसि ॥

अ० ४ श्लो० ३६

इस श्लोकमें प्रभु अर्जुनसे कहता है कि "अगर तू जगतके सब पापियोंसे भी बढ़कर पापी होगा तो भी ज्ञान रूपी जहाजसे तू समूचे पापको आसानीसे पार कर जायगा।"

इतना कहकर ही प्रभुको तृप्ति नहीं होती इससे वह आगे जाकर उदाहरण सहित समझाता है कि—

यथैधांसि समिद्धोऽग्निर्भस्मसात् कुरुतेऽर्जुन ।
ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात् कुरुते तथा ॥

अ० ४ श्लो० ३७

हे अर्जुन! जैसे जल्द जल उठनेवाली लकड़ीसे खूब सुलगी हुई आग लकड़ीको भस्म कर देती है वैसे ज्ञान रूपी आग सब कर्मोंको भस्म कर देती है।

ज्ञानमहिमाको इतना समझाकर भी प्रभुको सन्तोष नहीं होता इससे वह आगे चलकर कहता है कि—

नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते ।
तत्स्वयं योगसंसिद्धः कालेनात्मनि विंदति ॥
अ० ४ श्लो० ३८

इस जगतमें ज्ञानके बराबर पवित्र और कुछ भी नहीं है। वह ज्ञान धीरे धीरे अभ्यास करनेवालोंको आपसे आप मिलता जाता है।

भाई! याद रखना कि गीताका यह महान सिद्धान्त सब देशोंके लिये है और सब कालके लिये है। यह ऐसा नहीं है कि ग्रामदेवताओंकी तरह तथा मन्त्रोंकी तरह कलियुगमें काम न आवे। बल्कि ज्ञानसे कल्याण होता है यह सिद्धान्त सब समय सब आदमियोंके काम आनेवाला है। मैं तुमसे ज्ञान हासिल करनेको कहता हू और वह ज्ञान तरह तरहकी अच्छी अच्छी पुस्तकें पढ़नेसे मिलता है। इसलिये पुस्तकें पढ़नेकी प्रार्थना करता हू और मैं चाहता हू कि पुस्तकें पढ़नेसे जैसे मेरी जिन्दगी सुधरी वैसे ही तुम्हारी जिन्दगी भी पुस्तकोंकी मददसे सुधरे। इसके साथ ही यह भी बता देता हू कि यह कुछ कल्पित नहीं है बल्कि मेरे निजके अनुभवकी बात है। यह कह कर वह भक्तराज चुप हो रहे और उस हरिजनको भी विश्वास हो गया कि ज्ञान बड़ी बात है और वह सहजसे सहज रीति पर पुस्तकोंसे ही मिल सकता है। इसलिये मुझे अपनी जिन्दगी सुधारनेके लिये अपना पढ़ना बढ़ाना चाहिये। ऐसा ही वह करने लगा और थोड़े ही दिनोंमें उसको बहुत फायदा हुआ। इसी प्रकार हम चाहते हैं कि पढ़नेसे सब भाई बहनोंको लाभ हो। उक्त महान भक्तराजके अनुभवसे लाभ उठानेके लिये हम सबसे विनती करते हैं।

८६-कूआ किसीसे नहीं कहने जाता कि मेरे पास आओ, तौ भी लोग पानी पीनेके लिये उसके पास जाते हैं। जो धनवान हैं वे कूएके समान हैं। इससे वे गरीबोंको न बुलावें तौ भी गरीब उनके घर जाते हैं।

जो धनवान अपनी अमीरीकी खूबी नहीं समझते वे यह सोचते हैं कि गरीब आदमी हमारे यहां क्यों आते हैं? हम कितने आदमियोंको दें? मानो बापकी धरोहर रक्खी है कि सब हमारे ही यहां चले आते हैं। परन्तु हम क्यों दें? और कितने आदमियोंको दें? ऐसी बात कितने ही नासमझ धनवान कहते हैं। इतना ही नहीं बल्कि कितने ही तो धनके मदमें चूर होकर न कहने योग्य वचन भी घुमा फिरा कर बोल देते हैं और कहते हैं कि हम क्या तुम्हें बुलाने गये थे? तुम्हारे जैसे सैकड़ों भिखमंगे आया करते हैं।

सैकड़े सत्तानवे धनिकोंके घर इसी किस्मकी बातें होती हैं। ऐसी ही एक घटना एक मशहूर धनवानके यहां भी हुई थी। बात यह थी कि उस सेठके यहां एक भक्तराज"अकाल"के सताये हुए गरीबोंकी मददके लिये चन्दा लिखवाने आये थे। सेठने कहा कि तुम्हारे जैसे सैकड़ों आदमी रोज आते हैं। मैं कितने आदमियोंको दूं? नगरमें और भी कोई है या मैं ही अकेला हूं? तुम सब मेरे यहां ही टूटे पड़ते हो, कुछ विचार भी करते हो कि नहीं? मैंने तुम्हें बुलानेके लिये निमंत्रणपत्र तो भेजा नहीं था, भिखमंगोंको सहायता देनेसे लोग आलसी बन जाते हैं। चन्दा देते देते मेरे तो नाको दम आ गया। अब तो मैं किसीको एक पैसा भी नहीं

देनेका। दरवान भी गया ही है, भिखमंगोंको मकानमें क्यों घुसने देता है? जाओ! जाओ! जब बुलाऊं तब आना और जब तुम्हारे बिना नहीं चलेगा तब तुमको बुला भेजूंगा। ऐसे २ ताने तिश्ने देकर सेठने उस बेचारे परमार्थी भक्तको भगा दिया। उस समय वहां एक विद्वान शास्त्री बैठे थे, सेठ उनको जरा मानता था और शास्त्रीजी जरा चलते पुर्जे थे। जहां जरा बसाती थी, वहां कुछ साफ कह देनेवाले थे और जहां अपनी न चले वहां केवल पोलमपोल थी। इसके सिवा श्रीमानोंके रोवम भी जल्द आ जानेवाले थे, जरा लालची भी थे और कुछ खुशामदी भी थे तो भी दूसरे कितने ही पण्डितोंमें बहुत अच्छे थे। उन्होंने सेठके जरा ठंढे हो जानेपर कहा—

सेठ जी! कूएके पास पानी पीनेके लिये सब लोग आपसे आप आते हैं, कुछ कूआ उनसे नहीं कहता कि तुम मेरे यहां आओ। जो धनवान हैं-अमीर हैं वे कूएके समान हैं, इससे प्यासे गरीब बिना बुलाये अपनी गरजसे उनके पास जाया ही करते हैं, इसमें कुछ आश्चर्य नहीं है। क्योंकि अमीरी क्या है यह आप जानते हैं? अमीरी ईश्वरकी कृपाका फल है, अमीरी अच्छे भाग्यका चिन्ह है, अमीरी पूर्व जन्मके शुभ कर्मोंका फल है, अमीरी जिन्दगी सुधारनेका मौका है अमीरी गरीबोंके आशीर्वाद लेनेका मौका है, अमीरी कीर्ति हासिल करनेका अवसर है, अमीरी प्रभुके प्यारे बननेका मौका है, अमीरी जगतमें सौन्दर्य फैलानेका मौका है, अमीरी ईश्वरका ऐश्वर्य फैलानेका मौका है, अमीरी देवताओंको उनका हक चुकाकर प्रसन्न करनेका मौका है, अमीरी भविष्यकी जिन्दगी सुधारनेका मौका है, अमीरी स्वर्गका द्वार है, अमीरी महात्मा बननेकी सामग्री है, अमीरी अनेक प्रकारका धुर अनुभव लेनेका अममोल

अवसर है और अमीरी उदार बनने और आत्मिक सन्तोष प्राप्त करनेका उत्तम अवसर है। अब विचार कीजिये कि जिस अमीरीमें इतने बड़े बड़े मामले हैं उस अमीरी रूपी मधुके पीछे गरीब रूपी मधुमक्खियां दौड़ें तो इसमें आश्चर्य क्या है? सेठ जी! याद रखिये कि मददकी आशासे जो गरीब आपके यहां आते हैं वे कुछ आपकी खूबसूरती देखने नहीं आते, बल्कि आपके पास ईश्वरका जो ऐश्वर्य है, आपके पास जो प्रभुकी प्यारी लक्ष्मी है और आपके पास ऐश्वर्य रूपमें ईश्वरकी जो कृपा है उससे लाभ उठानेके लिये आते हैं। इसलिये याद रखना कि गरीब कुछ आपके पास नहीं आते, बल्कि वे तो ईश्वरके ऐश्वर्यके पास आते हैं और कुछ जानबूझ कर नहीं बल्कि लक्ष्मीमें जो स्वाभाविक आकर्षण है और लक्ष्मीवानोंका जो कर्त्तव्य है उसको देखकर वे आपके पास आते हैं। इसलिये उनका तिरस्कार मत कीजिये, बल्कि आप जो कूप हैं उसमेंसे थोड़ा पानी पीने दीजिये। इससे आपकी समृद्धि घटेगी नहीं उनके आशीर्वादसे अनायास ही और बढ़ जायगी और दूसरी तरहसे कितने ही फायदे होते रहेंगे। फिर दान देनेसे आप हृदयका सन्तोष पा सकेंगे तथा प्रभुकी कृपा हासिल कर सकेंगे। इसलिये गरीबोंका तिरस्कार मत कीजिये, बल्कि उनकी यथाशक्ति मदद करनेकी कृपा कीजिये।

शास्त्रीजीकी इस बातका, उस सेठपर, अच्छा असर पड़ा और उस दिनसे उसने निश्चय किया कि अगर किसीको कुछ देते न बने तो न सही परन्तु किसी गरीब आदमीका तिरस्कार नहीं करूंगा। हम चाहते हैं कि दूसरे अमीर भी इसी तरह अपनी अमीरीकी कीमत समझें और भगवानसे प्रार्थना करते हैं कि वह उनको ऐसा समझनेकी सुबुद्धि दे।

८७–सन्त सबपर प्रेम रखते हैं इसका कारण।

जैसे बछड़े लहू छोड़कर दूध पीते हैं वैसे ही मनुष्योंके अवगुण छोड़कर सन्त उनके गुण देखते हैं, इससे वे सब पर प्रेम रखते हैं।

इस जगतमें सबसे अच्छा आदमी कौन है? सबसे बड़ा आदमी कौन है? सबसे चतुर आदमी कौन है? और सबसे सच्चा भक्त कौन है? आप जानते हैं? इसके जवाबमें सारी दुनियाके धर्मशास्त्र, सारी दुनियाके सब समयके तथा सब जातियोंके महात्मा और हमारे निजके अनुभव हमें कहते हैं कि जो आदमी मनुष्यजातिपर तथा जगतके जीवोंपर सबसे अधिक प्रेम रख सकता है और उसके अनुसार वर्तावें कर सकता है वही आदमी संसारमें सबमें श्रेष्ठ है, वही आदमी पूजनीय है और वही आदमी अपनी आत्माका तथा जगतका भला करनेवाला है। इसलिये जो आदमी सबपर अधिकसे अधिक प्रेम रख सकता है वही आदमी महात्मा कहलाता है और वही आदमी नमूना रूप है तथा अनुकरण करने योग्य है। क्योंकि प्रभुप्रेम बड़ीही अलौकिक वस्तु है, उस प्रेमसे मनुष्य जातिके ऊपरका प्रेम जब बहुत आगे बढ़ जाता है तब जगतके सब जीवोंपर प्रेम जाग्रत होता है। इसलिये जिसमें ऐसा प्रेम आया हो वह आदमी जगतमें बड़ा आदमी हो जाय तो कुछ आश्चर्य नहीं है। क्योंकि प्रेमके लिये महात्मा कहते हैं कि–

सब जीवोंके ऊपरका प्रेम स्वर्ग है, निःस्वार्थ प्रेम आत्माकी विशालता है, उच्च उद्देश्योंसे निकला हुआ कुदरती प्रेम आत्माका विकास है, समझ बूझकर किया हुआ प्रेम स्वर्गमें उड़नेका विमान है, अपने स्वार्थको दबाकर दूसरोंके लिये अनेक प्रकारके कष्ट सहनेवाला प्रेम स्वर्गका परवाना है, हृदयगुफामेंसे प्रेमके झरनेको लगातार बहने देना हृदयकी बड़ाईका सार्टीफिकेट है और सबसे बढ़कर सुगन्धि फैलाने वाला जो इत्र है वह प्रेम है। ऐसा उत्तम प्रेम सन्तोंके हृदयमें रहता है और रोज रोज बढ़ता जाता है, इसलिये वे महात्मा हैं और पूजनीय हैं।

भाइयो ! याद रखना कि कोई खास धर्म पालनेमें महात्मापन नहीं है, गेरुए कपड़ेमें, भगवा वस्त्रमें, सफेद कपड़ेमें या काले कपड़ेमें महात्मापन नहीं है, सिर मुड़ानेमें या दाढ़ी रखनेमें महात्मापन नहीं है, घरबार त्याग देनेमें या भीख मांगनेमें महात्मापन नहीं है, मन्दिरोंमें बैठ जानेमें या गुफामें आसनी लगानेमें महात्मापन नहीं है, शास्त्रोंके कुछ वचन घोख लेनेमें और पढ़ाये तोतेकी तरह दूसरोंके सामने कह देनेमें महात्मापन नहीं है; तिलक, माला, जटा और ऐसे ही दूसरे बाहरी आडम्बरोंमें महात्मापन नहीं है, शरीरको बिना कारण कष्ट देनेमें और व्रत उपवास करनेमें ही महात्मापन नहीं है, बाहरसे झूठा सन्तोष दिखाने और भीतर ही भीतर मनको अनेक घाटोंका पानी पिलानेमें महात्मापन नहीं है, चेलोंसे पुजवानेमें, साष्टाङ्ग दण्डवत् करानेमें और मनुष्योंसे गाड़ी खिचवानेमें महात्मापन नहीं है, मूर्खोंके कान फूंक देनेमें महात्मापन नहीं है, एकाध नया पंथ निकाल कर पीढ़ी दर पीढ़ीके लिये खूंटा गाड़ देनेमें महात्मापन नहीं है, आज कल कुछ

काम न आनेवाली निकम्मी पुरानी क्रियाएं करते रहनेमें महात्मापन नहीं है और उसकी अधिकतामें महात्मापन नहीं है; बल्कि मनुष्यजातिपर प्रेम करनेमें तथा " आत्मवत् सर्व भूतेषु " जैसी मेरी आत्मा है वैसी ही सबकी आत्मा है यह समझ कर इसके अनुसार बर्ताव करनेमें महात्मापन है और जिस कदर यह भावना बढ़ती है उसी कदर महात्मापन बढ़ता जाता है। इस वास्ते जिन्दगीको सार्थक करनेके लिये, अपनी आत्माका कल्याण करनेके लिये और अपने भाइयोंकी मदद करनेके लिये मनुष्यजातिके ऊपर अपने प्रेमको खिलने देना चाहिये और फिर इस प्रेमको बढ़ाते बढ़ाते जगतके सब जीवोंपर फैला देना चाहिये। तभी ईश्वरकी कृपा मिल सकती है और तभी जिन्दगीकी सार्थकता हो सकती है।

यह सब जानने पर बहुतसे सज्जन सोचते हैं कि सबपर प्रेम रखना बहुत अच्छी और बहुत ऊंची बात है और वे वैसा करना भी चाहते हैं परन्तु उनसे ऐसा होता नहीं। इससे वे हैरान रहते हैं और यह जानना चाहते हैं कि हमसे क्यों नहीं होता। इसका कारण महात्मा लोग यह बताते हैं कि

गायके थनमें दूध भी होता है और लहू भी होता है। उसमेंसे बछड़े दूध पीते हैं और ढँठर, मच्छड़, किलनी वगैरह जन्तु लहू पीते हैं इनको उसमेंसे दूध लेना नहीं आता। इसी प्रकार जगतके जितने आदमी हैं तथा और जितने प्राणी हैं और जितनी वस्तुएं हैं उन सबमें कुछ छोटे बड़े अवगुण भी हैं। मतलब यह कि जैसे कोई वस्तु या कोई प्राणी बिना गुणके नहीं है वैसे ही कोई वस्तु या कोई प्राणी बिना अवगुणके नहीं है। दुनियाकी हर एक चीजमें, हर एक मनुष्यमें तथा हर एक जीवमें कुछ न कुछ गुण तथा कुछ न कुछ अवगुण होता ही है। पर जो सन्तजन

हैं वे गायके बछड़ेके समान या दूध दूहनेवाले ग्वालेके समान हैं, इससे उनको खराब आदमियोंसे तथा खराब चीजोंसे भी गुण लेना आता है और जो अज्ञानी आदमी हैं वे अठई, मच्छड़ चींटे, मांटे या खटमलके समान हैं, इससे वे दूधकी जगहसे भी खून ही चूसते हैं अर्थात् गुणवाले विषयोंमें भी वे अवगुण ही ढूंढ़ते हैं। इस कारण वे दुखी होते हैं और गुण ढूंढ़ने वाले ज्ञानी सुखी होते हैं। क्योंकि गुण देखनेसे जिनमें गुण दिखाई देता है उनपर प्रेम होता है, इससे मित्रता बढ़ती है, मदद करनेका मन होता है और जिनके विषयमें हम अच्छा खयाल रखते हैं वे हमारे विषयमें भी अच्छा खयाल रखते हैं। इससे उनको तथा हमको-दोनों पक्षको सुख होता है। इसके विरुद्ध जो आदमी दूसरोंका अवगुण देखा करते हैं उनके मनमें द्वेष पैदा होता है, इससे उनमें वैरका विष बढ़ता जाता है और वे दूसरोंका एक दोष निकालें तो दूसरे उनके तीन दोष ढूंढ़ निकालते हैं। ऐसा होनेसे कलह बढ़ता है और परिणाममें दोष देखनेवालेका तथा जिनका दोष देखा जाता है उनका भी बहुत नुकसान होता है। तो भी हम सब अबतक दूसरोंके दोष देखनेमें ही लगे हुए हैं। इससे हम सबपर जैसा चाहिये वैसा प्रेम नहीं रख सकते। परन्तु जो हरिजन हैं वे दूसरोंका दोष नहीं देखते बल्कि जिनमें बहुत बड़ा दोष होता है उनमें भी जान बूझकर गुण ढूंढ़ते हैं और उनको उनमेंसे भी गुण मिलता है। इससे वे सबपर बहुत प्रेम रख सकते हैं। इसलिये अगर सन्त होना हो, प्रभुके कदम बकदम चलना हो और महात्माओंकी आज्ञा मान कर हृदयकी शान्ति हासिल करना हो और प्रभुप्रेम बढ़ाना हो तो सब आदमियोंमें तथा सब चीजोंमें और सब जीवोंमें गुण ढूंढ़ना चाहिये और उससे लाभ उठाना चाहिये। अगर ऐसा

करें तो हम धर्मके रास्तेमें तेजीसे आगे बढ़ सकते हैं और उसका अनमोल फल चख सकते हैं। इसलिये भाइयो और बहनो! गुणग्राहक बनिये, सारग्राही बनिये और सबके साथ शुभ भावनासे बर्ताव करना सीखिये। यही कल्याणका रास्ता है।

८८–जिसकी देहमें प्रभु बसता होगा वह आदमी कैसे छिपा रहेगा? बहुत जोर लगा कर उसे दबा रखोगे तो भी उससे प्रकाश झलक उठेगा।

शास्त्रका यह सिद्धान्त है कि भक्त छिपे नहीं रह सकते। भक्तोंको दबानेके लिये दुनियामें सब जगह, सब देशोंमें और सब समय प्रयत्न होता है और हुआ करेगा। क्योंकि सच्ची भक्ति मामूली लोगोंसे बरदाश्त नहीं होती, इससे वे ऊंची श्रेणीके भक्तोंका सामना करते हैं। यद्यपि बाहरसे देखने पर हमें यह मालूम होता है कि लोगोंको भक्ति पसन्द है, वे भक्तोंका बखान करते हैं, भक्तोंके पीछे पीछे घूमते हैं भक्तोंकी बातें करते हैं और रोज रोज तथा छोटे मोटे मौकोंपर धर्मकी विधि पालते हैं तो भी यह सब ढीलम ढीलम होता है, यह सब काम चलाऊ होता है, यह सब ऊपरसे दिखानेके लिये होता है, यह सब रिवाज और लोकाचारके कारण होता है, यह सब इज्जत आबरूके लिये होता है और यह सब कुछ लाभ लोभसे किया जाता है। इससे इसमें कुछ बहुत दम नहीं होता। तो भी लोगोंको धर्म रुचता है और जो उनसे जरा आगे बढ़े हों और उनके रस्म

रिवाजके मुताबिक चलते हों उन भक्तोंको वे पसन्द करते हैं। परन्तु जो सच्चे भक्त होते हैं, जो महान भक्त होते हैं, जो भक्त प्रभुके प्यारे होते हैं और जो अनेक प्रकारके बन्धनोंसे छूटे हुए भक्त होते हैं वे भक्त उनको नहीं भाते। क्योंकि ऐसे आगे बढ़े हुवे भक्त गँवार लोगोंकी तरह या उनके रीति रिवाजके अनुसार नहीं चलते, बल्कि वे सत्यके आधार पर चलते हैं, वे शास्त्रके आधार पर चलते हैं, वे अपने अनुभवके आधार पर चलते हैं, वे साहस करके विकट रास्तेमें भी चले जाते हैं और वे अपनी मस्तीके अनुसार ब्रह्मानन्दकी खुमारीमें पड़े रहते हैं। उनका रास्ता व्यवहारी लोगोंके रास्तेसे जुदा होता है, इससे मोहवादी लोग उनकी रीति भांति देखकर घबराते हैं और उनका सामना करते हैं तथा उनको दबा देना चाहते हैं। यह बात कुछ नयी नहीं है और न एक ही देशकी है; बल्कि तुलसी दास, तुकाराम, नरसिंह मेहता, मीराबाई, ईसा, महम्मद, मार्टिन लूथर, मूसा, बुद्ध, शंकराचार्य, ज्ञानदेव, कबीर, राजा राम मोहन राय, दयानन्द सरस्वती, इमर्सन वगैरह अनेक सज्जनोंको लोगोंकी ओरसे नाहक कष्ट सहना पड़ा है। यद्यपि पीछेसे लोग झुक जाते हैं और उनके चेले बन जाते हैं परन्तु इसमें बहुत देर लगती है। जब भक्त सिद्धदशामें आ जाते हैं और चारों ओर उनको सफलता होने लगती है तथा उनमें कोई चमत्कार दिखाई देने लगता है तब लोग झुकने लगते हैं। परन्तु इससे पहले वे उनको हैरान किये बिना नहीं रहते।

बड़े भक्तोंका बेगाने लोग ही हैरान नहीं करते बल्कि पहले उनके घरके आदमी ही उनका सामना करते हैं, बिरादरीके आदमी सामना करते हैं, मित्र सामना करते हैं और धर्म बन्धु तथा धर्मगुरु भी सामना करते हैं और उनको दबा देना

चाहते हैं। परन्तु जिनके शरीरके अन्दर ज्ञानरूपमें, भक्तिरूपमें, तपरूपमें, सेवारूपमें, परमार्थ रूपमें, त्यागरूपमें, कर्त्तव्यरूपमें या प्रेमरूपमें प्रभु पधारे हुए हैं वे आदमी छिपे नहीं रह सकते। उनकी वाणीमें बल होता है, उनकी रीति भांतिमें बल होता है, उनकी भावनाएं जोरावर होती हैं, वे वादमें तैरते रहते हैं, उनके शरीरमें एक प्रकारका तेज होता है, उनकी आंखोंसे बिजलीकी चिनगारियां निकला करती हैं, उनकी हिम्मत जबरदस्त होती है, उनके कामोंमें कुछ खास खूबी होती है, उनके हृदयमें बल होता है, उनके सिद्धान्त विचारने योग्य होते हैं और उनका उत्साह अजीब किस्मका होता है। इससे वे दूसरे आदमियोंसे तुरत ही अलग हो जाते हैं और तुरत पहचान लिये जाते हैं। जिनके अन्दर किसी न किसी रूपमें महान शक्ति आ गयी है या प्रभु पधार चुका है वे आदमी कैसे दबे रह सकते हैं? नहीं रह सकते। इसलिये अगर आप बुद्धिमान आदमी हों तो ऐसे महान मनुष्योंको दबा देनेकी कोशिश मत कीजिये, बल्कि उनको आगे बढ़ने देनेके लिये उनको रास्ता साफ करनेमें मदद कीजिये और उनके कदम बकदम चलनेकी कोशिश कीजिये। इससे उनके साथ साथ आपकी भलाई भी बहुत आसानीसे हो सकती। यह ठीक जानना। इसलिये उगते सूर्यको अन्धेरेसे ढांकनेकी कोशिश मत कीजिये, बल्कि उसको नमन कीजिये। इसीमें कल्याण है।

८९-जिन्दगीका बड़े से बड़ा सुख सची शान्ति भोगनेमें है और मोक्षका फल भी शान्ति ही है। इसलिये हमें सच्ची शान्ति भोगना सीखना चाहिये।

धर्म किसलिये किया जाता है यह आप जानते हैं? शान्ति भोगनेके लिये धर्म किया जाता है। रोजगार धंधा किसलिये किया जाता है? शान्ति भोगनेके लिये। धन किसलिये बटोरा जाता है? शान्ति भोगनेके लिये। ज्ञान किसलिये प्राप्त किया जाता है? शान्ति भोगनेके लिये। इज्जत किसलिये हासिल की जाती है? शान्ति भोगनेके लिये। मनुष्यको हुक्म चलाना किसलिये पसन्द है? शान्ति भोगनेके लिये। गृहस्थाश्रम किसलिये रुचता है? शान्ति भोगनेके लिये। संन्यास किसलिये लिया जाता है? शान्ति भोगनेके लिये। परदेशगमन किसलिये किया जाता है? शान्ति भोगनेके लिये। तरह तरहकी कठिनाइयां किसलिये सही जाती हैं? शान्ति भोगनेके लिये। और धर्मके तथा राज्यके जो बन्धन हैं वे किसलिये हैं? याद रखना कि ये सब विषय शान्ति हासिल करनेके लिये ही हैं। इतना ही नहीं बल्कि मनुष्योंकी जितनी दौड़ है और संसारकी जो कुछ प्रवृत्ति है यह सब शान्ति हासिल करनेके लिये ही है। मनुष्योंकी अज्ञानताके कारण उसका परिणाम भले ही उलटा हो परंतु सबका अन्तिम उद्देश्य शान्ति पाना ही है।

इस प्रकार जाने बेजाने और सच्चे झूठे रास्ते सारा जगत शान्ति पानेके लिये दौड़ रहा है। क्योंकि सच्चा सुख शान्तिमें ही है। शान्ति ही धर्मका फल है, शान्ति ही जिन्दगीकी सार्थकता है तथा शान्ति ही आत्माका स्वरूप है। इसलिये हमें

शान्ति हासिल करना सीखना चाहिये । परंतु शान्तिके ऐसी उत्तम वस्तु होने पर भी और इतनी बड़ी चीज होने पर भी इसके पहचाननेमें बहुत भूल होती है। इससे बहुतेरे आदमी झूठी निवृत्तिके नामपर एक प्रकारके आलसमें शान्ति मान लेते हैं। जैसे—

कितने ही आदमी यह समझते हैं कि किसी किस्मका काम काज न करनेमें शान्ति है; कोई यह समझता है कि सब कुछ अपने मनकी हो और कोई मुझे रोके नहीं इसीमें शान्ति है, कोई यह समझता है कि अच्छा अच्छा खाने पीनेको मिले, जोमें आये जय सो रहनेको मिले और मिहनत न करनी पड़े इसका नाम शान्ति है; कोई यह समझता है कि तीर्थोंमें रहने और देवताओंकी मूर्तियां पूजनेमें शान्ति है; कोई यह समझता है कि घरबार छोड़कर जंगलों या पहाड़ोंमें चले जाने और एकांत गुफामें बैठनेमें शान्ति है; कोई यह समझता है कि मनमाना विषय भोगनेको मिले इसमें शान्ति है—जैसे जो चीज खाना चाहें वह खानेको मिले, मौज शौकके लिये जो सामान चाहें वह मिले और नाच रंग गाना बजाना, नाटक पार्टी तथा मन चाहे दोस्त मिलें तो शान्ति भोगी जा सकती है, कोई यह समझता है कि खूब धन मिल जाय तो शान्ति हो सकती है; कोई समझता है कि मन लायक बहुतसे लड़के हों तो शान्ति भोगी जा सकती है, कोई समझता है कि बुढ़ापेमें शान्ति मिल सकती है; कोई समझता है कि जब कोई महात्मा मिल जाय तब शान्ति भोगी जा सकती है, कोई समझता है कि जब जगतका जंजाल न उठाना पड़े तब शान्ति मिल सकती है; कोई समझता है कि किसी देवी देवताकी सहायता मिल जाय तब शान्ति भोगी जा सकती है; कोई यह समझता है कि ब्याहकी कुंडलीमें जब मनलायक स्त्री मिल जाय तब

शान्ति भोगी जा सकती है, कोई यह समझता है कि जब सिर पर कोई कहनेवाला न हो और स्वतंत्रतासे चलें तब शान्ति भोगी जा सकती है; कोई यह समझता है कि जब बहुत बड़ी उमर मिले और शरीर नीरोग रहे तब शान्ति भोगी जा सकती है और कोई यह कहता है कि शान्ति कहीं लूटमें नहीं है, यह तो उसीको मिल सकती है जिसपर ईश्वरकी कृपा हो।

इस प्रकार शान्तिके लिये अनेक प्रकारके विचार लोगोंमें चलते हैं; परन्तु ये सब विचार अधूरे हैं, ये सब विचार स्वार्थसे भरे हुए हैं, ये सब विचार संयोगके आधार पर हैं, ये सब विचार ढीलेढाले हैं और ये सब विचार बाहरी हैं। सच्ची शान्तिका स्वरूप तो कुछ और ही है। इसलिये अगर हमें सच्ची शान्ति दरकार हो तो पहले उसका सच्चा स्वरूप समझना चाहिये। इसके लिये महात्मा लोग कहते हैं कि—

भाइयो! शान्ति किसी खास जगहमें नहीं है, शान्ति किसी खास दशामें नहीं है, शान्ति किसी खास उमरमें नहीं है, शान्ति किसी खास पुस्तकमें नहीं है, शान्ति किसी एक ही आदमीमें या एक ही मन्दिरमें नहीं है, शान्ति केवल धनमें या केवल अधिकारमें नहीं है, शान्ति केवल मनमानी घिरजामीमें नहीं है और कुछ बाहरके साधनों पर लटकी हुई नहीं है बल्कि जो सच्ची शान्ति है वह तो सर्वत्र है। उस शान्तिको देश कालका परदा नहीं छिपाता, उस शान्तिको बाहरकी मदद दरकार नहीं है, वह शान्ति अनेक प्रकारके जंजालमें भी होती है और वह शान्ति बड़ी बड़ी आफतोंके अन्दर भी होती है; क्योंकि जो सच्ची शान्ति है वह जगतके बाहरी विषयोंमें नहीं है, बल्कि वह शान्ति स्थिर बुद्धिमें है, वह शान्ति निग्रह किये हुए मनमें है, वह शान्ति ऊंचे दरजेके ज्ञानमें है, वह शान्ति

शुद्ध चारित्रमें है, वह शान्ति ऊंचे उद्देश्यको ध्यानमें रखकर काम करनेमें है और वह शान्ति हृदयकी तहमें है। यह शान्ति बाहरी सुभीते या असुभीतेके आधारपर नहीं रहती; बल्कि जो सच्ची शान्ति है वह सब देशोंमें, सब समय और सब दशामें सर्वत्र मौजूद है। इससे जिनको सच्ची शान्ति भोगना आती है वे महात्मा तो श्मशानमें भी शान्ति भोग सकते हैं, कैदखानेमें भी शान्ति भोग सकते हैं, हित मित्रके मरनेके वक्त भी शान्ति भोग सकते हैं, अपने शरीरमें भयकर बीमारी लगी हो उस समय भी शान्ति भोग सकते हैं, कोई भारी आफत आ पड़ी हो तब भी शान्ति भोग सकते हैं, कोई भारी दुर्घटना हो जाय और हलचल मच जाय तब भी शान्ति भोग सकते हैं, जब अत्यन्त गरीबी आ जाय तब भी शान्ति रख सकते हैं, जब बहुत खातिर बात हो और बेहद लाभ हो तब भी शान्ति रख सकते हैं। जब घरमें हों तब भी शान्ति, जब खूब अच्छा खानेको मिले तब भी शान्ति, जब भूखों मरना पड़े तब भी शान्ति, जब मन्दिरोंमें प्रार्थना करते हों तब भी शान्ति, जब कुछ झंझटके काम काज करते हों तब भी शान्ति जब सुन्दर फूलोंकी शय्यापर सोये हों तब भी शान्ति, जब जागरण होता हो तब भी शान्ति, जब कोई फूल हार पहनाता हो तब भी शान्ति, जब कोई अपमान करके कड़वे वचन कहता हो तब भी शान्ति, जब सब प्रकारका सुभीता हो तब भी शान्ति और जब सब प्रकारका असुभीता हो तब भी शान्ति। इस प्रकार हर हालतमें जो शान्ति भोग सकें वेही महात्मा कहलाते हैं और जब ऐसी शान्ति भोगना आवे तभी जिन्दगीकी सार्थकता होती है, जब इस प्रकार हर अवस्थामें हर मौकेपर और हर जगह शान्ति मिले तभी सच्ची शान्ति कहलाती है। बहुत सुभीता हो तब थोड़ी देरके लिये शान्ति मिले

और जहां जरा अड़चल आवे कि शान्ति उड़ जाय तो वह सच्ची शान्ति नहीं कहलाती । इसलिये भाइयो और बहनो ! अगर जिन्दगी सार्थक करना हो तो किसी अवस्थामें या किसी संयोगमें नाश न होनेवाली सच्ची शान्ति हासिल करना सीखिये । सच्ची शान्ति हासिल करना सीखिये ।

९०-याद रखना कि दुःख कुछ खराब नहीं है बल्कि वह चेतानेवाला है और होशियार बनानेवाला है ।

दुःखका स्वरूप बड़ा विकराल है, इससे दुःख किसी को पसन्द नहीं आता। क्योंकि अपनी सोची न हो इसका नाम दुःख है, अपना सुबीता न हो इसका नाम दुःख है ; अपने स्वभावके अनुसार न बरता जाय इसका नाम दुःख है ; अपनी आबरूको धक्का लगे इसका नाम दुःख है ; अपनी प्रतिष्ठा न रहे इसका नाम दुःख है ; अपनी प्रकृतिके विरुद्ध चलना पड़े इसका नाम दुःख है : अपनी इच्छानुसार काम काज या रोजगार धन्धा करनेको न मिले इसका नाम दुःख है , अपने आसरे पड़े हुए कुटुम्बियोंकी मदद न की जा सके इसका नाम दुःख है; स्नेहियोंमेंसे कोई कृतघ्न निकले इसका नाम दुःख है : मानसिक या शारीरिक वेदना भोगना पड़े इसका नाम दुःख है ; समाज या धर्म या राज्यके जो नियम अपने पसन्दके न हों उन नियमोंमें पड़े रहना पड़े और उनका कुछ भी सुधार न किया जा सके इसका नाम दुःख है ; कोई दुर्घटना हो जाय और उससे शरीर, मन, पैसे या इज्जतका नुकसान उठाना पड़े इसका नाम दुःख है ; अकाल, प्लेग, हैजा,

भूकम्प, आंधी, समुद्री तूफान वगैरह कुदरती आफतें आ पड़े इसका नाम दुःख है, मनमें तरह तरहके वहम घुस गये हों और उनके कारण व्यर्थ हैरान होना पड़े इसका नाम दुःख है और जो वस्तु असलमें दुःखदायक न हो बल्कि सुखदायक हो तोभी अज्ञानताके कारण, पुराने संस्कारोंके कारण तथा पड़ी हुई टेवके कारण दुःख माना करें इसका नाम दुःख है तथा छोटे छोटे दुःखोंको कल्पना कर करके बहुत बढ़ा देने और भविष्यके दुःख याद करके उनसे डरते तथा बीते हुए दुःखोंको स्मरण कर अफसोस किया करनेका नाम दुःख है। ऐसे ऐसे छोटे बड़े अनेक प्रकारके दुःख होते हैं और इन दुःखोंके विचारोंमें दुःखों के दाग अपने हृदयपर डालनेमें तथा दुःखकी भावनाएं बढ़ानेमें ही बहुत आदमी अपनी जिन्दगी गँवा देते हैं। क्योंकि वे यह नहीं समझते कि इस जगतमें जितना दुःख है उससे कहीं अधिक सुख है, यहां तक कि अपनी जिन्दगीमें ही जितना दुःख है उससे कहीं अधिक उसमें सुख है। जैसे-ऐसा दिन तो कोई ही होता है कि जब अच्छा खानेको न मिले परन्तु ऐसे दिन बहुत होते हैं कि जब अच्छा अच्छा खानेको मिलता है, ऐसा वक्त तो शायद ही कभी आता है कि जब हमें रहने सोनेको न मिले परन्तु मीठी नींद रोज मिलती है ऐसा तो कभी कभी होता है कि जब पहननेको कपड़ा न मिले परन्तु ऐसे दिन बहुत होते हैं कि जब अच्छे अच्छे कपड़े पहननेको मिलते हैं, ऐसा मौका शायद ही कभी होता है कि जब अपमान हो परन्तु ऐसे मौके बार बार आते हैं कि जब आदर होता है, ऐसी रीति, रिवाज, नियम या कानून तो कोई ही कोई होता है कि पसन्द लायक न हो परन्तु ऐसे नियम तथा कानून बहुत होते हैं कि जो पसन्द लायक हैं और जिनसे फायदा होता है ऐसा आदमी तो कोई

ही कोई होता है कि जिससे हमारी न बने परन्तु ऐसे बहुत आदमी हैं जिनसे हमारी बनती है ; ऐसे दिन थोड़े ही होते हैं कि जब हम बीमार हों परन्तु ऐसे दिन बहुत होते हैं कि जब हम तन्दुरुस्त रहते हैं और याद रखना कि हमारा नुकसान करानेवाली घटनाएं हमारी जिन्दगीमें जितनी होती हैं उनसे कहीं अधिक हमारा फायदा करानेवाली घटनाएं होती हैं। तिसपर भी हम सब " दुखिया हैं " का रोना हमेशा रोया करते हैं और दुःखको ही पहाड़ माना करते हैं तथा यह समझा करते हैं कि दुःखके कारण ही हम आगे नहीं बढ़ सकते। परन्तु महात्मा लोग कहते हैं कि दुःख कुछ हमेशा खराब नहीं है, अगर दुःख न हो तो कितनी ही वार हमारी जिन्दगी व्यर्थ चली जाय। ऐसा न होने देनेके लिये दुःख है और वह हमें चेतानेवाला तथा होशियार बनानेवाला है। इसलिये दुःख दुःख करके दुःखसे दब मत जाना, दुःखसे अफसोस मत किया करना, दुःखके बहुत विचार मत किया करना और दुःखको बहुत बढ़ा चढ़ा मत देना। बल्कि दुःखसे भी सुख पानेकी कोई कुंजी निकालना चाहिये, दुःखसे भी आगे बढ़नेका कुछ उपाय ढूंढ़ निकालना चाहिये, दुःखमें भी ईश्वरका उपकार माननेका मौका लेना चाहिये, दुःखमें भी कुदरतका कुछ न कुछ ऊंचा उद्देश्य है उसे समझना सीखना चाहिये, दुःखकी कठोरतामें भी कुछ कोमलता है उसका अनुभव लेना सीखना चाहिये, दुःखके जहरमें भी सुखका अमृत मिला हुआ है उसे अलग कर उससे लाभ उठाना सीखना चाहिये और हजारों प्रकारके सुखोंमें जो ज्ञान नहीं मिल सकता या जो अनुभव नहीं मिल सकता वह ज्ञान और वह अनुभव भी थोड़े दुःखसे मिल सकता है, इसलिये उसे लेनेकी कोशिश करना चाहिये। यह खूब अच्छी

तरह समझ लेना कि दुःख देनेके लिये ही दुःख नहीं आता बल्कि जीवको चेतानेके लिये दुःख आता है, मनको मजबूत बनानेके लिये दुःख आता है, बुद्धिको धक्का देकर विशाल बनानेके लिये दुःख आता है, हित मित्रोंकी परीक्षा करा देनेके लिये दुःख आता है, अपने हृदयकी शान्तिको माप देनेके लिये दुःख आता है तथा धर्मका बल देनेके लिये और ईश्वरके नजदीक ले जानेके लिये दुःख आता है। इसीसे महात्मा कहते हैं कि दुःख चेतानेवाला है और दुःख न हो तो हमारी बहुत सी जिन्दगी व्यर्थ चली जाय। इसलिये यह खूब समझ लीजिये कि जो दुःख है वह कुछ हमेशा खराब नहीं है, कभी किसी वक्त और किसी संयोग पर वह खराब ही वह बात दूसरी है परन्तु आम तौरपर दुःख चेतानेवाला है और आगे बढ़ानेवाला है। ऐसे दुःखसे भी कुछ सार लेना सीखिये और दुःखसे भी सुख हासिल करना सीखिये। ऐसे कर सकें तभी हमारी खूबी है और तभी कहा जायगा कि हमने सच्चा धर्म पाला तथा हम अपना समजस रख सके। इसलिये दुःखसे दब मत जाना, दुःखसे अफसोस मत करते रहना और दुःखको बहुत बड़ा मत मानते रहना, बल्कि उसको चेतानेवाला समझ कर उससे सार लेनेकी कोशिश करना। सार लेनेकी कोशिश करना।

९१–अपनी उन्नति करनेके लिये पहले हमें यह जानना चाहिये कि कुदरतका स्वभाव कैसा है, कुदरतको क्या पसन्द है और कुदरतकी परीक्षा कैसी है। इसका खुलासा।

जगतमें खूब आदमियोंकी स्वभावतः यह इच्छा होती है कि

हमारा भला हो; इतना ही नहीं बल्कि इस जगतमें जो दौड़ धूप हो रही है, जो प्रवृत्ति हो रही है और जो कुछ उथल पुथल हो रहा है वह सब अपनी अपनी उन्नतिके लिये है। तिसपर भी हम देखते हैं कि असलमें बहुत ही थोड़े आदमी आगे बढ़ते हैं, बाकी सब जहांके तहां रह जाते हैं या बहुत मिहनत करने पर जरा सा फायदा उठाते हैं और कितने ही तो उलटे गिर जाते हैं। ऐसा न हो और तेजीसे आगे बढ़ा जा सके इसके लिये हमें कुदरतका स्वभाव, उसकी पसन्द और उसकी परीक्षाकी रीति जानना चाहिये। क्योंकि हम सिर्फ अपने मनके अनुसार चलनेसे आगे नहीं बढ़ सकते बल्कि कुदरतके नियमके अनुसार चलनेसे ही आगे बढ़ सकते हैं। जिस कदर हम कुदरतके विरुद्ध चलते हैं उसी कदर हमारी और खराबी होती है। इसलिये हमें कुदरतकी पसन्द तथा उसके नियम जान लेनेकी कोशिश करनी चाहिये।

कुदरतका स्वभाव कैसा है? कुदरतके भेद समझनेवाले विद्वान् कहते हैं कि कुदरतका स्वभाव बड़ा कड़ा है। उसकी पसन्द बहुत ही ऊंचे दरजेकी है और उसकी परीक्षा बड़ी करारी है। जैसे तैसे चला लेना कुदरतको नहीं भाता। उसको सब अच्छा ही अच्छा और नियम पसन्द है। गपड़ शपड़ कुदरतको नहीं रुचती। ऊपरी आडम्बर कुदरतको पसन्द नहीं। ढीलम ढीलम कुदरतको नहीं भाता। कमजोरीको कुदरत नहीं निबाह सकती। कुदरत विकारोंके वश नहीं होती। कुदरत किसी पर दया नहीं करती और न किसी पर तरस खाती या न किसीसे खुद दया मांगती। कुदरत कभी अपने नियम नहीं बदलती। कुदरत कभी हाय हायकी नहीं चलने देती। कुदरत कभी बाहरके भ्रममें नहीं रहती। कुदरतमें कभी अकस्मात् नहीं होता। हमें जो बात

'अकस्मात् या अचानक होगयी मालूम देती है वह कुदरतके किसी न किसी नियमसे ही होती है। कुदरत किसी देशका किसी समाजका या किसी व्यक्तिका पक्षपात नहीं करती, बल्कि बहुत कड़ाईसे अपना कानून चलाये जाती है।

कुदरत ऐसी कड़ी है किन्तु उसका दूसरा पहलू देखनेसे ज्ञात पड़ता है कि वह नेक भी बड़ी है। क्योंकि जो आदमी या जो चीज उसके नियम पर चलती है उसे वह बहुत ही आगे बढ़ा देती है। उसको किसीका ज़रा भी पक्षपात नहीं है। हर एकके लिये उसका दरवाज़ा हमेशा खुला पड़ा है और जो उसके भीतर जा सकता है उसको वह अपने यहांके अच्छे अच्छे रत्न लेने देती है। परन्तु इसमें जो मूल बात है वह यही है कि उसके नियम पालना चाहिये, उसकी परीक्षामें पास होना चाहिये और उसके भीतर गहरे उतर जाना चाहिये। अगर ऐसा करना आवे तो कुदरतके पास इतना बड़ा खजाना भरा है ऐसा अनमोल खजाना भरा है कि जिसकी हद नहीं है और न उसका वर्णन करने लायक शब्द हैं। ऐसी ऐसी चीजें उससे बहुत आसानीसे मिल जाती हैं। जिनसे सिर्फ हमारा नहीं बल्कि हमारे साथ साथ जगतके दूसरे अनेक जीवोंका भी अनेक प्रकारका लाभ हो सकता है। इसलिये हमें कुदरतके नियम जानना चाहिये और उसकी परीक्षामें पास होनेकी कोशिश करना चाहिये। याद रखना कि कुदरतकी पसन्द कड़ीसे कड़ी है। ऊंचीसे ऊंची फलाप ही उसके पास निबह सकती हैं, ऊँचेसे ऊंचे तथा अच्छेसे अच्छे विचार ही उसके अन्दर टिक सकते हैं। बाकी सब विचार तथा वस्तुएं आपसे आप कुछ समयके अन्दर नष्ट हो जाती हैं। नीति और धर्मके विषयमें भी यही समझ लेना कि जिसकी नीति उचीसे ऊंची है और जिसका धर्म कुदरतके

नियमके अनुसार होता है वही आदमी तथा वही प्रजा दुनियामें सफलता पा सकती है। परन्तु जो नीति शिथिल होती है और जो धर्म बाहरी साधनों पर होता है वह नीति तथा वह धर्म कुदरतमें बहुत समय तक नहीं टिक सकते। इसलिये हमें जो काम करना चाहिये खूब अच्छी तरह करना चाहिये, ऊंचेसे ऊंचे उद्देश्यसे करना चाहिये और बहुत बारीकीसे तथा बहुत ही सावधानीसे करना चाहिये और इस बातका खूब खयाल रखना चाहिये कि उसमें किसी तरहकी भूल न रह जाय।

हम जो जो कलाएं या हुनर सीखें उनकी जड़ तक पहुंचनेकी कोशिश करनी चाहिये, कलाओंके भेद जानना चाहिये और उसमें और खूबी कैसे आ सकती है इसकी तजवीज करनी चाहिये। क्योंकि हम जो कुछ करते हैं या जो कुछ जानते हैं वह बहुत थोड़ा है, परन्तु हम जो कुछ नहीं जानते या नहीं करते वह अगाध है, उसकी तो थाह ही नहीं है, उसका तो अन्त ही नहीं है। इससे हम जितना करते हैं उसके सिवा और कुछ करनेको रह जाता है और उसे भी करें तो उसके बाद और कुछ अच्छा करनेको रह जाता है। उसको भी करें तो उसके बाद और भी कुछ निकल आता है। इस तरह हम अनन्तकाल तक आगे बढ़ा करें तौभी उसका अन्त नहीं आता। इतना अधिक तत्त्व कुदरतमें भरा हुआ है। इसलिये जैसे बने वैसे हमें उससे अधिक तत्त्व लेनेकी कोशिश करनी चाहिये। याद रहे कि ज्यों ज्यों हम अधिक कोशिश करते जाते हैं और गहरे उतरते जाते हैं त्यों त्यों कुदरत हमें अधिक और अच्छा फल देती जाती है। इतना ही नहीं बल्कि ज्यों ज्यों उसके भीतर उतरते हैं त्यों त्यों पहलेसे दस दस गुना फल देती जाती है और तिसपर भी ऐसा बर्ताव हमारे साथ करती है कि हमें बहुत कम

मिहनत करनी पड़े। कुदरतका स्वभाव नारियलके जैसा है। नारियलके ऊपरका मुच्छा बड़ा मोटा और कड़ा होता है, फिर उसके नीचेकी कली भी बहुत ही सख्त होती है और ऐसी होती है कि सिरसे टकराय तो सिर फोड़ डाले। तोभी उस कलीको पत्थरपर पटकें तो वह तुरत टूट जाती है और उसके टुकड़े टुकड़े हो जाते हैं। इसके बाद उसमेंसे जो गिरी निकलती है उसका छिलका भी देखनेमें जरा भद्दा और कम खूबसूरत होता है परन्तु उसमें जो कोमल गिरी होती है और उसमें जो मीठा पानी होता है उसकी खूबी कुछ और ही होती है। इसी तरह कुदरत भी बाहरसे बहुत सख्त है परन्तु भीतरसे बहुत अच्छी है, बहुत बड़ी है और बड़ी खूबीवाली है। इसलिये अगर आगे बढ़ना हो तो जैसे बने वैसे उसके अन्दर उतरनेकी कोशिश कीजिये।

कुदरतकी पसन्द बहुत ऊँचे दरजेकी है और उसकी परीक्षा भी बड़ी करारी है। इसलिये याद रखिये कि आपके जिन कामोंसे या जिन विचारोंसे आपके मित्र या व्यवहारी साधारण आदमी खुश हो जाते हैं उन कामों और कलाओंसे या उन विचारोंसे कुदरत खुश होनेवाली नहीं है। और जब तक कुदरतको पसन्द न आवे तब तक वह आपके विचारोंको, आपके कामोंको या आपकी कलाओंको जगतके अन्दर देर तक ठहरने नहीं देगी। इसलिये अगर अपने कामको इस जगतमें मुद्दत तक रखना चाहते हैं तो उसको जैसे बने वैसे बहुत अच्छा बनानेका ध्यान रखिये और अपनी इच्छाओंको कुदरतके पसन्द लायक बनाइये तब वे टिके सकेंगी। लोगोंके बखाननेसे कुछ नहीं टिकेगा, टिकेगा वही जो कुदरतको पसन्द होगा।

इसी प्रकार नीति, धर्म तथा दर्शन और विज्ञानकी पुस्तकोंमें

भी जो अन्तिमसे अन्तिम विषय होंगे, जो कुदरतके नियमके अनुसार बातें होंगी और जो सब देशोंमें तथा सब समय काम आने लायक विषय होंगे और तिसपर भी जो सहजसे सहज होंगे तथा व्यवहारमें उपयोगी होंगे वेही टिक सकेंगे और बाकी के सब आपसे आप धीरे धीरे नष्ट हो जायंगे ; क्योंकि किसी ढीली ढाली, कमजोर या सशयी वस्तुको कुदरत टिकने नहीं देती। इसलिये अगर सचमुच आगे बढ़ना हो, फुर्तीसे आगे बढ़ना हो और बहुत समय तक टिकने योग्य काम करना हो तो जैसे बने वैसे खूब गहरे उतर कर, कुदरतके भेद समझ कर और कुदरतको मददमें लेकर काम कीजिये। तब आपके विचार, आपकी कलाए, आपके काम तथा आपके धर्म आपको बहुत बड़ी सफलता दिला सकेंगे। इसवास्ते थोड़े बहुतसे, मामूली-पनसे, कामचलाऊपनसे और गुजारे भरके साधनसे ही सन्तुष्ट मत हो जाइये, बल्कि खूब गहरे उतरकर कुदरतकी कड़ी परीक्षामें भी पास होजाने लायक काम कीजिये। तब परम कृपालु परमात्मा आपको जरूर विजय देगा। इसलिये अच्छा काम अच्छी तरह करनेकी कोशिश कीजिये।

९२—धर्म पालनेमें तथा आचार रखनेमें आहार भी बहुत उपयोगी है; लेकिन हम यह बात भूल जाते हैं। इसलिये अब आहारके विषयमें ध्यान देनेकी कृपा कीजिये।

बहुत आदमियोंको धर्म पालना बहुत पसन्द है तोभी वे जैसा चाहिये वैसा धर्म नहीं पाल सकते।' बहुत आदमियोंको

आचार रखना बहुत पसन्द है तौभी वे सदाचारी नहीं रह सकते। इसी तरह सब आदमियोंको तन्दुरस्त रहना बहुत पसन्द है तोभी बहुत आदमी तन्दुरुस्त नहीं रह सकते। इसका क्या कारण है ? इसके कई कारण है पर उन सबमें मुख्य कारण यह है कि खाने पीनेके विषयमें जो बेपरवा होते हैं और जो इस विषयके नियमोंको नहीं जानते वे बहुत इच्छा रहने पर भी आचार, धर्म या आरोग्यता नहीं रख सकते। क्योंकि वैद्यकका तथा महात्माओंका और शास्त्रका यह सिद्धान्त है कि खुराकका असर शरीर पर तथा मन पर तुरत ही होता है। अगर अच्छी खुराक खायी जाय तो उसका अच्छा असर होता है और खराब खुराक खायी जाय तो उसका खराब असर होता है। इसलिये खाने पीनेके विषयमें हरिजनोंको बहुत ख्याल रखना चाहिये।

खुराकके मुख्य तीन प्रकार हैं। इसके लिये श्रीकृष्ण भगवानने श्रीमद्भगवद्गीतामें कहा है कि—

आयुः सत्व बलारोग्य सुखप्रीति विवर्धना'।
रस्याः स्निग्धाः स्थिरा हृद्या आहाराः सात्विक प्रियाः॥
अ० १७ श्लो० ८

जो सत्वगुणी मनुष्य होते हैं उनको आयु बढ़ानेवाली, शरीरमें अच्छे तत्व बढ़ानेवाली, बल बढ़ानेवाली, आरोग्यता बढ़ानेवाली, सुख बढ़ानेवाली, प्रेम बढ़ानेवाली, रसदार तर, बहुत देर तक ठहरनेवाली और मनको रुचनेलायक खुराक प्यारी लगती है।

सत्वगुणी आदमियोंको इस किस्मका खाना पीना रुचता है। जिन आदमियोंको आगे बढ़ना हो तथा अच्छी तरह धर्म पालना हो उनको अपनेमें सत्व गुण बढ़ानेका उपाय करना चाहिये।

सत्वगुण बढानेके लिये सत्वगुणी वस्तुओंका सेवन करना चाहिये। सिर्फ इतना ही नहीं कि सत्वगुणी चीजें खाना चाहिये बल्कि सत्वगुणी वस्तुएं खाते हुए मिताहार करना चाहिये।

मिताहार माने क्या?

* मिताहार माने नियमसे खाना और जरा कम खाना। यह मिताहारका मामूली अर्थ है। परन्तु इसके विशेष अर्थमें बहुत बातें आ जाती हैं। जैसे मिताहार माने नियमसे खाना ही नहीं बल्कि ऐसी खुराक खाना जो अपनी कमाईकी हो, सत्वगुणी हो, ईमानदारीसे मिली हो और उसमेंसे अपने भाई बन्दोंके लिये हिस्सा निकाला हुआ हो। जब ठीक ठीक भूख लगी हो तभी खाना चाहिये, अपनी जठराग्निके अनुसार खाना चाहिये, जैसे बने वैसे सादी खुराक खाना चाहिये, अपने शरीरके मुआफिक आनेवाली खुराक खाना चाहिये, ऐसी खुराक खाना चाहिये जो अपने शुद्ध अन्तःकरणके विचारोंके विरुद्ध न हो और ऐसी उत्तम जो खुराक हो वह ईश्वरके अर्पण की हुई हो। तभी मिताहर कहलाता है। इतना सब हालके जमानेमें सब लोगोंसे होना तो दूर रहा, इतना भी कहां होता है कि जब भूख लगे तभी खायं और बहुत ठूस ठूसकर न खायं!

सत्वगुणी खुराक खाना और उसमें भी मिताहार रखना हरिजनोंका मुख्य काम है। क्योंकि अगर इतना खयाल न रहे तो खुराकके असरसे शरीर तथा मन बिगड़ते हैं, इससे ठीक ठीक अध्ययन नहीं हो सकता और ईश्वरमें चित्त नहीं लगता। इसलिये पहले खाने पीनेके विषयमें ध्यान रखना चाहिये।

दूसरे दरजेके जो लोग हैं वे रजोगुणी कहलाते हैं। उनको कैसी खुराक रुचती है? इसके लिये प्रभुने कहा है कि—

* 'स्त्रियोंका स्वर्ग" से

कट्वम्ललवणात्युष्णतीक्ष्णरूक्षविदाहिनः ।
आहारा राजसस्येष्टा दुःखशोकामयप्रदाः ॥
म० १७ श्लो० ९

खाने पीनेकी जो चीजें बहुत तीखी हों, खट्टी हों, खारी हों, बहुत गरम हों, गरम गुणवाली हों, रूखी हों, जलन पैदा करने वाली हों और रोग पैदा करनेवाली हों वे चीजें रजोगुणी आदमियोंको रुचती हैं।

जो निचले दरजेके आदमी होते हैं उनका खाना पीना कैसा होता है ? इसको बताते हुए प्रभु कहता है कि—

यातयामं गतरसं पूति पर्युषितं च यत् ।
उच्छिष्टमपि चामेध्यं भोजनं तामसप्रियम् ॥
म० १७ श्लो० १०

बासी, बेस्वादका, बदबूदार, सड़ा हुआ, जूठा और अपवित्र भोजन तमोगुणी मनुष्योंको रुचता है।

इस प्रकार भोजनसे मनुष्योंके गुण दोष तथा स्वभाव मालूम हो जाते हैं। क्योंकि भोजनका शरीर तथा मनपर तुरत ही असर होता है । इसलिये अगर धर्म पालना हो, शरीर सुधारना हो, लम्बी आयु भोगना हो और ऊँचे विचार समझने योग्य सूक्ष्म बुद्धि दरकार हो तो खाने पीनेके विषयमें नियमसे रहना सीखना चाहिये। इस विषयमें एक महात्मा कहते हैं कि—

शरीरमें जितने तरहके रोग होते हैं तथा मनमें जितने तरहके विकार होते हैं उनमें सैकड़े पीछे निन्नानवे खाने पीने में बेपरवाही रखनेसे ही होते हैं, खाने पीनेके नियम न समझनेसे ही होते हैं, मनुष्य अपनी स्वादवृत्तिको कृत्रिम बना डालते हैं इससे होते हैं, मनुष्योंमें जरूरतसे ज्यादा खा लेनेकी इच्छा बढ़ गयी है और जम गयी है इससे होते हैं, मनुष्योंमें खानेके बारेमें

झूठे विचार फैल गये हैं इससे रोग तथा विकार होते हैं और हमारा सायंस, हमारा वैद्यक तथा हमारा धर्मज्ञान अभी एकदम अधूरा है, इस कारणसे हम खाने पीनेके ठीक ठीक नियम नहीं जानते जिससे हमारे शरीरमें रोग तथा हमारे मनमें विकार होते हैं। पर जब हम खूब अच्छी तरह यह समझ लेंगे कि जिन्दगी बढ़ाना या घटाना मुख्य करके खुराक पर मुनहसर है, रोग पैदा न होनेका मुख्य आधार खुराक है और मनमें बुरे विकार न होनेका मुख्य आधार खुराक है और यह समझकर जब हमें प्रकृतिके अनुकूल खुराक लेना आवेगा तब किसी तरहका रोग या किसी प्रकारका विकार नहीं हो सकेगा। क्योंकि खाने पीनेकी जो जो चीजें हैं उन सबमें अलग अलग स्वाद है और हर एक स्वादमें अलग अलग किस्मके रोग तथा अलग अलग किस्मके विकार मेटनेकी शक्ति है। खुराककी जो वस्तुएं हैं उनमें जुदे जुदे गुण हैं। वे गुण अलग अलग किस्मके रोगों तथा विकारोंको मिटा सकते हैं। खुराककी हर एक चीजमें अलग अलग किस्मकी शक्ति है, वह शक्ति अलग अलग किस्मके रोगों तथा विकारोंको मिटा सकती है। जैसे खाने पीनेकी चीजोंमें ऐसा गुण और ऐसी सामर्थ्य है वैसे ही हमारे शरीरके भीतरकी रचना भी इस किस्मकी हुई है कि उसमें जिस किस्मके रसकी जरूरत पड़ती है उस किस्मका रस वह कुदरती तौरपर मांगता है। और जो चीज ज्यादा चली जाती है उसको धक्का मारकर शरीरसे बाहर निकाल देनेके लिये कई तरहके साधन शरीरमें हैं। इसके सिवा जो वस्तु शरीर या मनके मुआफिक न आवे उसका पता बतादेनेवाले यंत्र उसमें मौजूद हैं और जिन चीजोंकी उसे जरूरत हो उनकी फरमाइश करनेवाले साधन भी उसमें मौजूद हैं।

शरीरकी तथा खाने पीनेकी चीजोंकी ऐसी बनावट होनेके कारण अगर हमें उनसे ठीक ठीक काम लेना आवे तो किसी तरहका रोग शरीरमें नहीं हो सकता और किसी प्रकारका विकार मनमें नहीं आ सकता। परन्तु हम इन सब नियमोंको नहीं जानते इसीसे हम रोग तथा विकारके गुलाम हैं और इसीसे बेमौत मर जाते हैं तथा मोक्ष पानेका मौका खो देते हैं। याद रखना कि ये सब मनगढ़न्त बातें नहीं हैं; बल्कि श्रीमद्भगवद्गीतामें श्रीकृष्ण भगवान्‌ने कहा है कि अगर मोक्ष पाना हो तो पूर्णता करनेवाला योग साधना चाहिये। और यह योग साधनेके लिये "युक्ताहार" शब्दको खूब ध्यानमें रखना चाहिये तथा युक्त शब्दका असली अर्थ समझना चाहिये। शास्त्रमें कहा है कि युक्त आहार माने सत्व गुणी आहार, युक्त आहार माने प्रकृतिके मुआफिक माने लायक आहार, युक्त आहार माने अपनी दशा तथा देशकालके अनुसार आहार, युक्त आहार माने जरूरत भर ही खाना तथा जरूरतके वक्त ही खाना, युक्त आहार माने शरीरमें कोई रस बढ़ा हो या घटा हो उसको नियमित कर देनेवाला आहार, युक्त आहार माने ईमानदारी तथा धर्मसे मिला हुआ आहार और युक्त आहार माने मोक्षके मार्गमें मदद करनेवाला आहार। इस किस्मका जो खाना पीना हो वह युक्त आहार कहलाता है और जब ऐसा युक्त आहार हो तभी ईश्वरको पानेका योग साधा जा सकता है। ऐसे युक्त आहार को छोड़कर बहुत उपवास करके या खूब खाकर योग नहीं साधा जा सकता। इसलिये अपनी प्रकृतिके मुआफिक माने लायक उचित आहार ढूँढ़ लेना चाहिये और इसके ढूंढ़नेमें कोई कठिनाई नहीं है। क्योंकि वैद्यक शास्त्रमें तथा धर्मशास्त्रमें जगह जगह इसके बारेमें

साफ साफ लिख दिया है और उससे भी अधिक उपयोगी अपने अन्तःकरणकी प्रेरणाएं और निजके अनुभव हो सकते हैं। जरा गौरसे विचार किया जाय तो हरिजन इस विषयको बहुत सहजमें समझ सकते है। इसलिये अगर धर्मके रास्तेमें आगे बढ़ना हो, रोग शोकसे बचना हो और पूर्णताको पहुंचना हो तो जैसे भजन, ध्यान, दर्शन, माला, सत्संग, तीर्थ, पाठ, पूजा वगैरह पर ध्यान देते हैं वैसे ही खाने पीनेकी बातोंपर भी पूरा ध्यान दीजिये। तब बहुत आसानीसे आगे बढ़ सकेंगे। क्योंकि "युक्ताहार" कोई ऐसी वैसी बात नहीं है बल्कि यह गीताका हुक्म है और प्रभुका वचन है। यह याद रखना।

९३-याद रखना कि मिठाई खाये बिना मिठाईकी बातें करनेसे कुछ भूख नहीं मिटती ; इसी तरह धर्म पाले बिना धर्मकी बातें करनेसे कुछ कल्याण नहीं हो सकता।

आज कलके जमानेमें अखबारों तथा पुस्तकोंका सुबीता होनेसे हर एक आदमीमें वचन बहादुरी बहुत आ गयी है। इससे जहां जाइये वहां सबके मुंहसे तरह तरहकी लम्बी बातें सुननेमें आती हैं। जैसे-जो आदमी वकालतका पेशा करते हैं, दिनभर प्रपंचमें रहते हैं, कानूनकी बारीकियां ढूंढनेके लिये तर्क वितर्कका जाल फैलाते हैं और संकल्प विकल्पकी लहरोंमें जिधर तिधर टकराते हैं वे आदमी भी योगशास्त्रकी तथा योग साधनकी बातें किया करते हैं। जो आदमी जगतके

मोहमें डूबे हुए हैं, एक दिन या मुहूर्तके लिये भी मरे जाते हैं, खाने पीने और मौज शौक करनेमें ही अपनी जिन्दगी खोते हैं, दूसरोंसे धन लेने तथा दूसरों पर हुकूमत चलानेके लिये अनेक प्रकारकी युक्तियां लड़ाते हैं तथा दूसरोंको नीचा दिखाने और अपना बखान करानेके लिये कितने ही तरहके लटके छोड़ते हैं वे अफसर तथा धर्मगुरु भी अद्वैत और वेदान्तकी बातें किया करते हैं तथा "आत्मवत् सर्वभूतेषु" सिद्धान्तका उपदेश देते हैं। जिन आदमियोंका धर्मसे कुछ भी सम्बन्ध नहीं, जो आदमी जरा भी धर्म नहीं, पालते जो धर्मके गूढ़ भेद नहीं समझते, जिनके आचरण अच्छे नहीं, जिनमें श्रद्धा नहीं, जिनके ईश्वरसम्बन्धी विचारोंमें कुछ भी दम नहीं और धर्मसम्बन्धी विषयमें जिनका मत किसी कामका नहीं वे आदमी भी धर्मकी बातें किया करते हैं और धर्मके व्याख्यान देनेको तय्यार हो जाते हैं। जिन आदमियोंकी गांठसे एक पैसा नहीं निकलता, जिन आदमियोंने पासमें बहुत कुछ होने पर भी अपनी जिन्दगी भरमें कहने योग्य कुछ भी शुभ काम नहीं किया, जो आदमी परमात्माकी मरजी नहीं समझते, जो आदमी "मैं और मेरा भतार इसीमें सारा संसार" जैसे संकीर्ण विचारके हैं और जिन आदमियोंके आचरणमें जरा भी बड़प्पन या उदारता नहीं है वे आदमी भी परमार्थकी बड़ी बड़ी बात बघारते हैं। इतना ही नहीं बल्कि जिन आदमियोंसे कुछ भी नहीं हो सकता जिन आदमियोंमें काम लेनेका शऊर नहीं, जो आदमी कितने ही तरहके बन्धनोंमें पड़े हैं, जो आदमी देशकालको नहीं समझते, जो आदमी जन स्वभावको नहीं समझते, जिन आदमियोंने देखने लायक दुनिया नहीं देखी, जो आदमी अपने आचार विचारमें ढीले हैं, जो आदमी अपनेमें कुछ बुद्धि न होने पर भी

दूसरोंको उपदेश देते फिरते हैं और जिन आदमियोंकी कहीं भी पहुंच नहीं तथा जिन आदमियोंने जिस विषयका अभ्यास नहीं किया उस विषयमें भी वे आदमी अपनी राय देनेको तय्यार हो जाते हैं और राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक तथा शिल्पकला सम्बन्धी विषयों पर भी वे सार्वजनिक सभामें बोलने उठते हैं। अपने आपको, अपने घरको, अपने कुटुम्बको, अपनी बिरादरीको तथा अपने गांवको तो सुधार नहीं सकते परन्तु देश तथा दुनियाको सुधार डालनेकी बातें किया करते हैं। ऐसे आदमियोंसे एक भक्तराज महाराज कहा करते थे कि—

मिठाईकी बातें करनेसे कुछ पेट नहीं भरता। जैसे किसीसे कहें कि जलेबीका स्वाद बहुत बढ़िया होता है उससे मगजको बहुत फायदा पहुंचता है, बासुन्दी खानेसे शरीरमें शक्ति आती है, आमका रस खूनको साफ करनेवाला है, कचौरीका मजा ही कुछ और है, मोहनभोगमें कस्तूरी पड़ी हो और सोनेका वरक चढ़ा हो तो जाड़ेके मौसिममें बड़ा फायदा करता है, जिसकी जठराग्नि तेज हो उसके लिये भी बहुत अच्छा है। और बादामका हलवा भी मगजको पुष्ट करता है। सन्देश और रसगुल्लेके स्वादका क्या कहना। नारियलकी चटनी और अंगूरकी चटनी भी बड़ी ही लज्जतदार होती है। ऐसी ऐसी बातें पुस्तकें पढ़ पढ़ कर कहा करें परन्तु इन चीजोंके चखनेका मौका न मिले तो सिर्फ बातोंसे पेट नहीं भरता। इसी तरह धर्मकी, आत्माके कल्याणकी, दुनियामें आगे बढ़नेकी और सफलता पानेकी बातें करें परन्तु उनके अनुसार बर्ताव न करें, उनका असली रास्ता न जानें, उनके इर्द गिर्दका हाल न जानें और उनमें तन मनसे ध्यान न दें तो सिर्फ बातोंसे कुछ बहुत फायदा

नहीं होता । अब हमें बातोंमें ही न रह जाना चाहिये बल्कि कुछ काम कर दिखाना चाहिये । क्योंकि आजके जमानेमें पढ़ाये तोतेकी तरह दूसरोंके मुंहसे सुनी हुई बात दुहरा देना बहुत आसान है, परन्तु जितना कहा जाता है उसमेंसे दो चार आना या एक आध आना भी कर दिखाना मुश्किल है। इसलिये याद रखना कि कह देनेमें ही खूबी नहीं है, बल्कि कहनेके अनुसार कर दिखानेमें खूबी है । सो जो बोलना हो उसे बहुत विचार कर बोलना चाहिये, जिस विषयपर बोलना हो उसका विशेष अभ्यास करके तथा उसकी खूब जांच पड़ताल करके बोलना चाहिये। ऐसा बोलना चाहिये जो वजनदार हो तथा सुनने वालेपर उसका असर हो । जो बोलना हो उसका ऊंच नीच समझकर बोलना चाहिये । क्योंकि शब्द जैसे तैसे फेंक देनेकी वस्तु नहीं है। इसलिये इस रीतिसे बोलना चाहिये कि जिससे अपना तथा दूसरोंका फायदा हो और कहनेकी अपेक्षा कर दिखानेपर अधिक ध्यान रखना चाहिये । क्योंकि मिठाई खाये बिना मिठाईकी बातें करनेसे जैसे पेट नहीं भरता वैसे ही धर्मकी तथा शिल्प कलाकी और रोजगार धन्धेकी बातें करनेसे, बिना उनके अनुसार कर दिखाये कुछ फायदा नहीं होता और कोरी बातोंसे प्रभु प्रसन्न नहीं होता। इसवास्ते भाइयो ! बातोंमें ही मत रह जाइये बल्कि जैसे बने वैसे शुभ काम करना सीखिये । शुभ काम करना सीखिये ।

९४–सुख दो किस्मके हैं एक सच्चा सुख और दूसरा झूठा सुख । जो झूठा सुख है वह बाहरसे आता है और अधूरा होता है; परन्तु जो सच्चा सुख है वह भीतरसे आता है और पूरा होता है ।

इस दुनियामें सब जीवोंको सुख दरकार है, इससे सब लोग तथा सब प्राणी सुखके लिये दौड़ धूप मचा रहे हैं। क्योंकि सुख माने आनन्दके हैं। आनन्द आत्माका असली स्वरूप है और आनन्द स्वयं परमात्मा है । इसलिये इस दुनियाके ही नहीं, बल्कि अनन्त ब्रह्माण्डके सब जीव जाने या बेजाने सुखको ही ढूंढ़ा करते हैं। इस कारण पशु पक्षी, पानीमें रहनेवाले जानवर, पसीनेसे पैदा होनेवाले जीव, हवामें पैदा होनेवाले जीव, पृथ्वीके पेटमें रहनेवाले जीव और रोगके जन्तु भी सुखको ही ढूंढ़ा करते हैं। तब मनुष्य सुख ढूंढ़े तो इसमें कुछ आश्चर्य नहीं है।

इस कारण अज्ञानी लोग भी सुख ढूढ़ते हैं और ज्ञानी भी सुख ढूंढ़ते हैं । परन्तु उन दोनोंके सुखमें फर्क है । अज्ञानी जो सुख ढूंढ़ते हैं वह सुख बाहरी है, वह सुख थोड़ी देरके लिये होता है, वह सुख अधूरा होता है, उस सुखको हासिल करनेके लिये कितने ही साधनोंकी मदद लेनी पड़ती है और वह सुख आत्माका नहीं होता बल्कि इन्द्रियोंका होता है। इससे वह सुख रजोगुणी या तमोगुणी होता है।

अब ज्ञानी जो सुख पाते हैं वह कैसा होता है यह भी,

सुन लीजिये। ज्ञानियोंको जो सुख मिलता है वह सुख उनके हृदयसे निकलता है। उस सुखको हासिल करनेके लिये उन्हें बाहरी साधनोंकी जरूरत नहीं पड़ती, उस सुखके लिये उनको जुदे जुदे विषयोंमें या जुदी जुदी चीजोंमें भटकना नहीं पड़ता, उस सुखके लिये उन्हें दूसरा दुःख नहीं भोगना पड़ता, वह सुख उड़ नहीं जाता उस सुखके साथ दुःखका लेशमात्र नहीं होता और वह सुख इन्द्रियोंका नहीं होता बल्कि आत्माका होता है। इसलिये वह सुख पूरा होता है।

ज्ञानियोंके सुख और अज्ञानियोंके सुखमें इतना फर्क है। अज्ञानी बाहरका सुख ढूंढ़ते हैं। जैसे उनको जब अच्छा अच्छा खानेको मिले तब सुख होता है, जब पान तम्बाकू बीड़ी चाय वगैरह उनके अमल मिल जायं तब उन्हें थोड़ी देरका आनन्द होता है, जब उन्हें गाने बजानेको मिले या खेल तमाशा देखनेको मिले तब उनको आनन्द होता है। जब उनको खूब वैभव भोगनेको मिले तब सुख होता है, जब उनको बहुत धन मिले तब सुख होता है जब उनकी खातिर हो तब उन्हें सुख होता है, जब उन्हें विषय भोगनेको मिले तब सुख होता है, जब उनको मम्ल मिले तब सुख होता है, जब वे नीरोग रहें तथा उनके कुटुम्बमें कोई बीमार न हो तब उन्हें सुख होता है, जब उन्हें मन लायक नौकरी चाकरी मिल जाय या धड़ल्लेसे उनका रोजगार चले तब वे सुखी होते हैं और जब उनको अनेक प्रकारके सुभीते हों तब उन्हें सुख होता है। इस कारण उन बेचारोंमें किसीका आनन्द मगही पान या गुलाबी बीड़ीमें होता है और पान या बीड़ी न मिले तो उसका आनन्द उड़ जाता है। किसीका आनन्द खूब भभाती तीती तरकारीमें होता है और वैसी तरकारी न मिले तो उसका आनन्द किरकिरा हो जाता

है ; किसीका आनन्द नौकरपर होता है पर किसी वक्त अच्छा नौकर न मिले तो उसका आनन्द बिगड़ जाता है ; किसीका आनन्द हिंडोलेपर झूलनेमें होता है और किसी वक्त हिंडोला न मिले तो उसका आनन्द घट जाता है ; किसीका आनन्द पलंग या मसहरीमें है और वह न मिले तो उसका आनन्द जाता रहता है ; किसीका आनन्द बाइसिकलाइ या मोटरमें होता है ; किसीका आनन्द घोड़ेमें, भैंसमें, गायमें या गधेमें होता है, किसीका आनन्द खेतमें, बंगलेमें या जागीर जायदादमें होता है, किसीका आनन्द नाटकमें, सरकसमें, बायसकोपमें, फोनोग्राफमें या हारमोनियममें होता है, किसीका आनन्द घड़ीमें, चश्मेमें, बटनमें, पगड़ीमें, कोटमें, छातेमें, छड़ीमें, या किस्म किस्मकी लालटेनोंमें होता है, किसीका आनन्द सरदीमें, गरमीमें, मारीमें, हलकेमें, ऊंच नीचमें होता है और किसीका आनन्द अपने शरीरकी खूबसूरतीमें, कपड़े पहननेमें तथा खाने पीनेमें ही होता है। इस प्रकार सब व्यवहारी आदमी बाहरी सुखमें ही रह जाते हैं। इससे उनका सुख अधूरा होता है तथा थोड़ी देरका होता है और जो सुख होता है वह भी दुःखसे प्राप्त होता है। क्योंकि इस किस्मके सुखके लिये कितनी ही चीजोंकी तथा कितने ही आदमियोंकी मदद लेनी पड़ती है और उन सब चीजों तथा आदमियोंसे कुछ हमेशा मनचाही नहीं होती। और मनचाही न होनेपर दुःख होता ही है। इतना ही नहीं, जब बहुत ज्यादा मिहनत की जाय तब मुश्किलसे इस किस्मका थोड़ा सा सुख मिलता है और इस थोड़ेसे सुखके लिये भी कितने ही तरहके झगड़े करने पड़ते हैं तथा अनेक प्रकारकी झंझटें उठानी पड़ती हैं। तब कहीं जाकर जरा सा सुख मिलता है और वह सुख भी थोड़ी ही देर रहता है। इसलिये जो सुख बाहरसे

मिलता है वह अधूरा तथा दु:खसे मिला हुआ होता है; इससे उसमें अज्ञानी ही पड़े रहते हैं। इस बातका ख्याल रखना कि अन्ततक ऐसे ही जंजालवाले और अधूरे सुखमें न रह जाओ।

अब, ज्ञानियोंका सुख कैसा होता है, यह सुनिये। ज्ञानी बाहरी चीजोंमें सुख नहीं ढूंढ़ते, बल्कि वे अपना कर्तव्य पूरा करनेमें सुख ढूंढ़ते हैं, ज्ञानी ज्ञानके अन्दर सुख ढूंढ़ते हैं, ज्ञानी दया, कोमलता, सौन्दर्य, परोपकार, क्षमा वगैरह हृदयकी उत्तम वृत्तियोंके विकासमें सुख ढूंढ़ते हैं, ज्ञानी अपने हृदयके सन्तोषमें सुख ढूंढ़ते हैं, ज्ञानी दूसरोंकी मदद करनेमें सुख मानते हैं, ज्ञानी जगतकी वस्तुओंके ताबे होनेमें नहीं बल्कि उनपर अपनी प्रभुता जमानेमें सुख मानते हैं, ज्ञानी शास्त्रके ऊंचे सिद्धान्तोंमें सुख ढूंढ़ते हैं, ज्ञानी उच्च श्रेणीकी भावनाओंमें सुख ढूंढ़ते हैं, ज्ञानी महात्माओंका मदद करनेमें तथा उनके कदम बकदम चलनेमें सुख देखते हैं, ज्ञानी स्वर्गको इस पृथ्वीपर खींच लानेमें सुख देखते हैं, ज्ञानी अपनी जिन्दगीमें तथा दूसरोंकी जिन्दगीमें उत्तमता भरनेमें सुख देखते हैं और ज्ञानी परम कृपालु परमात्माकी महिमा समझकर उसके कदम बकदम चलनेमें सुख पाते हैं। इसलिये ज्ञानियोंका सुख बिना दुःखका होता है, देरतक टिकने लायक होता है और सत्वगुणी होता है। सो भाइयो और बहनो! बाहरके थोड़ी देरके अधूरे और झूठे सुखमें मत पड़े रहिये, बल्कि हृदयका जो सच्चा और असली सुख है उसको हासिल करनेकी कोशिश कीजिये। उसको हासिल करनेकी कोशिश कीजिये।

९५–ईश्वरके साथ अपनी एकता समझना सबसे बड़ी बात है। क्योंकि एकताकी भावना जितनी बढ़ती है ईश्वरके गुण और शक्ति हममें उतनी ही अधिक आती है, इससे हम पूर्णताको पहुंच सकते हैं। इसलिये ईश्वरके साथकी एकता जीवनका सार है।

धर्मका मुख्य उद्देश्य क्या है और जिन्दगीकी सार्थकता किसमें है यह बात हमें अच्छी तरह जान लेना चाहिये। क्योंकि यह जाननेसे रास्ता हमारी समझमें आ जाता है, कितनी दूर जाना है यह मालूम हो जाता है, कहां मुकाम करना है यह विदित हो जाता है, कितनी तेजीसे चलना चाहिये तथा इस समय कितनी तेजीसे चलनेकी जरूरत है यह बात समझमें आ जाती है और आगे बढ़नेसे क्या क्या लाभ होता है यह भी समझमें आ जाता है। इसलिये हमें धर्मका तत्त्व जानना चाहिये।

धर्मका तत्त्व तथा जिन्दगी की सार्थकता किसमें है यह समझानेके लिये जगतके सब महात्मा तथा सब धर्मशास्त्र कहते हैं कि मनुष्य अपनी पूर्णताको पहुंचे और आत्माका पूरा पूरा विकास होने दे तथा उसको सब प्रकारके बन्धनोंसे मुक्त करे इसका नाम धर्मतत्त्व है और इसका नाम जिन्दगीकी सार्थकता है। ऊपरी बातोंमें पड़े रहने और तत्त्व समझे बिना भेड़ियाधसानकी तरह सबके पीछे पीछे चले जाने तथा कोल्हूके बैलकी तरह दस्तूरके घेरेमें फिरते रहनेका नाम जिन्दगीकी सार्थकता नहीं है; बल्कि जिन्दगीको सुधारना, जिन्दगीमें

मिठास लाना, जिन्दगीको उपयोगी बनाना, जिन्दगीको यशस्वी बनाना, जिन्दगीको अमर बनाना, जिन्दगीको पूर्ण बनाना जिन्दगीको पवित्र बनाना, जिन्दगीको निस्पृही बनाना, जिन्दगीको उत्तमतावाली बनाना, जिन्दगीका दूसरी वस्तुओं पर स्वामित्व स्थापित करना, जिन्दगीको मोक्षके रास्तेमें आगे बढ़नेके लिये वेग देना, जिन्दगीमें अनन्त कालकी सच्ची शान्ति भरना और इसी जिन्दगीके अन्दर अपना असल स्वरूप समझ जाना तथा उसे पा लेना जिन्दगीकी सार्थकता है और यही धर्मका तत्त्व है।

ऊपर लिखे अनुसार धर्मका तत्त्व तथा जिन्दगीकी सार्थकता जान लेनेके बाद हमें यह जानना चाहिये कि ऐसी सार्थकता कैसे हो सकती है? इसके उत्तरमें दुनियाके सब सन्त तथा धर्मशास्त्र कहते हैं कि इस जगतमें जो एक परम तत्त्व है, जिस तत्त्वमें यह सारा ब्रह्माण्ड उत्पन्न हुआ है और जिस तत्त्वमें अन्तको सब समा जाते हैं उस तत्त्वको जानना चाहिये और उससे एकताका अनुभव करना चाहिये; तभी जिन्दगीकी सार्थकता होती है। इस परम तत्त्वको कोई ईश्वर कहता है, कोई खुदा कहता है, कोई गाड कहता है, कोई शिव कहता है, कोई शक्ति कहता है, कोई राम कहता है, कोई कृष्ण कहता है, कोई कुदरत कहता है और कोई इसको अनिर्वचनीय (ऐसा जो वाणीसे न कहा जा सके) कहता है। इस प्रकार जुदी जुदी भाषाओं तथा जुदे जुदे धर्ममें इस परम तत्त्वके जुदे जुदे नामों तथा जुदी जुदी क्रियाओं और जुदे जुदे विधि निषेधोंके जरिये सब लोग एक ही परम तत्त्वको जानना तथा पाना चाहते हैं। क्योंकि यह परम तत्त्व है। यह सर्वशक्तिमान है। यह अनन्त गुणवाला है, उसके अन्दर बीज रूपसे,

वृक्ष रूपसे तथा फल रूपसे सर्वस्व मौजूद है; वह बड़ेसे बड़ा है, वह अपार है, वह अनन्त है, वह एक ही है, वह सर्वव्यापक है, वह हमारे अन्दर भी है और हमारे बाहर भी है, उससे सबका पोषण होता है, वह जीवोंको जीवन देनेवाला है, वह ज्योतिकी भी ज्योति है, उसके ऐसा और कोई नहीं है, वह जुदे जुदे रूपसे दिखाई देता है, वह गुप्तसे भी गुप्त है, वह पाससे भी पास है वह दूरसे दूर है, वह समझनेमें सहजसे भी सहज और मुश्किलसे भी मुश्किल है, वह हमारे जीवनका आधार है और सबका सर्वस्व है। क्योंकि उसीसे सब कुछ है और अन्तमें उसीमें सबको मिल जाना है। इसलिये ऐसे अलौकिक तत्वको जानना, ऐसे परम तत्वको जानना, ऐसे अद्भुत तत्वको जानना और उस महान तत्वको जानना तथा उससे एकता अनुभव करना ही जिन्दगीकी सार्थकता है और यही धर्मका अन्तिमसे अन्तिम तत्व है। क्योंकि जैसे अग्निके संयोगसे लकड़ी तथा लोहा अग्नि रूप बन जाते हैं वैसे ही ईश्वर के साथकी एकतासे मनुष्यमें भी ईश्वरके गुण तथा शक्तियां आ जाती हैं और अन्तमें जाकर उसकी आत्मा ईश्वर रूप बन जाती है। इसलिये याद रखना कि जिस कदर जीव ईश्वरसे एकता कर सकता है उसी कदर उसका ज्ञान तथा शक्ति बढ़ जाती हैं, जिस कदर मनुष्य परम तत्वके साथ एकता हासिल कर सकता है उसी कदर उसके सामनेका परदा हट जाता है, उसी कदर उसका भय भाग जाता है, उसी कदर उसका हृदय विशाल हो जाता है और उसी कदर वह अखण्ड शान्ति तथा महान ऐश्वर्य भोग सकता है। इसलिये अगर यह सब पाना हो और जिन्दगीकी सार्थकता करनी हो तो परम तत्वके साथ एकता करना सीखो। परम तत्वके साथ एकता करना सीखो।

९६-अपनी जिम्मेवारी समझनेके लिये तथा अपनी जिन्दगी सुधारनेके लिये, मनका बल कितना है और उसका स्वभाव कैसा है यह अच्छी तरह जान लेना चाहिये।

भाइयो! इस दुनियामें अनेक प्रकारके जीव हैं। पहलेके लोग कह गये हैं कि चौरासी लाख किस्मके जीव हैं परन्तु यह बात सब जगह बहुत जोर देकर कही गयी है कि इन सब प्रकारके जीवोंमें मनुष्य सबसे श्रेष्ठ है और मनुष्यका जन्म सबसे उत्तम है। अब विचार करना चाहिये कि जो मनुष्य चौरासी लाख किस्मके जीवोंमें सबसे श्रेष्ठ है उस मनुष्यके ऊपर जिम्मेवारी कितनी बड़ी है, कितनी अधिक है कितनी जरूरी है और कितनी उत्तम तथा गहरी है। यह विचार करनेसे ऐसा जान पड़ता है कि जगतके सब जीवोंकी अपेक्षा मनुष्यके ऊपर बहुत बड़ी तथा गहरी जिम्मेवारी है। और इस जिम्मेवारी की नींव यह है कि हर एक मनुष्यको अपनी शक्तिके अनुसार हर घड़ी आगे बढ़ना चाहिये, जैसे बने वैसे प्रभुके रास्तेमें चलना चाहिये, जैसे बने वैसे ज्ञानके मार्गमें चलना चाहिये, जैसे बने वैसे प्रेम धर्मके मार्गमें चलना चाहिये, जैसे बने वैसे दूसरोंकी मदद करनी चाहिये, जैसे बने वैसे ऊंचेसे ऊंचे दरजेकी जीवन बिताना चाहिये और जैसे बने वैसे अपनी आत्माको रोकनेवाला परदा हटाना चाहिये। जब ऐसा हो तभी कहा जायगा कि हमने अपनी जिम्मेवारी समझी। परन्तु मनकी स्थितिपर इसका होना निर्भर है। इसलिये यह बात पहले जान लेना चाहिये कि मनका बल कितना है, मनका स्वभाव कैसा है और मन कैसे सुधारा जाय।

बन्धुओ! महात्मा लोग कहते हैं कि मनका बल बेहद है। जगतमें ऐसी कोई चीज नहीं जिसको मन न पा सके। मनका बल अलौकिक है, मनकी शक्तियां अनेक हैं, मनका जोश बहुत है, मनमें अनेक प्रकारके हौसले हैं, मन सब इन्द्रियोंपर हुकूमत चलाता है, मन स्वर्गमें जा सकता है और मन नरकमें भी जा सकता है; मन मायाके परदे रच सकता है और मन परदोंका नाश भी कर सकता है। इसके सिवा अनेक प्रकारके चमत्कार मनके बलसे किये जा सकते हैं, अनेक प्रकारकी सिद्धियां मनको वश करनेसे मिल सकती हैं और अनन्त कालका अखण्ड सुख भी मनकी मददसे ही मिल सकता है। ऐसा अद्भुत बल मनमें है। इसीसे शास्त्रोंमें कहा है कि मन शब्दसे मनुष्य शब्दकी उत्पत्ति हुई है। इसलिये मनका बल जाननेके बाद मनका स्वभाव जानना चाहिये तथा मन किस प्रकार काम करता है इसकी युक्तियां जान लेना चाहिये। इसके लिये मनका अध्ययन करनेवाले विद्वान कहते हैं कि—

मनका स्वभाव बहुत ही चंचल है। यह इन्द्रियोंको हुमच डालता है। यह जैसे संयोगमें आता है वैसा बन जाता है। यह एक पल भी निठल्ला नहीं रहता। यह संकल्प विकल्पके साथ दौड़ा ही करता है; यह किसी समय न मानने योग्य विषयोंको भी मान लेता है और कभी कभी मानने योग्य विषयोंको भी नहीं मानता। यह कभी कभी बहुत ऊंचे चढ़ जाता है और अधिकतर नीचे ही नीचे रहता है। उसको अनेक प्रकारका प्रपंच रुचता है। उसको इन्द्रियोंके साथ उनके विषयोंमें रमनेका बड़ा शौक है, यह जल्द पकड़ा नहीं जाता, यह किसीसे नहीं हारता और हारा या झुका हुआ दिखाई देनेपर भी फिरसे संजीवन हो जाता है। उसमें ज्वार भाटा आया करता

है। वह स्थितिस्थापक सा है। वह कुदरतका मददगार है और शैतानका भी मददगार है। ऐसा अटपट स्वभाववाला मन है। तिसपर भी वह बहुत बलवान है और जिन्दगी सुधारनेकी कुंजी उसीके हाथमें है। इसलिये अब हमें अपने मनका सुधारनेका उपाय जान लेना चाहिये।

हम लोग यह समझते हैं कि बाहरी संयोगोंके आधारपर मन अपना कारबार चलाया करता है। इससे संयोग अच्छा होनेपर मनुष्य अच्छा होता है और संयोग कमजोर होनेपर मनुष्य खराब होता है। लोगोंका ऐसा खयाल है। किन्तु जिन्होंने मनके स्वभावका अध्ययन किया है वे कहते हैं कि बाहरी वस्तुएं मनपर बहुत अधिक असर नहीं कर सकतीं। हां जब मन आपही झुक जाय, मनको भीतरसे जब व वस्तुएं रुचें तब वे वस्तुएं मनपर असर कर सकती हैं। मनके पसन्द न आनेवाली चीज मनपर असर नहीं कर सकती। इस कारण मनके अन्दर जो जो वासनाएं होती हैं, जो जो विचार होते रहते हैं और जो जो तरङ्गें उठा करती हैं उनके अनुसार संयोग आ जुटते हैं और उनके अनुसार घटनाएं हुआ करती हैं। इसलिये हमें अपने मनको भीतरसे सुधारनेकी कोशिश करना चाहिये। जिनका मन अन्दरसे मजबूत हो गया है और तरह तरहकी उत्तम भावनाओंमें रच पच गया है उन मनुष्योंके सामने बाहरके चाहे जैसे खराब संयोग आ जायें उनपर कुछ असर नहीं कर सकते। इसके सिवा हम यह भी देखते हैं कि किसी चीजके लिये या किसी विषयके लिये जब हम यदि दृढ़तासे मनमें यह ठहरा लेते हैं कि यह बात हमें नहीं करना चाहिये तब उसके लिये चाहे जितने साधन क्यों न मिलें परन्तु उसे करनेका मन नहीं होता। क्योंकि

भीतरसे मनका चक्कर बदला हुआ होता है इससे बाहरकी वस्तुएं उसपर असर नहीं कर सकतीं। यही बात हर विषयमें तथा हर एक प्रसङ्गमें समझना चाहिये। इससे यही शिक्षा मिलती है कि हम अगर अपने मनको अन्दरसे मजबूत बनावें तो बाहरी संयोग उसको अड़चल नहीं डाल सकते। इसलिये मनको भीतरसे मजबूत बनाना चाहिये और इसके लिये, जिस किस्मका जीवन हम बिताना चाहते हों उस किस्मके विचारोंमें रमण करते रहना चाहिये, उस किस्मके विचारों का अध्ययन करते रहना चाहिये, उस किस्मके विचारोंमें रच पच जाना चाहिये और उस किस्मकी सोहबतमें रहना चाहिये। इससे धीरे धीरे मनकी गति उसी किस्मकी हो जाती है। इसके बाद बाहरी वस्तुएं उस पर बहुत असर नहीं कर सकतीं। इसलिये बाहरी वस्तुओंको तथा बाहरी संयोगोंको सुधार देनेके लिये जितनी कोशिश करते हैं उससे अधिक कोशिश भीतरसे अपने मनको सुधारनेके लिये करना चाहिये। क्योंकि बाहरी संयोगोंको सुधारना बड़ा कठिन है-बाहरी संयोगोंको सुधारनेमें दूसरोंका मुंहताज होना पड़ता है; परन्तु अपने मनको भीतरसे सुधारनेमें दूसरोंका मुंहताज नहीं होना पड़ता। इससे यह काम शीघ्र हो सकता है। अगर ऐसा करना आवे तो जिन्दगीकी दिशा बदलनेमें कुछ समय नहीं लगता। इसलिये जिन्दगीको उत्तम बनानेके लिये किसी तरहके अच्छे विचारोंमें मनको लगाये रहनेकी कोशिश कीजिये तथा बारंबार फिर फिरसे यह प्रयत्न कीजिये। तब धीरे धीरे भीतरका मन सुधर जायगा। इससे आगे जाकर नयी जिन्दगी मिल जायगी और सारा जीवन बदल जायगा। इसलिये भीतरके मनको सुधारनेकी कोशिश कीजिये। भीतरके मनको सुधारनेकी कोशिश कीजिये।

१७—हम लोग भाग्यको बहुत मानते हैं, इसलिये यह जानना चाहिये कि हमारी जिन्दगीकी अच्छी या बुरी घटनाओंके बनानेमें भाग्यका कहां तक हाथ है।

हम लोगोंमें बहुत आदमी यह समझते हैं कि हमारी जिन्दगीमें जो कुछ अच्छी या बुरी घटनाएं होती हैं वे सब भाग्यसे ही होती हैं। परन्तु महात्मा कहते हैं कि अकेले भाग्यसे कुछ नहीं हो सकता। उसमें जब और कितने ही विषयोंकी मदद होती है तभी उससे अच्छी या बुरी वारदातें होती हैं। यह बात अगर खूब अच्छी तरह समझमें आ जाय तो अपनी जिन्दगी सुधारनेके लिये हममें नया बल आ जाता है। क्योंकि जबतक हम नसीबको जोरावर मानते हैं और यह समझा करते हैं कि सब कुछ नसीबसे ही होता है तबतक हम अपना कर्त्तव्य पूरा करनेमें तथा अपनी घर गृहस्थीके कामोंमें ढिलाई करते हैं और अच्छे भाग्यकी बाट देखा करते हैं। इससे हम कितनी ही बातोंमें "किसी तरह चला जाता है" का मसला पूरा करते हैं। इसके बदले अगर हमें यह मालूम हो जाय कि अकेले नसीबसे कुछ भी नहीं हो सकता, बल्कि हमारी जिन्दगी पर नसीबका असर बहुत थोड़ा है और हम जितना मानते हैं उतना जोरावर नसीब नहीं है तथा हमें यह भरोसा हो जाय कि हमें रोक रखनेकी शक्ति नसीबमें नहीं है तो हममें नया बल आ जाता है। तब हम अधिक जोरसे अपना कर्त्तव्य पूरा कर सकते हैं और इससे हमारी जिन्दगी बहुत जल्द और बहुत आसानीसे सुधर सकती है। इसलिये हमारी जिन्दगीमें होनेवाली वारदातों पर पूर्वके संस्कारोंका,

प्रारब्धका यानी भाग्यका कितना असर है इसका खुलासा जान लेना चाहिये। इसके लिये विद्वान कहते हैं—

जब पेड़ लगाना होता है तब पहले बीजकी जरूरत पड़ती है, फिर मिट्टी दरकार होती है, फिर पानी दरकार होता है, फिर खादकी जरूरत है, फिर अनुकूल मौसिमकी जरूरत है, फिर बचावके लिये बाड़ेकी जरूरत है, फिर उसमें जो निकम्मी घास उग आयी हो उसे निकाल देनेकी जरूरत है और बीज बो देनेकी जरूरत है तथा बीजसे पौधा होनेके लिये किस समय क्या उपाय करना चाहिये यह जाननेकी जरूरत है। ये सब बातें हों तब पेड़ हो सकता है। कुछ अकेले बीजसे या अकेले पानीसे या अकेली जमीनसे पेड़ नहीं हो सकता। इसी तरह याद रखना कि अकेले प्रारब्धसे हमारी जिन्दगीके सब व्यवहार नहीं चल सकते और अकेले प्रारब्धकी मददसे ही जिन्दगी नहीं सुधर सकती और न मोक्ष मिल सकता। परन्तु अनेक चीजोंकी मददसे जिन्दगी सुधर सकती है और आगे बढ़ा जा सकता है। इसलिये अकेले भाग्यपर ही सब भार डाल देना बहुत बड़ी भूल है। अब एक दूसरा उदाहरण लीजिये।

रसोई बनानेके लिये पहले अनाजकी जरूरत पड़ती है। फिर आगकी जरूरत पड़ती है, चूल्हेकी जरूरत पड़ती है, बर्तनकी जरूरत पडती है, पानीकी जरूरत पड़ती है, किस्म किस्मके मसालेकी जरूरत पड़ती है, रसोई बनानेवालेकी जरूरत पड़ती है और रसोई बनानेके ज्ञानकी जरूरत पड़ती है तथा आग जलानेके सामान लकड़ी गोइंठे, कोयले, तेल, गैस या बिजलीकी जरूरत पड़ती है। ऐसी ऐसी कितनी ही चीजोंकी मदद हो तब रसोई बन सकती है। सिर्फ अनाजसे, अकेले पानीसे, अकेली आगसे या अकेले बर्तनसे

रसोई नहीं बन जाती। वैसे ही अकेले प्रारब्धसे हमारी जिन्दगीकी अच्छी या बुरी बात नहीं होती। परन्तु जब उसके साथ अनेक प्रकारके सुयोग या असुयोग होते हैं तभी उससे अच्छी या बुरी बातें होती हैं। जैसे—

यह बात सच है कि हमारे हाथसे जो कुछ अच्छी या बुरी बात होती है उसमें पूर्वके संस्कारोंकी मदद होती है, परन्तु उसके साथ और भी कितने ही विषय होते हैं यह बात भूल न जाना चाहिये। हमपर जैसे पूर्वके संस्कारोंका असर होता है वैसे हमारे मा बापके गुणदोषका असर भी होता है, हमारे कुटुम्बमें जो कितने ही तरहके सद्गुण, दुर्गुण या रोग चले आते हैं उनका असर भी होता है, हमारी ननसालमें जो कई तरहके गुण या अवगुण होते हैं उनका असर भी होता है, हम जिन मित्रोंके साथ रहते हैं उनका असर भी होता है, हम जिस किस्मकी पुस्तकें बाचते हैं उनका असर होता है, हम जिस किस्मके अधिक विचार किया करते हैं उनका असर होता है, हम जिन पड़ोसियोंमें रहते हैं उन पड़ोसियोंके गुणदोषका असर होता है, हम जिस किस्मकी, सत्वगुणी, रजोगुणी या तमोगुणी, खुराक खाते हैं उसका असर होता है, हम जिस मास्टरसे पढ़े हुए होते हैं उसका असर होता है, हम जो धर्म मानते हैं उस धर्मका असर होता है, हम जिस राज्यमें रहते हैं उस राज्यके कानूनका असर होता है, हम जिस मुल्कमें रहते हैं उस मुल्कके हवा पानीका हमपर असर होता है, हमारे शरीरके रोग या नीरोगपनका असर हमारी प्रकृतिपर होता है, जाड़ा, गरमी, बरसात आदि ऋतुओंके बदलनेका असर हमपर होता है, हमारे रोजगार धंधेमें जो बड़ा घाटा लगता या बहुत नफा होता है उसका असर हमपर होता है, देशमें आचारका जो

दशे चल आता है उसका असर हमपर होता है, पीढ़ी दर पीढ़ीसे जो अच्छे या बुरे रिवाज चले आते हैं उनका असर हमपर होता है, धर्मके जिन सिद्धान्तोंमें हमारी अधिक श्रद्धा जम गयी है उन सिद्धान्तोंका तथा श्रद्धाका हमपर असर होता है, जो जो वहम हमारे मनमें घुस गये हैं उनका असर होता है और कुदरतकी तरफसे जो जो अनुकूलताएं या प्रतिकूलताएं अनायास आ मिलती हैं, उनका असर हमपर होता है । इस तरह अनेक प्रकारका असर हमारी जिन्दगीपर पड़ता है और उससे हमारा जीवन गढ़ा जाता है। हमारा चरित्र गढ़नेमें ये सब मदद करते हैं । जैसे-कोई बड़ी नदी जिस जगहसे पहले निकलती है उस जगह बहुत ही छोटी धारामें होती है, उसका प्रवाह बहुत ही छोटा होता है और मामूली झरने सा होता है; परन्तु ज्यों ज्यों प्रवाह आगे बढ़ता है त्यों त्यों उससे दूसरे छोटे छोटे झरने मिलते जाते हैं जिससे नदीमें पानी बढ़ता जाता है, उसकी गहराई बढ़ती जाती है, उसका वेग बढ़ता जाता है और उसकी लम्बाई चौड़ाई बढ़ती जाती है और अनेक झरनोंके मेलसे अन्तमें वह बहुत बड़ी नदी बन जाती है । वह जिस झरनेसे निकलती है सिर्फ उसी झरनेसे वह बहुत बड़ी नदी नहीं हो सकती ; परन्तु उसको जब और कितने ही प्रवाहोंकी मदद मिले तभी वह बड़ी नदी हो सकती है । इसी प्रकार हमारा अकेला प्रारब्ध कुछ नहीं कर सकता, अकेला नसीब कुछ नहीं कर सकता, अकेले पूर्वका संस्कार कुछ नहीं कर सकता या अकेली ईश्वरकृपा भी कुछ नहीं कर सकती। परन्तु जब उसके साथ और कितने ही तरहका सामान मिल जाता है तभी वह हमारी जिन्दगीपर असली असर कर सकता है। इसलिये अकेले नसीबपर या दैवी इच्छा पर ही भार न डाल कर

इन सब बातोंको भी ध्यानमें रखनेका कष्ट उठाना चाहिये।

इस प्रकार अनेक विषयोंकी मददसे तथा अनेक तरहके असरसे हमारी जिन्दगीकी घटनाएं होती हैं। तो भी हम और सबको याद नहीं करते और हजारों तरहके अच्छे बुरे असरका बोझ अकेले बेचारे नसीबपर लाद देते हैं और बेकारण बेचारे नसीबको बदनाम किया करते हैं। इतना ही नहीं बल्कि, सब कुछ नसीबमें होता है यह मान लेनेसे हममें एक तरहका आलस आ जाता है, हम पुरुषार्थ करनेमें ढीले हो जाते हैं, अपना चरित्र सुधारनेमें लापरवा बन जाते हैं, अपने भाइयों पर प्रेम करनेमें, ज्ञान हासिल करनेमें तथा अपना फर्ज पूरा करनेमें हम पिछड़ जाते हैं; हमारा उत्साह धीमा हो जाता है, हमारी मुस्तैदी घट जाती है, हमारी रुचि मन्द हो जाती है और हमारी बुद्धि किसी खास घेरेमें रहनेवाली बन जाती है। इसके सिवा, हमारी जिन्दगीमें जो जो अच्छी या बुरी, छोटी या बड़ी और लाभ या हानिकी घटनाएं होती हैं वे सब भाग्यके कारण ही होती हैं ऐसा माननेसे उनमें सुधार बढ़ाव करनेका मौका हमारे हाथमें नहीं रहता। इसके बदले अगर हम यह अच्छी तरह समझ लें कि अकेले नसीबसे कुछ भी नहीं हो सकता, परन्तु अनेक चीजोंकी मददसे ही सब तरहकी घटनाएं होती हैं और इस बातपर विश्वास हो जाय तो नया बल आ जाता है और सीधे रास्ते विचारने तथा काम करनेकी सूझती है। इसलिये हमपर भाग्यका जोर कितना है, आस पासकी घटनाओंका जोर कितना है और हमारी स्वतन्त्रता कितनी है तथा परम कृपालु परमात्माकी मदद कितनी है इसका खूब ख्याल करना सीखिये। इसका खूब ख्याल करना सीखिये। इससे जिन्दगी सुधारनेमें बड़ी मदद मिलेगी और बहुत फायदा होगा।

९८–महात्मा माने क्या? और महात्मा किसको कहना?

आज कल बहुतसे मशहूर आदमियोंको तथा जो आडम्बरवाले हों, गेरुआ वस्त्रवाले हों, जरा बोलकड़ हों, जिनको अच्छी रीतिसे धर्मकी बातें करना आता हो, जिनको जमानेके अनुसार टीमटाम रखना आता हो, जिनको वंशपरम्परासे गुरुकी या बापकी गद्दी मिल गयी हो, जिनको कान फूकनेका धंधा करना आता हो और जिनको लोगोंकी आंखोंमें अंजन लगाना आता हो उनको बेचारे भोले भाले और अज्ञान लोग महात्मा कहते हैं। परन्तु व्यवहारचतुर पण्डित कहते हैं कि ऐसे लोग महात्मा नहीं बल्कि महातमा कहलाते हैं और इसका अर्थ यों होता है कि महा माने बड़ा और तम माने अंधकार। मतलब यह कि हम आजकल जिन लेभगुओंको महात्मा कहते हैं उनमें बड़ा अंधकार होता है और बहुत बड़ी पोल होती है। इसके सिवा जिनका चारित्र शुद्ध न हो, जिनके मनका समाधान न हुआ हो, जिनमें जरूरत लायक ज्ञान न हो, जिनमें जमानेके अनुसार चलनेकी शक्ति न हो, जो आप किसी विषयको सत्य समझते हों परन्तु लाकलाजके भयसे उसके विरुद्धकी बातोंमें हामी भरते हों, जिनमें जितना चाहिये उतना त्याग या ज्ञान न हो, जिनमें परमात्मा पर पूरा प्रेम न हो और जो सिर्फ अपना चार दिनका बाहरी वैभव बढ़ानेके लिये ही लोगोंसे पैसा निकालनेकी तरह तरहकी युक्तियां करते हों और जाल बिछाते हों वे महात्मा नहीं हैं बल्कि महातमा हैं। यही नहीं बल्कि वे सफेद ठग कहलाते हैं या सुनहरी टोलीवाले समझे जाते

हैं। फर्क इतना ही है कि सुनहरी टोलीवाले कभी कभी कानूनके बन्धनमें फंस जाते हैं और ये सफेद ठग-अपने मनसे महात्मा बने हुए मठमर्द कानूनके पंजेमें नहीं आते। इतना ही फर्क है। नहीं तो लोगोंसे पैसा ऐंठनमें ये हर तरहसे सुनहरी टोलीसे मिलते जुलते हैं। इसलिये भाइयो और बहनो! ऐसे सफेद ठगोंको महात्मा समझनेकी भूल मत करना और इनके जालमें मत फंसना।

तब सवाल उठता है कि महात्मा माने क्या और महात्मा कैसे होते हैं? इसके जवाबमें शास्त्र तथा चतुर मनुष्य कहते हैं कि मनुष्यशरीरमें होनेपर भी जिसमें ईश्वरी शक्ति आ गयी हो और जिसको और किसी तरहका बन्धन अपने बलसे न बांध सकता हो, बल्कि जो सिर्फ अपने मनसे ही बंधता हो और जिसका चाल चलन पवित्र हो तथा जिसकी जीवात्माका बहुत ही विकास हो चुका हो वह महात्मा कहलाता है। सारांश यह कि बाहरसे देखनेमें जो मनुष्यके आकारमें है परन्तु अपने पुरुषार्थ और चरित्रके बलसे जिसके अन्दर दैवीशक्ति आ गयी है वह महात्मा कहलाता है।

अब हमें यह जानना चाहिये कि दैवी शक्ति क्या है। इसके जवाबमें महात्मा कहते हैं कि परम कृपालु परमात्माके राज्यमें अनेक प्रकारकी महान शक्तियां हैं परन्तु उनमेंसे अभी बहुत थोड़ी शक्तियां मनुष्यके हाथमें आयी हैं और अनेक महान शक्तियां ऐसी हैं जो अभी मनुष्योंके काममें नहीं आयीं, क्योंकि इन शक्तियोंसे काम लेने लायक ज्ञान मनुष्योंमें अभी नहीं हुआ है, इन शक्तियोंको अपने इख्तियारमें रखने लायक सत्ता अभी मनुष्योंमें नहीं आयी है इन शक्तियोंको सम्हालने लायक बल अभी मनुष्योंमें नहीं आया है, इन शक्तियोंका

भेद समझने लायक अनुभव अभी मनुष्योंको नहीं हुआ है और इन शक्तियोंको आड़में डालनेवाले परदेको हटाने लायक पुरुषार्थ अभी मनुष्योंमें नहीं है। इससे बहुत सी शक्तियां साधारण मनुष्योंसे अदृश्य रहती हैं। इन अदृश्य पड़ी हुई देवी शक्तियोंको जगतके कल्याणमें बर्तना महात्मापन है, इन देवी शक्तियोंको स्वर्गसे इस पृथ्वीपर खींच लानेका नाम महात्मापन है; जिन मनुष्योंको ऐसी अनमोल शक्तियोंकी खबर नहीं है उनको उस विषयकी खबर देना और उनको यह बतादेना-कि ऐसी अद्भुत शक्तियां तुममें हैं इनसे लाभ उठाओ-महात्मापन है। मनुष्यकी आत्मा कहांतक स्वाधीन हो सकती है और कहांतक आगे बढ़ सकती है और कहांतक कुदरतके भीतर पैठ सकती है यह दुनियाको बता देना तथा सिखा देना महात्मापन है। बाहरका किसी किस्मका बन्धन जिसको अपने बलसे नहीं बांध सकता, जो सब तरहके बन्धनोंसे निकल जाता है और सिर्फ अपनी मरजी मुताबिक बन्धनमें पड़ता है वह महात्मा कहलाता है, मतलब यह कि अच्छे मनुष्योंमें दया, धर्म, नीति, सत्य, क्षमा, न्याय, परोपकार वगैरह जो जो अच्छे गुण हैं वे सब गुण जिसमें बहुत अच्छी तरह खिले हों और इसके सिवा दूसरे दैवी गुण तथा दैवी शक्तियां भी जिसमें आ गयी हों वह महात्मा कहलाता है। इससे जो महात्मा होते हैं वे दूसरोंसे कोई चीज लेनेकी इच्छा नहीं रखते बल्कि जहांतक बनता है अपने सद्गुण दूसरोंको देते हैं और इस किस्मका काम करते हैं कि जिससे, जैसे उनकी आत्माका विकास हुआ है वैसे ही और सब लोगोंकी आत्माका अपनी हसियतके अनुसार, विकास हो। इसलिये वे महात्मा कहलाते हैं।

इन सब बातोंसे यह समझमें आ सकता है कि साधारण मनुष्यों और महात्माओंमें बहुत फर्क है। क्योंकि साधारण मनुष्य अपनी आत्माका विकास नहीं होने देते, परन्तु महात्मा अपनी आत्माका विकास होने देते हैं; साधारण मनुष्य दूसरोंको आगे बढ़ानेकी कोशिश नहीं करते उलटे जो आगे बढ़ता उसको अड़ंगा लगाते हैं; परन्तु जो महात्मा हैं वे आप दुःख सहकर भी दूसरोंके आगे बढ़नेमें मदद देते हैं; साधारण मनुष्य अनेक प्रकारके छोटे छोटे बन्धनोंमें उन बन्धनोंके बलके कारण ही पड़े रहते हैं परन्तु जो महात्मा हैं वे किसी प्रकारके बन्धनमें नहीं पड़े रहते और न किसी प्रकारका बन्धन जबरदस्ती उन्हें बांधकर रख सकता है, सिर्फ अपनी खुशीसे कोई खास काम करनेके लिये कोई खास बन्धन कुछ खास वक्त तक वे स्वीकार कर लें तो यह दूसरी बात है।

कुदरतमें मनुष्यजातिके लिये कितना अधिक खजाना गड़ा हुआ है और कितनी थोड़ी मिहनतमें कितनी अनमोल वस्तु मिलती है इसका ख्याल साधारण गंवार आदमियोंको नहीं होता, परन्तु कुदरतका अटूट भण्डार महात्माओंका देखा हुआ होता है, इससे उनके नेत्रोंमें नयी रोशनी आ जाती है तथा उनके हृदयमें नया बल आ जाता है। साधारण मनुष्योंमें आसुरी वृत्तिकी प्रधानता होती है इससे वे मोहमें पड़े रहते हैं, तमोगुणी रहते हैं, ओछे दरजेके टेस्टमें रहते हैं और छोटी छोटी चीजोंसे खुश हो जाते हैं। परन्तु जो महात्मा होते हैं उनमें दैवी सम्पत्तिकी प्रधानता होती है इससे वे साधारण व्यवहारी मनुष्योंसे हर बातमें हजार गुने श्रेष्ठ हैं।

व्यवहारी मनुष्योंमें दुनियादारीकी शक्तियां भी अच्छी तरह खिली हुई नहीं होतीं, तब ऊंची शक्तियोंका तो कहना

ही क्या है परन्तु महात्माओंमें व्यवहारकी अनेक शक्तियोंके पूर्णरूपसे खिली होनेके सिवा दैवी शक्तियां भी बहुत अच्छी तरह खिली हुई होती है और उनसे जगतको बहुत बड़ा फायदा पहुँचता है। इसलिये वे महात्मा कहलाते हैं।

भाइयो! सच्चे महात्माओं और व्यवहारी लोगोंमें इतना बड़ा फर्क होता है। इसलिये किसी मूर्खदासको महात्मा समझनेकी भूल मत करना, बल्कि जैसे बने वैसे आप इस प्रकारके सच्चे महात्मा बननेकी कोशिश करना। सच्चे महात्मा बननेकी कोशिश करना।

९९–हम अपनी जिन्दगीकी कीमत तथा जिन्दगीके उद्देश्य नहीं समझते, इससे अधूरा, अदना और न्यूनतावाला जीवन बिताते हैं; परन्तु याद रखना कि कुदरतके साथकी एकतावाला, ऊचा और पूर्णतावाला जीवन कुछ और ही होता है।

बन्धुओ! अतिशय परिश्रम करके जरूरतसे ज्यादा धन कमाना और फिर उस धनकी रक्षाके लिये अनेक प्रकारकी चिन्ताओंसे हृदयको भर रखना तथा मरते समय हाय हाय करते हुए चले जाना और जिन कुटुम्बियोंपर प्रेम न हो उनके लिये धन छोड़ जाना जिन्दगीका उद्देश्य नहीं है; अधिक पत्थर जमाकर बहुत बड़ा मकान बनवाना ही जिन्दगीका उद्देश्य नहीं

है; जान पहचानके कुछ लोगोंमें प्रशंसा हो यही जिन्दगीका उद्देश्य नहीं है; हमें हर रोज अच्छा अच्छा खाने पीनेको मिले सिर्फ इसीलिये हमें जिन्दगी नहीं दी गयी है; बहुत कपड़े लत्ते मिलें तथा मौज शौकका सामान मिले सिर्फ इसीलिये हमें जिन्दगी नहीं दी गयी है, दो चार या पांच सात पुस्तकें बिना समझे बूझे पढ़ लें और वह भी अपनी खुशीसे नहीं, बल्कि मा बापके दबावसे, राज्यके कानूनसे या मास्टरकी कड़ाईसे थोड़ा सीख लें तो इसीमें जिन्दगीकी सार्थकता नहीं है; बड़ी महाफिल जमाकर बिरादरी जिमाना और रंडी नचाना ही जिन्दगीका उद्देश्य नहीं है; चाहे जैसी खराब हालत हो तौ भी ब्याह कर लेना, बेमेल ब्याह कर लेना और ईंट रोड़ा जोड़कर कुनबा बना लेना ही जिन्दगीका उद्देश्य नहीं है; बच्चोंका पालन पोषण करने तथा शिक्षा देनेकी शक्ति न होनेपर भी बच्चे पैदा किया करना और उनकी जिन्दगी बिगाड़ना कुछ जिन्दगीका उद्देश्य नहीं है और इस तरह पाप करनेसे प्रभु प्रसन्न नहीं होता; जिन्दगीको बनाये रखनेके लिये जो जो जरूरतकी चीजें हैं उनसे कहीं अधिक वस्तुएं बटोरा करना और उनको वैभव समझना तथा उन्हींमें अन्ततक पड़े रहना ही जिन्दगीकी सार्थकता नहीं है, रोगाई.छोटा जीवन जैसे तैसे पूरा कर देना और मुर्दा बन कर जीवित रहना जिन्दगीका उद्देश्य नहीं है; पान, तमाखू, गांजा, भांग, अफीम, दारू वगैरह जिन चीजोंकी जिन्दगीको जरूरत नहीं है उन चीजोंके व्यसनमें पड़े रहना और अपनी शक्तियोंको ढीली कर देना जिन्दगीका उद्देश्य नहीं है, धर्मके बाहरके जालमें फंसे रहना और पोलमपोलका भेड़ियाधसान जैसा धर्म पालना जिन्दगीका उद्देश्य नहीं है; लोकाचारका गुलाम बन जाना और चाहे जैसी खराब रसमसे चिपके रहना

जिन्दगीका उद्देश्य नहीं है; छोटी छोटी बातोंमें भी जीवको दुःख देते रहना और व्यर्थकी चिन्ता किया करना जिन्दगीका उद्देश्य नहीं है; हितमित्रके मरनेपर बेहद शोक किया करना और रोते कलपते रहना तथा इसीके खयालमें समय खोना जिन्दगीका उद्देश्य नहीं है और भविष्यकी फिकर किया करना तथा बापके बाप और उनके बापको याद कर करके रोया करना ही जिन्दगीका उद्देश्य नहीं है। क्योंकि ऐसे ऐसे विषयोंमें रह जानेसे मन दुःखी हुआ करता है, आयु घट जाती है, जिन्दगीका जो आनन्द लेना चाहिये वह आनन्द नहीं लिया जा सकता और जो विशालता, जो स्वतंत्रता, जो पवित्रता तथा जो बड़प्पन भोगनेके लिये जीवात्मा यहां आयी है वह सब वह नहीं भोग सकती बल्कि छोटे बन्धनोंमें रह जाती है।

असलमें ऊंचे दरजेका जीवन कैसा होता है? आगे बढ़े हुए महान भक्तोंका जीवन कैसा होता है? तत्त्व समझे हुए ज्ञानियोंका जीवन कैसा होता है और प्रभुसे एकता किये हुए महात्माओंका जीवन कैसा होता है? अब यह हमें जानना चाहिये।

महात्माओंकी जिन्दगी सरल होती है, उनकी जिन्दगी बेडर की होती है, उनकी जिन्दगी रसभरी होती है, उनकी जिन्दगी आनन्दवाली होती है, उनकी जिन्दगी उत्साहवाली होती है, उनकी जिन्दगी गंभीर होती है, उनकी जिन्दगी चमत्कारोंसे भरी होती है, उनकी जिन्दगी नीरोग होती है, उनकी जिन्दगी शान्तिवाली होती है, उनकी जिन्दगी प्रेमवाली होती है, उनकी जिन्दगी कुदरतके प्रवाहके अनुसार चलनेवाली होती है, उनकी जिन्दगी लम्बी उमरवाली होती है, उनकी जिन्दगी पवित्र होती है, उनकी जिन्दगी अभेद भाववाली होती है, उनकी जिन्दगी निस्पृही होती है, उनकी जिन्दगी ऊंचे दरजेके उद्देश्य

वाली होती है, वे अपनी जिन्दगीमें अनेक भले काम कर सकते हैं, उनको दुःख सुखका धक्का नहीं लगता, उनको अपनी जिन्दगी बितानेमें कुछ मुश्किल नहीं पड़ती, उनको कोई अड़चन नहीं पड़ सकती और कभी पड़ जाय तो भी उनको दुःख नहीं दे सकती; उनका मार्ग सीधा, सरल और सुगम होता है; उनकी जिन्दगीके मार्गमें प्रकाश होता है; हमको कहां जाना है यह वे ठीक ठीक जानते हैं, हम कहां पहुंचे हैं और अभी कितना रास्ता तय करना है यह भी वे ठीक ठीक जानते हैं; उनको अपनी जिन्दगी बितानेमें आनन्द आता है और उनकी जिन्दगी दैवी तत्त्व वाली बन जाती है। इतना ही नहीं बल्कि, जैसे नदीके बड़े प्रवाहमें पड़ा हुआ बड़ा काठ बिना कुछ अपना जोर लगाये नदीके प्रवाहके बलसे ही सीधे और तेजीसे समुद्रकी तरफ बहा जाता है वैसे ही जो ज्ञानी अपनी जिन्दगीको प्रकृतिके कुदरती प्रवाहमें उसके भरोसे छोड़ देते हैं उनकी जिन्दगी भी बिना कुछ अपना जोर लगाये सीधे तौर पर और तेजीसे परमात्माकी तरह दौड़ जाती है। ऐसा जीवन ऊंचा जीवन कहलाता है और उससे आगे जाकर पूर्ण जीवन बनता है और पूर्ण जीवन बनाना ही हमारी जिन्दगीका मुख्य उद्देश है। इस लिये जिन्दगीकी कीमत तथा जिन्दगीका उद्देश समझ कर उसको उत्तम बनानेकी कोशिश कीजिये और यह कोशिश करनेके लिये पहले उसको धर्मके रास्ते पर चलाइये और प्रभुके रास्तेमें चलाइये। तब धीरे धीरे ऐसा ऊंचा जीवन पा सकेंगे।

१००-जो छूआछूतके झगड़े तथा कर्मकाण्डमें ही बहुत रहते हैं वे बहुत ज्ञानी या ध्यानी नहीं हो सकते। लोटा माजते रहने, हाथ पैर धोया करने और चौका लगानेमें ही उनकी जिन्दगी बीत जाती है। ऐसा न हो इसका खयाल रखना।

जिन्दगी पवित्रताके लिये ही है, इसलिये जितनी पवित्रता रखी जाय थोड़ी है। परन्तु जिन्दगीकी पवित्रताके माने क्या हैं यह बात बहुत लोग नहीं जानते। साधारण लोग न जानें तो इसमें कुछ आश्चर्य नहीं है; परन्तु जो भक्त कहलाते हैं, जिन पर लोगोंकी श्रद्धा भक्ति है, जो कुछ अच्छी रीतिसे पढ़े लिखे समझे जाते हैं और जिनको लोग बहुत धार्मिक समझते हैं वे आदमी भी जिन्दगीकी पवित्रताका असली अर्थ नहीं समझते और बाहरकी अधूरी तथा छोटे दरजेकी पवित्र गिनी जानेवाली वस्तुओंमें ही पड़े रहते हैं इसका अफसोस है। क्योंकि ऐसी छोटी छोटी बातोंमें समय बितानेसे जो बड़े महत्वके विषय हैं वे रह जाते हैं और जो विषय बहुत कामके नहीं हैं, जिनके किये बिना भी चल सकता है, जिन विषयोंका उद्देश्य या अर्थ समझमें नहीं आता, जो बातें छोटे अधिकारियोंके करने लायक है, जो बातें शुरूमें भक्तोंके कुछ समय तक करने योग्य है और जिन बातोंमें कुछ बहुत दम नहीं है तथा जिन बातोंको मूर्ख भी कर सकते हैं उन्हीं बातोंमें आगे बढ़े हुए भक्त तथा ज्ञानी पड़े रहते हैं यह अफसोस की बात है। इसलिये महात्मा लोग कहते हैं कि—

कर्मकाण्ड या छूआछूतका विचार समय बचाने तथा उसका सदुपयोग करनेके लिये है, कुछ समय गँवानेके लिये नहीं है ; ये बातें तन्दुरस्ती रखनेके लिये हैं न कि तन्दुरस्ती खोनेके लिये, ये बातें अपने मनका विकार घटानेके लिये हैं न कि बार बार मिजाज बिगाड़नेके लिये; ये बातें धर्म तथा व्यवहारके काममें सरलता लानेके लिये हैं न कि उसकी कठिनाई बढ़ानेके लिये , ये बातें मनका समजस रखनेके लिये हैं न कि मनको एक तरफ ढाल देने या चक्कर देनेके लिये , ये बात उद्देश्य समझकर करनेकी हैं न कि भेड़ियाधसानकी तरह चलनेके लिये , ये बातें जीवको ऊंचे चढ़ानेके लिये हैं न कि छोटी चीजोंमें उसको रखने या उल्टे नीचे उतारनेके लिये , ये बात देश समझकर करनेकी हैं न कि 'जैसे बिठा दिया वैसे बैठे हैं" की मसल पूरी करनेके लिये, ये बातें परमार्थ सीखनेके लिये करनेकी हैं न कि अपनी अढ़ाई चावलकी अलग खिचड़ी पकानेके लिये , ये बातें अपनी प्रकृतिके अनुसार करनेकी हैं और अपना स्वभाव तथा टेव सुधारनेके लिये हैं न कि प्रकृतिको बिगाड़नेके लिये, ये बात वस्तुओंका मोह घटानेके लिये है न कि जगत्की वस्तुओंपर मोह बढ़ानेके लिये, ये बातें जितने समय तक जरूरत हो उतने समय तक करनेकी हैं न कि सारी जिन्दगीके लिये, ये बातें समझ बूझकर विधि पूर्वक करनेकी हैं न कि बिना समझे मनकी दौड़के मुताबिक करनेके लिये, ये बातें व्यवहार तथा परमार्थमें उपयोगी हों इसके लिये हैं न कि इसलिये कि लोग व्यवहारसे खिसक जाय, और परमार्थका भी पता न लगे और ये बातें महान ईश्वरको पहचाननेके लिये तथा उसके निकट जानेके लिये हैं न कि उससे विमुख होनेके लिये । इतना ही नहीं बल्कि ईश्वरी रास्तेमें

उड़नेके लिये हमारी जीवात्माको पांख मिले इसके लिये वे बातें हैं कुछ इसलिये नहीं कि हमारी जीवात्मा बंधी रहे।

अब विचार कीजिये कि हम जिस छूआछूतकी पोलमें पड़े रहते हैं तथा जिस कर्मकाण्डके जालमें उलझे रहते हैं उससे क्या हमारी आत्माकी उन्नति होती है? यह प्रश्न हमें अपने मनमें पूछना चाहिये और अच्छी तरह समझ लेना चाहिये कि चौका लगानेमें, हाथ पैर पखारनेमें, लोटा मांजनेमें, छिन मिन छिन मिन करनेमें, यह चीज चलेगी यह चीज नहीं चलेगीका टिपुआन लगानेमें और बाहरके बनावटी कर्मकाण्डमें पड़े रहनेसे ही जिन्दगी नहीं सुधर सकती; बल्कि इससे उलटे अनमोल वक्त व्यर्थ जाता है और मनुष्य ऐसी ऐसी बाहरी बातोंमें ही फंसे रह जाय तो वे बहुत ज्ञानी या ध्यानी नहीं हो सकते। इसलिये ऐसी भूल न हो यह ख्याल रखना और देशकालको ध्यानमें रख कर तथा अपनी प्रकृति समझ कर पवित्रता रखनेके लिये जितनी जरूरत हो उतनी बातें करना। मगर बिना कारण बाहरी बातोंको बहुत बढ़ा मत देना। क्योंकि अगर ऐसी बातोंको बढ़ाया करें तो फिर उसकी कुछ हद ही नहीं रहती। इसके सिवा यह बात भी समझ लेने लायक है कि बाहरकी छोटी छोटी ऊपरी पवित्रतासे अन्तःकरणकी कुदरती पवित्रता लाख गुनी बढ़कर है और यह पवित्रता ज्ञानके बलसे तथा अपने भाइयोंकी सेवा करनेसे प्राप्त हो सकती है। इसलिये हृदयकी ऐसी सच्ची पवित्रतापर अधिक जोर देना सीखिये और बाहरके बनावटी कर्मकाण्डकी दाम्भिकता तथा छूआछूतके जालपर अंकुश रखना सीखिये। अगर ऐसा करेंगे तो अधिक ऊंचे दरजेका पवित्र जीवन बिता सकेंगे और प्रभुके प्यारे बन सकेंगे। इस वास्ते बाहरकी पोल ही पोलमें मत पड़े रहिये, बल्कि हृदयकी

विशुद्धता प्राप्त कीजिये। ऐसा कीजिये कि हृदय विशुद्ध हो।

१०१–जीवनकी सार्थकता हुई है कि नहीं इसके जाननेका उपाय।

भाइयो! अब यह जमाना उधारी मामलेका नहीं है, वादपर रहनेका जमाना नहीं है, भविष्यकी आशाकी बाट बैठे बैठे देखनेका जमाना नहीं है और दूसरेकी थालीमें लड्डू देखकर खुश होनेका जमाना नहीं है, बल्कि अब तो नगदानगदीका जमाना आता जाता है, प्रत्यक्षताका समय आता जाता है और जिन चीजोंके लिये पहले यह कहा जाता था कि देखी नहीं जा सकतीं और जिन बातोंके लिये यह कहा जाता था कि समझमें नहीं आ सकतीं वे चीजें भी अब साफ साफ देखी जा सकती हैं और वे बातें भी अब अच्छी तरह समझमें आ सकती हैं। ऐसा बुद्धिबलका जमाना अब आता जाता है। इतना ही नहीं बल्कि जो चीज जो या बात हुई है वह ठीक ठीक हुई है कि नहीं इसका विश्वास दिलानेवाली सहज कुंजियां भी पहलेसे बढ़ती जाती हैं और अब हर एक विषयमें ऐसी कुंजियां बढ़ती जाती हैं।

जैसे–गणितके बहुत बड़े बड़े हिसाब लगाये हों तो वे सही हैं कि नहीं यह जांच करनेके लिये बहुत ही सहज युक्तियां होती हैं। उनसे, जो हिसाब लगानेमें कई घंटे या दिन लगते हैं उनका सहीपन या गलतपन मिनट दो मिनटमें बताया जा सकता है। किसी

बड़ी नदीपर रेलवेका पुल बांधकर पीछे यह जांच की जाती है कि पुल ठीक बना है कि नहीं, वह ट्रेनका बोझ सम्हाल सकता है कि नहीं और बहुत समय तक टिक सकता है कि नहीं। यह जांचनेकी युक्ति बहुत सहज और छोटी होती है। जहाजके तय्यार होजानेपर इस बातकी जांच की जाती है कि वह समुद्रमें उतारने लायक है कि नहीं, तूफानके सामने ठहर सकता है कि नहीं और उसमें बचावके यथेष्ट साधन हैं कि नहीं। विमानको जब पहले पहल हवामें उड़ाना होता है तो यह देख लिया जाता है कि वह हवामें ठहर सकता है कि नहीं, घंटेमें के मील जा सकता है और कितना वजन ले सकता है। इन सब बातोंकी जांच छोटी और आसान युक्तियोंसे की जाती है। इसी प्रकार हर एक छोटी या बड़ी चीजकी परीक्षा छोटी और सहज तरकीबोंसे की जाती है, इतमिनान किया जाता है और तब वह मानी जाती है। बिना ऐसा किये सिर्फ अटकलसे मान लेने और मन ही मन मोतियोंका चौका पूरनेसे कुछ नहीं होता। ऐसा करनेमें तो कितनी ही बार धोखा खाना पड़ता है और फिर भी बुद्धि बलके जमानेमें ऐसी पोल नहीं चल सकती क्योंकि हर एक चीजकी जाच कर लेनेकी सहज तरकीबें जगतमें मौजूद हैं।

भाइयो! जैसे जगतकी जड़ वस्तुओंके लिये युक्तियां हैं वैसे ही धर्म पालनेकी परीक्षाके लिये, अध्यात्म ज्ञानकी परीक्षाके लिये और जिन्दगी सार्थक हुई है कि नहीं यह समझनेके लिये भी ऐसी सहज युक्तियां हैं। उनको हमें जानना चाहिये। क्योंकि हम अपने मनमें यह समझा करते हैं कि हम बहुत धर्म पालते हैं। परन्तु धर्मको तौलकर देखनेका कांटा हमारे पास नहीं है, हम जो धर्म पालते हैं वह सच्चा है या झूठा

इसकी जाच करनेकी युक्ति हमारे पास नहीं है और हमने अधिक धर्म किया है कि थोड़ा यह जाननेका धर्ममापक यंत्र हमारे पास नहीं है। इससे हम भूल करते हैं और पोलमें पड़े रहते हैं। ऐसा न होने देनेके लिये हमें अपना धर्म नापनेका यंत्र हासिल करना चाहिये। ये यंत्र जुदे जुदे अधिकारियोंके लिये तथा जुदे जुदे देश कालके लिये जुदे जुदे हैं। परन्तु उन सबका इस समय हमें काम नहीं है। हमें तो ऐसा यंत्र दरकार है कि जो सब देशोंमें सब समय और पूर्ण रीतिसे पाले हुए सब धर्मोंमें लग सके। ऐसा यंत्र क्या है? इसके लिये शास्त्र तथा महात्मा कहते हैं कि-

जब सत्यधर्म पाला जाता है, जब पूरा पूरा धर्म होता है, जब सत्य ज्ञान होता है और जब जिन्दगीकी सार्थकता होती है तब दिव्य चक्षु मिलता है और ईश्वरका दर्शन होता है। इसलिये जब दिव्य चक्षु मिले और हरिदर्शन हो तब समझना कि जीवनकी सार्थकता हुई है। जब तक ऐसा न हो कचाई समझना। इसमें कुछ भी शक नहीं है। क्योंकि सब धर्मोंका इतिहास और सब महान भक्तोंके जीवनचरित्र विश्वास दिलाते हैं कि महान भक्तोंका दिव्य दर्शन हुआ था और इसके बाद ही उन्होंने मुक्त दशा पायी थी। इसलिये जीवनकी सार्थकता हुई है कि नहीं यह समझनेकी छोटी और सहज युक्ति दिव्य दर्शन है। हमें यह जानना चाहिये कि दिव्य दृष्टि क्या है और दिव्यदर्शन क्या है। इसके लिये महात्मा कहते हैं कि—

जो जो अदृश्य वस्तुएं हमारी वर्तमान आंखोंसे नहीं दिखाई देतीं वे सब वस्तुएं दिव्यदृष्टिसे दिखाई देती हैं, इस समय जो वस्तुएं हमें थोड़ीसी मालूम देती हैं वे वस्तुएं दिव्यदृष्टिसे

चैतन्यवाली जान पड़ती हैं; जो बहुत छोटी छोटी वस्तुएं इस समय हमें बिलकुल नहीं दिखाई देती वे दिव्यदृष्टिसे दिखाई देती हैं; इस समय बहुत दूरकी जो चीजें हमें नहीं दिखाई देतीं वे दिव्यदृष्टिसे दिखाई देती हैं; इस समय जो विषय, जो भावनाएं, जो पाप और ज्ञानकी जो कुंजियां हमें बहुत ही छोटी, मामूली या तुच्छ लगती हैं वे सब दिव्यदृष्टिसे बहुत बड़ी मालूम देती हैं और प्रत्यक्ष दिखाई देती हैं। इसी तरह धन, मान, कीर्त्ति, लोकलाज, देहका मोह, अहंभाव, स्वार्थवृत्ति, देशकालभेद, जाति बिरादरीके बन्धन, हित मित्रोंका मोह वगैरह जो बातें इस समय बहुत बड़ी दिखाई देती हैं वे सब दिव्यदृष्टिसे छोटी छोटी और बेदामकी जान पड़ती हैं। क्योंकि दिव्यदृष्टिका दूसरा नाम विश्वदर्शन है और तीसरा नाम शिवका तीसरा नेत्र या ज्ञानदृष्टि है। इस तीसरे नेत्र यानी ज्ञानदृष्टिमें अग्नि है। वह हरएक असत् वस्तुको जला देती है। इसके लिये श्रीमद्भगवद्गीतामें भी कहा है कि—

यथैधांसि समिद्धोऽग्निर्भस्मसात्कुरुतेऽर्जुन।
ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरुते तथा॥

अं० ४ श्लो० ३७

हे अर्जुन! जल्द सुलगनेवाली लकड़ीको जैसे सुलगी हुई अग्नि तुरत भस्म कर देती है वैसे ही ज्ञानरूपी अग्नि सब कर्मोंको जलाकर भस्म कर देती है।

भाइयो! ज्ञानदृष्टि-विश्वदृष्टि-दिव्यदृष्टि-शिवका तीसरा नेत्र इतना बड़ा काम करता है। इसलिये दिव्यदृष्टि पाना बहुत

बड़ी बात है, बहुत जरूरी बात है और हमारे जीवनकी सार्थकता हुई है कि नहीं यह समझनेकी कुञ्जी है। अगर दिव्यदृष्टि हुई हो तो जानना कि हमारे धर्म कर्म सफल हुए हैं हमारा जीवन सार्थक हुआ है और परम कृपालु परमात्माने हमारी सेवा स्वीकार की है तथा उसकी कृपा हमपर उतरी है। यदि दिव्यदृष्टि न हो तो जानना कि अभी हममें कचाई है, अभी हमारा धर्म अधूरा है, अभी हमें अपना कर्म पूरा करनेको बाकी है और अभी हममें तथा प्रभुमें कोई परदा रह गया है। हमें दिव्यचक्षु नहीं मिला है, इससे हमें दिव्यदर्शन नहीं हुआ। क्योंकि दिव्य चक्षु मिलनेपर दिव्यदर्शन होता है। इस दिव्यदर्शनकी अलौकिक खूबीकी बात क्या कही जाय? वह शब्दोंसे कहने योग्य नहीं है। वह तो अनुभवसे ही जानी जा सकती है। उसको समझानेके लिये एक महात्मा एक दृष्टान्त दिया करते थे। वह दृष्टान्त यह है कि—

दस बारह वर्षकी कई कुमारी लड़कियाँ एक साथ खेलती थीं, साथ ही पाठशालामें पढ़ने जाती थीं, घरके काम काज सीखती थीं, कभी कभी ऊधम मचाती थीं, ठाकुरजी बनाकर उनका सिंगार करती थीं और नाचने कूदने, खाने पीने तथा पढ़ने आदिमें प्रसन्न रहा करती थीं। उन कन्याओंमें एक लड़कीका ब्याह हुआ। वह लड़की बहुत चतुर थी, सब लड़कियोंमें मुखिया थी डीलडौलमें अच्छी थी और छोटी उमरमें ही उसमें प्रेम खिल गया था। इसके सिवा उसको बड़ा लायक रसज्ञ पति मिल गया था। इससे ब्याह होनेके बाद वह कुछ ही दिनोंमें ऊँचे दरजेके प्रेमका सुख भोग सकी थी। दो महीने बाद उसके मा बाप उसे विदा करा लाये। मैहरमें उसकी पहलेकी सखियाँ—अज्ञान मुग्धाएं—निर्दोष कन्याएं उससे पूछने लगीं कि

बहन ! पतिका सुख कैसा होता है ? वहां तुझे अच्छा लगता था ? दो महीनेमें तू इतनी मोटी कैसी हो गयी ? अली ! तू तो अब पहचानी भी नहीं जाती ! हम लोगोंको तो तेरे बिना जरा भी अच्छा नहीं लगता था।

यह सुनकर उस प्रेमिका बालाने पतिविरहके कारण गहरी सांस ली और कहा—अहा ! पतिका सुख ! पतिका सुख ! उस सुखका कहना ही क्या है ? उस सुखकी सीमा नहीं है।

सखियोंमें एक थोलकड़ छोकरीने कहा कि इतना आसन धर धर कर क्यों बात करती है ? जैसा है वैसा कह क्यों नहीं देती ? "फलाने सुखके ऐसा यह सुख है" यह कह दे तब हम समझ जायगी कि पतिका सुख ऐसा होता है।

यह सुनकर उस प्रेमिका बालाने कहा कि बहन ! किसीके साथ उस सुख की तुलना नहीं हो सकती। उस सुखकी बात ही जुदी है। उस में तुम लोगोंको कैसे समझाऊं ? उसे समझाना मुझे नहीं आता। उस प्रेमसुखकी बातें तो तुम सभी समझोगी जब तुम्हारा भी ब्याह होगा और तुम्हें लायक वर मिलेगा। यह बात कहते समय पतिके सुखकी याद आ जानेसे उस बालाकी आंखोंमें कुछ और ही तत्व आ गया था, उसकी वाणी में कुछ अलौकिक भाव था, उसकी नाड़ीकी धड़कन देखने लायक थी, उसकी सांसकी गति समझने लायक थी और उसके हृदयमें जो सुन्दर स्वाभाविक चित्र खड़ा हुआ था वह देखने और वन्दन करने लायक था। इन सब बातोंको वे अज्ञान मुग्धाएं कैसे समझ सकतीं ? वे उसकी सखियां भल ही हों परन्तु ब्याह हुए बिना—निजका अनुभव हुए बिना पतिके प्रेमके सुखका पता उन्हें कैसे मिल सकता है ? वैसे ही भाइयो ! दिव्यदर्शनकी, हरिदर्शनकी खूबी इस समय तुम कैसे समझ सकते हो ? यह

तो तभी समझ सकते हो कि जब तुम पूरा धर्म पालो, सत्य धर्म पालो, दिव्यलोचन पाओ और फिर दिव्यदर्शन करो। तभी इसकी खूबी समझमें आ सकती है। इसके बिना, निजका अनुभव हुए बिना कुछ नहीं होनेका। इसलिये अर्जुनको जैसा दिव्य चक्षु मिला था वैसा चक्षु तुम्हें भी मिले इसका उद्योग करो। क्योंकि दिव्यदर्शन स्वर्गका उत्तमसे उत्तम रत्न है और हमारे जीवनकी सार्थकता हुई है कि नहीं यह समझनेके लिये दिव्यदृष्टि सहज युक्ति है। इस सच्ची युक्तिको–इस सच्ची कुंजीको प्राप्त करनेके लिये परिश्रम करो और जबतक यह न मिले तबतक हरिदर्शनके लिये समझ समझकर प्रेमपूर्वक प्रार्थना करो कि—

[हरिका दर्शन]

इन आलसी नयनोंने पाया देवका दर्शन नहीं।
है पास यह हर दम पता बिरला कोई पाता कहीं॥
नित शोक मोहकी आगमें तन मन जलाता हूँ पड़ा।
दर्शन बिना उस देवके अब हाय कुछ भाता नहीं॥
यह गगन जैसा नाथ मेरा सदा मुझपर छा रहा।
उरमें बहे यह धातु सा पर ध्यान में आता नहीं॥
उघड़े जरा आंखें जो मेरी तो उसे मैं देख लूँ।
ब्रह्माण्डमय यह अंश निज छवि मुझे दिखलाता कहीं॥
नर जन्म पाकर जगत में उससे न जोड़े प्रीति जो,
विश्वास का चूका न फिर विश्राम वह पाता कहीं॥
अगम सागर के सदृश प्यारा हमारा श्याम है।
अद्भुत अहा यह रूप अपना मुझे दर्शाता कहीं॥

अज्ञानका तम छा रहा है विना हरि क्यों दूर हो ?
दिव्य दर्शन इसीसे उसका न मैं पाता कहीं ॥
हे नाथ ! इतनी प्रार्थना अब कृपा कर सुन लीजिये ।
अज्ञानका परदा उठा निज दिव्य दर्शन दीजिये ॥
मत दृष्टि से हो ओट, तुमको रात दिन देखा करूँ ।
तव चरणपंकजकोशमें निज मधुप मन सब दिन धरूँ ॥

(पं० रमाशंकर द्विवेदी मिरजापुरी कृत ।)

शान्तिः शान्तिः शान्तिः

जय सच्चिदानन्द ।

सूचना ।

स्वर्गमालाके इस पांचवें अंकमें "स्वर्गके रत्न" नामक पुस्तक सम्पूर्ण हो गयी। इस अंकके साथ स्वर्गके रत्नकी अनुक्रमणिका अलग भी लगादी।

इस पांचवें अंकमें ८० से ५ पृष्ठ कम हैं। आगेके अंकोंमें यह कमी पूरी कर दी जायगी। अनुक्रमणिकाके पृष्ठ इससे अलग हैं।

"स्वर्गके रत्न" के पांचों खण्डोंको एकमें बंधवाकर एक पुस्तक बनवा दिया है। उसका दाम फुटकर ग्राहकके लिये १) रखा है। डाक महसूल कुछ नहीं। पृष्ठ संख्या ३९५ है। जो लोग चाहे मंगा सकते हैं। जिल्दवाली पुस्तकका मूल्य १।)

प्रकाशक

स्वर्गमाला, बनारस सिटी ।

प्रतिज्ञा पालन ।

स्वर्गमालाके विशेष प्रेमी और उसकी उन्नतिके अभिलाषी दुर्ग (मध्य प्रदेश) के श्रीयुत द्वारकाप्रसाद जी महाशय रायजादा वकीलने कृपापूर्वक ग्राहक बढ़ानेकी जो पवित्र प्रतिज्ञा की है उसका पालन वह आनन्द दायक रीतिसे कर रहे हैं। पिछली बार आपके १२ ग्राहक बढ़ानेकी कृपाका उल्लेख कर चुका हूं। इस बार यह भी प्रकाशित करनेमें मुझे विशेष हर्ष होता है कि रायजादा महाशयने उसके सिवा १२ ग्राहक और बढ़ाये हैं और अभी उद्योग चल ही रहा है। ऐसे हितैषी सज्जनके प्रति कृतज्ञता प्रगट करनेके लिये शब्द नहीं मिलते। एक मनुष्यसे इतने ग्राहक पाना हिन्दी पत्रों और पुस्तकोंके लिये कम सौभाग्यकी बात नहीं है। भगवानसे प्रार्थना है कि ऐसे धर्मप्रेमी, मातृभाषानुरागी सज्जन दीर्घायु हों और उनसे अधिकाधिक परोपकार हो।

प्रकाशक।

पुस्तकों की आढ़त।

ग्राहकोंके सुभीतेके लिये मैंने हिन्दी पुस्तकोंकी आढ़त खोली है। काशीमें मिलनेवाली बम्बई, प्रयाग, कानपुर, लखनऊ कलकत्ता, काशी आदि स्थानोंकी छपी हुई हिन्दी पुस्तकें मांग आनेपर भेजी जा सकती हैं। दाम साबिक दस्तूर।

जो पुस्तक प्रकाशक इस आढ़तमें पुस्तकें रखना चाहें वे नीचे लिखे पतेपर पत्र व्यवहार करें—

प्रबन्धकर्त्ता

स्वर्गमाला, बनारस सिटी।

अनुक्रमणिका ।

संख्या	विषय	पृष्ठ

संख्या	विषय	पृष्ठ

मेरे गुरुदेव ।

इस पुस्तक के परिचयमें प्रसिद्ध मासिकपत्र " इन्दु " की नीचे लिखी समालोचना पढ़ लीजिये " अनुवादक श्रीयुत प० शिव सहाय चतुर्वेदी । मूल्य चार आने । उन्नीसवी शताब्दीके साधु शिरोमणि श्रीरामकृष्ण जी परमहंस के प्रिय शिष्य लोक प्रसिद्धश्री स्वामी विवेकानन्दजीने अमेरिका के न्यूयार्क शहर में अपने गुरुदेवके सम्बन्ध में My Master नामकी जो वक्तृता दी थी उसीका यह हिन्दी अनुवाद है। इस में परमहंस जी के अलौकिक धर्ममय जीवन का अच्छा दिग्दर्शन कराया गया है । पुस्तक कामकी है । हिन्दी साहित्यमें ऐसी पुस्तकोंका प्रकाशित होना, हिन्दीके लिये सौभाग्यकी बात है।"

गृहिणीभूषण । मूल्य ॥) डाक महसूल अलग ।

मिलने का पता —
प्रबन्धकर्त्ता स्वर्गमाला
बनारस सिटी